VIDYA UNIVERSITY PRESS

TOUCH n PASS

सर्वश्रेष्ठ परीक्षा पथ-प्रदर्शक

B.A.
द्वितीय वर्ष
(डिप्लोमा कोर्स)
सेमेस्टर-IV

हिन्दी

हिन्दी अनुवाद

SYLLABUS

UNIT-I **अनुवाद की अवधारणा** : अनुवाद : परिभाषा, स्वरूप, अनुवाद का महत्त्व, अनुवाद के अन्य रूप : लिप्यंतरण, मशीनी अनुवाद आदि, अनुवादक के गुण, दायित्व और अपेक्षाएँ, अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ।

UNIT-II अनुवाद की प्रक्रिया, प्रकार, सीमाएँ, अनुवाद के क्षेत्र : साहित्य, कार्यालयी, विज्ञान, विधि, बैंकिंग आदि, अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद की समस्याएँ और समाधान।

UNIT-III **अनुवाद का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ** : संस्कृति, साहित्य और भाषा, अनुवाद और संस्कृति, अनुवाद और समाज, अनुवाद और भाषा, बहुभाषिक समाज में अनुवाद।

UNIT-IV **अनुवाद के साधन** : अनुवाद में कोश का महत्त्व, कोशों के प्रकार, कोशों के उपयोग, संकेत प्रणाली, शब्दकोश के उपयोग, थिसॉरस के उपयोग, पर्यायकोश के उपयोग, उच्चारणकोश के उपयोग, भाषिककोश के उपयोग, विषयकोश के उपयोग, परिभाषाकोश के उपयोग, विश्वकोश के उपयोग, साहित्यकोश के उपयोग, मिथककोश के उपयोग, पुराणकोश के उपयोग।

UNIT-V **पारिभाषिक शब्दावली** : पारिभाषिक शब्द : तात्पर्य तथा लक्षण, सामान्य शब्दों तथा पारिभाषिक शब्दों की अनुवाद में भूमिका, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया।

UNIT-VI **अनुवाद का पुनरीक्षण, मूल्यांकन तथा समीक्षा** : पुनरीक्षण, मूल्यांकन, समीक्षा।

Unit-VII **अनुवाद सैद्धांतिकी-एक** : (हिन्दी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिन्दी) प्रशासनिक अनुवाद, बैंकिंग अनुवाद, विधि अनुवाद, विज्ञान तथा तकनीकी अनुवाद।

Unit-VIII **अनुवाद सैद्धांतिकी-दो** : (हिन्दी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिन्दी) सामाजिक विषयों का अनुवाद, सृजनात्मक अनुवाद।

TOUCH 'n' PASS

VIDYA UNIVERSITY PRESS

पंजीकृत कार्यालय
विद्या एम्पायर, बागपत रोड,
मेरठ, उत्तर प्रदेश (NCR) 250 002
www.vidyauniversitypress.com

© प्रकाशक

लेखन एवं सम्पादन
शोध एवं अनुसन्धान प्रकोष्ठ

मुद्रक
विद्या यूनिवर्सिटी प्रेस

TOUCH n' PASS

विषय-सूची

UNIT-I : अनुवाद की अवधारणा ...3
UNIT-II : अनुवाद की प्रक्रिया ...25
UNIT-III : अनुवाद का सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ ...50
UNIT-IV : अनुवाद के साधन ...65
UNIT-V : पारिभाषिक शब्दावली ...86
UNIT-VI : अनुवाद का पुनरीक्षण, मूल्यांकन तथा समीक्षा ...113
UNIT-VII : अनुवाद सैद्धांतिकी-एक ...137
UNIT-VIII : अनुवाद सैद्धांतिकी-दो ...158

UNIT-I

अनुवाद की अवधारणा

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद किसे कहते हैं?

उत्तर अनुवाद दो भिन्न भाषाओं के बीच होने वाली एक भाषिक प्रक्रिया है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्रोत भाषा तथा उसके पाठ को स्रोत भाषा पाठ या मूल पाठ तथा जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है, उसे लक्ष्य भाषा एवं उसके पाठ को लक्ष्य भाषा पाठ कहा जाता है। लक्ष्य भाषा पाठ को ही अनुदित-पाठ भी कहा जाता है।

प्र.2. अनुवादक के गुण कौन-से होते हैं?

उत्तर अनुवादक को त्वरित बुद्धि वाला, मानसिक उपस्थिति वाला, पाठक के स्तर तथा अपेक्षा को समझने वाला, मनन चिंतन करने वाला तथा पूर्वाग्रह या दुराग्रह से मुक्त रहने वाला होना चाहिए तभी वह सुपाद्य एवं सहज अनुवाद कर सकता है।

प्र.3. अनुवाद की उपयोगिता क्या है?

उत्तर अनुवाद विश्व-संस्कृति, विश्व-बंधुत्व, एकता और समरसता स्थापित करने का एक ऐसा सेतु है जिसके माध्यम से विश्व ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में क्षेत्रीयतावाद के संकुचित एवं सीमित दायरे से बाहर निकल कर मानवीय एवं भावात्मक एकता के केन्द्र बिन्दु तक पहुँच सकता है और यह अनुवाद की आवश्यकता और उपयोगिता का सशस्त एवं प्रत्यक्ष प्रमाण है।

प्र.4. अनुवाद के उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर वर्तमान समय में अनुवाद का महत्त्व प्रौद्योगिकी, विज्ञान और तकनीकी की भाँति अत्यधिक मूल्यवान हो गया है। अनुवाद जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सर्वव्यापी हो गया है। अनुवाद के मुख्य रूप से तीन प्रमुख उद्देश्य माने जाते हैं—

(i) स्रोत भाषा (दूसरी भाषा) के साहित्य से अपनी भाषा (लक्ष्य भाषा) के साहित्य को समृद्ध करना।
(ii) दूसरी भाषाओं की शैलियों, मुहावरों, दार्शनिक तथ्यों, वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान को प्राप्त करना।
(iii) विचारों का विनिमय करना।

प्र.5. अनुवाद का व्यापक क्षेत्र क्या है?

उत्तर अनुवाद मूल भाषा पाठ के जिस अर्थ को लक्ष्य भाषा में अंतरित करता है उस का क्षेत्र व्यापक होता है।

प्र.6. अनुवाद की प्रकृति या स्वरूप क्या है?

उत्तर कला वह है जिसमें सर्जक किसी रचना का इस प्रकार निर्माण करता है कि उसमें उसकी कल्पना, सहजता, स्वाभाविकता और भावनाओं की झलक मिलती है। इसी कारण कला को व्यक्तिनिष्ठ माना गया है। कोई कलाकृति कैसी होगी, यह कलाकार पर निर्भर करता है।

प्र.7. मशीनी अनुवाद से क्या तात्पर्य है?

उत्तर कंप्यूटर प्रोग्राम की सहायता से एक भाषा के पाठ का अनुवाद दूसरी भाषा में करने को यांत्रिक या मशीनी अनुवाद कहते हैं। किसी अन्य भाषा में लिखे पाठ का इसके द्वारा, तुरन्त दूसरी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है जो सूचना तथा ज्ञान के प्रसार में अत्यंत सहायक है।

प्र.8. मशीनी अनुवाद का आविष्कार किसने किया था?

उत्तर मशीनी अनुवाद की उत्पत्ति का पता 9वीं शताब्दी के अरबी किप्टोग्राफर अल-किड़ी के कार्य से लगाया जा सकता है; जिन्होंने किप्टैनालिसिस, आवृत्ति विश्लेषण और समात्यता एवं सांख्यिकी सहित प्रणालीगत भाषा अनुवाद के लिए तकनीक विकसित की, जो आधुनिक मशीनी अनुवाद में उपयोग की जाती है।

TOUCH 'n PASS

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद से आप क्या समझते हैं? परिभाषित कीजिए।

उत्तर

अनुवाद का अर्थ

कई शब्द कोशों में अनुवाद का अर्थ है—उल्था, भाषान्तर, पुनल्लेख या पुनरुक्ति, पश्चात् कथन, दुहराना, पुन: कथन कहना, ज्ञात को कहना, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, मीमांसा में किसी विधि प्राप्त आशय का दूसरे शब्दों में ठहराव, आवृत्ति, सार्थक आवृत्ति-किया गया है। पश्चिम के भाषा शास्त्री मोनियर विलियम्स अनुवाद शब्द के उक्त विभिन्न अर्थ की पुष्टि इस प्रकार करते हैं—Anuvad is saying after or again, repeating by way of explanation, explanatory, repetition or reiteration with corroboration or illustration, explanatory reference to anything already said." कुल मिलाकर अनुवाद का अर्थ है—बाद में दुबारा कहना, व्याख्यात्मक रूप से पुन: कथन निर्देश अथवा उद्धरण द्वारा व्याख्यात्मक पुन: कथन, पहले कही गयी वस्तु का व्याख्यात्मक निर्देश ही अनुवाद है।

अनुवाद की परिभाषा

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में आचार्यों ने अनुवाद को 'अनुवाक्' तथा 'अनुवचन' भी कहा है। ऋग्वेद में इसके लिए 'अनुवदति' अर्थात् 'पीछे से कहता है' या 'दुहराता है' का प्रयोग मिलता है। कुल मिलाकर यह कि विभिन्न ग्रंथों में अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ दी गई हैं, उनमें से कुछ को इस प्रकार देखा जा सकता है—

1. **ऐतरेय ब्राह्मण** के अनुसार, "यद वाचि प्रोदितामयाम् अनुब्रूयाद् अन्यस्यैवैनम् उदितानुवादिनम् कुर्यात।"
2. **पाणिनि** के अनुसार, "सदा प्रतिपत्त प्रमाणान्तरावगतमप्यर्थं कार्यान्तरार्थ प्रयोक्ता पतिपाद्यते तदानुवादो भवति" अर्थात् किसी और प्रमाण से विदित को ही, दूसरे कार्य के लिए किसी के द्वारा श्रोता से जब कहा जाता है, तब अनुवाद होता है।
3. **काशिका** में अनुवाद का अंकन इस प्रकार किया गया है—"प्रमाणान्तरावगतस्यार्थस्य शब्देन संकीर्तन मात्रमनुवाद:" अर्थात् अन्य किसी प्रमाण से जानी हुई बात का शब्द के द्वारा कथन ही अनुवाद है।
4. **मनुस्मृति** के टीकाकार कुल्लूक भट्ट कहते हैं— "सामागानश्रुतौ ऋग्यजुषोरनध्याय उक्तस्तस्यामनुवाद:" यहाँ भी अनुवाद का अर्थ पुन: कथन ही है।
5. **जैमिनीय न्यायमाला** में कहा गया है— "ज्ञातस्य कथनमनुवाद:" अर्थात् ज्ञात का कथन ही अनुवाद है।
6. सुप्रसिद्ध भाषा विज्ञानी और कोशकार स्व० **डॉ० भोलानाथ तिवारी** 'अनुवाद' को निम्न प्रकार से चित्रित करते हैं—"भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है— इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनत: और कथ्यत:) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग। इस प्रकार अनुवाद 'निकटतम समतुल्य और सहज प्रतिप्रतीकन' या 'यथासाध्य समानक प्रतिप्रतीकन प्रक्रिया' है अर्थात् प्रतिप्रतीकन यथासाध्य ऐसा होना चाहिए कि स्रोत भाषा के कथ्य में लक्ष्य भाषा में आने पर न तो विस्तार हो, न संकोच या अन्य किसी प्रकार का परिवर्तन। साथ ही स्रोत भाषा में कथ्य और अभिव्यक्ति का जैसा सामंजस्य हो, लक्ष्य भाषा में अनूदित होने पर भी यथा साध्य दोनों का सामंजस्य वैसा ही हो। संक्षेप में अनुवाद कथनत: और कथ्यत: निकटतम सहज प्रतिप्रतीकन-प्रक्रिया है।
7. नाइडा (Nida) कहते हैं कि, "Translating consists in producing in the receptor, language the closest natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondary in style."
8. कैटफोर्ड (Catford) के विचार से एक भाषा में अनुभव संप्रेषण ही अनुवाद है— "The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language."
9. फोरेस्टर (Forester) का कथन है कि एक भाषा से दूसरी भाषा में संदर्भों और विचारों का स्थानान्तरण ही अनुवाद है—"Translation is the transference of the content of a text from one language into another, bearing in mind that we cannot always dissociate the content from the form."
10. पश्चिम के ही एक अन्य विद्वान के विचार से, "अनुवाद एक कस्टम हाउस है, जिससे होकर स्रोत भाषा के प्रयोग का विदेशी माल लक्ष्य भाषा में अन्य स्रोतों की तुलना में अधिक आ जाता है, यदि अनुवादक सतर्कता न बरते।"

TOUCH 'n' PASS

प्र.2. अनुवाद का स्वरूप कैसा होता है? संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

अनुवाद के स्वरूप

अनुवाद के स्वरूप के सन्दर्भ में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्ववज्जन अनुवाद की प्रकृति को ही अनुवाद का स्वरूप मानते हैं, जब कि कुछ भाषाविज्ञानी अनुवाद के प्रकार को ही उसके स्वरूप के अन्तर्गत स्वीकारते हैं। इस सम्बन्ध में **डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव** का मत ग्रहणीय है। उन्होंने अनुवाद के स्वरूप को **सीमित** और **व्यापक** के आधार पर दो वर्गों में बाँटा है। इसी आधार पर अनुवाद के **सीमित स्वरूप** और **व्यापक स्वरूप** इस प्रकार से हैं—

1. **अनुवाद का सीमित स्वरूप**—अनुवाद की साधारण परिभाषा के अंतर्गत पूर्व में कहा गया है कि अनुवाद में एक भाषा के निहित अर्थ को दूसरी भाषा में परिवर्तित किया जाता है और यही अनुवाद का सीमित स्वरूप है। सीमित स्वरूप (भाषांतरण संदर्भ) में अनुवाद को दो भाषाओं के मध्य होने वाला 'अर्थ' का अंतरण माना जाता है। इस सीमित स्वरूप में अनुवाद के दो आयाम होते हैं—पाठधर्मी आयाम तथा प्रभावधर्मी आयाम।
   पाठधर्मी आयाम के अंतर्गत अनुवाद में स्रोत-भाषा पाठ केन्द्र में रहता है जो तकनीकी एवं सूचना प्रधान सामग्रियों पर लागू होता है। जबकि प्रभावधर्मी अनुवाद में स्रोत-भाषा पाठ की संरचना तथा बुनावट की अपेक्षा उस प्रभाव को पकड़ने की कोशिश की जाती है जो स्रोत-भाषा के पाठकों पर पड़ा है। इस प्रकार का अनुवाद सृजनात्मक साहित्य और विशेषकर कविता के अनुवाद में लागू होता है।
2. **अनुवाद का व्यापक स्वरूप**—अनुवाद के व्यापक स्वरूप (प्रतीकांतरण संदर्भ) में अनुवाद को दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के मध्य होने वाला 'अर्थ' का अंतरण माना जाता है। ये प्रतीकांतरण तीन वर्गों में बाँटे गए हैं—
   (i) **'अंत भाषिक' अनुवाद** (अन्वयांतर) का अर्थ है एक ही भाषा के अंतर्गत अर्थात् अंत: भाषिक अनुवाद में हम एक भाषा के दो भिन्न प्रतीकों के मध्य अनुवाद करते हैं। उदाहरणार्थ, हिन्दी की किसी कविता का अनुवाद हिन्दी गद्य में करते हैं या हिन्दी की किसी कहानी को हिन्दी कविता में बदलते हैं तो उसे अंत: भाषिक अनुवाद कहा जाएगा। इसके विपरीत अंतर भाषिक अनुवाद में हम दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के भिन्न-भिन्न प्रतीकों के बीच अनुवाद करते हैं।
   (ii) **अंतर भाषिक अनुवाद** (भाषांतर) में अनुवाद को न केवल स्रोत-भाषा में लक्ष्य-भाषा की संरचनाओं, उनकी प्रकृतियों से परिचित होना होता है, वरन् उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं, धार्मिक विश्वासों, मान्यताओं आदि की सम्यक् जानकारी भी उसके लिए बहुत ही आवश्यक है, अन्यथा वह अनुवाद के साथ न्याय नहीं कर पाएगा। अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद में किसी भाषा की प्रतीक व्यवस्था से किसी अन्य भाषेत्तर प्रतीक व्यवस्था में अनुवाद किया जाता है।
   (iii) **अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद** (प्रतीकांतर) में प्रतीक-1 का सम्बन्ध तो भाषा से ही होता है, जबकि प्रतीक-2 का सम्बन्ध किसी दृश्य माध्यम से होता है। उदाहरण के लिए, अमृता प्रीतम के 'पिंजर' उपन्यास को हिन्दी फिल्म 'पिंजर' में बदला जाना अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद है।

प्र.3. मशीनी अनुवाद कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर

मशीनी अनुवाद के प्रकार

मानव तथा मशीन के अंत:सम्बन्ध को दृष्टि में रखते हुए अनुवाद के सामान्यतया निम्नलिखित प्रकार माने जाते हैं—

1. **मशीन साधित मानव अनुवाद**—मशीन साधित मानव अनुवाद में मशीन मानव की सहायता करती है। इसी क्रम में अनुवाद स्मृतियों (Translation Memories) का विकास शामिल है, जिसके अंतर्गत कम्प्यूटरीकृत शब्दकोशों, पदबंध कोशों, बहुशाब्दिक अभिव्यक्तियों का निर्माण आता है, जिससे अधिक समय नष्ट किए बिना मानव अनुवादक मशीन की सहायता लेकर अनुवाद कार्य को तीव्र गति से कर सकता है।
2. **मानव साधित मशीनी अनुवाद**—दूसरा प्रकार मानव साधित मशीनी अनुवाद है। इसमें विश्लेषण करते हुए जेनरेशन प्रक्रिया के लिए कई कार्यक्रम विकसित किए जाते हैं। इनमें टैगिंग (व्याकरणिक कोटियों की पहचान), एनोटेशन (क्रिया के साथ वाक्य के अन्य घटकों (कर्ता, कर्म, कारक संबंधों आदि की पहचान), मिश्र वाक्यों के अंतर्गत गौण उपवाक्यों का प्रधान उपवाक्य से संबंध आदि कार्यक्रम आते हैं। इनकी सहायता से मशीन को स्रोत भाषा के पाठ विश्लेषण (पार्सिंग) में सहायता मिलती है।

TOUCH 'n' PASS

3. **मशीनी अनुवाद**—इस प्रकार के अनुवाद में विश्लेषण, अंतरण तथा समायोजन (जेनरेशन) की सारी प्रक्रियाएँ मशीन करती हैं।
4. **नियम आधारित मशीन अनुवाद**—इस नियम आधारित मशीनी अनुवाद में, स्रोत के बारे में भाषाई जानकारी और ऑब्जेकट टेक्स्ट के अर्थ और वाक्यात्मक विश्लेषण का उपयोग कर अनुवाद किया जाता है। इस तकनीक में, हम ऑब्जेकट टेक्स्ट के साथ स्रोत टेक्स्ट की संरचना करते हैं। स्थानांतरण आधारित मशीन अनुवाद में प्रयुक्त भाषा जोड़ी का उपयोग किया जाता है, जिससे कि लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जा सकता है।
5. **इनटर्रलिंगुअल मशीन अनुवाद**—इसमें स्रोत टेक्स्ट सर्वप्रथम ईन्टरलिंगुआ ऑब्जेकट भाषा में बदल दिया जाता है और पिफर वह ऑब्जेकट भाषा में परिवर्तित कर दिया जाता है। वर्तमान में शब्दकोश प्रविष्टियों के रूप में शब्दकोश आधरित मशीन अनुवाद भी किया जाता है।
6. **सांख्यिकीय मशीन अनुवाद**—सांख्यिकीय मशीन अनुवाद समानान्तर कोष का उपयोग करता है, जिसमें सांख्यिकीय पद्धति का उपयोग करके अनुवाद शामिल है। उदाहरण आधरित मशीन अनुवाद में अनुवाद के लिए कुछ घटकों को चुना जाता है, और उसके बाद इन घटकों को लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जाता है और फिर सभी अनुवादित घटकों को पुनः व्यवस्थित कर दिया जाता है।
7. **हाइब्रिड मशीन अनुवाद**—हाइब्रिड मशीन अनुवाद मशीन में सभी प्रकार के अनुवाद के तरीकों को जोड़कर अनुवाद किया जाता है, जो एक बेहतर अनुवाद प्रस्तुत करता है।

प्र.4. अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएँ

एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना अनुवाद कहलाता है जैसे कि हिन्दी भाषा में कहे गए किसी कथन का अंग्रेजी में कहना अनुवाद है हालाँकि अनुवाद का इतिहास काफी पुराना है लेकिन आज वैश्वीकरण के दौर में जब दो अलग-अलग भाषा के लोग संचार और व्यापार कर रहे है तो अनुवाद की भूमिका और भी बढ़ जाती है और यह अनुवाद करना, किसी मशीन का काम नहीं है। वर्तमान समय में कम्प्यूटर के आने से अनुवाद करना काफी हद तक आसान हो गया है लेकिन अनुवाद के लिए पूरी तरह से मशीन पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। क्योंकि मशीन ज्यादा से ज्यादा 70% तक अनुवाद कर सकती है और बाकि 30% को पूरा करने के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती ही है। फिलहाल मशीन या कम्प्यूटर द्वारा अनुवाद बहुत कम देखने को मिलता है और अनुवाद करवाने वाले अधिकांश संगठन किसी व्यक्ति से अनुवाद करना पसंद करते है जिसे **अनुवादक** कहा जाता है। ये सभी अनुवादक प्रोफेशनल होते हैं और इन्हें अनुवाद करने के लिए अच्छा वेतन दिया जाता है।

भारत में अनुवादक की आवश्यक सरकारी और निजी क्षेत्र दोनों को ही है और आने वाले समय में इसकी माँग बढ़ने की उम्मीद है। आज बाजारवाद के इस दौर में हम अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के कई विकल्प देख सकते है। हम भारतीय परिपेक्ष को ध्यान में रखते हुए हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के सम्बन्ध कर सकते हैं। लेकिन अनुवाद किसी भी दो भाषाओं के बीच हो सकता है। अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की निम्नलिखित सम्भावनाएँ हो सकती हैं—

1. **सरकारी विभाग**—सरकार के लगभग सभी विभागों में अनुवादक की आवश्यकता होती है जो सरकारी दस्तावेजो का अनुवाद करते है। भारत में राजभाषा अधिनियम के तहत सभी सरकारी दस्तावेजो का अंग्रेजी और हिंदी भाषा में होना अनिवार्य है। साथ ही राज्य सरकारों में क्षेत्रीय भाषाओ को भी मान्यता दी जाती है। इन सभी दस्तावेजो के अनुवाद के लिए अनुवादक की आवश्यकता होती है।

   इसके अतिरिक्त संसद या विधानसभा में इंटरप्रेटर की पोस्ट भी होती है जिनका काम भाषण दे रहे लीडर की बातों को साथ-साथ अनुवाद करना होता है। यह काम लगभग सभी भारतीय भाषाओं में होता है। जैसे—अंग्रेजी में भाषण दिया जा रहा है और साथ-साथ उसे एक अनुवादक हिन्दी में बोल रहा है और दूसरा अनुवादक किसी और भाषा में बोल रहा है।

   सरकार द्वारा चल रहे मीडिया हाउस दूरदर्शन और आकाशवाणी में अनुवादक की बहुत अहम् भूमिका है। आपने देखा होगा कि आकाशवाणी और दूरदर्शन पर आने वाले सभी समाचार किसी एक भाषा में नहीं बल्कि कई भाषाओ में होते है। यह काम भी अनुवादकों का ही होता है।

   भारत के सभी बैंको में भी अनुवादक की पोस्ट होती है जो की वाणिज्य से जुड़ी सभी नीतियों और नियमों का अनुवाद करते है इसके अतिरिक्त कोर्ट में भी अनुवादक के लिए रोजगार के विकल्प मौजूद हैं। जो क़ानूनी मामलों का अनुवाद करते हैं।

TOUCH 'n' PASS

2. **निजी क्षेत्र**—निजी क्षेत्र में कई ऐसे क्षेत्र है जिनमें आवश्यकता होती हैं, आज **न्यूज मीडिया** अनुवाद के बिना अधूरा है। अखबार हो या टीवी देश-विदेश की खबर अपने लोगों को बताने के लिए एक अनुवादक ही काम आता है हालाँकि इस बात में भी कोई शक नहीं की मीडिया में रोजगार पाने के लिए पत्रकारिता की डिग्री भी अनिवार्य है। अधिकतर न्यूज एजेंसियाँ पत्रकार कम अनुवादक को ही रोजगार देती है।

   हालाँकि अनुवाद किसी भी दो भाषाओं के बीच किया जा सकता है जिसके लिए उन भाषाओं का पूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य है जिस देश की वो भाषाएँ हैं। फिलहाल भारत में हिन्दी-अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद का बोलबाला है लेकिन अगर आप कोई भी दो भाषाएँ अच्छे से जानते हैं तो उससे जुड़े अनुवाद के क्षेत्र में भी करियर तालाश सकते है।

प्र.5. अनुवाद तथा लिप्यंतरण में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

अनुवाद तथा लिप्यंतरण

अनुवाद (Translation) के साथ ही जुड़ा पद लिप्यंतरण (Transliteration) है। भाषा का रूपांतरण अनुवाद है, जबकि लिपिमात्र का परिवर्तन लिप्यंतरण; कई शब्द ऐसे होते हैं जिनका अनुवाद न तो सम्भव है और न ही समीचीन विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में इस तरह के कोई उदाहरण मिलते हैं। इस स्थिति में लिपि का सामर्थ्य काम आता है। देवनागरी लिप्यंतरण के लिए संसार की सबसे सक्षम लिपि है क्योंकि इसमें हम जैसा बोलते हैं, वैसा ही लिखते भी हैं। समाचारों की दुनिया में कई पद यथा महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों स्थानों, संस्थानों, विज्ञान एवं तकनीकी उपकरणों और प्रक्रियाओं आदि के नाम सटीक लिप्यंतरण द्वारा ही हिन्दी में प्रस्तुत किए जाते हैं। लिप्यंतरण का प्रयोग खेल के क्षेत्र में बहुत अधिक होता है। खेल से जुड़े विभिन्न शब्द हिन्दी में अंग्रेजी से जस के तस ले लिए जाते हैं और फिर वह खेल प्रेमियों की जुबान पर इस तरह चढ़ जाते हैं कि यह सोचना भी मुश्किल हो जाता है कि ये शब्द हमारी भाषा के नहीं हैं। फुटबाल, क्रिकेट, बॉल, गोल्फ, टाई, ड्रा आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जो हिन्दी में हिन्दी शब्दों की तरह ही रच बस गए हैं।

लिप्यंतरण में इस बात का खास ध्यान देना चाहिए कि व्यक्तिपरक शब्दों का लिप्यंतरण वैसा ही हो जैसा मूल भाषा में उसका उच्चारण होता है। अनेक बार किसी स्पेनिश, डच या दक्षिण अमेरिकी देश के किसी महत्त्वपूर्ण कवि, लेखक या कलाकार के अचानक प्रसिद्धि पा जाने पर अलग-अलग अखबारों में उनके नाम अलग-अलग तरह से लिखे जाते हैं। कई अच्छे प्रकाशन समूह अपने यहाँ स्टाइल बुक भी रखते हैं जिसमें ऐसे किसी भी नए नाम के चर्चा में आने पर उसका एक लिप्यांतरित हिन्दी नाम तय कर दिया जाता है और फिर अखबार के सभी संस्करणों में उसी नाम का प्रयोग किया जाता है।

प्र.6. 'अनुवाद कला है अथवा विज्ञान' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

अनुवाद कला है अथवा विज्ञान

कला तथा शिल्प में अन्तर तो है किन्तु वास्तविकता यह है कि शायद ही ऐसी कोई कला हो, जिसमें शिल्प की बिल्कुल अपेक्षा न हो और शायद ही ऐसा कोई शिल्प हो, जिसमें कला पूर्णत: अनपेक्षित हो। कला एक प्रकार की सर्जना (creation) है। व्यक्ति में वह प्राय: सहज अधिक होती है। केवल अभ्यास या शिक्षण से कोई कलाकार नहीं बन सकता, जब तक उसमें सहज प्रतिभा न हो। काव्य, मूर्ति, चित्र, आदि इसीलिए कला है। इसके विपरीत जिन्हें प्राय: उपयोगी कला (जैसे फर्नीचर बनाना, बर्तन बनाना, संदूक बनाना, जिल्द बनाना, मशीनें बनाना आदि) कहा गया है, शिल्प हैं। उन्हें अभ्यास और शिक्षण के द्वारा अर्जित किया जा सकता है। प्राय: लुहार का बेटा लुहार, सुनार का सुनार, जूते बनाने वाले का जूते बनाने वाला या बढ़ई का बढ़ई हो जाता है, क्योंकि वातावरण तथा अभ्यास आदि से वह सीख जाता है, किन्तु कवि का बेटा कवि हो या चित्रकार का चित्रकार हो यह कम ही देखा जाता है, क्योंकि ये चीजें केवल वातावरण या अभ्यास से नहीं आतीं, इनमें सहज प्रतिभा भी अपेक्षित होती है। कला और शिल्प का सबसे बड़ा अन्तर यह है कि कला में व्यक्ति आत्माभिव्यक्ति करता है, उसका व्यक्तित्व उसमें आ जाता है जबकि शिल्प में वह न तो आत्माभिव्यक्ति करता है और न ही, कुछ अपवादों को छोड़कर (और वे अपवाद शिल्प न होकर कला होते हैं) उसका व्यक्तित्व ही उसमें आता है।

जहाँ तक अनुवाद की बात है, अनुवादक अनुवाद में आत्माभिव्यक्ति नहीं करता, जो कवि, मूर्तिकार आदि कलाकार अपनी कृति में करते हैं। इस प्रकार अनुवाद उस रूप में तो कला निश्चित ही नहीं है, जिस रूप में काव्य, चित्र, मूर्ति आदि हैं, किन्तु अनुवादक का व्यक्तित्व अनुवाद में अवश्य ही बड़ा प्रभावी होता है। इसीलिए एक ही मूल सामग्री के दो व्यक्तियों द्वारा किए गए अनुवाद, प्राय: भिन्न होते हैं। इस तरह अनुवादक भी एक सीमा तक सर्जक है और काव्य आदि यदि सर्जना (creation) हैं तो अनुवाद पुन: सर्जना (recreation) है। केवल प्रक्रिया का अन्तर है। मूल कलाकार अपने भावों को अपनी कला में उतारता है, जबकि अनुवादक किसी और मूल के आधार पर सृजन करता है। मूल का हृदयंगम करके वह अपने अनुसार लक्ष्य भाषा में ढालता है। इस

कलात्मकता के कारण ही हर व्यक्ति केवल योग्यता और अभ्यास से अच्छा अनुवादक नहीं बन सकता। अन्य अनेक गुणों की भाँति ही यह अनुवाद कला भी कुछ ही अनुवादकों में होती है और एक सीमा तक सहजात होती है।

किन्तु यदि बहुत अच्छे अनुवादकों की बात छोड़ दें तो काफी अनुवादक ऐसे ही होते हैं जो अनुवाद कर तो लेते हैं किन्तु उनके अनुवाद की उपलब्धि शिल्प से आगे नहीं बढ़ पाती। योग्यता, अभ्यास तथा वातावरण आदि से व्यक्ति इस प्रकार का अनुवादक बन सकता है। इसके लिए किसी भी सहज प्रतिभा की कोई खास आवश्यकता नहीं। किन्तु इस श्रेणी के अनुवादक ठीक वैसे ही करते हैं जैसे अन्य शिल्पों के शिल्पी करते हैं। वे पुनः सर्जना नहीं कर पाते।

यह तो संकेत किया जा चुका है कि हर कला के लिए प्रायः कुछ शिल्प की तथा हर शिल्प के लिए कुछ कला की अपेक्षा होती है। यही बात अनुवाद में भी है। अपवादों की बात छोड़ दें तो हर अनुवाद में एक सीमा तक शिल्प तथा कला दोनों की अपेक्षा होती है और हर कलाकार अनुवादक, शिल्पी भी होता है और हर शिल्पी अनुवादक, एक सीमा तक कलाकार भी होता है। किसी भी अनुवाद को देखकर इसका अनुमान लगाया जा सकता है कि उसमें कला का अपेक्षित अंश है या वह केवल एक शिल्पी की ही कृति है। इसका सम्बन्ध विषय से भी होता है। यदि मूल सामग्री केवल सूचनाओं या तथ्यों से युक्त है या विज्ञान आदि की है, जिसमें सूत्रों की प्रधानता है और अभिव्यक्ति का कोई खास महत्त्व नहीं है तो उसके अनुवाद के साथ शिल्पी न्याय कर लेगा किन्तु मान लीजिए कविता का अनुवाद करना है जिसमें भाव है तथा जिसका बहुत-कुछ सौन्दर्य उसकी अभिव्यक्ति पर आधृत है तो उसके लिए अनुवाद-कला अनिवार्यतः आवश्यक होगी, केवल अनुवाद-शिल्प से अनुवाद में अपेक्षित बात नहीं आ सकती। इस प्रकार अनुवाद विज्ञान भी है, शिल्प भी है और कला भी है।

प्र.7. मशीनी अनुवाद के व्याकरण तथा पद-व्याख्या पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

मशीनी अनुवाद में व्याकरण तथा पद-व्याख्या

आरंभ में ही यह बात भली-भाँति समझ ली गई थी कि जिस पाठ को अनुवाद के लिए कम्प्यूटर में डाला जाना है उसका सुव्यवस्थित विश्लेषण मशीनी अनुवाद का अनिवार्य अंग है। वाक्यात्मक विश्लेषण में अनूद्य पाठ के वाक्य संघटक (constituent) को पहचानना और उस पर आश्रित संरचना का विश्लेषण शामिल है। हालाँकि इस सम्बन्ध में किस दृष्टिकोण को अंतिम माना जाए, इस बात को लेकर अभी सहमति नहीं हो पाई है।

स्वाभाविक भाषा की पद-व्याख्या देना 1968 से 1978 तक भाषा विज्ञान के सर्वाधिक व्यापक अनुसंधान विषयों में से एक रहा है। व्यापक रूप से प्रयुक्त जिन व्याकरणिक रूपों (formalism) पर वर्तमान पद व्याख्या प्रणालियाँ आधारित हैं, उनमें सामान्यीकृत पदबंध संरचनात्मक व्याकरण, विभिन्न प्रकार्यात्मक व्याकरण और वे "स्थिति प्रकार्य नियम" पद्धतियाँ शामिल हैं जिन्हें व्याकरण में पारम्परिक भाषायी या संकल्पनात्मक अर्थ में इस्तेमाल नहीं किया जाता।

इस समय अधिकांश मशीनी अनुवाद कम्प्यूटर प्रणालियों में स्रोत भाषा पाठ की पद-व्याख्या एक ऐसी संरचना के रूप में की जाती है जिसमें दो चीजों को देखा जाता है—

1. वाक्य के प्रमुख घटक सम्बन्धी जानकारी; तथा
2. क्रियाओं और संज्ञाओं की कारक (case) सम्बन्धी जानकारी।

इस प्रक्रिया में वाक्यात्मक तथा गैर-अनुमानाश्रित अर्थपरक (non-inferential sementic) नियमों का समानांतर प्रयोग होता है। विभिन्न कम्प्यूटर प्रणालियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के पद व्याख्यायक अथवा पद परिचायक (parsers) लगे होते हैं। हालाँकि उनकी संगठनात्मक विशिष्टताओं का उल्लेख कम्प्यूटरों में नहीं होता।

प्र.8. अनुवाद के विविध विषय-क्षेत्र और मशीनी अनुवाद पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।

उत्तर

अनुवाद के विविध विषय-क्षेत्र और मशीनी अनुवाद

मशीनी अनुवाद की विभिन्न पद्धतियों और सम्भावनाओं का अध्ययन करने के बाद भी एक प्रश्न जो हमारे मन में लगातार बना रहता है वह यह है कि क्या मशीनी अनुवाद मानवीय अनुवादकों का स्थान ले सकता है अथवा यह केवल मनुष्य का सहायक ही बन सकता है। अब तक विकसित कम्प्यूटर प्रणालियों तथा कम्प्यूटर इंजीनियरिंग और संगठनात्मक भाषाविदों के अनुभव बताते हैं कि अभी तक कोई मशीन ऐसी नहीं जो मानवीय मस्तिष्क का स्थान ले सके। हर पाठ/विषय का पूर्ण स्वचालित अनुवाद अभी भी एक स्वप्न ही है।

अनुवाद विनिर्देश (Translation specifications) मशीनी अनुवाद का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। कुछ क्षेत्रों में ये बहुत उपयोगी होते हैं; जैसे—मौसम सम्बन्धी अनुमानों के प्रसारण में । मौसम रिपोर्टों का अनुवाद लगभग पूरा ही कम्प्यूटर पर कर लिया जाता है। अनुवादक द्वारा संपादन बहुत ही थोड़ा-बहुत अपेक्षित होता है। लेकिन सभी विषयों/क्षेत्रों में ऐसा नहीं है। उदाहरण

के लिए, व्यावसायिक विज्ञापन सामग्री के अनुवाद को ही लें। वहाँ मशीनी अनुवाद की माँग बहुत ही कम है। कारण, वहाँ शाब्दिक अथवा वाक्यपरक पर्यायों को प्रतिस्थापित करने से काम नहीं चलता। ध्यानाकृष्ट करने वाला सृजनात्मक अनुवाद अपेक्षित होता है।

इसी तरह तकनीकी, विधिक, साहित्यिक अनुवादों में भी मशींनी अनुवाद की स्थिति भिन्न-भिन्न है। तकनीकी अनुवाद में पाठ अक्सर सूचनात्मक होते हैं। इनमें शब्दावली की स्थिरता तथा वाक्य-विन्यास की सरलता होती है।

विधिक अनुवाद में केवल शब्दों और पदबंधों के पर्याय प्रस्तुत कर देना पर्याप्त नहीं होता, वाक्यांशों और वाक्यों के पर्याय सुनिश्चित और स्थिर करने होते हैं। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की विधि-व्यवस्थाओं के बीच भेदों का संतुलन भी अनुवाद के दौरान करना होता है।

साहित्यिक अनुवाद में कथ्य के साथ-साथ कथन का ढंग और शैली बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। साथ ही इसमें कोई एक निश्चित अनुवाद नहीं हो सकता। हर अनुवाद एक नया पुन:सृजन होता है। फिर स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा संस्कृतियों और जीवन-स्थितियों में पर्याप्त अंतर होता है। अत: स्रोत भाषा पाठ को लक्ष्य भाषा के अनुरूप अंतरित किया जाता है। काव्यानुवाद में छंद निर्वाह अथवा छंद से मुक्ति का भी प्रश्न होता है।

अनुवाद की इन विशिष्टताओं की दृष्टि से मनुष्य और मशीन के पारस्परिक सहयोग के स्तर और सीमा में तो अंतर आता ही है, कुछेक क्षेत्रों में मशीनी अनुवाद की बजाए मनुष्य द्वारा अनुवाद ही वांछित होता है। साहित्य ऐसा ही क्षेत्र है, विज्ञापन में भी मशीनी अनुवाद की भूमिका नगण्य-सी है। विधिक क्षेत्र इतना सुनिश्चित और यथातथ्य तथा सूक्ष्म प्रभेदों वाला होता है कि वहाँ भी मनुष्य द्वारा अनुवाद ही बेहतर माना जाता है। हाँ सूचनापरक और उसमें भी सुनिश्चित तथा कम-से-कम वैविध्यपरक क्षेत्रों से सम्बन्धित सामग्री के अनुवाद में कम्प्यूटर से पर्याप्त सहायता मिलती है।

मशीनी अनुवाद का उद्देश्य वास्तव में मनुष्य की अनुवाद क्षमता में वृद्धि करना है। कम्प्यूटर उसे त्वरित गति से शब्दावली पर्याय प्रदान करके उसका श्रम बचा सकता है। उसे बड़ी मात्रा में अनुवाद करके दे सकता है जिसके अनुवादोत्तर संपादन में अनुवाद की तुलना में कम समय लगता है। यदि मनुष्य उसका पूर्व-संपादन कर दे तो अनुदित पाठ को अंतिम रूप में प्रदान किया जा सकता है। यदि वह कम्प्यूटर पटल पर अनुवाद सामग्री प्रस्तुत करे तो उसका अनूद्य रूप दे सकता है। लेकिन कम्प्यूटर मनुष्य को विस्थापित कर स्वयं कुशल अनुवादक नहीं बन सकता। वह विभिन्न विषय क्षेत्रों में भेद करके स्वयं विषयानुकूल अनुवाद नहीं कर सकता।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद के महत्त्व का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

अनुवाद का महत्त्व

बीसवीं सदी को कई भाषा-विज्ञान-पंडितों ने 'अनुवाद' या 'पुनस्सृजन' का युग पुकारा है। इस सदी में राजनीति एवं सामाजिक कारणों से संसार के बड़े व छोटे देशों के लिए एक-दूसरे का घनिष्ट बनने की अनिवार्यता अनुभव होने लगी। वाणिज्यिक और औद्योगिक विकास के लिए एक देश की संस्था के लिए अन्य देशों की संस्थाओं व संस्कारों से संपर्क अनिवार्य हो गया। बहुराष्ट्रीय संस्थाएँ अनेक देशों में अपनी शाखाएँ स्थापित करती गई। संयुक्त राष्ट्रसंघ और यूनेस्को अपना कार्यकलाप संघ द्वारा मान्यता प्राप्त कई विभिन्न भाषाओं में करने के लिए बाध्य हो गए। विज्ञान और ज्ञान की विविध धाराओं में प्रमुख भाषाओं में एक आविष्कार एवं नए सिद्धान्त चर्चित होते गए तो अन्य देशों के लोगों के लिए इनका ज्ञान पाना आवश्यक अनुभव हुआ। अनुवाद इसका एकमात्र साधन था। इस विविध दिशाओं का कार्य बहुत बड़े पैमाने पर करना था। अमेरिका और रूस में थोक रूप में वैज्ञानिक पत्रिकाओं का अनुवाद किया जाने लगा। बताया जाता है कि यूरोपीय संघ (EEC) करीब 1600 अनुवादकों से अनुवाद कराता था। **स्पिट्जबार्ड** के अनुसार सन् 1967 में प्रतिवर्ष 80,000 वैज्ञानिक पत्रिकाओं का अनुवाद होता था। अब तो उससे कई गुना अधिक पत्रिकाओं का अनुवाद होता ही होगा।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर की झलक हमें अनुवाद की व्यापकता बताती है। भारत जैसे बहुभाषाभाषी राष्ट्र में वर्तमान शताब्दी में—खासकर इस सदी के उत्तरार्द्ध में विभिन्न भारतीय भाषाओं द्वारा अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाओं का अनुवाद हुआ हैं भारतीय भाषाओं का परस्पर अनुवाद बड़ी छोटी मात्रा में चलता हैं साधारण लोगों की नजर में साहित्य का अनुवाद की महत्त्वपूर्ण है। उसी को हम अनुवाद की कोटि में लेते हैं। सहित्य की बहुत-सी शाखा हैं। शुद्ध सृजनात्मक साहित्य से बढ़कर समीक्षा, ज्ञान-विज्ञान की अन्य शाखाएँ, संदर्भ-ग्रंथ आदि के क्षेत्र में अनुवाद का योग महत्त्वपूर्ण रहता है। संचार के माध्यम और उनके बहुभाषाभाषी संस्मरण

अनुवाद के उर्वर क्षेत्र हैं। जनसंपर्क और विज्ञापन परस्पर पूरक होते हैं दोनों प्रतिदिन-प्रतिक्षण अनुवाद माँगते हैं। वो अनुवाद अत्यंत व्यापक और महत्त्वपूर्ण विधा सिद्ध हो चुका है।

अनुवाद के महत्त्व निम्न प्रकार से समझा जा सकता हैं—

1. **अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान का अंग**—भाषा के विविध अंगों और प्रवृत्तियों का वैज्ञानिक अध्ययन उन्नीसवीं सदी में शुरू हुआ। बीसवीं सदी में इसका विकास प्रयोगशाला की सहायता से करने लगे। ध्वनि-मापक उपस्कर बने। अन्य विज्ञानों ने तर्क आदि का प्रयोग करते हुए भाषा विज्ञान का अनुप्रयुक्त रूप गढ़ लिया। अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान का सम्बन्ध समाज से, इतिहास से भौतिकी से—यहाँ तक कि स्नायुओं की चिकित्सा से भी स्थापित हो सका। अनुवाद को अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान का एक अंग माना जाने लगा।
2. **अनुवाद शिक्षण की आवश्यकता**—पुराने जमाने में थोड़े-से लोग अपनी इच्छा से गिने-चुने साहित्यिक ग्रंथों का अनुवाद करते थे। वे अपनी प्रतिभा और रुचि के अनुसार यह किया करते थे। अनुवाद केवल एक प्रक्रिया थी। उसका कोई सिद्धान्त-सार नहीं था। किन्तु आधुनिक युग में प्रत्येक भाषा में हजारों अनुवादक लगे हुए हैं। उन्हें अनुवाद में प्रशिक्षण देने की जरूरत पड़ी है। उनको मानक अनुवाद का स्वरूप और उसकी प्रक्रिया समझानी होती है। अनुवाद यद्यपि एक सामान्य शब्द है, तो भी विषय, प्रसंग श्रोता या पाठक, प्रयोजन आदि के अनुसार अनुवाद के रूप एवं प्रविधि में अन्तर है। अनुवादक को इससे परिचित करना जरूरी है। ये अनुवाद की कितनी बारीकियाँ हैं, जिन्हें सीखने से विभिन्न क्षेत्रों के अनुवादकों का दक्षता बढ़ती है। यह तो पेशेवर अनुवादकों की बात रही। साहित्य के क्षेत्र में जिन्हें अनुवाद की सहज रुचि है, वे भी अनुवाद सिद्धांत और अनुवाद-प्रविधि के ज्ञान से उत्तम अनुवादक बन सकते हैं। इससे उन्हें उचित दिशा एवं दृष्टि मिलती है। वे सम्भव गलितियों से पहले ही आगाह हो सकते हैं। प्रशिक्षित अनुवादक अन्य ज्ञान-विज्ञान के विशेषज्ञों को सहायता भी दे सकते हैं। इसलिए अनुवाद का सैद्धांतिक अध्ययन अब अंतर्विद्यावर्ती विद्या का स्थान ग्रहण कर सका है।
3. **अनुवाद का वैज्ञानिक विषय होना**—अनुवाद के लिए प्रशिक्षण की चर्चा से यह प्रश्न उठता है कि क्या अनुवाद ऐसा वैज्ञानिक विषय है जिसमें कुछ सिद्धान्त, फॉर्मूले, नियम आदि हैं जिनको तोड़ा नहीं जा सकता? इसका उत्तर संक्षेप में इस प्रकार दिया जा सकता है—"हाँ, वैज्ञानिक विषय है।" प्रारम्भ में यूरोप में भी प्राकृतिक विज्ञान के अचूक सिद्धान्तों को ही विज्ञान-सिद्धान्त कहते थे। किन्तु वहाँ बाद में विज्ञान की वैज्ञानिक प्रणाली को महत्त्व दिया जाने लगा। क्रमबद्ध एवं तर्कसंगत रूप से अध्ययन किया जाने वाला कोई भी विषय विज्ञान कहलाने लगा। नृतत्व विज्ञान, मनोविज्ञान, गणित विज्ञान, गृह विज्ञान आदि विज्ञानों का विकास इस नई व्याख्या से सम्भव हुआ। भाषाओं के वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध अध्ययन को भाषा-विज्ञान नाम दिया गया। इस परम्परा में आगे चलकर अनुवाद के क्षेत्र में भी अनुवाद-विज्ञान का विकास हो सका। अंग्रेज विद्वानों ने इसे 'Translatology' नाम दिया।

   हम भाषा के अध्ययन के प्रसंग पर व्याकरण का विशेष स्मरण करते हैं। भाषा, व्याकरण का सबसे प्रामाणिक और सुगठित स्वरूप संस्कृत के पाणिनीय व्याकरण में मिलता है। पाणिनीय व्याकरण ने हर बात पर अकाट्य नियम सूत्रों में निर्धारित किए हैं। वर्णों की सन्धि, संज्ञा शब्दों का लिंग, कारक, क्रिया, प्रत्यय, उपसर्ग और समास के विभिन्न प्रकरणों में शुद्धप्रयोग और अशुद्ध प्रयोग को व्याकरणकार स्पष्टत: घोषित करते हैं। इस व्याकरण की प्रामाणिकता से प्रभावित होकर आधुनिक भारतीय भाषाओं के व्याकरणकारों ने भी उसी को थोड़ा-बहुत अपना आधार बना लिया।

   आधुनिक भारतीय भाषाओं ने तो अंग्रेजी के प्रभाव को भी अपनी वाक्य रचना में अनेक प्रकार से स्वीकार किया। इसके फलस्वरूप अब वाक्यगत व्याकरण में कुछ प्राचीन प्रवृत्ति है, कुछ अंग्रेजी प्रवृत्ति है। यह एक नवविकसित स्थिति है। यह भारत ही नहीं, अनेक विश्व-भाषाओं की स्थिति है। इस प्रकार के भाषागत परिवर्तन में मुख्य भूमिका अनुवाद की है। अनुवाद को एक संक्रिया (operation) माना गया है। यह गत्यात्मक भी है। इसलिए अनुवाद के क्षेत्र में कोई पाणिनीय व्याकरण नहीं बना है, बनना वांछनीय भी नहीं है। परन्तु अनुवाद के क्षेत्र में समीक्षात्मक और भाषाविज्ञानपरक अध्ययन करते हुए कई विद्वानों ने कुछ सम्मतियाँ दी हैं। इस सम्मतियों को विज्ञान की शब्दावली में 'सिद्धान्त' नाम दिया गया है। ये सिद्धान्त कुछ तो अखिल-भाषाधिष्ठित हैं, किन्तु ये सनातन नहीं हैं। जैसाकि अन्यत्र कहा जा चुका है, इन विद्वानों ने अनुवाद का विषय, पाठक प्रसंग, ध्येय आदि को दृष्टिगत रखकर अपने सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं। जैसे—यूजीन नीडा ने बाइबल के अनुवाद के आधार पर अपना सिद्धान्त रूपायित किया कैटफोर्ड ने अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान पर आधारित सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

अनुवाद के प्रमुख सैद्धांतिक विचार सामान्य अनुवादक के लिए उपयोगी हैं। वह उनका ऐतिहासिक परिचय पा सकता है। विभिन्न विद्वानों का मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकता है। जब अनुवादक को अनुवाद करना पड़ता है तब उसे अनेक व्यावहारिक समस्याओं से जूझना पड़ता है। यों जूझते समय उपर्युक्त मार्गदर्शन से सहायता मिलती है।

4. **लोगों के मेल-मिलाप का साधन**—अनुवाद मानवों के मेल-मिलाप का साधन सिद्ध हुआ है। विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों के लोगों को मिलाने में अनुवाद सेतु का काम करता है। ग्रंथों के विषय में तो अनुवाद नया खजाना खोलने का 'सिम-सिम' है। संसार की एक भाषा की कोई विशिष्ट कृति जब अनुदित होती है जब दूसरी भाषा बोलने वालों को भी वह कृति प्राप्त होती है। जलधि की तरंग की नीति से ग्रंथ का परिचय और फैल जाता है। विश्व का सांस्कृतिक इतिहास प्रमाणित करता है कि विश्व की प्रमुख भाषाओं की प्रमुख कृतियाँ अन्य अनेक भाषाओं में अनुवाद के जरिये पहुँची हैं। इन्हें क्लासिक या श्रेण्य ग्रंथ पुकारा जाता है। ये श्रेण्य ग्रंथ सभी भाषाओं के गौरव ग्रंथ हो गए हैं।
5. **विश्व के महान् ग्रंथों का परिचय**—यवन या ग्रीक भाषा के प्राचीन वाङ्मय में प्लेटो, अरस्तु, सुकरात, यूरिपिडिस, सोफोक्लीस आदि राजनीतिज्ञ एवं दार्शनिक थे। इनके ग्रंथों ने अनुवाद से रोमन जनता को और बाद में यूरोपवासियों को नई सांस्कृतिक, दार्शनिक और कलात्मक चेतना दी। ये ग्रीस के ही ईसप की प्राणि-कथाएँ पहले यूरोप की अन्य भाषाओं में अनुदित हुईं और बाद में संसार की सभी भाषाओं में। ईसप की कथाओं के समान भारत की पंचतंत्र-कथाएँ भी महत्त्व की हैं। वे पहले फारसी से होकर अरबी में पहुँची। फिर अरबी से फ्रांसीसी में और फ्रांसीसी से अन्य यूरोप भाषाओं में अनुदित की गई। अनुदित होते-होते उनके नाम में भी परिवर्तन हो गया। पंचतंत्र अरबी में 'कलील-दमना' पुकारा गया।

ग्रीक के प्रभाव-युग के पश्चात् रोमन प्रभाव युग में सिसरों/होरेस आदि दार्शनिक मनीषियों के ग्रंथ रचे गए जो यूरोप के अन्य देशों में अनुवाद के जरिये पहुँच गए। इंग्लैंड और अंग्रेजी सदियों के बाद ही शानदार हो सकती थीं। तब अंग्रेजी ने इन सब ग्रंथों का धड़ाधड़ अनुवाद करा लिया था।

विश्व-साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों का संक्षिप्त परिचय देने वाले ग्रंथ अंग्रेजी में प्रकाशित हुए हैं। इनकी झाँकी-भर लेने से हम समझ पाते हैं कि विभिन्न विश्व-भाषाओं की श्रेण्य कृतियाँ सारी विश्व भाषाओं में अनुवाद के द्वारा पहुँची हैं। होमर का इलियड व ओडिसी, विलियम चासर नामक अंग्रेज कवि की कैंटरबरी टेयिल्स, लैटीन कवि दांते की डिवाइन कोमैडी, फ्रेंच उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो का ला मिराबिल, इताली के साहित्यकार बोकचियों का 'देकामरण' आदि सारे यूरोप के शिक्षित समाज पर अनुवाद के माध्यम से ही अपनी धाक जमा सके थे।

विश्व के राजनीतिक एवं अर्थशास्त्रीय विकास के युगों में देश-देश में क्रांतिकारी नेता, युग प्रवर्त्तक हुए और उन्होंने अपनी भाषा में रचनाएँ कीं। उन रचनाओं ने पहले अपने देश में तहलका मचा दिया, बाद में पूरे विश्व में यहाँ तक कि समय-समय पर कुछ देशों की सरकारें ऐसे ग्रंथों का प्रकाशन व वितरण रोक देती थीं इससे वे पुस्तकें दुगुने जोर से प्रचारित होती थीं। **चार्ल्स डार्विन** का *'ओरिजिन ऑफ स्पीसिस'* जीवविज्ञान का युग प्रवर्त्तक ग्रंथ था। रूसो की फ्रेंच रचनाएँ फ्रांस की क्रांति की प्रेरक सिद्ध हुईं। ये फ्रेंच साहित्य के साहित्यकार बोदलेयर, मेल्लामें आदि की रचनाएँ सारी विश्व भाषाओं में प्रतीकवाद व रोमांटिकतावाद के उद्‌गम का कारण हो गईं। आगे चलकर सिंगमंड फ्रायड की जर्मन पुस्तक मनोविज्ञान की भूमिका और अन्य पुस्तकें विश्व-भर में अनुदित हो सकीं। यूरोप में यथार्थवाद, अतियथार्थवाद, अस्तित्ववाद आदि जितने भी जीवन दर्शन और साहित्यिक दर्शन मुख्यत: फ्रांस में प्रारम्भ हुए, उनका प्रचार यदि पूरे विश्व में हो सका तो अनुवाद को इसका श्रेय है। इसी तरह जर्मन भाषा में लिखे गए **कार्ल मार्क्स** के *'कैपिटल'* का अनुवाद सारी विश्व भाषाओं में होने से ही विश्वभर में मार्क्सवाद का प्रचार हो सका। सोवियत रूस के विशाल साहित्य का संसार की सभी भाषाओं में अनुवाद किया गया है। तभी तो तलस्ताय, गोर्की, शोलोकोष, दोस्तोवस्की आदि अनेक रूसी साहित्यकार विश्व-भर के साहित्य जगत् में ख्यात हो गए।

संसार में जितने भी प्रमुख धर्म हैं, उनके आदि ग्रंथ अपने देश की विशेष भाषा में लिखे गए थे। उनमें से अधिकांश के अनुयायी विश्व के विभिन्न देशों में बस गए। उन देशों में इस धर्मों का प्रचार भी किया गया। अनुवाद के बिना यह संभव न होता। पाक कुरान का तर्जुमा जिन प्राच्य भाषाओं में किया गया उनमें मुख्य हैं अर्मेनियम, हिब्रू, जावा, मलया, फारसी, पुश्तो, तुर्की, चीन, बर्मी, सिरियक और भारतीय भाषाएँ। पश्चिम की प्राय: सभी भाषाओं में भी कुरान को अनुदित किया गया।

बौद्ध धर्म का प्रचार पूर्व एशिया, चीन, जापान और श्रीलंका में हो गया तो वहाँ बौद्ध ग्रंथों के अनुवाद का क्रम चला। बड़ी संख्या में पालि व प्राकृत ग्रंथ इन देशों की भाषाओं में अनुदित हुए। पालि व प्राकृत ग्रंथों का अनुवाद तथा व्याकरण ग्रंथ कई जर्मन विद्वानों ने प्रस्तुत किए।

प्र.2. अनुवाद के गुणों का विस्तृत उल्लेख कीजिए।

उत्तर

अनुवाद के गुण

अनुवाद की प्रासंगिकता अब बहुत बढ़ी है। विज्ञान, प्रौद्योगिक, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में अनुवाद की जरूरत पड़ती है। अतएव अनुवाद और अनुवादक अब बहुत चर्चित हैं। अनुवाद के सिद्धान्तपक्ष में नए ग्रंथ लिखे जाते हैं। व्यावहारिक पक्ष में अनुवाद बराबर किया जाता है।

कालिदास की मुख्य रचनाएँ—अभिज्ञान शाकुंतलम् और मेघदूतम्–भारत की सभी आधुनिक भाषाओं में अनुदित की गई हैं। वे यूरोप की अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी आदि भाषाओं में भी अनुवाद की गई हैं। एक ही भारतीय भाषा में इनके अनेक अनुवाद मिलते हैं। मलयालम में करीब चालीस लोगों ने शाकुतंलम का अनुवाद किया है। प्रकृति का नियम के अनुसार इनमें दो–तीन अनुवादों को छोड़कर शेष सब विस्मृति में लीन हो चुके हैं। अब इसके प्रकृति का नियम कहकर छोड़ देना वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं हो सकता। इसके कारणों पर गहरा विचार करना चाहिए।

सबसे सरल कारण यह दिया जाएगा कि पाठकों ने इन्हीं को अधिक पंसद किया है। जो पाठकों के द्वारा स्वीकृत होता है उसी का प्रचार होता है। इससे आगे बढ़कर और एक उठ सकता है कि पाठकों द्वारा स्वीकृति की क्या कसौटी है? कभी–कभी बहुत अच्छा अनुवाद वन–पुरुष की तरह लोगों द्वारा उपेक्षित रह जाता है। अनुवादक के व्यक्तित्व का अधिक विख्यात न होना, समाज में उसकी प्रतिष्ठा की कमी, उसके खुशामदियों की कमी आदि इसके कारण हो सकते हैं। वर्षों के बाद जब कोई समीक्षक तटस्थ भाव से इनकी परीक्षा करेगा। तभी सही मूल्य निर्णय कर सकेगा। सामान्य पाठक में उतना धीरज नहीं रहता। सामान्य जन और विचारशील समीक्षक का फर्क कालीदास ने स्वयं दिया है—

संतः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः।

(सज्जन यानि विचारशील समीक्षक गुण–दोष की परीक्षा करके दो कृतियों में से एक को स्वीकार करते हैं। मूढ़ यानि विवेकशीलता से रहित लोग दूसरों के कथन पर अपनी बुद्धि या चिंतन को आश्रित रखते हैं। वे दूसरों की प्रशंसा देख या सुनकर स्वंय भी प्रशंसा करते हैं।)

उपर्युक्त पद्य में जो 'समीक्ष्य' (समीक्षा करके बताया है) शब्द है वह अनुवाद के क्षेत्र के लिए भी लागू है। इसे हम आधुनिक तकनीकी शब्दों में 'गुणवत्ता' या 'क्वालिटी' का विचार कहेंगे।

अनुवाद की गुणवत्ता के विचार में 'अनुवाद' की विविध विद्वानों द्वारा दी हुई परिभाषाएँ हमें मदद देती हैं। मुख्यतः तीन मोटे–मोटे तत्त्व होते हैं। **पहला** है मूल के अर्थ की सुरक्षा। स्रोतभाषा के लेखक का भाव अनुवाद में सुरक्षित रहता है तो अनुवाद अच्छा माना जाता है। **दूसरा** है लक्ष्यभाषा की संरचना व शैली निर्वाह। अगर पाठकों को अनुवाद में लक्ष्यभाषा की संरचना और अन्य प्रवृत्तियों का भंग मिलता है तो उसे सही नहीं मानते। **तीसरा** है स्रोतभाषा की रचना की शैली का निर्वाह। अनुवाद का मुख्य ध्येय अर्थ–बोध जरूर है, लेकिन मूलभाषा की विभिन्न शैलियों की सामग्री का अनुवाद लक्ष्यभाषा में एक ही सपाट शैली में किया जाता है तो पाठक उसे उत्तम अनुवाद नहीं मानते। मूलभाषा की शैली से लक्ष्यभाषा की शैली अभिन्न नहीं होती। फिर भी स्रोतभाषा के लेखकीय व्यक्तित्व के अनुकूल लक्ष्यभाषा में भी शैली अभिन्न नहीं होती। फिर भी स्रोतभाषा के लेखकीय व्यक्तित्व के अनुकूल लक्ष्यभाषा में भी शैली का यथासम्भव निर्वाह करना बहुत जरूरी है। गुणवत्ता की परीक्षा में ये तीन सामान्य तत्त्व सहायक होते हैं।

हम अब अन्य बिन्दु पर पहुँचते हैं। शाकुंतलम् के एक अनुवाद के प्रशस्त होने के बाद भी दूसरे अनेक लोगों में बीसवीं सदी में मुद्रणकला के प्रचार से आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य का जो चमत्कारी विकास हुआ उसमें अनुवाद का योगदान महत्त्वपूर्ण है। इसका उदाहरण बंगला से अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद में मिलता है। **बंकिमचंद्र, शरतचंद्र** और **रवीन्द्रनाथ टैगोर** की कृतियों के अनुवाद की बाढ़–सी आ गई है। अनुवाद की गुणवत्ता के विषय में कुछ बुनियादी सवाल इनके आधार पर उठते हैं। इन अनुवादों में अधिकांश अनुवाद, अनुवाद का अनुवाद रहा है। बंगला से अंग्रेजी में और अंग्रेजी से अन्य भाषा में अनुवाद पहले किया जाता था। मलयालम में प्रारम्भ में यही तरीका स्वीकार किया गया था। अन्य दक्षिणी भाषाओं में भी यही क्रम था। यही तरीका स्वीकार किया गया था। अन्य दक्षिणी भाषाओं में भी यही क्रम था। आगे चलकर बंगला से हिन्दी से अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जाने लगा। ये दो बार अनुवाद करते समय स्रोतभाषा के कई तत्त्व बीच में नष्ट होने या बदलने की

सम्भावना रहती है। उससे बचाना कठिन है। बंगला-हिन्दी-अन्य भाषा अनुवाद में भूलें कम हो सकती हैं। अंग्रेजी में मिलने सम्भव नहीं है। गलत शब्द भी आ सकते हैं। ये दो भाषाओं से होकर तृतीय भाषा में आनेवाला अनुवाद कुछ हल्का हो सकता है। अगर कुछ बिगड़ ही जाए, तो भी अचरज की बात नहीं है।

बंगला-हिन्दी-अन्य भाषा अनुवाद की बात कारण व्यावसायिक लोभ भी है। भारतीय भाषाओं के सारे पुस्तक-प्रकाशक-छोटे से लेकर बड़े प्रतिष्ठित प्रकाशक तक-रामायण, महाभारत आदि धार्मिक ग्रंथ छापते हैं। उन्हें पता है कि मंदिरों के मेलों में जो लाखों लोग आते हैं, वे ये पुस्तकें खरीदेंगे। आम लोग पुस्तकों को शुद्धता, गुणवत्ता आदि से बढ़कर सस्ते मूल्य पर अधिक ध्यान देते हैं। प्रकाशकों को अधिक-से-अधिक धन कमाने की इच्छा रहती है। अतएव वे 'कम खर्च अधिक लाभ' वाले सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं।

यह सिद्धान्त अनुवाद के विषय में भी लागू है। हम पढ़ते हैं कि महाकवि निरालाजी, रामकृष्ण-विवेकानंद-साहित्य का अनुवाद रामकृष्णाश्रम के लिए करते थे। वह तो अच्छा अनुवाद रहा। मगर कोई प्रकाशक मामूली अनुवाद भी बराबर छापते थे। हमारे देश की स्वाधीनता-प्राप्ति के पहले अनुवाद का पारिश्रमिक कचहरी की लिखाई के पारिश्रमिक से भी कम होता था। मलयालम के एक महान् पंडित को गरीबी के कारण अनुवाद के आठ-पेजी फर्मा पाँच रुपए पर या कम पर देना पड़ता था। वे तो उत्तम अनुवाद करते थे लेकिन ऐसे उत्तम अनुवाद के कई गुण मामूली थे। इस प्रकार सस्ता अनुवाद और ग्रंथ प्रकाशन खूब चलता था। अब भी उसकी कमी नहीं है। हमारे तथाकथित सत्यकथा-लेखक भी गुमनाम हैं जो मामूली कलम-घिसाई पाकर प्रकाशकों को मालामाल करते रहते हैं। इसी तरह कई गरीब अनुवादक पुस्तक-विक्रेताओं को धनी बनाते हैं। अनुवादक ही गरीब नहीं होता, अनुवाद भी गरीब होता है। इसलिए अनुवाद की गणुवत्ता के विषय में हमें अनुवादक, प्रकाशक-दोनों नामों के विषय में सावधान रहना पड़ता है।

महाकवि निराला, रामकृष्ण-विवेकानन्द साहित्य का अनुवाद रामकृष्णाश्रम के लिए करते थे।

अनुवाद की गुणवत्ता और स्रोत-रचना के प्रति ईमानदारी के निर्वाह के लिए प्रामाणिक भाषाविद् के द्वारा परीक्षण व संशोधन कराया जा सकता है। साहित्य अकादमी जैसी संस्थाएँ और प्रतिष्ठित प्रकाशन-घर सही प्रविधि स्वीकार करते हैं यह महँगा पड़ता है। पुस्तक का मूल्य भी अपेक्षाकृत बढ़ता है। फिर भी मानक-ग्रंथ के रूप में उनका महत्त्व बना रहता है।

उत्तम-ग्रंथ कम मूल्य में मिलने पर खरीदारों और पाठकों की संख्या बहुत बढ़ती है। इसका सबसे अधिक लाभ धार्मिक संस्थाएँ उठाती हैं। बाइबल के बढ़िया संस्करण अनेक भाषाओं में छपते हैं सो कम दाम पर बिकते हैं। इसकी आर्थिक क्षति अवश्य होती है। विकसित राष्ट्रों के धर्मप्रेमी धनी लोग, उद्योग, बैबिल समितियाँ आदि आर्थिक सहायता देकर इस क्षति को पूरी कर देते हैं। हिन्दी में अनेक हिन्दू धार्मिक ग्रंथ गीता प्रेस से इसी प्रकार ने बारम्बार उसी का अनुवाद क्यों किया? कोई भी सज्जन व्यर्थ काम करना पसंद नहीं करते। इसका एक सामान्य कारण दिया जा सकता है। तुलसी व सूर के कुछ खास भजन क्यों हजारों गायक अब भी दुहराते हैं? फिल्म में हिट बने हुए एक गीत को लाखों लोग क्यों गुनगुनाते हैं? सरल कारण है उसके आकर्षण या प्रभाव जिससे हम वह गाना गुनगुनाते हैं? सरल कारण है उसका आकर्षण या प्रभाव। हमें वह गाना गुनगुनाते हुए मन में आनंद अनुभव होता है। तभी तो खरखराती आवाज वाले लोग भी कम-से-कम अपने कमरे में एकांत में ये गाने गाया करते हैं।

इतने सरल तर्क से हमें संतोष नहीं हो पाता। जब किसी केशवराम पांडे का 'शाकुंतल' अनुवाद बढ़ने के बाद कोई माधवलाल अपनी तरफ से अनुवाद फिर से करता है तब उसका धर्म है कि इसका कारण दिया जाए। दुर्भाग्य से अनुवादक भूमिका में इसका स्पष्टीकरण नहीं देते। अगर देते तो बड़ा लाभ होता। उनके इस व्यवहार का भी कारण है। शाकुंतल आदि के विषय में तो कारण स्पष्ट है। शाकुंतल और मेघदूत मुख्यत: काव्य हैं। काव्य की शब्दावली में अर्थचारुता, प्रयोग-चारुता आदि रहते हैं। उनका निर्वाह अनुवाद में अगर नहीं होता तो पाठक को संतोष नहीं होता। कवि पाठक दूसरे का अनुवाद पढ़ते महसूस करते हैं कि हमारे पढ़े हुए अनुवाद में इसका निर्वाह नहीं हुआ। अत: वे स्वयं अपनी सूझ के अनुसार नए सिरे से अनुवाद करते हैं। नाटकों के पूर्वाभ्यास में निर्देशक द्वारा यह प्रक्रिया बारम्बार अपनाई जाती है।

जैसे कि जब किसी अभिनेता या अभिनेत्री द्वारा अभिनय अपने इच्छित रूप में नहीं होता तब निर्देशक स्वयं अभिनय करके दिखाता है। इसी तरह एक अनुवाद की कमी को अनुभव करने वाला दूसरा अनुवादक अपनी इच्छा के अनुसार अनुवाद करता है। जब उसे

एक और अनुवादक पढ़ता है तब वह भी इस प्रक्रिया को दुहरा सकता है। लेकिन गुणवत्ता के निर्णय का अंतिम अधिकार पाठक को ही रहेगा।

अभिज्ञान-शाकुंतल आदि के अनुवाद की चर्चा में हम सदी के प्रारम्भिक दिनों की बातें कहते हैं। उन दिनों की विशेषता पर भी ध्यान देना आवश्यक है। उस युग में साहित्य-रचना का पारिश्रमिक देने या पाने का सवाल नहीं उठता था। कविता के ध्येयों में अर्थ भी अवश्य बतलाया गया। इसका स्वरूप यही था कि दानी राजा या प्रभुगण कवियों की रचना पर पुरस्कार देते थे। आजकल की तरह पारिश्रमिक व मानदेय पर साहित्यिक ग्रंथों की स्वीकृति, मुद्रण आदि नहीं होता था। इसलिए अर्थ की कसौटी पर अनुवाद की कला नहीं कसी जा सकती थी।

यद्यपि अनुवाद अपेक्षाकृत आधुनिक बात है, तो भी एक ही ग्रंथ की अनेक लोगों द्वारा व्याख्या पहले भी होती थी। इन व्याख्याओं को एक प्रकार से अंत:भाषिक अनुवाद तक होना अनुचित नहीं है। यह भी मानना होगा कि ये अनुवाद से बढ़कर हैं। व्याख्याकार विभिन्न प्रकार के होते थे। जैसे—व्याकरण, तर्कशास्त्र (न्याय-वैशेषिक), मीमांसा, वेदांत (द्वैत, अद्वैत, विशिष्टद्वैत) आदि के विद्वान् कई ग्रंथों की व्याख्या करते समय अपने-अपने दृष्टिकोण से व्याख्या करते थे। कोई-कोई अपनी व्याख्या की प्रस्तुति के अलावा दूसरे पक्ष की व्याख्या का खंडन भी करते थे। इसका हमारे लिए एक सुपरिचित उदाहरण रससिद्धान्त के सूत्र की व्याख्या में सुलभ है। 'विभावानुभावव्यभिजारिसंयोगात् रसनिष्पत्ति:' के सूत्र में 'संयोग और निष्पत्ति' शब्द को लेकर जो विभिन्न व्याख्याएँ हैं वे विभिन्न दार्शनिकों की हैं। व्याख्याओं की तरह अनुवाद की भी बात में दार्शनिक अंतर का प्रभाव काम करता है। भगवद्गीता का अनुवाद करने वालों में द्वैत, अद्वैत विशिष्टाद्वैत तीनों के समर्थक मिलेंगे। उनकी संकल्पनाओं में भी अंतर होता है। अत: अनुवाद भी भिन्न होता है। जो दार्शनिक व्याख्याएँ जानते हैं वे अनुवाद में उसी प्रकार की व्याख्याएँ जरूर लाते हैं। लेकिन जो इनसे अनभिज्ञ हैं, केवल भाषाज्ञान रखते हैं—वे अतिशय सामान्य अनुवाद कर पाते हैं। इसका उदाहरण भी गीता के विविध अनुवादों में मिल सकता है।

यह भी ध्यान देने की बात है कि ऐसे ग्रंथों का अनुवाद उन विषयों की जानकारी न रखने वाले न करें तो वही बुद्धिमानी है।

यह बात हर धर्म की संस्थाएँ करती हैं।

लोगों की मानसिक मित्रता में ग्रंथ बड़ा सहायक होता है। ग्रंथ के द्वारा प्रचार किया जाता है। उदाहरणार्थ—अमेरिका या जापान या रूस के प्रचार-विभाग द्वारा प्रचारित प्रचार-ग्रंथ बड़ी मोहक साज-सज्जा में छपते हैं। उनका लागत-मूल्य भी नहीं लिया जाता। सिर्फ नाम के लिए मूल्य लिया जाता है। ऐसे ग्रंथों में अनुवाद ठीक रहता है क्योंकि सम्बन्धित देश की सरकारें प्रमाणिक अनुवादकों को ही नियुक्त करती हैं। उनके पास संशोधन का भी प्रबन्ध रहता है। अमेरिका ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पी०एल० 480 के अधीन भारत को अमेरिकन ग्रंथों के अनुवाद का प्रकाशन करने हेतु काफी पैसे दिए थे। अमरीकी ग्रंथों की बड़ी संख्या यहाँ छपने लगी थी। अमेरिका के इस ब्रेन-वॉशिंग (मत-आरोपण) का मुकाबला करने के लिए सोवियत रूस ने अपने यहाँ प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स, नोवोस्ति प्रकाशन, नौका प्रकाशन आदि कई प्रकाशन-संस्थाएँ प्रारम्भ कीं। उनके माध्यम से मार्क्सवादी साहित्य की सैकड़ों कृतियाँ पहले अंग्रेजी में अनुदित कराके बढ़िया कागज और मोहक जिल्द में प्रकाशित करनी शुरू कीं। उनका मूल्य प्रकाशन की लागत का दसवाँ हिस्सा तक मुश्किल से होता था। आगे चलकर भारतीय भाषाओं में उनका अनुवाद प्रकाशित किया गया। इनकी भी प्रकाशन-नीति यही थी। यही नहीं, भारत में बिकने वाले मार्क्सवादी साहित्य से जो आमदनी होती थी, उसे यहाँ की मार्क्सवादी पार्टी के व्यय के लिए देते थे। ऐसी व्यवस्था में भारतीय भाषाओं ताकि अंग्रेजी में बहुत बड़ी संख्या में रूसी साहित्य का प्रकाशन कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं है। इस ग्रंथजाल के सम्मोहन में आम लोग ऐसे मोहित हो जाते हैं कि चारों रूसी लेखकों को श्रेष्ठ मानने लगते हैं।

अनुदित एवं प्रकाशित लेखकों में सभी श्रेष्ठ नहीं रहते। हर लेखक के सारे ग्रंथ उत्तम नहीं हो पाते। विवेक से काम लेना पड़ता है। भारत पर सोवियत देश की महत्ता का जादू-सा बैठा है। इस समय सोवियत भूमि में होने वाली राजनीतिक उथल पथल के कारण जादू का असर कुछ कम हुआ है। कालिकट के अखिल भारतीय अनुवाद-सम्मेलन में प्रोफेसर बिस्कीं ने अनुवाद की गुणवत्ता का एक नया मापदंड प्रस्तुत किया। वह यही कि अनुवाद स्वयं-प्रेरणा से प्रेरित होकर किया गया हो। ऐसा अनुवाद उत्तम ध्येय का होता है। उसके पीछे कोई बुरी नीयत नहीं रहती। मगर जो सरकारी या अन्य एजेंसियों द्वारा प्रचारार्थ कराया जाता है, वह अनुवाद मध्यम ही कहला सकता है। गुणवत्ता के निर्णय में यह कसौटी सचमुच बड़ी मार्मिक है।

TOUCH 'n PASS

भारत में अंग्रेजी राज की स्थापना के फलस्वरूप अठारहवीं सदी में भारत का पश्चिम से संपर्क हो सका। अनेक विदेशियों ने भारतीय कृतियों का अनुवाद अपनी भाषाओं में किया। इस अनुवाद के पीछे सभी अनुवादकों को ध्येय अभिन्न नहीं रहा था।। अंग्रेज ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अपने प्रशासनिक कर्मियों तथा सैनिक अफसरों के उपयोगार्थ भारतीय भाषाओं में सैकड़ों पाठ्य-पुस्तकें तैयार कीं। इनमें मौलिक रचनाएँ भी थीं और अनुवाद भी। ईसाई धर्म के विशेषज्ञ विदेशियों में कई ने बाइबल का प्राचीन ग्रंथ और नया ग्रंथ यथा सम्भव हर भारतीय भाषा में अनुदित किए। अनुवाद के पीछे ईस्ट इंडिया कंपनी मुख्यतः राजनीतिक और प्रशासनिक लक्ष्य रखती थी। देश के राज्यों पर विजय पाने और राज्यों को ब्रिटिश शासन में मिलाने के लिए भारतीय शक्तियों को अच्छी तरह समझना-पहचानना जरूरी था। विधि सम्बन्धी और कानूनी बातों के लिए भारतीय परम्परागत न्यायालय नियमों, रूढ़ियों तथा आचरणों का ज्ञान अनिवार्य रहा था। ब्रिटिश सरकार की तरह विदेशी ईसाई धर्म-संस्थाओं ने भी अनुवाद के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किया था। किन्तु इन समितियों में कई ने धर्म-परिवर्तन कराना चाहा था। अधिक-से-अधिक भारतीय लोगों में ईसाई धर्म का प्रचार करना चाहा था। उनमें से कुछ धर्म प्रचारक हिन्दू धर्म व इस्लाम धर्म की कमियाँ दिखाने, उनकी आलोचना करने के लिए भी धर्मग्रंथों का अनुवाद करते थे।

साहित्य या किसी भी ज्ञान-विधा के विद्वानों में राजनीतिक नीयत की खराबी से लेखन पर प्रभाव अनिवार्यतः पाया जाता है। यही कारण है कि रूसी ग्रंथों का अमरीकी संस्करण रूसी संस्करण से भिन्न मिलता है। उलटा भी रहता है। ऐसी बुरी नीयत अनुवाद के विषय में भी हो सकती है। ऐसे अनुवादक की भाषा पर पकड़ शायद जबरदस्त रहेगी। फिर भी उसमें मूल रचना से न्याय कर पाना कठिन हैं कपट या घृणा से जो स्वादिष्ट भोज दिया जाता है उससे कम स्वादिष्ट आलू-पूरी ही मन को खुशी देते हैं। इसलिए अनुवादक की नीयत भी महत्त्व की चीज है।

तकनीकी अनुवाद की गुणवत्ता

अनेक प्रकार की सामग्री का अनुवाद किया जाता है। जैसे—साहित्य एवं साहित्येतर। साहित्य में काव्य, नाटक, कहानी आदि विभिन्न धाराएँ होती हैं। साहित्येतर सामग्री के भेदों में सूचनाप्रधान तथा वैज्ञानिक विधाएँ होती हैं। पत्रकारिता की सामग्री कुछ और रहती है। इनमें प्रत्येक का स्वरूप और लक्ष्य एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। अनुवाद की गुणवत्ता की परीक्षा में प्रत्येक विधा का परीक्षण उसके अपने तत्त्वों के आधार पर करना पड़ता है। जैसे—एक प्रामाणिक वैज्ञानिक लेख के अनुवाद में सही पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग गुणवत्ता के निर्वाह के लिए अनिवार्य है। पत्रकारिता की सामग्री के अनुवाद में प्रभाव और मूल सामग्री से न्याय गुणवत्ता के लिए जरूरी हैं। काव्य के विषय में मूल अर्थ की यथावत् प्रस्तुति के अलावा काव्य के शिल्प और मिठास का निर्वाह भी महत्त्वपूर्ण है। संविधान की धाराएँ, न्यायालय का निर्णय आदि के अनुवाद में प्रामणिक पारिभाषिक शब्दावली और पदबंधों के उचित प्रयोग पर गुणवत्ता निर्भर करती है।

प्र.3. मशीनी अनुवाद का अर्थ स्पष्ट करते हुए परिभाषित कीजिए। इसकी आवश्यकता का भी उल्लेख कीजिए।

उत्तर

मशीनी अनुवाद का अर्थ

मशीन अनुवाद एक भाषा से दूसरी अन्य भाषा में अनुवाद के कार्य को कहा जाता है। मशीनी अनुवाद शब्द का प्रयोग 'कम्प्यूटर अनुवाद' के लिए किया जाता है, जिसमें किसी पाठ या वाक्य का एक प्राकृतिक भाषा से दूसरी प्राकृतिक भाषा में स्वचालित अनुवाद किया जाता है।

मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में अनुसंधान की शुरूआत सन् 1950 के बाद शुरू हुई थी। उसके बाद से विश्व स्तर पर भाषा वैज्ञानिक और कम्प्यूटर वैज्ञानिकों ने विविध भाषाओं के लिए मशीनी अनुवाद के तंत्र विकसित किए। साथ में उनके मूल्यांकन के लिए अनेक पद्धतियों का भी विकास किया।

यह मूल्यांकन पद्धतियाँ मशीनी अनुवाद तंत्रों के गुणवत्ता की जाँच करने के लिए तथा विशिष्ट तंत्र की अनुवाद प्रकिया को बेहतर बनाने के लिए उपयोगी साबित हुई है।

मशीनी अनुवाद का अर्थ है—मशीन या कम्प्यूटर प्रणाली के माध्यम से एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना। अनुवाद की तीन प्रक्रियाएँ सर्वस्वीकृत हैं—**विश्लेषण, अंतरण** एवं **पुनर्गठन**। मशीनी अनुवाद में ये तीनों प्रक्रियाएँ कम्प्यूटर द्वारा सम्पन्न होती हैं ये प्रक्रियाएँ हैं (पाठ का) विश्लेषण, अंतरवर्ती प्रक्रिया या अंतरण और प्रजनन (generation) या समायोजना।

मशीनी अनुवाद की परिभाषा

मानव अनुवाद एवं मशीनी अनुवाद के अनुसार, अनुवाद दो भिन्न भाषाओं के बीच होने वाली एक भाषिक प्रक्रिया है। लक्ष्यभाषा के पाठ को **अनुदित पाठ** कहा जाता है। स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा के पाठ का मुख्य आधार उसका निहित संदेह होता है।
दूसरे शब्दों में, दोनों पाठ निहित संदेश या अर्थ को व्यक्त करते हैं। मशीनी अनुवाद की सार्थकता इसी में है कि मशीन के लिए अनुवाद कार्यक्रम इस प्रकार से तैयार किया जाए कि उससे मशीन सरलतापूर्वक और अच्छी गुणवत्ता (क्वालिटी) वाला अनुवाद कर सके।

मशीनी अनुवाद की आवश्यकता

सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, व्यापारिक एवं वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए हमें अनुवाद की सहायता की आवश्यकता होती है। एक समय था जब अनुवाद को वैयक्तिक रुचि के आधार पर किया जाता है। ऐसा अनुवाद 'स्वांतःसुखाय' होता था। इसके अंतर्गत धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद होता था। आधुनिक युग में अनुवाद एक संगठित व्यवसाय के रूप में उभर कर सामने आया है। यह आधुनिक युग की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक आवश्यकताओं के द्वारा प्रेरित है। आज अनुवाद की आवश्यकता इतनी अधिक बढ़ गई है कि केवल मानव अनुवादकों से यह सम्भव नहीं रह गया है।
प्रत्येक देश ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हुए अनुसंधान एवं विकास से दूसरी भाषाओं की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक धरोहर की गहनता और व्यापकता से अपनी भाषाओं को सम्पन्न करना चाहता है। मानव अनुवाद एक धीमी प्रक्रिया है। मानव अनुवादक सीमित मात्रा में ही अनुवाद कर सकता है जबकि मशीन तीव्र गति से सैकड़ों पृष्ठों का अनुवाद कुछ ही समय में कर सकती है। इस प्रकार मशीनी अनुवाद प्रणाली हमें मात्रा में समरूपी अनुवाद करने का त्वरित साधन उपलब्ध कराती है।
नई-नई सूचनाओं एवं ज्ञान-विज्ञान का विकास प्रति क्षण हो रहा है। उन्हें अपनी भाषा में लाने का तीव्रतम उपाय मशीनी अनुवाद ही है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने उत्पाद उपभोक्ताओं तक उनकी भाषा में लाना चाहती हैं। मानव क्षमताओं की सीमितता और उपलब्धता के कारण उनकी यह आवश्यकता मशीनी अनुवाद से ही पूरी की जा सकती है।
विभिन्न प्रकार के राजनयिक दस्तावेज दोनों देशों की भाषाओं में तैयार किए जाते हैं। ऐसा केवल अनुवाद के कारण सम्भव हो पाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ में जो भी वक्तव्य दिए जाते हैं, उन्हें संयुक्त राष्ट्रसंघ की सभी भाषाओं में मशीन अनुवाद तंत्र द्वारा अनुदित कर उपलब्ध कराया जाता है। इस प्रकार अनुवाद की आवश्यकता अनुभव की जाती है। भारतीय संसद में भी इस प्रकार के प्रावधान किए जा रहे हैं।
इस प्रकार आप यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इन सभी कारणों से अनुवाद की जाने वाली सामग्री की मात्रा इतनी अधिक है कि मानव अनुवादक के सहारे इस विशाल सामग्री का अनुवाद निर्धारित समय-सीमा में कर पाना कठिन है, ऐसी स्थिति में एक ही उपाय रह जाता है कि मशीनी अनुवाद का सहारा लिया जाए और उसे निरंतर शोध एवं विकास प्रक्रिया से विश्वसनीय बनाया जाए।

प्र.4. मशीनी अनुवाद में मनुष्य एवं मशीन के सहयोग का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

मशीनी अनुवाद में मनुष्य एवं मशीन का सहयोग

यथातथ्य सही अनुवाद तभी हो सकता है जब अनूद्य पाठ को भली-भाँति समझ लिया जाए। इस दृष्टि से कम्प्यूटर अनुवाद को ज्ञान पर आधारित करने की प्रक्रिया का विकास हुआ। पूर्णतया स्वचालित मशीनी अनुवाद को अयथार्थ लक्ष्य मानते हुए व्यावहारिक उद्देश्य अपनाया गया। इसके परिणामस्वरूप ऐसी कम्प्यूटर प्रणालियाँ विकसित की गई जो मनुष्य की अनुवाद क्षमता में वृद्धि करें। इसके साथ ही मशीन की कार्य क्षमता को मनुष्य की सहायता से परिवर्धित किया गया। इस प्रकार मशीनी अनुवाद में मानवीय सहायता की अवधारणा को प्रबल पुष्टि मिली। हालाँकि पूर्णतया मशीनी अनुवाद की आकांक्षा अब भी बरकरार है और इस दिशा में प्रयास सक्रिय हैं।
मौजूदा मशीनी अनुवाद प्रणालियाँ वैविध्यपरक हैं। कुछ मानवीय कार्य-कुशलता के सहायक उपकरण के रूप में है तो कुछ ऐसे कुशल कम्प्यूटर प्रोग्राम हैं जिनमें स्वचालित अनुवाद हो जाता है फिर इस अनुवाद की गलतियाँ खोजने में और उनके सुधार के लिए मानवीय सहायता अपेक्षित होती है। इस प्रकार मनुष्य को मशीन का सहयोग दो तरह से प्राप्त होता है—

1. मनुष्य (अनुवादक) की सहायक मशीन तथा
2. मशीन का सहायक मनुष्य (अनुवादक)

आगे हम मनुष्य कम्प्यूटर अनुवाद में मनुष्य-मशीन सहयोग सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोणों और उन पर आधारित कम्प्यूटर प्रणालियों की चर्चा करेंगे।

TOUCH 'n PASS

1. अनुवाद सहायिकाएँ

अनुवाद की प्रक्रिया में मनुष्य का बहुत-सा समय कोशों में पर्याय तलाशने, अनुदित पाठ के संपादन और उसे सही रूप अथवा फार्मेट में प्रस्तुत करने में बीतता है। इन कार्यों को मशीनी सहायता से बहुत सुविधापूर्वक स्वचालित ढंग से किया जा सकता है। इसके लिए कम्प्यूटर आधारित शब्दकोश, व्याकरण जाँच प्रोग्राम, संपादन तथा फार्मेट संपादन सहायक, रेखांकन विन्यास मापांक (graphic layout modules) आदि जैसे उच्च-शक्ति संगठनात्मक साधन जुटाए जा सकते हैं और अनुवादक की कार्य-कुशलता में तीव्र गति लाई जा सकती है। इस पद्धति को नीचे दिए गए चित्र-1 द्वारा आसानी से समझा जा सकता है—

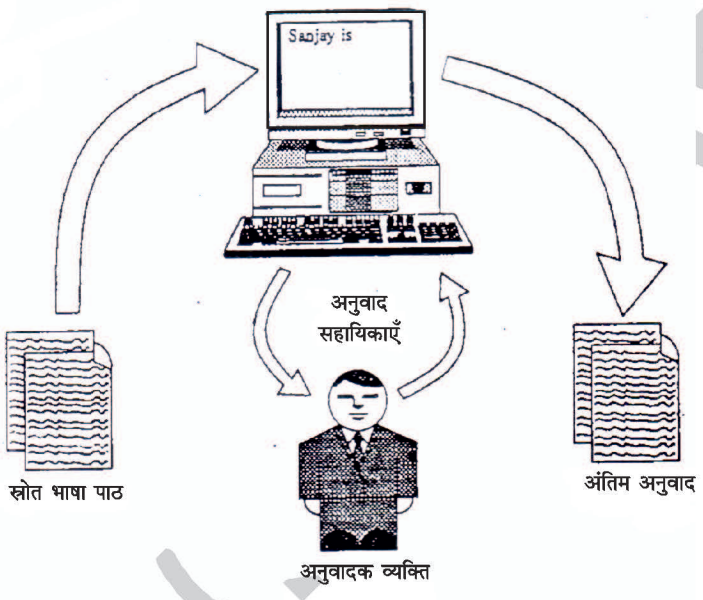

चित्र 1 : अनुवादक सहायिकाएँ

अनुवादक को भाषा विशेष में स्वीकृत तकनीकी शब्दावली की तुरंत और नितांत आवश्यकता होती है। इसके लिए कम्प्यूटर पर ऑन-लाइन डिक्शनरी उपलब्ध कराई जाती है। अपेक्षा संदर्भजन्य कोश की रहती है यानी शब्द के बहुत से अर्थों को संदर्भानुसार देने की होती है। जो कम्प्यूटर आधारित कोश तकनीकी पर्यायों को बहुलता में और संदर्भानुसार प्रस्तुत कर लेते हैं, वे ज्यादा उपयोगी होते हैं।

तकनीकी कोश की एक अन्य विशेषता यह है कि यह कोश कभी पूरा तैयार नहीं होता। यह सदैव निर्माण की प्रक्रिया में रहता है। सामान्य भाषा की विकास गति की तुलना में तकनीकी भाषा विकास गति बहुत तीव्र होती है। तकनीकी शब्दावली निरंतर विकसित होती रहती है। कम्प्यूटर आधारित कोश में नए तकनीकी शब्दों के निरंतर समावेश से अनुवादक को व्यापक सहायता पहुँचाई जा सकती है।

शब्दों के रूपपरक विश्लेषण के लिए सहायक उपकरण भी कम्प्यूटर पर उपलब्ध हो सकते हैं। इसके लिए हर एक भाषा का अपना रूपात्मक ढाँचा कम्प्यूटर पर उपलब्ध होना चाहिए।

इन सभी अनुवाद सहायिकाओं के बीच मनुष्य की भूमिका केन्द्रीय होती है क्योंकि अनुवाद प्रक्रिया उसके ही हाथों पूरी होती है। स्वचालित सहायक उपकरण इस प्रक्रिया में उसकी सहायता करते हैं और उसकी कार्य-कुशलता बढ़ाते हैं।

2. अनुवादोत्तर संपादन/पश्च संपादन

इस पद्धति को पश्च-संपादन पद्धति भी कहा जाता है। इस पद्धति के अंतर्गत मशीनी अनुवाद में कम्प्यूटर से अधिकाधिक काम लिया जाता है। इसमें स्रोत भाषा पाठ का अनुवाद कम्प्यूटर करता है, उसके बाद इस अनुवाद की अनुवादक जाँच करता है। इस पद्धति की प्रक्रिया निम्न प्रकार है—

(i) सर्वप्रथम, स्रोत भाषा पाठ को कम्प्यूटर की कोडीकृत भाषा में प्रस्तुत कर दिया जाता है।

(ii) फिर यह पाठ बैच प्रोसेसिंग (Batch Processing) कम्प्यूटर प्रणाली में डाल दिया जाता है। यहाँ कम्प्यूटर इस पाठ का रफ अनुवाद कर देता है।

(iii) मूल (स्रोत भाषा) पाठ और यह कच्चा अनुवाद अनुवादक को सौंप दिया जाता है। अनुवादक इसका संपादन करते हुए इसकी गलतियाँ सुधारता है। पाठ की दुरूहता सुधार कर उसे सहज भाषा में प्रस्तुत करता है।

इस प्रक्रिया को नीचे दिए गए चित्र-2 द्वारा सहजता से समझा जा सकता है—

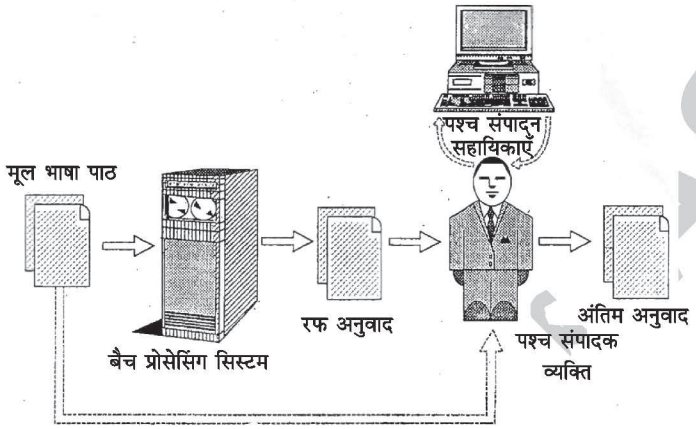

चित्र 2 : अनुवादोत्तर संपादन/पश्च संपादन

पश्च संपादन में अनुवाद की तुलना में कम समय लगता है। अत: इससे मानवीय कुशलता में वृद्धि होती है, बड़ी तादाद में जल्दी काम सम्भव होता है। लेकिन इसके लिए सुयोग्य और जानकार अनुवादक की आवश्यकता होती है। कुछ समय पहले इस पद्धति को सर्वश्रेष्ठ पद्धति माना जाता था।

3. पूर्व संपादन

पूर्व संपादन पद्धति में अनुवाद से पहले स्रोत भाषा पाठ का संपादन किया जाता है। अनुवाद करने से पहले ही सभी कठिनाइयों को दूर कर दिया जाता है। जटिल व्याकरणिक संरचनाओं संदिग्ध शब्दों और समस्यापरक वाक्यगत विशिष्टताओं को सुलझा लिया जाता है। इस पद्धति को निम्नलिखित चित्र-3 द्वारा समझा जा सकता है—

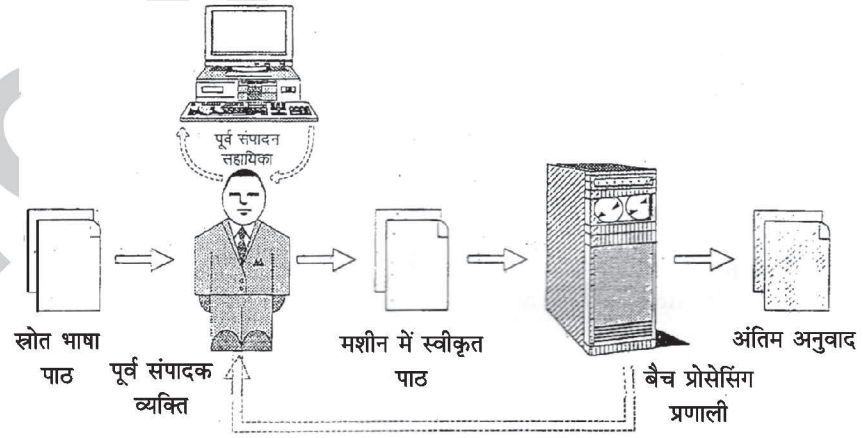

चित्र 3 : पूर्व संपादन

व्यावहारिक रूप से मशीनी अनुवाद यथातथ्यता और दक्षतापूर्व संपादन का कार्य है। इस पद्धति में मानवीय कार्य-कुशलता को मशीनी कार्य-कुशलता से अधिक महत्त्व दिया जाता है। पूर्व संपादन पद्धति को लेकर कम्प्यूटर अनुवाद विशेषज्ञों में मतभेद रहा है।

पश्च संपादन पद्धति के प्रणेता पूर्व संपादन पद्धति को यह कह कर अस्वीकार करते हैं कि इसमें बहुत अधिक समय लगता है। इसके अलावा, पूर्व संपादक अनुवादक चाहे तो स्रोत भाषा पाठ के अर्थ और आशय को बड़ी सूक्ष्मता से परिवर्तित कर सकता है। पूर्व संपादन और पश्च-संपादन की तुलना में काफी लोग पश्च-संपादन को बेहतर मानते हैं। यद्यपि विशिष्ट सूचनात्मक क्षेत्रों के अनुवाद में जैसे मौसम रिपोर्टों के अनुवाद में पूर्व संपादन पद्धति काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। विशिष्ट क्षेत्रों की उपभाषा की सादगी के कारण इसमें अर्थ बदल जाने की सम्भावना नहीं होती है।

4. ज्ञान-आधारित मशीनी अनुवाद प्रणाली

यह प्रणाली अनुवाद में अर्थपरक स्थिरता को मानदण्ड मानती है और अर्थ को कम्प्यूटर के ज्ञान-आधार में संसाधित करती है। इसके अंतर्गत

(i) स्रोत भाषा पाठ को भाषा मुक्त अर्थ रिप्रेजेंटेशन में प्रस्तुत कर लिया जाता है। स्रोत भाषा के पाठ के अर्थ को कोडीकृत किया जाता है, वाक्यात्मक संरचना अथवा शब्दावली को नहीं। (ii) स्रोत भाषा पाठ में निहित स्थितिपरक विवरणों को प्रस्तुत करने के लिए क्षेत्र विशेष अनुमानक (domain specific inferencer) को चलाया जाता है।

(iii) फिर अर्थपरक रिप्रेजेंटेशन को एक अथवा अधिक स्रोत भाषाओं में पुनरुत्पादित कर लिया जाता है। इस प्रक्रिया को निम्नलिखित चित्र द्वारा समझा जा सकता है—

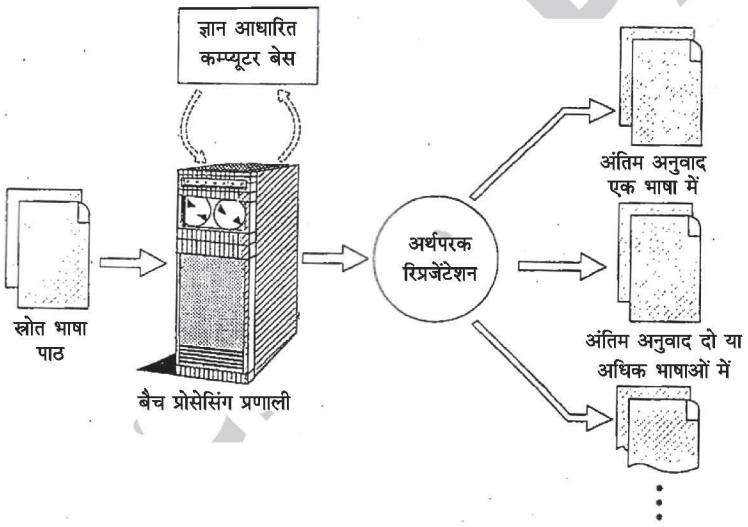

चित्र 4 : ज्ञान आधारित प्रणाली

ज्ञान आधारित कम्प्यूटर अनुवाद को 'स्क्रिप्ट एप्लाइंग मैकेनिज्म' (SAM) नामक प्रणाली के द्वारा कार्यान्वित किया गया था। यह कम्प्यूटर प्रणाली एक बहुद्देशीय कम्प्यूटर प्रणाली है। यह स्रोत भाषा के आंतरिक अर्थ को कई भाषाओं में प्रस्तुत कर सकती है। उदाहरण के लिए, वाहनों की दुर्घटना के विवरणों को कई अखबारों के लिए यह कई भाषाओं में एक-साथ प्रस्तुत कर देता है; जैसे—अंग्रेजी में दी गई सूचना को स्पैनिश, रूसी, फ्रांसीसी, मंदारिन तथा डच भाषाओं में साथ-साथ अनुदित कर देता है। इस तरह ज्ञान आधारित अनुवाद ने मशीनी अनुवाद की सम्भावनाएँ पैदा की हैं। इस पद्धति में निहित भाषा-मुक्त अर्थ रिप्रेजेंटेशन के लिए अपेक्षित अर्थ विश्लेषण के लाभ-हानि दोनों हैं।

लाभ—पिछली प्रणालियों से यह इस दृष्टि से उपयोगी है कि अंतरण व्याकरण के त्याग और सुव्यवस्थित पद व्याख्या तथा व्युत्पादन तकनीकों को अपनाकर इसने सही अर्थ में बहुभाषी अनुवाद की सम्भावनाएँ खोली हैं। साथ ही इसमें अर्थ की स्थिरता रहती है।

सीमा—इस पद्धति की सीमा यह है कि यह स्रोत भाषा पाठ का लक्ष्य भाषा में भावानुवाद (Paraphrase) करती है, यथातथ्य अनुवाद नहीं। तात्पर्य यह है कि यह शाब्दिक अथवा वाक्यात्मक आधार को बिल्कुल छोड़ देती है।

इसके अतिरिक्त यह अर्थपरक ज्ञान आधार के अनुपात में सामान्य अर्थपरक सूचना तथा क्षेत्र विशेष के ज्ञान की अपेक्षा करती है। यह ज्ञान अनुवादक के पास ही होता है।

5. मनुष्य-मशीन पारस्परिक सहयोग प्रणाली (इंटरएक्टिव प्रणाली)

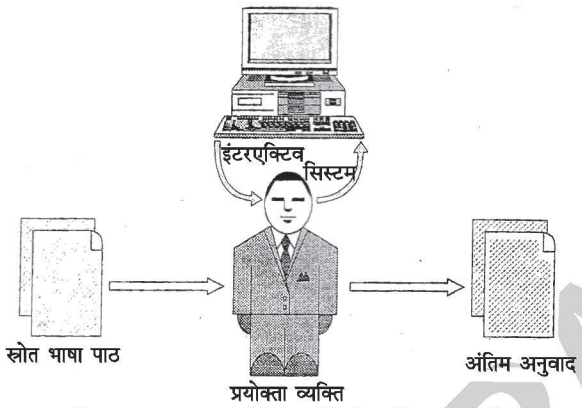

चित्र 5 : परस्पर सहयोग प्रणाली (इंटरएक्टिव प्रणाली)

इस प्रणाली को Interactive approach कहा जाता है। इस प्रणाली में व्यक्ति स्वयं कम्प्यूटर को अनूद्य सामग्री का इनपुट देता है। वह अपनी भाषा में वाक्य/पाठ टाइप करता है। कम्प्यूटर, जहाँ कहीं जरूरत होती है, वहाँ अपनी भाषा में प्रश्न पूछता है। उदाहरण के लिए, कम्प्यूटर पूछता है, 'Party' शब्द का अनुवाद क्या किया जाए— 'दावत' या 'पक्ष'? व्यक्ति उसको उत्तर देता है। अंत में कम्प्यूटर उस वाक्य/पाठ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत कर देता है। इस प्रणाली में अनुवादोत्तर संपादन की जरूरत नहीं पड़ती। इस प्रणाली को निम्नलिखित चित्र द्वारा समझा जा सकता है—

इस प्रणाली के लिए अत्याधुनिक इंटरएक्टिव कम्प्यूटरों की आवश्यकता होती है। इंटरएक्टिव प्रणाली की खास जरूरत तब पड़ती है जब

(i) पाठ बहुत छोटा हो, लेकिन तुरंत अनुवाद अपेक्षित हो,
(ii) पाठ का बहुत-सी भाषाओं में अनुवाद करना हो,
(iii) पाठ इतना ज्यादा तकनीकी हो कि व्यावसायिक अनुवादक को भी क्षेत्र-विशेष के विशेषज्ञों की मदद की जरूरत पड़े।

इस पद्धति की विशेषताएँ हैं—

1. इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति के लिए लक्ष्य भाषा जानना जरूरी नहीं है।
2. उसे भाषा-विज्ञान, कम्प्यूटर तकनीक अथवा अनुवाद कार्य का विशेष ज्ञान अपेक्षित नहीं हैं।
3. इस प्रणाली से किए गए अनुवाद में अनुवादोत्तर संपादन (पश्च संपादन) आवश्यक नहीं है।
4. हर कोई इस प्रणाली का इस्तेमाल कर सकता है और लक्ष्य भाषा पाठ प्राप्त कर सकता है।
5. अनुवादक अथवा पश्च-संपादक की जरूरत नहीं है।

प्र.5. कम्प्यूटर अनुवाद में शब्दकोश के प्रयोगों का वर्णन कीजिए।

उत्तर

कम्प्यूटर अनुवाद में शब्दकोश का प्रयोग

आपने पिछले भाग में देखा कि शब्दकोश के निर्माण में कोशकार किस प्रकार अपने विभिन्न प्रयोजनों के लिए कम्प्यूटर का इस्तेमाल करता है। कम्प्यूटर उसके लिए एक उपकरण या साधन होता है और लक्ष्य होता है शब्दकोश का निर्माण। लेकिन एक स्थिति ऐसी भी है जब कम्प्यूटर विशेषज्ञ को खुद अपने कुछ खास प्रयोजनों के लिए शब्दकोश की जरूरत पड़ती है जहाँ वह शब्दकोश का इस्तेमाल एक उपकरण या साधन के रूप में करता है। उसका अंतिम लक्ष्य होता है कम्प्यूटर अनुवाद। कम्प्यूटर अनुवाद के लिए जिस तरह के कोश की जरूरत होती है वह एक अलग तरह का कोश होता है जिसे कम्प्यूटर की भाषा में लेक्सिकॉन (lexicon) कहते हैं।

1. **कम्प्यूटर अनुवाद की प्रकृति**—कम्प्यूटर अनुवाद के बारे में तीन बातें आपको ध्यान में रखनी चाहिए। पहला, कम्प्यूटर अनुवाद इस समय अपनी प्रारम्भिक अवस्था में ही है। दूसरे, कम्प्यूटर से जो भी अनुवाद किया जा रहा है या किया गया है वह अत्यंत सीमित विषय-क्षेत्र से संबद्ध है; जैसे— मौसम की जानकारी से सम्बन्धित अनुवाद, डॉक्टर और नर्स के बीच होने वाले चिकित्सा सम्बन्धी संवाद, मशीनों के मेनुअल या निर्देश और वैज्ञानिक या तकनीकी विषयों का कोई सीमित

TOUCH 'n PASS

प्रयोग-क्षेत्र। कम्प्यूटर प्रणाली से ऐसे साहित्य का अनुवाद आज सम्भव नहीं जिसमें लक्षणा, व्यंजना या शैली की विशिष्टता हो।

तीसरे, कम्प्यूटर से औसतन 80 प्रतिशत सही अनुवाद की ही आशा की जानी चाहिए। 20 प्रतिशत काम फिर भी अनुवादक का रहेगा जो उसे अनुवाद का संपादन और संशोधन करेगा। दूसरे शब्दों में कहें तो कम्प्यूटर अनुवादक का सहायक है, वह उसका स्थान नहीं ले सकता।

कम्प्यूटर की अपनी कोई बुद्धि नहीं होती। वह वही काम करता है जिसकी जानकारी उसमें भर दी जाती है। उसे यह जानकारी सूत्रों और नियमों के रूप में चाहिए। कोशिश यह रहती है कि मानव के मस्तिष्क में भाषा सम्बन्धी जो नियम और जानकारी रहती है उन्हें सूत्र रूप में कम्प्यूटर में डालें। कम्प्यूटर से अनुवाद करवाने के लिए अब उसी प्रक्रिया को अपनाया जाता है जो प्रक्रिया मानव अनुवादक की होती है। उदाहरण के लिए, मानव अनुवादक की तरह, कम्प्यूटर में भी दो भाषाओं के बोध की क्षमता उत्पन्न की जाती है। यह भी क्षमता उत्पन्न की जाती है कि वह दोनों भाषाओं के वाक्यों की रचना कर सके। कम्प्यूटर के संदर्भ में इसका तात्पर्य यह हुआ कि

(क) कम्प्यूटर किसी दिए हुए पाठ के अर्थ को समझ सके।

(ख) वह लक्ष्य भाषा में सही वाक्य की रचना कर सके।

(ग) उसमें दो भाषाओं के शब्दों, वाक्यों, अर्थों आदि के बीच समान-असमान तत्त्वों का विश्लेषण करने की क्षमता हो।

(घ) वह स्रोत भाषा के शब्दों, वाक्यों तथा अभिव्यक्तियों आदि के लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य रचनाओं का चयन कर सही अनुवाद प्रस्तुत कर सके। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी में समान दिखने वाले इन तीन वाक्यों में 'have' का अनुवाद हिन्दी में तीन अलग तरह से होगा, यह जानने की क्षमता कम्प्यूटर में होनी चाहिए:

I have a car.	मेरे पास कार है।
I have a son.	मेरा एक लड़का है।
I have fever.	मुझे बुखार है।

2. **कम्प्यूटर शब्दकोश-लेक्सिकॉन**—कम्प्यूटर अनुवाद के लिए कम्प्यूटर को जिस प्रकार के विशिष्ट शब्दकोश की जरूरत पड़ती है, उसे लेक्सिकॉन (lexicon) कहते हैं। लेक्सिकॉन में शब्द के सम्बन्ध में सूत्र रूप में वह सभी जानकारी होती है जो कम्प्यूटर को भाषा के वाक्यों को समझने और दूसरी भाषा में उसका अनुवाद करने के लिए जरूरी होता है। इस प्रयोजन के लिए कम्प्यूटर को शब्द के संबंध में कम-से-कम चार प्रकार की जानकारी की जरूरत होती है। यह जानकारी सामान्य कथन के रूप में नहीं बल्कि सूक्ष्म नियमों, उपनियमों तथा अपवादों के रूप में सूत्रबद्ध होनी चाहिए।

(क) **शब्द संरचना सम्बन्धी जानकारी**—इसके अंतर्गत शब्द की संरचनात्मक कोटियों (जैसे संज्ञा, विशेषण, क्रिया-विशेषण, क्रिया आदि) और उनकी आंतरिक रचना के नियमों का सूत्रबद्ध वर्णन शामिल है। ये सूचनाएँ सामान्य व्याकरण या शब्दकोशों में एक सीमा तक उपलब्ध होती हैं लेकिन उन्हें कम्प्यूटर के फार्मूला के अनुसार सूत्रबद्ध करना होता है।

(ख) **अर्थ सम्बन्धी जानकारी**—शब्दों के अर्थ सभी कोशों में उपलब्ध होते हैं लेकिन कम्प्यूटर की जरूरतों की दृष्टि से ये अधूरे हैं। इन अर्थों की मदद से वाक्य में शब्दों के प्रयोग की उपयुक्तता-अनुपयुक्तता के बारे में कोई संकेत नहीं मिलता। उदाहरण के लिए, सामान्य शब्दकोश में 'देहांत' शब्द का अर्थ 'मृत्यु' होगा, लेकिन कम्प्यूटर के लिए यह काफी नहीं है क्योंकि इस आधार पर कम्प्यूटर हमें ये दोनों वाक्य दे सकता है—

His father expired.	उसके पिताजी का देहांत हुआ।
His dog expired.	× उसके कुत्ते का देहांत हुआ। (गलत)

लेक्सिकॉन में 'देहांत' के अर्थ के साथ एक और अर्थ लक्षण (+ मानव) जोड़ना जरूरी है जिससे कम्प्यूटर मानव के अलावा अन्य प्राणियों के संदर्भ में 'देहांत' शब्द के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दें।

इसी तरह 'आना' और 'मालूम होना' दोनों का अर्थ शब्दकोश में 'to know' होगा जिससे कम्प्यूटर अनुवाद में ये चारों प्रकार के सही-गलत वाक्य आपको मिल सकते हैं—

I know the doctor's name.	मुझे डाक्टर का नाम मालूम है। (सही)
	× मुझे डाक्टर का नाम आता है। (गलत)
I know Hindi.	मुझे हिन्दी आती है। (सही)
	× मुझे हिन्दी मालूम है। (गलत)

TOUCH 'n' PASS

'मालूम होना' का प्रयोग तथ्य और सूचना की जानकारी से जुड़ा है जबकि 'आना' क्रिया का प्रयोग कौशल या विद्या की जानकारी से जुड़ा है। लेक्सिकॉन इस अतिरिक्त सूचना का समावेश अर्थ के लक्षण के रूप में होना चाहिए; जैसे— (+ कौशल) तथा (+ सूचना) आदि। तभी कम्प्यूटर एक वाक्य को स्वीकार्य और दूसरे को अस्वीकार्य मानेगा।

(ग) **वाक्य-विन्यास सम्बन्धी जानकारी**—व्याकरण की सामान्य पुस्तकों में कई प्रकार के वाक्यों की संरचना का वर्णन मिलता है; जैसे—अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक आदि। लेकिन कम्प्यूटर को इस सूचना की ज्यादा जरूरत है कि कौन-सा शब्द वाक्य की रचना और प्रकार को नियंत्रित करने की क्षमता रखता है, वाक्य में किस शब्द की क्या आकांक्षा है, कौन-सी क्रिया किस प्रकार के कर्म, कर्त्ता या पात्रों की अपेक्षा करती है। उदाहरण के लिए, 'चौंकना' क्रिया अकर्मक वाक्य और चेतन कर्म की आकांक्षा करती है; जैसे—

'मोहन चौंका।' ('मेरा मकान चौंका' वाक्य स्वीकार्य नहीं)

इसी तरह 'लड़ना' दो पात्रों की आकांक्षा करता है; जैसे 'राधा अपनी बहन से लड़ी'। 'लड़ना' क्रिया अपने से पहले 'से' परसर्ग की भी आकांक्षा करती है।

इसी तरह 'चोट लगना', 'प्यास लगना', 'दया आना', पसंद होना, आदि क्रियाएँ, कर्त्ता + को; वाक्य की आकांक्षा करती हैं जबकि अंग्रेजी के समानार्थी वाक्यों की रचना बिल्कुल अलग है। देखिए—

राम को चोट लगी।	Ram hurt himself.
बच्चे को प्यास लगी है।	The child is thirsty.
राधा को भिखारी पर दया आई।	Radha felt pity on the beggar.
रमेश को लड़की पसंद है।	Ramesh likes the girl.

लेक्सिकॉन में इन सभी क्रियाओं के सामने उनके सामान्य अर्थ के साथ-साथ वाक्य संरचना सम्बन्धी लक्षण 'कर्त्ता + को' भी दिया जाएगा जिससे कम्प्यूटर को यह संकेत मिले कि इन क्रियाओं के साथ 'कर्त्ता + को' वाले वाक्यों का प्रयोग होता है।

(घ) **संदर्भ/व्यावहारिक ज्ञान सम्बन्धी जानकारी**—एक शब्द का अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग अर्थ हो सकता है। उदाहरण के लिए, 'post' का अर्थ 'डाक' भी हो सकता है, 'पद' भी, 'खंभा' भी और 'चौकी' भी। वाक्य में इस्तेमाल होकर आने पर पाठक संदर्भ के पूर्वज्ञान के कारण शब्द का ठीक जगह पर ठीक अर्थ लगा लेता है, लेकिन कम्प्यूटर, जिसके पास न पूर्वज्ञान है न संदर्भ की जानकारी, किस प्रकार शब्द का सही अर्थ निर्धारित कर सकता है? उदाहरण के लिए,

शीला मेरी बहन है। वह बीमार है।

वाक्य में कम्प्यूटर को कैसे पता चलेगा कि 'वह' she है या he?

इसी तरह कम्प्यूटर

Please bring the spirit.

वाक्य का अनुवाद 'कृपया स्पिरिट लाइए' भी कर सकता है और 'कृपया प्रेतात्मा लाइए' भी।

संदर्भ और व्यावहारिक ज्ञान की जानकारी कम्प्यूटर में भर पाना वास्तव में कम्प्यूटर अनुवाद से जुड़े विशेषज्ञों के लिए आज सबसे बड़ी चुनौती है। इस समस्या को सुलझाने की कोशिशें जारी हैं। वास्तव में यही वह स्थल है जहाँ कम्प्यूटर अनुवाद में मानव के हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ती है और जहाँ उसे कम्प्यूटर से प्राप्त अनुदित पाठ को संपादित और संशोधित करना पड़ता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. सीमित स्वरूप में अनुवाद के कितने आयाम होते हैं–

(क) तीन (ख) दो (ग) चार (घ) एक

उत्तर (ख) दो

प्र.2. मनुस्मृति के टीकाकार कौन थे?

(क) पाणिनी (ख) डॉ० भोलानाथ तिवारी (ग) कुल्लूक भट्ट (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ग) कुल्लूक भट्ट

TOUCH 'n' PASS

प्र.3. ''एक भाषा से दूसरी भाषा में संदर्भों और विचारों का स्थानान्तरण ही अनुवाद है।'' यह कथन किसका है?
(क) फोरेस्टर (ख) नाइडा (ग) पाणिनी (घ) कुल्लूक भट्ट
उत्तर (क) फोरेस्टर

प्र.4. एक ही भाषा के अन्तर्गत किये गये अनुवाद को कहते हैं–
(क) मध्य भाषिक (ख) अंत भाषिक (ग) पश्च भाषिक (घ) अंतर भाषिक
उत्तर (ख) अंत भाषिक

प्र.5. किस अनुवाद में समानान्तर कोष का उपयोग किया जाता है?
(क) सांख्यिकीय मशीन अनुवाद (ख) नियम आधारित मशीन अनुवाद
(ग) हाइब्रिड मशीन अनुवाद (घ) इंटरलिंगुअल मशीन अनुवाद
उत्तर (क) सांख्यिकीय मशीन अनुवाद

प्र.6. सभी प्रकार के अनुवाद के तरीकों को जोड़कर अनुवाद किया जाता है?
(क) हाइब्रिड मशीन अनुवाद में (ख) सांख्यिकीय मशीन अनुवाद में
(ग) नियम आधारित मशीन अनुवाद में (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) हाइब्रिड मशीन अनुवाद में

प्र.7. भारत में राजभाषा अधिनियम के तहत सभी सरकारी दस्तावेजों का ..... में होना अनिवार्य है।
(क) हिंदी भाषा (ख) अंग्रेजी भाषा
(ग) हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा (घ) हिंदी तथा उर्दू भाषा
उत्तर (ग) हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा

प्र.8. अनुवाद है–
(क) विज्ञान (ख) कला (ग) विज्ञान तथा कला (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) विज्ञान तथा कला

प्र.9. पंचतंत्र को 'कलील-दमना' किस भाषा में पुकारा गया?
(क) उर्दू (ख) अरबी (ग) फारसी (घ) फ्रांसीसी
उत्तर (ख) अरबी

प्र.10. विश्व-साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों का संक्षिप्त परिचय देने वाले ग्रंथ किस भाषा में प्रकाशित हुए?
(क) फारसी (ख) अंग्रेजी (ग) उर्दू (घ) अरबी
उत्तर (ख) अंग्रेजी

प्र.11. 'डिवाइन कोमैडी' किसके द्वारा लिखी गई?
(क) विलियम चासर (ख) होमर (ग) दान्ते (घ) विक्टर ह्यूगो
उत्तर (ग) दान्ते

प्र.12. चार्ल्स डार्विन द्वारा लिखी गयी पुस्तक 'ओरिजन ऑफ स्पीसीज' किस विषय पर आधारित है?
(क) राजनीति (ख) जीव विज्ञान (ग) अर्थशास्त्र (घ) गणित
उत्तर (ख) जीव विज्ञान

प्र.13. कार्ल मार्क्स द्वारा 'दास कैपिटल' किस भाषा में लिखी गई थी?
(क) फ्रांसीसी (ख) जर्मन (ग) अरबी (घ) अंग्रेजी
उत्तर (ख) जर्मन

प्र.14. अभिज्ञान शाकुंतलम् तथा मेघदूतम किसके द्वारा लिखी गई?
(क) पाणिनी (ख) कालिदास (ग) बाणभट्ट (घ) कोटिल्य
उत्तर (ख) कालिदास

प्र.15. 'शाकुंतल' किसकी कृति है?
(क) केशवराम पांडे (ख) माधवलाल (ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (घ) प्रेमचंद
उत्तर (क) केशवराम पांडे

TOUCH 'n PASS

प्र.16. मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में अनुसंधान की शुरुआत कब शुरू हुई?
(क) 1950 के बाद (ख) 1950 के पहले (ग) 1750 के पहले (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) 1950 के बाद

प्र.17. लक्ष्यभाषा के पाठ को ..... कहा जाता है।
(क) लक्ष्य पाठ (ख) अनुदित पाठ (ग) स्रोत पाठ (घ) धार्मिक पाठ
उत्तर (ख) अनुदित पाठ

प्र.18. ज्ञान आधारित कम्प्यूटर अनुवाद को किस प्रणाली के द्वारा कार्यान्वित किया गया था?
(क) पश्च संपादन प्रणाली (ख) स्क्रिप्ट एप्लाइंग मैकेनिज्म प्रणाली
(ग) पूर्व संपादन प्रणाली (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) स्क्रिप्ट एप्लाइंग मैकेनिज्म प्रणाली

प्र.19. किस प्रणाली में व्यक्ति स्वयं कम्प्यूटर को अनूद्य सामग्री का इनपुट देता है?
(क) ज्ञान आधारित मशीनी अनुवाद प्रणाली (ख) पूर्व संपादन प्रणाली
(ग) मनुष्य-मशीन पारस्परिक सहयोग प्रणाली (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) मनुष्य-मशीन पारस्परिक सहयोग प्रणाली

प्र.20. कम्प्यूटर की भाषा में लेक्सिकॉन किसे कहते हैं?
(क) प्रणाली को (ख) संपादक को (ग) संपादन को (घ) शब्दकोश को
उत्तर (घ) शब्दकोश को

प्र.21. कौन-सी प्रणाली अनुवाद में अर्थपरक स्थिरता को मानदण्ड मानती है?
(क) ज्ञान-आधारित (ख) मनुष्य-मशीन पारस्परिक
(ग) पूर्व-संपादन (घ) पश्च संपादन
उत्तर (क) ज्ञान-आधारित

प्र.22. कम्प्यूटर पर उपलब्ध तकनीकी शब्दावली को कहते हैं?
(क) शब्दकोश (ख) ऑन-लाइन डिक्शनरी
(ग) फॉर्मेट (घ) मापांक
उत्तर (ख) ऑन-लाइन डिक्शनरी

प्र.23. महाकवि निराला जी ने रामकृष्ण-विवेकानंद-साहित्य का अनुवाद किसके लिए किया?
(क) संपादन के लिए (ख) रामकृष्णाश्रम के लिए
(ग) संपादकों के लिए (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) रामकृष्णाश्रम के लिए

प्र.24. शाकुंतल तथा मेघदूत मुख्यतः हैं-
(क) कविता (ख) काव्य (ग) निबन्ध (घ) उपन्यास
उत्तर (ख) काव्य

प्र.25. किस लिपि में जैसा बोलते हैं, वैसा ही लिखते हैं?
(क) शारदा लिपि (ख) कुटिल लिपि (ग) देवनागरी लिपि (घ) खरोष्ठी लिपि
उत्तर (ग) देवनागरी लिपि

प्र.26. किस लिपि में बायें से दायें की ओर लिखा जाता है?
(क) देवनागरी लिपि (ख) खरोष्ठी लिपि (ग) कुटिल लिपि (घ) शारदा लिपि
उत्तर (क) देवनागरी लिपि

प्र.27. सर्वप्रथम ट्रांसलेशन शब्द का प्रयोग किसने किया था?
(क) मोनियर विलियम्स (ख) जे०एस० डब्ल्यू (ग) नाइडा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) मोनियर विलियम्स

TOUCH 'n PASS

UNIT-II

अनुवाद की प्रक्रिया

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर अनुवाद की आवश्यकता बीसवीं शताब्दी में देशों के बीच की दूरियाँ कम होने के परिणामस्वरूप विभिन्न वैचारिक धरातलों और आर्थिक, औद्योगिक स्तरों पर पारस्परिक भाषिक विनिमय बढ़ा है और इस विनिमय के साथ-साथ अनुवाद का प्रयोग और अधिक किया जाने लगा है। आज के वैज्ञानिक युग में अनुवाद बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है।

प्र.2. अनुवाद का सबसे बड़ा क्षेत्र कौन-सा है?

उत्तर साधन के रूप में अनुवाद के दो और क्षेत्र होते हैं—भाषाओं का तुलनात्मक व्यतिरेकी अध्ययन तथा तुलनात्मक साहित्य विवेचन।

प्र.3. अनुवाद के कितने सिद्धान्त हैं?

उत्तर छह मुख्य अनुवाद सिद्धान्त हैं—समाजशास्त्रीय, संचारी, व्याख्यात्मक, भाषाई, साहित्यिक और लाक्षणिक।

प्र.4. काव्य अनुवाद क्या है?

उत्तर काव्यानुवाद में अनुवादक द्वारा सर्वप्रथम स्रोत भाषा की सामग्री का सतही दृष्टि से अध्ययन किया जाता है और उसका अर्थ ग्रहण किया जाता है साथ ही उसका काव्यशास्त्रीय अर्थ समझा-परखा जाता है। स्रोत भाषा की सामग्री में विद्यमान बिंब, प्रतीक, अलंकारों को समझने का प्रयास होता है।

प्र.5. अनुवाद का मुख्य ध्येय क्या है?

उत्तर अनुवाद का मुख्य ध्येय यही है कि अनुवाद को रूसी भाषा में करके एक अद्‌भुत कार्य ही नहीं किया बल्कि उस अनुवाद ने अन्य रूसी लोगों में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन आदि के अध्ययन के प्रति रुचि पैदा कर दी।

प्र.6. अनुवाद के प्रमुख प्रभेद कौन-से होते हैं?

उत्तर अनुवाद के कुछ प्रमुख प्रभेद निम्नलिखित हैं—

(क) **शब्दानुवाद**—स्रोत-भाषा के शब्द एवं क्रम को उसी प्रकार लक्ष्य-भाषा में रूपान्तरित करना शब्दानुवाद कहलाता है।

(ख) **भावानुवाद**—साहित्यिक कृतियों के संदर्भ में भावानुवाद का विशेष महत्त्व होता है।

(ग) **छायानुवाद**—अनुवाद सिद्धान्त में छाया शब्द का प्रयोग अति प्राचीन है।

प्र.7. अनुवाद करते समय अनुवादक के सामने कौन-सी समस्याएँ आती हैं?

उत्तर सभी साहित्यिक विधाओं के अनुवाद में अनुवादकों को कमोबेश समान समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अनुवाद के दौरान दो भाषाओं का आपसी संचार, अनुवादक की संवेदना तथा स्रोत साहित्य की मूल संस्कृति की समझ, प्रतीकों, मुहावरों व लोकोक्तियों का भरपूर ज्ञान आदि ऐसे गुण हैं जो साहित्यिक अनुवादक के लिए उपरिहार्य हैं।

प्र.8. अनुवाद के स्वरूप क्षेत्र एवं प्रक्रिया किस प्रकार की होती है?

उत्तर अनुवाद प्रक्रिया एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है। इसमें क्रिया व्यापार का स्वरूप दोहरा होता है। कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया से तात्पर्य अनुवाद की विधि अथवा प्रविधि से है जिसमें एक भाषा से दूसरी भाषा में संदेश और संरचना का अंतरण होता है। संदेश लक्ष्य है और संरचना माध्यम है तथा अंतरण प्रक्रिया।

TOUCH 'n' PASS

प्र.9. अनुवाद कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर अनुवाद के प्रकारों का विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है। पहला अनुवाद की विषयवस्तु के आधार पर और दूसरा उसकी प्रक्रिया के आधार पर उदाहरण के लिए विषयवस्तु के आधार पर साहित्यानुवाद कार्यालयी अनुवाद, विधिक अनुवाद, आशुअनुवाद, वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद आदि।

प्र.10. अनुवाद की मुख्य समस्या क्या है?

उत्तर अनुवाद की मुख्य समस्या द्विभाषकीय है, इसके लिये उन दो भाषाओं का पूर्ण ज्ञान अपेक्षित है जिससे और जिसमें अनुवाद होता है। यह समस्या मूलत: दुभाषिये की है। इसका तात्पर्य यह है कि अनुवादक का दो भाषाओं पर इतना अधिकार होना चाहिये कि वह दोनों का ठीक-ठीक ज्ञान रखते हुए सम्बोधित कर सके और समझा सके।

प्र.11. अनुवाद की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

उत्तर कई भाषाई पेशेवर इस बात पर अधिक जोर देते हैं कि मुहावरों एवं भावों का अनुवाद करना सबसे अधिक कठिन कार्य है। वास्तव में, मुहावरों को नियमित रूप से एक समस्या के रूप में उद्धृत किया जाता है, मशीन अनुवाद इंजन कभी भी पूर्ण रूप से हल नहीं होंगे।

प्र.12. अनुवाद की व्यावसायिक सम्भावनाएँ क्या हैं?

उत्तर बहुत-सी ऐसी अनुवाद एजेंसियाँ है जो अनुवादक को नौकरी देती है। ये एजेंसियाँ एक नहीं बल्कि कई भाषाओं के अनुवादकों को भी हायर करती है। अनुवाद एक ऐसा कार्य है जिसे आप फ्रीलान्स भी कर सकते है। यानी की अपने घर पर बैठ कर, अनेक ऐसी वेबसाइट है जो अनुवाद का कार्य स्वतन्त्र रूप से करने को दे सकती है।

प्र.13. रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद का क्या महत्त्व है?

उत्तर जैसे ही किसी, कम्पनी, संस्था, कार्यालय, विद्यालय आदि ने अनुवादकों से रोजगार के लिए पंजीकरण मँगाए तो भारी तादाद में उस पर हुए पंजीकरण भी यही संकेत करते हैं कि इसके जरिये आजीविका कमाने वालों की कमी नहीं है। अर्थात् बैरोजगारी की कमी नहीं है। इसलिए रोजगार के माध्यम के रूप में इसके अवसर को लेकर कोई संदेह नहीं है। संगठित रूप में इसमें बड़े पैमाने पर रोजगार का माध्यम बनने का अवसर है।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद प्रक्रिया में अर्थग्रहण की समस्या पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

अनुवाद प्रक्रिया में अर्थग्रहण की समस्या

पाठक की भूमिका के रूप में अनुवादक को मूलपाठ के अर्थग्रहण की समस्या का समाधान दो स्तरों पर करना पड़ता है। पहले स्तर का सम्बन्ध स्रोत भाषा की अपनी बनावट और बुनावट से है और दूसरे स्तर का पाठ के विषय तत्त्व से। भाषा स्तर से सम्बन्धित कई उदाहरण पहले भी दिए जा चुके हैं। यहाँ इतना कहना पर्याप्त होगा कि मूलपाठ का संदेश भाषिक अभिव्यक्तियों के उस जाल के भीतर छिपा होता है जो कभी संकेतार्थ का सहारा लेता है और कभी संरचनार्थ, प्रयोगार्थ अथवा संपृक्तार्थ का।

अत: 'संदेश' को पकड़ने के लिए अभ्यांतर आवश्यक हो जाता है, यथा

(क) (किसी की) आँख लगना-निद्रा

(ख) (किसी से) आँख लगना-प्यार होना

(ग) (किसी पर) आँख लगना-लालसा

भाषा सामाजिक संस्कार का बोध भी करती है। अत: कुछ अभिव्यक्तियाँ अपने बोधन के लिए उस संस्कार को भी अर्थग्रहण के दायरे में ले जाती है। इसकी उपेक्षा करने से संदेश का मर्म ठीक से पकड़ में नहीं आ पाता और अनुवाद भ्रामक हो जाता है। उदाहरण के लिए "कफन" में "गंगा नहाना" का प्रसंग है, जिसके चार अनुवाद उपलब्ध हैं।

(क) to go to the Ganges

(ख) to bathe in the Ganges to wash away the sins.

(ग) to swin in the Ganges to wash away the sins

(घ) to wash their sins in the Ganges

TOUCH 'n PASS

स्पष्ट है (क) अनुवाद में "पाप धोने" का भाव व्यक्त नहीं होता और (ग) में नहाने के भाव को "तैरने" के भाव से अतिरंजित कर दिया गया है।

जहाँ तक विषय-वस्तु से सम्बन्धित बोधन और अर्थग्रहण की समस्या का सवाल है, अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि पाठ-सम्बन्धी विषय की उसे एक सीमा तक जानकारी हो। उसे पाठ सम्बन्धी विषय का विशेषज्ञ नहीं माना जाता, पर एक सामान्य पाठक के रूप में कथ्य को समझने की क्षमता हमेशा अपेक्षित रहती है, अन्यथा अनुवाद सटीक नहीं बन पाता। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का एक शब्द लें reaction। इसके तीन विभिन्न विषय क्षेत्रों में अर्थ के आधार पर तीन अनुवाद सम्भव हैं। क्योंकि वे अलग-अलग प्रक्रियाओं से जुड़े हैं यथा प्रतिक्रिया (भौतिकी), अभिक्रिया (रसायन शास्त्र) और अनुक्रिया (मनोविज्ञान)। पाठक के रूप में अनुवादक को यह हमेशा याद रखने की आवश्यकता होती है कि शब्दार्थ, पाठ-सापेक्ष होता है। विषय और प्रसंग के अनुसार शब्दों के अर्थ बदल जाया करते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के शब्द treatment को ही लें। तीन विभिन्न प्रसंगों में इसके तीन अर्थ सम्भव हैं—

1. Treatment of cancer	कैंसर का इलाज
2. Treatment of the subject matter	विषय वस्तु का प्रतिपादन
3. Treatment of servant	नौकर के साथ व्यवहार

प्र.2. अनुवाद में आने वाली समस्याओं के निवारण का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

अनुवाद में आने वाली समस्याओं का निवारण

हिन्दी अनुवाद के विकास में बाधक कुछ निम्न समाधानों-सुझावों पर यदि विचार किया जाय तो सम्भवत: अनुवाद विश्वसनीय और ऊर्जस्वित होगा। अनुवाद कर्म के प्रति आस्था पैदा करने के लिए सर्वप्रथम अपने देश में अनुवाद-सम्बन्धी प्रशिक्षण केन्द्रों और प्रयोगशालाओं को स्थापित करना होगा। गोष्ठियों, वार्ताओं और समय-समय पर होने वाले आयोजनों-बैठकों में अनुवाद को 'अनुवाद कला' के प्रयोग की खराद पर चढ़ाया जाना चाहिए। अगली बात यह कि विदेशी कृतियों के अनुवाद के वक्त हमें कठिन शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। भरसक स्थानीय, देसी या बोलचाल की शब्दावली का प्रयोग हो तो यह उत्तम माना जाएगा। ऐसे अनुवादों के प्रति लोगों के रुझान एवं शौक में वृद्धि होगी।

वस्तुत: गंभीर अनुवाद के नाम पर कठिन शब्दावली अनुवादकों को दुर्बोध, पंडताऊपन से बोझिल तथा जिह्वा के लिए उटपटांग ही सिद्ध होगी। इससे अनुवाद के विरुद्ध माहौल तैयार होगा। वह अनुवाद प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण नहीं रह जायेगा। प्रत्येक अनुवादक को 'हम हमारे, तुम तुम्हारे', 'विवेकानंद, योगा, केरला, आन्ध्रा, कर्नाटका, हिमलया, कोनारका, शुंगा, वेदाज, कुषाण, मिश्रा, गुप्ता, पुरवाई, पुर्वाई, बरसात बर्सात, फर्श-फरस, कीजिये-किजिये या करिये जैसे भ्रष्ट और बेशर्म प्रयोगों में बचना चाहिए क्योंकि वर्तनी का संकट और भाषा की दुविधा हर अनुवाद के लिए दुवारे पर खड़े शत्रु की तरह हैं।

खासकर, यदि अनुवाद हिन्दी भाषा में हो रहा है तो तत्काल सवाल पैदा होगा कि अनुवाद के नाम पर हिन्दी की शब्दावली में कठिन शब्द गढ़कर गोशाला की गायों की तरह जबरिया ठूँस देना कहाँ तक न्यायोचित माना जाएगा? हिन्दी के लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि आज तक अपने ही देश में इसकी कोई विशिष्ट पहचान, एक निश्चित ठोस आकार प्रकार या व्यक्तित्व और स्वरूप की कोई रचनात्मक कल्पना पूरी तरह नहीं बन पाई है, तो ऐसी स्थिति में यह कहाँ तक उचित है कि अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत और जूझ रही हिन्दी को कृत्रिम, बेडौल, मसनवी तथा गढ़े हुए कठिन शब्दों से लैस कर दिया जाय?

एक अच्छा अनुवाद वही हो सकता है। जो व्यापक परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक दृष्टि से सरल सहज भाषा में प्रस्तुत हो। यदि ऐसा नहीं होगा तो अनुवाद और पाठक एक-दूसरे के लिए अजनबी बने रहेंगे। यदि निष्पक्ष बात की जाय तो कहेंगे कि अनुवाद का कारोबार पिछले चार दशक में काफी बढ़ा है। कई तरह की अनुवाद सम्बन्धी संस्थाएँ और दुकानें खोलकर एक तबका इस देश में काफी बढ़ा है। एक तबका इस देश में हिन्दी विकास के नाम पर अपना भरपूर विकास और हितलाभ कर रहा है। इन दुकानों और संस्थानों में बिल्कुल बनावटी, नीरस और व्यर्थ का अनुवाद तैयार हो रहा है। अंग्रेजी से हिन्दी के नाम पर आज छोटे-मोटे उद्योग पनप चुके हैं। बड़े-बड़े अनुवाद ग्रंथ जन्में हैं। अपनी साहित्यिक महत्वाकांक्षाओं की प्रपूर्ति हेतु साधन बने इस कार्य-व्यापार और अनुवाद से हिन्दी का कुछ भी भला नहीं हो रहा है, बल्कि हिन्दी महज अनुवाद की संस्कृति का हिस्सा और कटा टुकड़ा बनकर रह गयी है। अत: आज जरूरत है— निहायत मशीनी भाषा की जगह, सरल सहज, सीधे-सादे, सहज-अकृत्रिम, उलझाव और जटिलता से मुक्त, अवक्र, निराभरण, स्वाभाविक तथा जन सामान्य की जबान पर आसानी से चढ़ने वाली, पत्ती के कोंपल की तरह

कोमल भाषा में अनुवाद किया जाय। कुल मिलाकर अनुवाद जैसे समादृत कार्य को प्रामाणिक रूप में सम्पन्न करने के लिए या तो अखिल भारतीय स्तर पर किसी एक संस्था, विश्वविद्यालय, व्यक्ति, समूहों या साधन सम्पन्न सतत् प्रयत्नशील भाषा-संस्थान को सामने आना होगा, जिसमें समर्पित, सुविज्ञ, ज्ञानवान निष्ठावान अनुवाद कर्मियों-शिल्पियों की सशक्त टोलियों या समूहों का सहयोग जुटा हो, अन्यथा यदि मुद्रा लाभ की पनपती व्यावसायिकता को ध्यान में रखकर, बाजार में माँग के कारण अनुवाद के नाम पर अनुवाद की गाद और तलछट को झटपट गढ़ रच कर हमने समाज को सौंप दिया तो अनुवाद से पाठक इस भद्देपन और नीरसता से बहुत जल्द ऊब जाएगा।

प्र.3. अनुवाद प्रक्रिया में अर्थांतरण की समस्या क्या है?

उत्तर

अनुवाद प्रक्रिया में अर्थांतरण की समस्या

द्विभाषिक की भूमिका में अर्थांतरण की समस्या का समाधान अनुवादक को कई स्तरों पर करना पड़ता है। कभी वह मूल भाषा की शाब्दिक इकाई को आगत शब्द के रूप में अपनाता है, कभी उसका भाषांतरित पर्याय ढूँढ़ता है, और कभी उसकी व्याख्या करते हुए अन्वय प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए "कफन" कहानी में आए "चमार" शब्द को हम चार अनुदित रूपों में पाते हैं।

1. Chamer, 2. Cobbler, 3. Tanner, 4. Untouchable leather worker

इसी तरह "रायता" शब्द के चार अनुदित रूप देखने को मिलते हैं—

1. rayta, 2. curd, 3. curd with spices, 4. vegetable salads spiced and pickled in curd.

(क) **पूर्ण पुनर्विन्यास**—अर्थांतरण के लिए इसमें सम्पूर्ण अभिव्यक्ति को ही बदलना पड़ता है। अत: संदेश को छोड़कर मूलपाठ और अनुदित पाठ में कोई समान-तत्त्व नहीं दिखाई पड़ता। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के मुहावरे by tooth and nail का हिन्दी अनुवाद होगा "जी जान से"।

(ख) **विश्लेषणात्मक पुनर्विन्यास**—इस प्रकार के अंतरण में मूल अभिव्यक्ति की किसी एक इकाई के द्वारा अर्थ को अनुदित पाठ में कई भाषिक इकाई द्वारा प्रेषित किया जाता है, यथा "देवरानी" शब्द का अंग्रेजी अनुवाद होगा wife of younger brother of husband.

(ग) **संश्लेषणात्मक पुनर्विन्यास**—इस प्रकार के अंतरण में मूलभाषा के एक व्याकरणिक प्रकार्य को व्यंजित करने के लिए अनुदित भाषा में किसी अन्य अभिव्यक्ति पद्धति का सहारा लिया जाता है। अंग्रेजी के उपपद 'a' और 'the' के अंतरण के लिए हिन्दी में विभिन्न शब्द क्रम का प्रयोग, यथा;

1. There is a snake in the the room.
2. There is the snake in the room.

का हिन्दी में क्रमश: अनुवाद होगा

(क) कमरे में साँप है।

(ख) साँप कमरे में है।

प्र.4. अनुवाद प्रक्रिया में अंतरण की समस्या को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

अनुवाद प्रक्रिया में अंतरण की समस्या

अंतरण करते समय दो सिद्धांतों का निर्वाह आवश्यक होता है पहले का सम्बन्ध के मूलपाठ के अर्थ के सममूल्य अर्थ से है जिसका अनुवादक पाठ में "न घटाकर, न बढ़ाकर" (no loss, no gain) सिद्धांत के आधार पर प्रस्तुत करता है। दूसरा सिद्धांत समतुल्यता का है जिसके आधार पर अनुवादक अनुदित पाठ को शैली और अभिव्यक्ति के धरातल पर मूलपाठ के समतुल्य भाषिक उपादान के माध्यम से निर्मित करता है।

अनुदित पाठ के रचयिता के रूप में अनुवादक को अर्थ-संप्रेषण की समस्या का सामना करना पड़ता है। अनुवादक पाठ का मूल रचयिता नहीं है, उसके सामने "प्रारूप" के रूप में पहले से ही एक पाठ "मूल पाठ" होता है जिसके समानान्तर अनुदित भाषा में एक "सहपाठ" का उसे निर्माण करना पड़ता है। मूलपाठ के संदेश और फिर उसकी अभिव्यक्ति से सम्बन्धित शैलीगत गठन के दबाव के साथ उसको अनुदित पाठ का निर्माण करना पड़ता है। दूसरी तरफ वह अपने पाठ का रचयिता होने के कारण अपने पाठक वर्ग की भी उपेक्षा नहीं कर सकता। अत: उसे अपने देश और काल के अनुरूप अनुदित पाठ को बोधगम्य और संप्रेष्य भी बनाना पड़ता है। यही कारण है कि "चैत का महीना" का अनुवाद वह कभी month of april और कभी end of spring season के रूप में करता है।

TOUCH 'n PASS

सममूल्य संदेश को बोधगम्य रूप से संप्रेषित करने के लिए अनुदित भाषा की प्रकृति का ज्ञान अनुवादक के लिए आवश्यक होता है। यह भाषा की अपनी शैलीगत विशिष्टता का ही परिणाम है कि अंग्रेजी भाषा के कर्मवाच्य में अभिव्यक्त संदेश को हिन्दी में कर्तृवाच्य के रूप में संप्रेषित किया जाता है। यथा

"Signed by X in the presence of Y and Z." का हिन्दी अनुवाद होगा

''ख और ग की उपस्थिति में क ने हस्ताक्षर किए।''

इसी प्रकार "The meeting was chaired by Secretary" का अनुवाद होगा

''बैठक की अध्यक्षता सचिव ने की।''

ऊपर के विवेचन से स्पष्ट है कि अनुवाद प्रक्रिया का संदर्भ अनुवादक को किसी प्रकार मूल कृति के अर्थ ग्रहण की समस्या (बोधन) स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लक्ष्य भाषा में अर्थांतरण की समस्या (अंतरण) और अनुदित पाठ के रूप में अर्थ-संप्रेषण की समस्या (सर्जन) के प्रति सजग और उसके उचित समाधान के लिए सक्षम बनाता है।

प्र.5. अनुवाद को समझने की दो दृष्टियाँ कौन-सी हैं? वर्णन कीजिए।

उत्तर

अनुवाद को समझने की दो दृष्टियाँ

अनुवाद या अनुदित कृति पर विचार करने की दो दृष्टियाँ हैं— 1. पाठपरक दृष्टि और 2. प्रक्रियापरक दृष्टि।

1. **पाठपरक दृष्टि**—पाठपरक दृष्टि के केन्द्र में मूल रचना और अनुदित कृति के बीच पाए जाने वाले सम्बन्धों की प्रकृति रहती है। इसके आधार पर हम यह देखना चाहते हैं कि अपने संदेश, बनावट और बुनावट में अनुदित कृति, मूल रचना के कितने निकट या समतुल्य हैं। इस संदर्भ में जो भी चर्चा सम्भव है, उसका आधार और सीमा पाठ के रूप में मूल रचना और अनुदित कृति ही बनती है। इस दृष्टि के आधार पर हम ऐसे प्रश्नों का उत्तर पा सकते हैं कि अनुवाद क्या है? अनुवाद कैसा बन पड़ा है? अनुदित पाठ, मूल रचना के कितने निकट या कितनी दूर है? मूल रचना के संदेश को किस सीमा तक अनुदित कृति संप्रेषित करने में समर्थ है? या फिर अपनी संरचनात्मक बनावट या शैलीगत बुनावट में अनुवाद मूल रचना के शिल्पविधान के कितने अनुरूप हैं?

   स्पष्ट है, पाठपरक दृष्टि अनुवाद या अनुदित कृति को पहले एक बनी-बनाई वस्तु के रूप में स्वीकार करती है, और फिर उस पर चर्चा करती है। इस दृष्टि से अनुवाद पर बात करने वालों की आँख के आगे से वे सभी प्रसंग ओझल रहते हैं जिसका सामना अनुवाद करते समय एक अनुवादक को करना पड़ता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अनुवाद भाषा-व्यापार की एक सर्जनात्मक प्रक्रिया भी है। यह प्रक्रिया मूल रचना पर अनुवाद की भावात्मक प्रतिक्रिया से प्रारंभ होकर अनुदित पाठ के रचना-विधान तक फैली होती है। यह कहा जा सकता है कि अनुवाद भाषा-व्यापार की एक संश्लिष्ट प्रक्रिया भी है और इस प्रक्रिया का परिणाम भी। अनुवाद का विचार करने वाली प्रक्रियापरक दृष्टि अनुदित कृति (पाठ) को मात्र मूल रचना में निहित संदेश और उसकी बनावट तथा बुनावट के संदर्भ के आधार पर नहीं देखना चाहती, बल्कि अनुवाद को उन प्रसंगों के परिप्रेक्ष्य में भी देखना चाहती है कि जिसका सामना अनुवादक को मूल रचना को समझने, इसके अर्थ को दूसरी भाषा में बाँधने तथा अनुदित कृति के रूप में एक सममूल्य पाठ के रचने के दौरान करना पड़ता है।

2. **प्रक्रियापरक दृष्टि**—प्रक्रियापरक दृष्टि अनुवाद (अनुदित कृति) को मूल रचना के सममूल्य एक स्वायत पाठ के रूप में भी देखती है और उसे उस प्रक्रिया के परिणाम के रूप में भी ग्रहण करती है जो दो पाठों (मूल और अनुदित) को सममूल्य और समतुल्य बनाती है। दूसरी तरफ वह अनुदित पाठ की अपनी विशिष्टता और सीमा के कारणों पर भी प्रकाश डालती है। इस दृष्टि के आधार पर हम ऐसे प्रश्नों का भी उत्तर पा सकते हैं— अनुवाद मूल रचना से भिन्न है तो क्यों? इस तरह मूल रचना और अनुदित पाठ की भिन्नता का यह केवल आधार ही नहीं प्रस्तुत करती, वरन उसकी व्याख्या भी करती है। वह उन प्रसंगों का निर्धारण भी करती है जो मूलपाठ और अनुदित पाठ/कृति में अंतर का आधार पैदा करता है। वह उन भिन्न भूमिकाओं के संदर्भ में अनुदित कृति को देखती है जिसका निर्वाह अनुवाद करते समय एक अनुवादक को करना पड़ता है। एक तरफ अनुवादक प्रशिक्षण में इसका महत्त्व सहज सिद्ध है, क्योंकि वह अनुवादक को उसकी विभिन्न भूमिकाओं के प्रति सजग और समर्थ बनाने में सहायक होती है। दूसरी तरफ इसका उपयोग मशीनी अनुवाद में सार्थक ढ़ंग से किया जाना सम्भव है। क्योंकि वह अनुवाद-व्यापार के विभिन्न चरणों की ओर न केवल संकेत देती है, बल्कि उन चरणों में पाए जाने वाले विकल्पों को भी निर्धारित करने में सहायक होती है।

TOUCH 'n PASS

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

अनुवाद के विभिन्न प्रकार

अनुवाद एक विशिष्ट ज्ञान का क्षेत्र है, जो अतिविस्तृत है। इसके अनेक भेदोपभेद हैं। इन्हें विभिन्न वर्गों के अन्तर्गत बाँटा जा सकता है। यह वर्गीकरण विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न रूपों में किया गया है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत अनुवाद का वर्गीकरण

अनुवाद की प्रक्रिया, सामग्री तथा उद्देश्य के आधार पर अनुवाद के कई रूप हो सकते हैं। विद्वानों ने इनमें से कोई एक या सभी आधारों के सहारे विविध अनुवाद रूपों को अनुवाद भेद या प्रकारों की संज्ञा दी है। कुछ विद्वानों द्वारा प्रस्तुत अनुवाद प्रकार तथा उसके आधार निम्नलिखित हैं—

जे०सी० केटफोर्ड के अनुसार—केटफोर्ड ने पाठ्य विस्तार, भाषा स्तर और भाषा श्रेणी के आधार पर अनुवाद के सात प्रकार बताए हैं—

(क) पाठ्य विस्तार के आधार पर अनुवाद के दो प्रकार होते हैं— (1) पूर्णानुवाद, और (2) आंशिक अनुवाद। मूल सामग्री का सम्पूर्ण रूप में अनुवाद 'पूर्णानुवाद' है तथा स्रोत भाषा की सामग्री का अनुवाद करते समय कुछ छोड़ दिया जाता है और शेष का यथावत् लक्ष्य भाषा में ग्रहण किया जाता है, वह 'आंशिक अनुवाद' है।

(ख) भाषा स्तर के आधार पर अनुवाद के दो प्रकार होते हैं— (1) समस्त और (2) सीमित। स्रोत भाषा की सामग्री का भाषा के सभी स्तरों को दृष्टि में रखते हुए लक्ष्य भाषा में अनुवाद 'समस्त अनुवाद' कहलाया जाता है और सीमित स्तर पर अर्थात् ध्वनि या लिपि या शब्द या व्याकरण का अनुवाद 'सीमित अनुवाद' कहलाया जाता है।

(ग) **भाषा श्रेणी** के आधार पर अनुवाद के तीन प्रकार होते हैं— (1) मुक्तानुवाद, (2) शाब्दिक अनुवाद, और (3) शब्दशः अनुवाद। वाक्य या वाक्य से ऊँचा स्तर; जैसे—वाक्यों के समूह, गद्यांश आदि का अनुवाद 'मुक्तानुवाद' कहलाता है। स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में शब्द प्रतिशब्द रूप में अनुवाद 'शब्दशः अनुवाद' कहा जाता है। मुक्त और शब्दशः अनुवाद के बीच की स्थिति 'शाब्दिक अनुवाद' की होती है। इसमें लक्ष्य भाषा के व्याकरणिक व्यवस्था को दृष्टि में रखकर अनुवाद किया जाता है।

डॉ० भोलानाथ तिवारी के अनुसार—डॉ० तिवारी ने गद्य-पद्य, साहित्य-विद्या, अनुवाद विषय तथा अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के लगभग अठारह भेद किये हैं—

आधार	भेद
(अ) गद्यत्त्व-पद्यत्तव :	1. गद्यानुवाद,
	2. पद्यानुवाद
(आ) साहित्य विधा :	1. काव्यानुवाद
	2. नाट्यानुवाद
(इ) विषय :	1. ललित साहित्य का अनुवाद,
	2. धार्मिक एवं पौराणिक साहित्य का अनुवाद,
	3. विधि साहित्य का अनुवाद,
	4. समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद,
	5. प्रशासनिक साहित्य का अनुवाद,
	6. वैज्ञानिक/तकनीकी साहित्य का अनुवाद
(ई) अनुवाद की प्रकृति	1. शब्दानुवाद,

TOUCH 'n' PASS

2. भावानुवाद,
3. छायानुवाद,
4. व्याख्यानुवाद,
5. सारानुवाद,
6. वार्तानुवाद,
7. रूपानतरण,
8. आदर्श अनुवाद

डॉ० जी० गोपीनाथन के अनुसार—आपने विषय वस्तु तथा प्रकृति के आधार पर अनुवाद के भेदोपभेदों को इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

(क) विषय के आधार पर—

1. साहित्यिक अनुवाद—जीवनी, निबन्ध, आलोचना आदि का अनुवाद।
2. साहित्येतर अनुवाद—भाषा वैज्ञानिक, तकनीकी, वाणिज्यिकी, समाजशास्त्री, संचार-माध्यमों, कानूनी तथा प्रशासनिक अनुवाद।

(ख) अनुवाद प्रकृति के आधार पर निम्नांकित भेदोपभेद हो सकते हैं—

उक्त विविध आधारों पर किये गये विविध-भेदों को देखने का स्पष्ट हो जाता है कि अनुवाद-प्रक्रिया तथा प्रकृति के अर्थात् आतंरिक आधार पर किये गये भेद की प्रमुख भेद हैं, शेष गौण हैं।

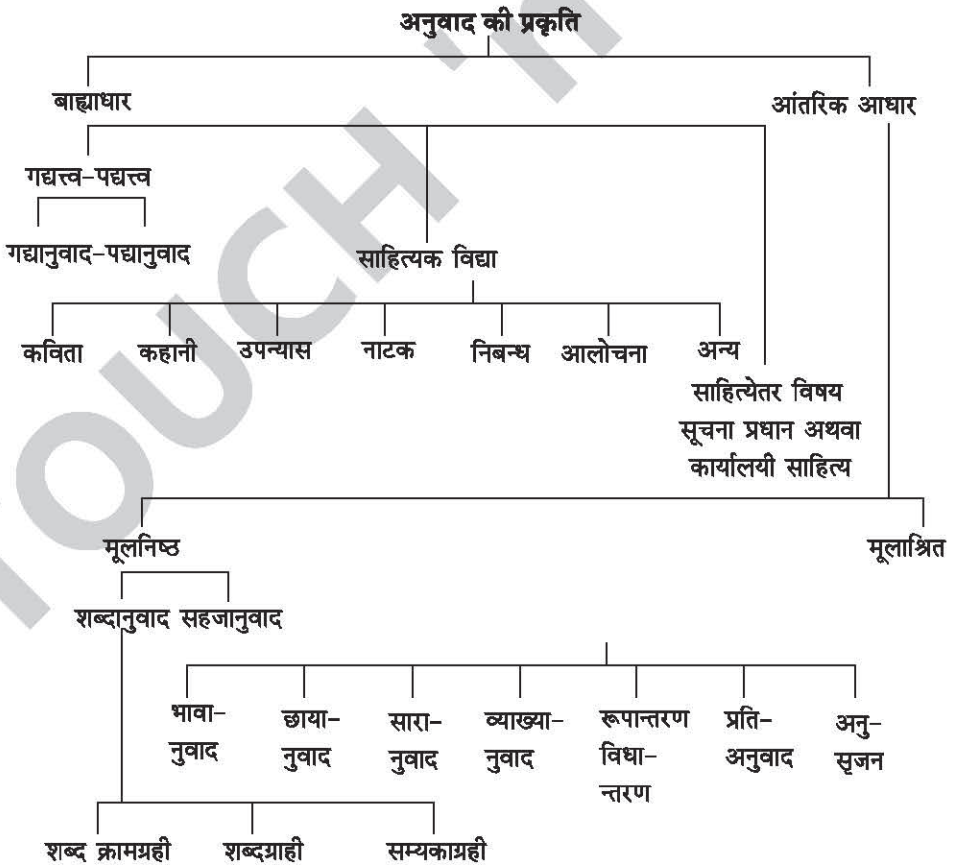

TOUCH 'n PASS

प्र.2. अनुवाद का क्या कार्य है? अनुवाद के कार्य क्षेत्रों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

अनुवाद के कार्य

अनुवाद का कार्य व्यापारियों द्वारा नए स्थानों की यात्रा करने के लिए और उस क्षेत्र के लोगों के साथ बातचीत करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। हर कोई ज्ञान या जानकारी का भंडार है तथा किसी की भावनाओं, विचारों, राय, कुछ तथ्यों को आम जनता के साथ व्यक्त करने के लिए मशीन अनुवाद द्वारा सुलभ बना सकते हैं। भारतीय संदर्भ में, अनुवाद पाली, प्राकृत, देवनागरी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में पवित्र ग्रंथों के अनुवाद के साथ शुरू हुआ। यह दुनिया भर में नैतिक मूल्यों, लोकाचार, परम्परा, मान्यताओं और संस्कृति के संचारण करने में मद्द करता है।

अनुवाद के क्षेत्र

आज की दुनिया में अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जिसमें अनुवाद की उपादेयता को सिद्ध न किया जा सके। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आधुनिक युग के जितने भी क्षेत्र हैं सबके सब अनुवाद के भी क्षेत्र हैं, चाहे न्यायालय हो या कार्यालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी हो या शिक्षा, संचार हो या पत्रकारिता, साहित्य का हो या सांस्कृतिक सम्बन्ध। इन सभी क्षेत्रों में अनुवाद की महत्ता एवं उपादेयता को सहज ही देखा-परखा जा सकता है। अनुवाद के क्षेत्र निम्नलिखित हैं—

1. **न्यायालय**—अदालतों की भाषा प्राय: अंग्रेजी में होती है। इनमें मुकद्दमों के लिए आवश्यक कागजात अक्सर प्रादेशिक भाषा में होते हैं, किन्तु पैरवी अंग्रेजी में ही होती है। इस वातावरण में अंग्रेजी और प्रादेशिक भाषा का बारी-बारी से परस्पर अनुवाद किया जाता है।
2. **सरकारी कार्यालय**—आजादी से पूर्व हमारे सरकारी कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी थी। हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता मिलने के साथ ही सरकारी कार्यालयों के अंग्रेजी दस्तावेजों का हिन्दी अनुवाद आवश्यक हो गया। इसी के मद्देनजर सरकारी कार्यालयों में राजभाषा प्रकोष्ठ की स्थापना कर अंग्रेजी दस्तावेजों का अनुवाद तेजी से हो रहा है।
3. **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी**—देश-विदेश में हो रहे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के गहन अनुसंधान के क्षेत्र में तो सभी लेखन-कार्य उन्हीं की अपनी भाषा में किया जा रहा है। इस अनुसंधान को विश्व पटल पर रखने के लिए अनुवाद ही एक मात्र साधन है। इसके माध्यम से नई खोजों को आसानी से सभी तक पहुँचाया जा सकता है। इस दृष्टि से शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अनुवाद बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
4. **शिक्षा**—भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश के शिक्षा क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका को कौन नकार सकता है। कहना अतिशयोक्ति न होगी कि शिक्षा का क्षेत्र अनुवाद के बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। देश की प्रगति के लिए परिचयात्मक साहित्य, ज्ञानात्मक साहित्य एवं वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद बहुत आवश्यक है। आधुनिक युग में विज्ञान, समाज-विज्ञान, अर्थशास्त्र, भौतिकी, गणित आदि विषय की पाठ्य सामग्री अधिकतर अंग्रेजी में लिखी जाती है। हिन्दी प्रदेशों के विद्यार्थियों की सुविधा के लिए इन सभी ज्ञानात्मक अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद तो हो ही रहा है, अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी इस ज्ञान-सम्पदा को रूपान्तरित किया जा रहा है।
5. **जनसंचार**—जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद का प्रयोग अनिवार्य होता है। इनमें मुख्य हैं—समाचार-पत्र, रेडियो, दूरदर्शन। ये अत्यन्त लोकप्रिय हैं और प्रत्येक भाषा-प्रदेश में इनका प्रचार बढ़ रहा है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में समाचार प्रसारित होते हैं। इनमें प्रतिदिन 22 भाषाओं में खबरें प्रसारित होती हैं। इनकी तैयारी अनुवादकों द्वारा की जाती है।
6. **साहित्य**—साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद वरदान साबित हो चुका है। प्राचीन और आधुनिक साहित्य का परिचय दूरदराज के पाठक अनुवाद के माध्यम से पाते हैं। 'भारतीय साहित्य' की परिकल्पना अनुवाद के माध्यम से ही सम्भव हुई है। विश्व साहित्य का परिचय भी हम अनुवाद के माध्यम से ही पाते हैं। साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद के कार्य ने साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन को सुगम बना दिया है। विश्व की समृद्ध भाषाओं के साहित्यों का अनुवाद आज हमारे लिए कितना जरूरी है कहने या समझाने की आवश्यकता नहीं।
7. **अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध**—अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अनुवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों का संवाद मौखिक अनुवादक की सहायता से ही होता है। प्राय: सभी देशों में एक-दूसरे देशों के राजदूत रहते हैं और उनके

TOUCH 'n PASS

कार्यालय भी होते हैं। राजदूतों को कई भाषाएँ बोलने का अभ्यास कराया जाता है। फिर भी देशों के प्रमुख प्रतिनिधि अपने विचार अपनी ही भाषा में प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुवाद की व्यवस्था होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री एवं शान्ति को बरकरार रखने की दृष्टि से अनुवाद की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

8. **संस्कृति**—अनुवाद को 'सांस्कृतिक सेतु' कहा गया है। मानव-मानव को एक-दूसरे के निकट लाने में, मानव जीवन को अधिक सुखी और सम्पन्न बनाने में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। 'भाषाओं की अनेकता' मनुष्य को एक-दूसरे से अलग ही नहीं करती, उसे कमजोर, ज्ञान की दृष्टि से निर्धन और संवेदन शून्य भी बनाती है। 'विश्वबंधुत्व की स्थापना' एवं 'राष्ट्रीय एकता' को बरकरार रखने की दृष्टि से अनुवाद एक तरह से सांस्कृतिक सेतु की तरह महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

प्र.3. अनुवाद की प्रमुख सीमाओं का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

अनुवाद की सीमाएँ

अनुवाद और अनुवाद-प्रक्रिया की जिन विलक्षणताओं को अनुवाद विज्ञानियों ने बार-बार रेखांकित किया है, उन्हीं के परिपार्श्व से हिन्दी अनुवाद की अनेकानेक समस्याएँ भी उभरी हैं।

बकौल **प्रो० बालेन्दु शेखर तिवारी** हिन्दी के उचित दाय की सम्प्राप्ति में जिन बहुत सारी समस्याओं को राह का पत्थर समझा जा रहा है उनमें अनुवाद की समस्याएँ अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं।

अनुवाद से भाषा का संस्कार होता है, उसका आधुनिकीकरण होता है। वह दो भिन्न संस्कृतियों को जोड़ने वाला सम्प्रेषण सेतु है। एक भाषा को दूसरी भाषा में अन्तरण की प्रक्रिया में अनुवादक दो भिन्न संस्कृति में स्थित समतुल्यता की खोज करता है। एतदर्थ उसे पर्यायवाची शब्दों के विविध रूपों से जूझना पड़ता है। इसी खोज और सन्तुलन बनाने की प्रक्रिया में कभी-कभी एक ऐसा भी मोड़ आता है जहाँ अनुवादक को निराश होना पड़ता है। समतुल्यता या पर्यायवाची शब्द हाथ न लगने की निराशा।

अअनुवाघता (untranslatability) की यही स्थिति अनुवाद की सीमा है। जरूरी नहीं कि हर भाषा और संस्कृति का पर्यायवाची दूसरी भाषा और संस्कृति में उपलब्ध हो। प्रत्येक शब्द की अपनी सत्ता और सन्दर्भ होता है। कहा तो यह भी जाता है कोई शब्द किसी का पर्यायवाची नहीं होता। प्रत्येक शब्द एवं रूप का अपना-अपना प्रयोग गत अर्थ-सन्दर्भ सुरक्षित है। इस दृष्टि से एक शब्द को दूसरे की जगह रख देना भी एक समस्या है।

स्पष्ट है कि हर रूप की अपनी-अपनी समस्याएँ हैं और इन समस्याओं के कारण अनुवाद की सीमाएँ बनी हुई हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए **कैटफोर्ड** ने अनुवाद की सीमाएँ दो प्रकार की बतायी हैं—भाषापरक सीमाएँ और सामाजिक-सांस्कृतिक सीमाएँ।

भाषापरक सीमा से अभिप्राय यह है कि स्रोत-भाषा के शब्द, वाक्यरचना आदि का पर्यायवाची रूप लक्ष्य-भाषा में न मिलना। सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के अन्तरण में भी काफी सीमाओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि प्रत्येक भाषा का सम्बन्ध अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था से जुड़ा हुआ है। परन्तु पोपोविच का कहना है कि भाषापरक समस्या दोनों भाषाओं की भिन्न संरचनाओं के कारण उठ सकती है किन्तु सामाजिक-सांस्कृतिक समस्या सर्वाधिक जटिल होती है।

इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि भाषापरक और सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ एक-दूसरे के साथ गुँथी हुई हैं, अतः इसका विवेचन एक दूसरे को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

अनुवाद की सीमाओं का वर्गीकरण

अनुवाद की सीमाओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. **अनुवाद की भाषापरक सीमाएँ**—जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है कि प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना एवं प्रकृति होती है। इसीलिए स्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा के भाषिक रूपों में समान अर्थ मिलने की स्थिति बहुत कम होती है। कई बार स्रोत-भाषा के समान वाक्यों में सूक्ष्म अर्थ की प्राप्ति होती है लेकिन उनका अन्तरण लक्ष्य-भाषा में कर पाना सम्भव नहीं होता।

   उदाहरणार्थ—इन दोनों वाक्यों को देखें 'लकड़ी कट रही है' और 'लकड़ी काटी जा रही है। सूक्ष्म अर्थ भेद के कारण इन दोनों का अलग-अलग अंग्रेजी अनुवाद सम्भव नहीं होगा। फिर किसी कृति में अंचल-विशेष या क्षेत्र-विशेष के जन-जीवन का समग्र चित्रण अपनी क्षेत्रीय भाषा या बोली में जितना स्वाभाविक या सटीक हो पाता है उतना भाषा के अन्य रूप में नहीं। जैसे कि फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला आँचल।' इस उपन्यास में अंचल विशेष के लोगों की जो सहज अभिव्यक्ति मिलती है उसे दूसरी भाषा में अनुवाद करना बहुत कठिन कार्य है।

TOUCH 'n PASS

इसके अतिरिक्त भाषा की विभिन्न बोलियाँ अपने क्षेत्रों की विशिष्टता को अपने भीतर समेटे होती हैं। यह प्रवृत्ति ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि के स्तरों पर देखी जा सकती है; जैसे—चीनी, जापानी आदि भाषाएँ ध्वन्यात्मक न होने के कारण उनमें तकनीकी शब्दों को अनुदित करना श्रम साध्य होता है। अनुवाद करते समय नामों के अनुवाद की समस्या भी सामने आती है। लिप्यन्तरण करने पर उनके उच्चारण में बहुत अन्तर आ जाता है। स्थान विशेष भी भाषा को बहुत प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए एस्किमो भाषा में बर्फ के ग्यारह नाम हैं जिसे दूसरी भाषा में अनुवाद करना सम्भव नहीं है।

वास्तव में हिन्दी में अनुवाद की समस्याएँ इस भाषा के मूलभूत चरित्र की न्यूनताओं और विशिष्टताओं से जुड़ी हुई हैं। वस्तुत: हिन्दी जैसी विशाल हृदय भाषा में अनुवाद की समस्याएँ अपनी अलग पहचान रखती हैं। भिन्नार्थकता, न्यूनार्थकता, आधिकारिकता, पदाग्रह, भिन्नाशयता और शब्दविकृति जैसे दोष ही हिन्दी में अनुवाद कार्य के पथबाधक नहीं हैं, बल्कि हिन्दी के अनुवादक को अपनी रचना की संप्रेषणीयता की समस्या से भी जूझना पड़ता है।

2. **अनुवाद की सामाजिक-सांस्कृतिक सीमाएँ**—उपर्युक्त संस्कृति-चक्र से स्पष्ट है कि भाषा और संस्कृति का अटूट सम्बन्ध होता है। अनुवाद तो दो भिन्न संस्कृतियों को जोड़ने वाला संप्रेषण-सांस्कृतिक सेतु है। एक भाषा को दूसरी भाषा में अन्तरण की प्रक्रिया में अनुवादक दो भिन्न संस्कृति में स्थित समतुल्यता की खोज करता है। वास्तव में मानव अभिव्यक्ति के एक भाषा रूप में भौगोलिक, ऐतिहासिक और सामाजिक-सांस्कृतिक तत्त्वों का समावेश हो जाता है जो एक भाषा से दूसरी भाषा में भिन्न होते हैं।

   अत: स्रोत-भाषा के कथ्य को लक्ष्य-भाषा में पूर्णतया संयोजित करने में अनुवादक को कई बार असमर्थता का सामाना करना पड़ता है। यह बात अवश्य है कि सांस्कृतिक भाषाओं की अपेक्षा विषम सांस्कृतिक भाषाओं के परस्पर अनुवाद में कुछ हद तक अधिक समस्याएँ रहती हैं। 'देवर-भाभी', 'जीजा-साली' का अनुवाद यूरोपीय भाषा में नहीं हो सकता क्योंकि भाव की दृष्टि से इसमें जो सामाजिक सूचना निहित है वह शब्द के स्तर पर नहीं आँकी जा सकती।

   इसी प्रकार भारतीय संस्कृति के 'कर्म' का अर्थ न तो 'action' हो सकता है और न ही 'performance' क्योंकि 'कर्म' से यहाँ पुनर्जन्म निर्धारित होता है जबकि 'action' और 'performance' में ऐसा भाव नहीं मिलता।

3. **अनुवाद की पाठ-प्रकृतिपरक सीमाएँ**—अनुवाद की आवश्यकता का अनुभव हिन्दी में इसी कारण तीव्रता से किया गया कि भाषाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान से हिन्दी को समृद्ध होने में सहायता मिलेगी और भाषा के वैचारिक तथा अभिव्यंजनामूलक स्वरूप में परिवर्तन आएगा। हिन्दी में अनुवाद के महत्त्व को मध्यकालीन टीकाकारों ने पांडित्य के धरातल पर स्वीकार किया था, लेकिन यूरोपीय सम्पर्क के पश्चात् हिन्दी को अनुवाद की शक्ति से परिचित होने का वृहत्तर अनुभव मिला। हिन्दी में अनुवाद की परम्परा भले ही अनुकरण से प्रारम्भ हुई, लेकिन आज ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में अनुवाद की विभिन्न समस्याओं ने हिन्दी का रास्ता रोक रखा है।

   विभिन्न विषयों तथा कार्यक्षेत्रों की भाषा विशिष्ट प्रकार की होती है। प्रशासनिक क्षेत्र में कई बार 'sanction' और 'approval' का अर्थ सन्दर्भ के अनुसार एक जैसा लगता है, अत: वहाँ दोनों शब्दों में भेद कर पाना सम्भव नहीं है। इसी प्रकार जीवविज्ञान में 'poison' और 'venom' शब्दों का अर्थ एक है किन्तु ये अपने विशिष्ट गुणों के कारण भिन्न हो जाते हैं। अत: पाठ की प्रकृति के अनुसार पाठ का विन्यास करना पड़ता है। जब तक पाठ की प्रकृति और उसके पाठक का निर्धारण नहीं हो पाता तब तक उसका अनुवाद कर पाना सम्भव नहीं हो पाता।

   कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि हर भाषा की अपनी संरचनात्मक व्यवस्था और सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा होती है। इसके साथ-साथ विभिन्न प्रयोजनों में प्रयुक्त होने के कारण उसका अपना स्वरूप भी होता है। यही कारण है कि अनुवाद की प्रक्रिया में स्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा की समतुल्यता के बदले उसका न्यूनानुवाद या अधिअनुवाद ही हो पाता है।

प्र.4. अनुवाद में आने वाली प्रमुख समस्याओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर

अनुवाद में आने वाली प्रमुख समस्याएँ

अनुवाद बहुत सरल प्रतीत होने वाली क्रिया है परन्तु वास्तविकता यह है कि अनुवाद अत्यधिक जटिल प्रक्रिया है। अनुवाद में जब हम व्यवहार की ओर उन्मुख होते हैं तब हमारा पाला विभिन्न प्रकार की समस्याओं से पड़ता है। अत: अच्छे अनुवादक के लिए यह नितांत आवश्यक हो जाता है कि वह इन समस्याओं से परिचित हो जाए व इनके निराकरण का प्रयास करे। यदि अनुवादक को

TOUCH 'n' PASS

लक्ष्य-भाषा, स्रोत-भाषा और विषय पर अधिकार नहीं होगा तो उसकी समस्याएँ बढ़ती ही जाएँगी व हर कदम पर उसे कठिनाई का सामना करना पड़ेगा लेकिन स्रोत-भाषा, लक्ष्य-भाषा और विषय का ज्ञान रखने पर भी अनुवाद में समस्याएँ आती ही हैं।
अनुवाद में आने वाली समस्याएँ तो अनेक हैं—
इनमें से मुख्य समस्याओं का विवरण निम्न प्रकार हैं—

1. **व्याकरण सम्बन्धी समस्याएँ**—प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है व प्रत्येक भाषा व्याकरण के नियमों से नियन्त्रित होती है। अत: लक्ष्य-भाषा और स्रोत-भाषा दोनों में ही व्याकरण कोटियाँ भिन्न होती हैं। वाक्य रचना व वचन प्रक्रिया लिंगविधान भिन्न होते हैं, उदाहरण के लिए He goat एवं she goat का वह बकरा, वह बकरी अनुवाद करना त्रुटिपूर्ण होगा क्योंकि अंग्रेज का लिंग विधान सीमित है। इसलिए He और She का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार He is my father का अनुवाद वह मेरा पिता है करना तर्कसंगत नहीं है, हमें कहना होगा— वे मेरे पिताजी हैं। हिन्दी में 'जी' अतिरिक्त प्रयोग है और 'हैं' का प्रयोग सम्मान देने के लिए किया है। अंग्रेजी का वाक्य एकवचन में होते हुए भी इसका अनुवाद बहुवचन में हुआ है। इसलिए यह नितांत जरूरी है कि व्याकरण, रचना प्रक्रिया और भाषागत विशेषताओं/भिन्नताओं को समझकर अनुवाद किया जाए।
2. **भाषागत प्रयुक्तियाँ**—प्रत्येक भाषा के प्रयोग के अपने नियम होते हैं, अत: एक भाषा में जो अनिवार्य होता है दूसरी भाषा में वह अर्थहीन हो जाता है। यदि हम अंग्रेजी में कहें— There are five birds on the tree इसका हिन्दी में शाब्दिक अनुवाद होगा। वहाँ पेड़ के ऊपर पाँच चिड़ियाँ हैं। परन्तु सही अनुवाद होगा, पेड़ पर पाँच चिड़ियाँ हैं। यहाँ हम देखते हैं कि There तथा The का अनुवाद नहीं किया गया है। इस प्रकार हमें भाषा की प्रकृति एवं उसके प्रयोग को भी सदैव ध्यान में रखकर अनुवाद करना चाहिए अन्यथा यह विकट समस्या बन जाती है।
3. **संकल्पनाओं सम्बन्धी समस्याएँ**—भाषा निरन्तर प्रवाहमान एवं गतिशील रहती है। नई-नई खोजों, नए-नए प्रयोगों और संकल्पनाओं का भाषा में निरन्तर प्रयोग होता ही रहता है। ऐसी संकल्पनाएँ अनुवादकों के लिए बहुत समस्याएँ पैदा करती हैं। यदि आप बैंकिंग में अनुवाद कर रहे हों, और आपके पास शब्द आया Factoring आपने इसका अनुवाद फैक्ट्री के अर्थ में कर दिया तो अर्थ का अनर्थ हो जायेगा। इसलिए जिस विषय का अनुवाद कर रहे हों उस विषय के पारिभाषिक कोश का अवश्य सहारा लें या फिर संकल्पनाओं का लिप्यंतरण कर दें। हास्यापस्पद अनुवाद कभी न करें। यदि कोई अभिव्यक्ति समझ में न आए तो विषय के विशेषज्ञ से सम्पर्क करें।
4. **शब्द चयन सम्बन्धी समस्याएँ**—अनुवाद में शब्द चयन की समस्या सबसे महत्त्वपूर्ण है। यदि आप विषय को समझने में थोड़ी सी लापरवाही बरत दें या शब्दकोश देखकर सीधा-सीधा अनुवाद कर दें तब भी बहुत-सी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। एक बैंक की रबर मुहर का अनुवाद था जो मात्र उचित शब्द चयन की अक्षमता के कारण हुआ था— मुहर थी— Please pay/deliver to the order of— इसका अनुवाद इस प्रकार था—को या उनके आदेश पर 'प्रसव' करें। प्रसव यानी बच्चे को जन्म देना। यह तो ईश्वर के आदेश पर ही सम्भव है। बैंक की मुहर से प्रसव का क्या सम्बन्ध। वस्तुत: शब्दकोश में डिलिवर का अर्थ था— प्रसव, सुपुर्दगी, व्याख्यान देना आदि इस मुहर में डिलिवर का आशय था सुपुर्द करना, लेकिन अनुवादक ने बिना यह सोचे कि इस मुहर का उद्देश्य क्या है, उक्त शब्द लिया और अनुवाद कर दिया। अत: उचित शब्द चयन नहीं हो पाया है। इसी प्रकार एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। किस समय कौन-से शब्द का उपयोग किया जाए यह जानना अनुवादक का पहला धर्म है।
5. **मुहावरे व लोकोक्ति सम्बन्धी समस्याएँ**—प्रत्येक भाषा में मुहावरे व लोकोक्तियाँ होती हैं, जिनका अर्थ शब्दों से नहीं बल्कि उनके प्रयोग से जाना जाता है। अत: अनुवादक के लिए यह नितांत जरूरी हो जाता है कि वह मूल पाठ में प्रयुक्त लोकोक्तियों व मुहावरों का अर्थ समझे वे तदनुसार उसका अनुवाद करे यदि उसी के समान मुहावरा लक्ष्य-भाषा में मिल जाए तो और भी आकर्षक अनुवाद किया जा सकता है; जैसे— 'Tom, Dic and Herry' को 'ऐरा गैरा नत्थू खेरा' कहें तो अधिक अच्छा होगा। इसी प्रकार Herculean effort को भगीरथ प्रयत्न कहना अधिक तर्कसगंत व बोधगम्य होगा, क्योंकि भारतीय जन-मानस हरक्युलिस को नहीं जानता बल्कि भगीरथ को जानता है।
   मुहावरे एवं लोकोक्तियों के अनुवाद में अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता होती है।
6. **सांस्कृतिक परिवेश**—अनुवाद में सांस्कृतिक परिवेश व संस्कृति एवं सभ्यताजन्य शब्दों व सामाजिक मान्यताओं का अनुवाद जटिल समस्या होती है। प्रत्येक भाषा किसी-न-किसी सभ्यता और संस्कृति से जुड़ी होती है, अत: स्रोत-भाषा के

TOUCH 'n' PASS

सांस्कृतिक या पारम्परिक शब्द लक्ष्य भाषा में हों यह जरूरी नहीं होता। भारतीय संदर्भ में जूठा, सती, हुक्का, रोली, पूड़ी, अर्चन जैसे शब्दों के अर्थ अंग्रेजी में मिलेंगे ही नहीं। 'इस गिलास का पानी जूठा है' इस शब्द का अनुवाद हम लाख कोशिश करने पर भी अंग्रेजी में नहीं कर पाएँगे। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि हम ऐसे शब्दों के अनुवाद के बदले इसका लिप्यंतरण कर दें व कोष्ठक में या टिप्पणी द्वारा इस शब्द की अभिव्यक्ति को समझा दें।

भारतीय सामाजिक परिवेश में नाते-रिश्ते परम्पराओं आदि से सम्बन्धित शब्दावली इतनी विशद एवं व्यापक होती है कि उसका अपना अलग-अलग कोश तैयार हो सकता है, भारत में चाचा, ताऊ, मामा, मामी, फूफी, फूफा, मौसा, मौसी, बुआ, देवर, भाभी, नाना, नानी, दादा, दादी जैसे अनेक रिश्ते हैं लेकिन अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं है। अत: ऐसे शब्दों का आनुवाद भी लिप्यंतरण द्वारा ही सम्पन्न किया जाना चाहिए व पाद-टिप्पणी या कोष्ठक में इनको स्पष्ट करना चाहिए।

7. **शब्द शक्तियाँ व लक्षणामूलक प्रयोग**—अनुवाद की एक समस्या यह भी होती है कि कभी-कभी शब्दों का सीधा अर्थ नहीं निकलता है बल्कि उनके लक्षणा या व्यंजना-मूलक अर्थ होते हैं, कहीं-कही पर व्यंग्य होते हैं। मूल पाठ में ऐसे लक्षणा या व्यंजना-मूलक शब्दों या व्यंग्य अथवा व्यंग्यात्मक शैली की पहचान कर लेनी चाहिए उसके उपरान्त शब्द को दृष्टि में न रखकर अभिव्यक्ति का अनुवाद किया जाता है।
8. **साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्याएँ**—साहित्य, भावना की सुव्यवस्थित अभिव्यक्ति होती है। इस अभिव्यक्ति हेतु साहित्यकार जिन माध्यमों का उपयोग करते हैं, वे साहित्य की विधाएँ कहलाती हैं; जैसे—कविता, कहानी, निबन्ध, उपन्यास, नाटक, रिपोर्ताज, चंपू आदि। साहित्य के अनुवाद में सबसे बड़ी कठिनाई यह होती है कि यह भावना प्रधान होता है, अत: कथ्य में वर्णित कोमलता को उसी रूप और उसी कोमलता से दूसरी भाषा में ले जाना वस्तुत: एक जटिल कार्य है। काव्य की कल्पना शक्ति व उसकी अनेकार्थता को उसी रूप में अनुवाद करना दुष्कर कार्य है। बिहारी के दोहे जो कई-कई अर्थ देते हैं व उनकी श्लेषपरक उक्तियों को उसी गहराई से दूसरी भाषा में पहुँचा सकता है। हिन्दी काव्य की आनुप्रासिकता को कैसे सहेजा जाएगा—भावना की सूक्ष्मतम गहराइयों को कैसे पाटा जाएगा? काव्य वक्रोक्ति, बिम्बविधान, अलंकार, उपमेय और उपमानों को कैसे व्यक्त किया जाए। भारतीय जनमानस उल्लू को मूर्ख और अशुभ समझता है जबकि विदेशी संस्कृति (विशेषत: ब्रिटेन के अंग्रेज) में इसे शुभ मानते हैं, इस प्रकार के अंतर्विरोधों के बावजूद यही अभिव्यक्तियाँ कैसे व्यक्त की जाएँ, यह समस्या सदैव अनुवादकों को परेशान करती आई हैं। परन्तु इसका भी हल है। निश्चित समाधान है। इसके लिए हम जिस लक्ष्य-भाषा में अनुवाद कर रहे हैं उसके उपमेय और उपमानों का प्रयोग करें, मन्दिर की जगह चर्च ले जाएँ और दीप की जगह मोमबत्ती अर्थात् भाषा के सांस्कृतिक सामाजिक परिवेश को देखकर ही अनुवाद करें तो साहित्य का अनुवाद अधिक रुचिकर होगा।

   साहित्यिक अनुवाद हू-ब-हू न होकर रूपांतरण (Adoption) शैली में होने चाहिए। सौंदर्य प्रतिमान एवं बिम्ब विधान की लक्ष्य-भाषा के अनुरूप बदल दिए जाने चाहिए। पात्रों के नाम भी देश, काल के अनुरूप बदल देने चाहिए।
9. **पौराणिक प्रतीक**—अनुवाद की एक समस्या यह भी होती है कि पौराणिक प्रतीकों, दन्त कथाओं आदि के संदर्भ आने पर उन शब्दों को कैसे व्यक्त किया जाए; जैसे— भीष्म प्रतिज्ञा, विभीषण आदि के पीछे जो तथ्य और प्रतीकात्मकता छिपी होती है उसे अनुवाद के द्वारा व्यक्त करना कठिन कार्य है, परन्तु इसी प्रकृति के पात्रों के गुण के समान यदि लक्ष्य-भाषा में कोई पात्र हो तो उनका उल्लेख करना चाहिए अथवा जिस प्रतीक के लिए इनका उपयोग हुआ है उस प्रतीक की व्याख्या करके अनुवाद सम्पन्न करना चाहिए।
10. **तकनीकी एवं वैज्ञानिक अनुवाद की समस्या**—तकनीकी एवं वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद स्वयं में एक चुनौती है क्योंकि तकनीकी और वैज्ञानिक अनुवाद करने के लिए अनुवादक को विषय का गूढ़तम ज्ञान होना चाहिए ताकि संकल्पनात्मक Conceptual शब्दों को सही रूप में समझकर उनका समुचित अर्थ अनुवाद में दिया जा सके। तकनीकी या वैज्ञानिक शब्द सुनने से भले ही आसान लगे परन्तु उनका अर्थ इतना आसान नहीं होता, ताप और उष्मा, नाद और अनुवाद जैसे छोटे-छोटे शब्दों का भी विशद् और गहन अर्थ होता है। अत: तकनीकी एवं वैज्ञानिक अनुवाद करते समय पारिभाषिक शब्दावली की अवश्य ही मद्द लेनी चाहिए।

    तकनीकी अनुवाद भले ही वह यान्त्रिकी से सम्बन्धित हो या गणितीय सूत्रों से सम्बन्धित, चाहे रसायन शास्त्र हो या भौतिकी, सर्वत्र चिह्नों व फार्मूलों का होना अनिवार्य है। अत: तकनीकी अनुवाद में यदि ग्रीक/लैटिन शब्द फार्मूले के लिए

TOUCH 'n PASS

उपयोग में लाए गए हों तो उन्हें यथावत् लिख दें अथवा इनके स्थान पर यदि आपने दूसरे शब्दों या चिह्नों का प्रयोग किया हो तो उन्हें पहले ही इंगित कर दें ताकि अनुवाद पढ़ते समय ही इन फार्मूलों को समझने में कठिनाई न हो।
तकनीकी व वैज्ञानिक अनुवाद करते समय यह बात गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि अनुवाद में न कुछ जोड़ा जाए और न कुछ घटाया जाए। अनुवाद भले ही आकर्षक न बने पर अनुवाद सही हो, सच्चा हो व पूर्ण हो। यही वैज्ञानिक व तकनीकी अनुवाद का श्रेष्ठ गुण होता है।

11. **प्रशासनिक एवं विधिक अनुवाद की समस्या**—प्रशासनिक अनुवाद अर्द्ध विधिक प्रकृति का होता है। इसलिए इसमें विधि व्याप्त होती है, विधि अर्थात् कानून, अत: प्रशासनिक और विधिक अनुवाद की दो प्रमुख समस्याएँ होती हैं— पहली समस्या यह होती है कि केवल उतना ही संदेश अनुवाद में जाए जितना स्रोत-भाषा में है अर्थात् अभिव्यक्ति की छोटी-से-छोटी शिथिलता या अर्थ की द्विअर्थता अथवा अस्पष्टता जहाँ एक ओर अनुवाद को व्यर्थ बना देती है, वहीं दूसरी ओर अनुवादक को इस चूक के लिए कठघरे में लाकर खड़ा कर देती है। थोड़ी-सी पर्याय चयन की भूल भी भारी पड़ जाती है। एक उच्च पदस्थ हिन्दी अधिकारी ने अनुवाद में Scavenger के स्थान पर भंगी शब्द का प्रयोग कर दिया, अर्थ व अभिव्यक्ति की दृष्टि से यह अनुवाद ठीक था पर अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति संघ ने उस अनुवाद करने वाले अधिकारी पर उनकी भावना को ठेस पहुँचाने का आरोप लगाते हुए मुकदमा दायर कर दिया, बेचारा अधिकारी एक छोटी-सी लापरवाही के लिए कई वर्ष कोर्ट के चक्कर लगाता रहा, अंत में लिखित माफी माँगकर राजीनामा हुआ व इसी राजीनामे के लिए उसे अच्छी खासी कीमत चुकानी पड़ी। यह उदाहरण काफी होगा यह संकेत देने के लिए कि प्रशासनिक या विधिक अनुवाद करते समय अत्यधिक सावधानी बरतने की जरूरत है।
12. **विज्ञापनों के अनुवाद की समस्या**—प्राय: विज्ञापनों का अनुवाद शब्द से हटकर करना पड़ता है। पर्याय से अलग कौन-सा शब्द आकर्षक और प्रभावी है यह छाँटना ही अनुवादक की सबसे बड़ी समस्या है। विडंबना यह है कि अंग्रेजी में विज्ञापन तैयार करने वाले कॉपी राइटर को हजारों और लाखों रुपए बतौर पारिश्रमिक दिए जाते हैं, जबकि उसका अनुवाद करने वाले को अत्यल्प राशि दी जाती है क्योंकि अनुवाद के लिए शब्द कम होते हैं। वास्तविकता यह है कि कम शब्दों का अनुवाद ही सबसे जटिल होता है, चाहे वह शीर्षक का अनुवाद हो या विज्ञापन का।
विज्ञापन के अनुवाद के लिए संप्रेषणीयता व सुबोधता-दो गुण होना नितांत आवश्यक है, तीसरा गुण है आकर्षक और दिल को छू लेने वाली शब्दावली। इन तीनों का ध्यान रखकर अच्छा अनुवाद किया जा सकता है। अनुवाद की विभिन्न समस्याओं का हल ढूँढ़ा जा सकता है।

प्र.5. अनुवाद में लिप्यंतरण की समस्या का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

अनुवाद में लिप्यंतरण की समस्या

प्रत्येक भाषा की अपनी वर्णमाला होती है तथा वर्णमालानुसार उस भाषा की उच्चारण की व्यवस्था होती है। अर्थ, प्रत्येक शब्द में निहित प्रतीक को इंगित करता है। जहाँ तक भाषा में शब्द के अर्थ की बात है वहाँ तक तो अनुवाद में निश्चित प्रक्रिया से शब्दांतरण द्वारा अनुवाद सम्पन्न होता है परन्तु कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जिनका अर्थ दूसरी भाषा में नहीं होता या होता भी है तो प्रचलित नहीं होता इसलिए अनुवादक को ऐसे शब्दों के अनुवाद के लिए लिप्यंतरण का सहारा लेना पड़ता है।
व्याकरण की एक कोटि है व्यक्तिवाचक संज्ञा, इस कोटि का भी अनुवाद नहीं होता। अत: व्यक्तिवाचक संज्ञा का अनुवाद करते समय उसका अनुवाद नहीं होता परन्तु इसमें कुछ अपवाद भी हैं; जैसे— भारत-India, मिस्र-, यूनान-Greece आदि। इन अपवादों को छोड़कर शेष में तो लिप्यंतरण ही अनुवाद का एक मात्र विकल्प होता है। लिप्यंतरण वहाँ भी आवश्यक हो जाता है जहाँ शब्द संकल्पनामूलक हो या पारिभाषिक हों। ऐसे शब्दों का लिप्यंतरण जहाँ एक ओर अनिवार्य है वहीं दूसरी ओर समस्त भाषाओं के ध्वनिमूलक चिह्न भिन्न-भिन्न होते हैं साथ ही लिप्यंतरण की एक समस्या यह है कि उच्चारण व्यक्ति से व्यक्ति पर भिन्न होता है। उदाहरण हेतु अंग्रेजी से हिन्दी लिप्यंतरण को ही लें College (कॉलेज) का लिप्यंतरण कुछ विद्वान अनुवादक अर्द्धचन्द्र लगाकर करते हैं यथा कॉलेज आदि जबकि कुछ अनुवादक सिर्फ, कालेज ही लिखते हैं। कुछ विद्वान The को 'द' लिप्यंतरण करते हैं तो कुछ 'दि' लिखते हैं, कहीं-कहीं गर्ल्स का लिप्यंतरण गर्ल्स किया जाता है।
अंग्रेजी से हिन्दी लिप्यंतरण की समस्या भारत में और भी विकट है। विभिन्न प्रदेशों में एक ही शब्द का भिन्न-भिन्न लिप्यंतरण मिलता है। Reserve का लिप्यंतरण उत्तर भारत में रिजर्व होता है, मध्य भारत में रिजर्व होता है, पश्चिमी भारत में (महाराष्ट्र में) रिझर्व होता है तथा केरल के कुछ विद्वान इसे रिसर्व लिखते हैं। इस भिन्नता का कारण यह है कि हम दो भाषाओं के शब्दों का अर्थ

दर्शाने वाले शब्दकोश को तैयार करते हैं परन्तु लिप्यंतरण हेतु उच्चारण कोश या लिप्यंतरण कोश का निर्माण नहीं करते हैं, परिणामस्वरूप जो जिस ढंग से उच्चारण करता है वह लिप्यंतरण के कई अमानक रूप चल पड़ते हैं। इनको देखते हुए यह अनिवार्य हो जाता है कि हम अनुवाद की भाषा अर्थात् स्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा के मानक उच्चारण कोश या लिप्यंतरण कोश तैयार कर लें।

अब प्रश्न यह उठता है कि उच्चारण कोश निर्माण या लिप्यंतरण में उन ध्वनियों का क्या करें जो दूसरी भाषा में होती ही नहीं हैं, जैसे कि 'त' और 'ट' का लिप्यंतरण अंग्रेजी में कैसे किया जाएगा? इसी प्रकार 'ढ' के लिए 'ड़' के लिए रोमन लिपि में कोई पर्याय ही नहीं, पौड़ी का लिप्यंतरण Pauri करना होगा।

भारतीय परिवेश में तो अंग्रेजी से हिन्दी लिप्यंतरण दुरूह से दुरूहतर होता जा रहा है, स्थानों व शहरों के नामों का भारतीयकरण होने से अंग्रेजी की वर्तनी कुछ और है तथा शहरों का नाम कुछ और ही है, उदाहरण के लिए उत्तर भारत में Meerut का लिप्यंतरण 'मीरूट' होगा परन्तु शहर का नाम है मेरठ, इसी प्रकार Mussoorie का लिप्यंतरण होगा 'मुसूरी' परन्तु सही नाम है मसूरी, अपनी राजधानी को ही लें Delhi का लिप्यंतरण होना चहिए 'डेल्ही' पर सही नाम है दिल्ली, पश्चिमी भारत में एक शहर का नाम Baroda है। इसका लिप्यंतरण होगा बरोडा, परन्तु सही नाम है बडोदरा, यह हिन्दी में बड़ौदा नाम से भी चल पड़ा है, महाराष्ट्र के कई नाम ऐसे ही हैं— लिखा जाता है Sion और सही उच्चारण है 'शीव'। महाराष्ट्र के महान सपूत और भारत के अग्रणी नेता Tilak का तो असली उच्चारण हम कभी कर ही नहीं पाए कारण यह है कि अनेक भारतीय भाषाओं में व अंग्रेजी में भी इन्हें तलक लिखा जाता है वस्तुत: इनका सही नाम है टिलक।

दक्षिण भारत के शहरों, विशेषकर केरल और तमिलनाडु के शहरों के नाम तो लिप्यंतरण के लिए चुनौती हैं, उदाहरण के लिए Trivandrum का लिप्यंतरण होना चाहिए त्रिवेंद्रम परन्तु सही नाम है 'तिरुवनन्तपुरम।'

उक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि लिप्यंतरण की प्रक्रिया उतनी आसान नहीं जितनी प्रतीत होती है। लिप्यंतरण के लिए कई विद्वानों ने प्रयास किए हैं जैसे सर विलियम जोंस, मोनियर विलियम्स आदि के प्रयास काफी सराहनीय थे, परन्तु वे भी प्रचलित न हो पाए।

सुविधा की दृष्टि से लिप्यंतरण करते समय यह जरूरी है कि आरम्भ में ही कुछ चिह्न निर्धारित कर लिए जाएँ 'ताकि सर्वत्र एकरूपता बनी रहे।

हिन्दी से रोमन के लिप्यंतरण को हमने तकनीकी क्षेत्र में अनुवाद के अन्तर्गत दिया है। रोमन लिपि से हिन्दी लिप्यंतरण के लिए कुछ नियम निम्नवत् हैं। एकरूपता की दृष्टि से यदि इन्हें अपना लिया जाए तो बेहतर होगा—

वर्णमाला का लिप्यंतरण

A = ए
B = बी
C = सी
D = डी
E = ई
F = एफ
G = जी
H = एच
I = आई
J = जे
K = के
L = एल
M = एम
N = एन
O = ओ
P = पी
Q = क्यू
T = टी
U = यू
V = वी
W = डब्ल्यू
X = एक्स
Y = वाई
Z = जैड
a' = ऐ = ace
a = ऐ = cap = कैप
â = र का fair फेयर
ä = आ Calm काम = शांति
ch = च Charmistry कैमेस्ट्री
ch = क che = Check
e = ऐ
ë = ई even = इवन
f = फ = फैट
h = ह, अ = horse = hour हौर्स = आवर

TOUCH 'n' PASS

R = आर
S = एस
O = ओ = coat = कोट
o = ओ = ओ का ह्रस्व जैसा उच्चारण open
ô = ऑ = order आर्डर
ou = ऑ = नाउ = Now
oo = u = यू = टुक = took उ
oo = ऊ = cool = कूल
Th = थ = Thief थीफ
Th = द = This दिस
u = अ = up अप (ऊपर)
Û = अ ह्रस्व उच्चारण बर्न
yoo = यू = फ्यूज
zn = ज = विजन = दृश्य राज
ing = इंग
ago = अॅ 'ए और ए' के बीच की ध्वनि
i = ई = it = इट
i = आई = ice

टिप्पणी—1. ह्रस्व ध्वनि उच्चारण के लिए व्यंजनों में हलंत का प्रयोग होता है परन्तु स्वरों में नहीं। स्वरों में भी हलंत का प्रयोग लिप्यंतरण के उद्देश्य से ध्वनि को नियन्त्रित करने हेतु लगाया जा सकता है।
2. यह मात्र संकेत है। इसे और अधिक परिष्कृत करके मानक किया जाना चाहिए।

प्र.6. अनुवाद में भाषा शैली सम्बन्धी समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

अनुवाद में भाषा शैली सम्बन्धी समस्याएँ

शैली शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ विचारकों का मानना है कि शैली शब्द शील से उत्पन्न है और शील का अर्थ होता है—स्वभाव। जिस प्रकार हर व्यक्ति का स्वभाव अलग-अलग होता हैं उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की शैली भी भिन्न होती है, इसलिए भाषा भले ही एक ही हो उसकी शैलियाँ अनेक हो जाती हैं। अत: इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक रचनाकार के लेखन में उसका व्यक्तित्व झलकता है, उसकी रुचि, निष्ठा, स्वभाव की झलक भी शैली से मिलती है। अर्थ यह है कि शैली व्यक्ति के स्वभाव की परिचायक होती है।

यद्यपि कुछ विद्वान शैली की भारतीय काव्यशास्त्र में वर्णित रीति से तुलना करते हैं व रीति को ही शैली मानते हैं परन्तु रीति और शैली में थोड़ा-सा अन्तर होता है। रीति मूलत: पद्धति व तौर तरीकों की ओर संकेत करती है, परन्तु शैली तो लेखक की चित्तवृत्ति व स्वभाव की द्योतक है। रीति पद रचना से सम्बन्धित होने के कारण शैली से मेल खाती है। इसलिए इनमें भेद बड़े सूक्ष्म रूप से किए जा सकते हैं। स्थूल धरातल पर ये दोनों समान प्रतीत होते हैं और एक सीमा तक समान होते भी हैं।

अनुवाद चूँकि भाषा से जुड़ा विषय है और शैली का आधार भी भाषा ही है इसलिए अनुवाद और शैली एक दूसरे से पूरी तरह जुड़े हैं परन्तु शैली तो अभिव्यक्तियों का श्रेष्ठ साधन होती है जिसमें लेखक या रचनाकार की छाप होती हैं। अत: अनुवादक शब्दों, अर्थों, मुहावरों आदि की समस्या से जूझकर किसी तरह अनुवाद कर देता है परन्तु वह शैली की जो छाप रचनाकार उसमें छोड़ गया है उसका अनुवादक क्या करे। अनुवादक स्वयं रचनाकार भी तो और वह मूल लेखक की छाप को मिटाकर अनुवाद में अपनी छाप छोड़ दे तो क्या ऐसा अनुवाद ग्राह्य अनुवाद माना जाएगा? यदि नहीं तो मूल रचनाकार की छाप को अनुवाद में किस प्रकार से लाए, यह सबसे बड़ी समस्या है।

शैली की कई छटाएँ हैं, व्याकरण के आधार पर शैली के निम्नलिखित प्रमुख प्रकार हैं—

1. **व्यास शैली**—व्याख्या प्रधान सरल व सुगम शैली।
2. **समास शैली**—शब्दों की मितव्ययिता, अति संक्षेप में कहना शब्दों को जोड़कर समास के रूप में अभिव्यक्ति।
3. **अलंकृत शैली**—अलंकारों से युक्त शैली।
4. **कोमलकांत पदावली युक्त शैली**—सुन्दर लालित्यपूर्ण मनोहारी शब्दों में लिखने की प्रवृत्ति इस शैली में आती है।

TOUCH 'n' PASS

5. **अलंकृत शैली**—इसमें अलंकारिता का बाहुल्य होता है। अनेक प्रकार के अलंकारों का प्रयोग करके शैली को आकर्षक बनाया जाता है।
6. **गुंफित शैली**—शब्द चयन इतना क्रमबद्ध व आकर्षक होता है मानो किसी माला में शब्द पिरोए हुए हों।
7. **मुहावरेदार शैली**—इस प्रकार की शैली में मुहावरे व लोकोक्तियों का अधिक-से-अधिक उपयोग किया जाता है।
8. **व्यंग्यात्मक शैली**—व्यंग्यपूर्ण अभिव्यक्तियों से युक्त शैली।

इसी प्रकार इसके अनेक भेद व उपभेद किए जा सकते हैं परन्तु यहाँ हमारा आशय है कि भिन्न-भिन्न शैलियों का अनुवाद कैसे हो?

शैली सम्बन्धी अनुवाद की एक समस्या यह भी है कि स्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा दोनों की शैलियाँ भिन्न-भिन्न होंगी। अब उल्लेखनीय बात यह है कि क्या अनुवादक का कर्त्तव्य यह है कि वह स्रोत-भाषा के अर्थ व अभिव्यक्ति को अंतरित करे या उसकी शैली का अन्तरण भी उसके कार्य में शामिल है।

अनुवाद की परिभाषाओं के आधार पर देखें तो यह अनुवादक का कर्त्तव्य है कि वह मूलपाठ की स्रोत भाषा में लिखी शैली को लक्ष्य-भाषा में भी ले जाए। परन्तु क्या यह सम्भव है?

कर्त्तव्य के धरातल पर यह तो सही प्रतीत होता है पर ऐसा सम्भव नहीं है? यही विवाद समस्या को जन्म देता है। साधारण अनुवाद में कुछ सीमा तक इसका निर्वाह हो सकता है लेकिन साहित्य के अनुवाद, विशेष रूप से काव्य के अनुवाद में तो यह अनुवादक के लिए विकट समस्या बन जाती है, कभी-कभी एक ही लेखक की एक ही कृति (रचना) में अनेक शैलियाँ होती हैं।

यद्यपि सैद्धांतिक तौर पर यही कहा जाता है कि अनुवाद में मूल पाठ की शैली का अनुसरण करना चाहिए व लक्ष्य-भाषा में भी वही शैली अपनाई जानी चाहिए, परन्तु व्यावहारिक धरातल पर असम्भव-सा कार्य है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य देखें—

1. वह मेरा पिता है।
2. वह मेरा बाप है।
3. वह मेरा बापू है।
4. वे मेरे पिता हैं।
5. वो मेरा बापू है।
6. वे मेरे पिताश्री हैं
7. वे मेरे पिताजी हैं।

उक्त सातों वाक्यों में विभिन्न शैली से एक ही कथन को व्यक्त किया गया है। उक्त कथन को स्रोत-भाषा हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करना हो तो सिर्फ एक ही तरह से किया जा सकता है। यथा He is my father. अब आप देखेंगे कि यहाँ एक ही कथ्य है अंग्रेजी में उस कथ्य का संप्रेषण भी हो चुका है। परन्तु शैली का संप्रेषण नहीं किया जा सकता, बाप, बापू, पिता, पिताश्री, पिताजी का अर्थ father ही होगा। यदि पिता के अंग्रेजी अन्य पर्याय Daddy, Dad आदि का प्रयोग भी करें तब भी वह अभिव्यक्ति नहीं हो सकती है।

यहाँ वाक्य संख्या 2 सामान्य अर्थ देने वाला भी हो सकता है और व्यंग्यपूर्ण अर्थ देने वाला भी, इस वाक्य का अन्य अर्थ यह भी है— वह अत्यधिक चालू किस्म का आदमी है। अत: कथ्य का यह शैलीगत भेद लक्ष्य भाषा में अंतरित करना अत्यधिक कठिन कार्य है।

शैली भेद में पर्यायों का अत्यधिक योगदान होता है। कठिनतर व संस्कृतनिष्ठ का निरन्तर प्रयोग से भाषा संस्कृतनिष्ठ व लालित्यमय शैली हो जाती है— यदि सामान्य बोलचाल युक्त पर्यायों का प्रयोग करें तो भाषा सहज शैली में व्यक्त होगी और यदि अरबी, फारसी शब्दों का प्रयोग करें तो भाषा अरबी, फारसी प्रभावयुक्त होगी व इसकी शैली ही बदल जाएगी, जिसे उर्दूमय शैली कहा जा सकता है।

शैली की दृष्टि से यदि हिन्दी को स्रोत-भाषा मानकर अनुवाद की चर्चा करें तो पर्याय समस्या सबसे अधिक कठिन होगी क्योंकि हिन्दी में एक ही शब्द के सैकड़ों पर्याय हैं 'हरि' शब्द ही लीजिए। कई पर्याय हैं हरि के— कहीं-कहीं तो एक ही शब्द के पर्यायों को लेकर काव्य सृजन हुए हैं, यथा—

हरि गए हरि मिलन को हरि के पास
हरि को हरि ना मिला, हरि भया उदास।

TOUCH 'n PASS

यहाँ हरि के अर्थ क्रमश: साँप, मेढक, पानी के अर्थों में हुआ है, अर्थात् साँप; मेढ़क की तलाश में पानी (तालाब) के पास गया परन्तु वहाँ उसे मेढक नहीं मिला इसलिए साँप उदास होकर लौट आया।

इस प्रकार के काव्य प्रयोगजन्य शैली का अनुवाद इसी शैली में लक्ष्य-भाषा में सम्भव ही नहीं है।

शैली की दृष्टि से हिन्दी में अनेक पदबन्ध एवं शब्द ऐसे हैं जो सिर्फ अर्थ ही नहीं देते बल्कि किसी विशिष्ट भावना के संवाहक भी होते हैं। अंग्रेजी में come शब्द में please शब्द लगाकर नम्रता प्रदर्शन हो सकता है यथा Please come परन्तु हिन्दी में — 1. आओ, 2. आ, 3. आइए, 4. पधारिए, 5. तशरीफ रखिए, 6. चरण कमलों से कुटिया को पवित्र कीजिए, 7. चरण रज का सौभाग्य प्रदान कीजिए, 8. तशरीफ का टोकरा यहाँ रखिए। इन सभी आठों प्रकारों को हम अंग्रेजी के come या please come द्वारा ही अभिव्यक्त पर पाएँगे परन्तु उक्त शब्दों में जो शैली के साथ जुड़ी अभिव्यक्तियाँ हैं उनका संप्रेषण नहीं किया जा सकता है। खासतौर पर 6 एवं 7 की अभिव्यक्ति दुरूह है जबकि क्रम संख्या 8 पर की गई अभिव्यक्तियाँ बिलकुल ही भिन्न अर्थ देती है जो व्यंग्यात्मक एवं थोड़ा अपमानजनक प्रयोग है।

यह तो शब्दों की विशिष्ट शैलीपरक अभिव्यक्तियों के प्रयोग की बात है। यदि शैलीगत अध्ययन की दृष्टि से किसी पाठ को देखें तो उसमें निहित छंद, अलंकार, नाद सौंदर्य, कलात्मक अभिव्यक्तियाँ एवं शब्द गुंफन प्रयोग व्यंजनापूर्ण शैली या ओजमयी शैली को अभिव्यक्त करना कठिन है क्योंकि स्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा में शैली साम्य नहीं होता है क्योंकि शैली स्वभाव का ही पर्याय होती है और विश्व में हर मनुष्य का स्वभाव भिन्न होता है।

हिन्दी में शैली-निर्धारण अत्यधिक विशद क्षेत्र है। इससे पूर्व दिए गए शैली के आठ प्रकारों के अलावा भी हिन्दी लेखन की शैलियों के अनेक उपभेद हैं। ये उपभेद स्वयं में ही इतने व्यापक हैं कि इनका विवेचन एक अलग विषय पढ़ने के समान है क्योंकि हिन्दी में शैलियाँ भाषा के प्रयोग के अनुसार भी निर्मित होती हैं; जैसे— क्षेत्रीय या आंचलिक शैली जैसे नागार्जुन का काव्य, ग्राम्य शैली, हरियाणवी शैली आदि, भाषा के स्तर व अन्य भाषा प्रभाव युक्त शैली, यथा-उर्दूमिश्रित, संस्कृतनिष्ठ, सपाट शैली। काव्यशास्त्रीय आधार पर शैली, यथा-आलंकारिक, रसात्मक, ओज पूर्ण सामासिक, ललित, कोमलकांत, परिष्कृत, अनगढ़ आदि कई प्रकार की शैलियाँ हिन्दी में प्रचलित हैं। इन शैलियों का अनुवाद करना अत्यधिक कठिन है क्योंकि अर्थ का संप्रेषण तो हो सकता है शैली का संप्रेषण सम्भव ही नहीं। यदि हम शैली को लक्ष्य भाषा में ले जाने की कोशिश करेंगे तो यह लक्ष्य-भाषा की प्रकृति के प्रतिकूल होगा तथा लक्ष्य-भाषा में ये स्रोत भाषा की अभिव्यक्तियाँ हास्यास्पद लगेंगी या अर्थहीन व अनावश्यक विस्तार-सा प्रतीत होगा, क्योंकि प्रत्येक भाषा का पाठकवर्ग अपनी भाषा की प्रकृति व उसकी शैली से ही परिचित होता है, दूसरी भाषा की छाया से तैयार की गई शैली पाठक को एक बोझ जैसे लगती है। अत: कहीं-कहीं शैली का अनुवाद करना न तो वांछित होता है और न ही जरूरी होता है। अत: यह कठिन समस्या सदैव बनी रहती है।

शैली का अनुवाद करते समय अनुवादक अपनी रचनात्मक क्षमता के अनुसार लक्ष्य-भाषा में स्रोत भाषा से मिलती-जुलती शैली का प्रयोग कर सकता है परन्तु यह उस भाषा की प्रकृति से भिन्न न लगे यह ध्यान रखना आवश्यक है।

अत: शैली सम्बन्धी कठिनाइयों का हल अनुवादक; अनुवाद करते समय अपनी रचनात्मक क्षमता व सृजन कौशल से किसी सीमा तक निकाल सकता है परन्तु इसका संपूर्ण समाधान नहीं हो सकता है, अत: शैली सम्बन्धी समस्याओं का हल ढूँढ़ने के लिए अनुवादक को अपनी रचनाधर्मिता को आगे बढ़ाना चाहिए व अपने सृजन कौशल का अधिकतम उपयोग करते हुए अनुवाद में शैली की छाया लाने का प्रयास करना चाहिए।

प्र.7. अनुवाद के विभिन्न प्रारूप या प्रक्रिया का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर

अनुवाद प्रक्रिया : विभिन्न प्रारूप

अनुवाद प्रक्रिया पर जिन विदेशी विद्वानों ने गम्भीरतापूर्वक विचार किया है इनमें **नाइडा** और **न्यूमार्क** के विचार अधिक चर्चित हैं। यहाँ संक्षेप में इन दोनों विद्वानों द्वारा प्रस्तावित प्रारूप पर प्रकाश डाला गया जो निम्न प्रकार से हैं—

1. **नाइडा द्वारा प्रस्तावित प्रारूप**—नाइडा अनुवाद को एक वैज्ञानिक तकनीक के रूप में स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार अनुवाद भाषाविज्ञान का एक अनुप्रयुक्त पक्ष है, अत: अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों को समझने और उसके विश्लेषण के लिए भाषावैज्ञानिक तकनीक का प्रयोग आवश्यक है। उनके अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के तीन सोपान है—1. विश्लेषण, 2. अंतरण और 3. पुनर्गठन। एक कुशल और अनुभवी अनुवादक इन तीन भिन्न-भिन्न सोपानों को एक छलांग में पार कर लेता है। पर अनुवाद के प्रशिक्षार्थी को इन तीनों सोपानों से क्रमश: गुजरना पड़ता है। इन सोपानों को नाइडा ने आरेख द्वारा अग्र प्रकार व्यक्त किया हैं—

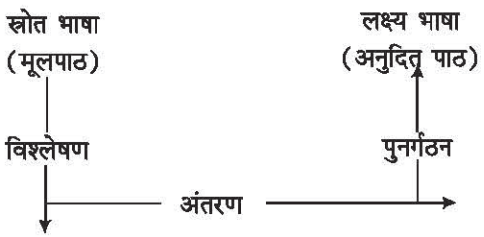

आरेख-1

आरेख (1) द्वारा स्पष्ट है कि इन तीनों सोपानों में एक निश्चित क्रम है। स्रोत भाषा में पहले से ही रचित मूलपाठ के संदेश को ग्रहण करने के लिए अनुवादक सबसे पहले पाठ का विश्लेषण करता है। पाठ भाषाबद्ध होता है और संदेश भाषिक संरचना के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है, इसलिए नाइडा के अनुसार मूलपाठ के विश्लेषण के लिए भाषासिद्धांत तथा उसमें अपनाई जाने वाली विश्लेषण तकनीक का उपयोग आवश्यक हो जाता है। नाइडा का यह भी गत है कि हर भाषिक संरचना के दो स्तर होते हैं— अभ्यांतर तथा बाह्य आभ्यांतर स्तर का सम्बन्ध भाषा के सार्वभौम पक्ष से जुड़ा होता है। अत: इस स्तर पर स्थित संदेश स्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा के लिए समान-रूप होता है। इसके विपरीत बाह्य स्तर की संरचना का सम्बन्ध भाषाविशेष की विशिष्ट व्याकरणिक व्यवस्था के साथ रहता है, जिसके फलस्वरूप गहरे स्तर पर स्थित समान संदेश को अभिव्यक्त करने के लिए दो भाषाएँ (स्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा) दो भिन्न-भिन्न अभिव्यक्ति-प्रणालियों का प्रयोग करती है। नाइडा के अनुसार अनुवाद गहन स्तर पर स्थिति समानधर्मी संदेश के फलस्वरूप ही सम्भव हो पाता है। अत: अनुवादक के लिए आवश्यक है कि वह बाह्य स्तर पर स्थित भाषिक संरचना का विश्लेषण करते हुए उसके गहन स्तर पर स्थित संदेश का पता लगाएँ और उस धरातल पर पाठ का अर्थबोध करें।

उदाहरण के लिए अंग्रेजी का एक वाक्य लें— Mohan frightens sheela गहरे स्तर पर इसकी दो व्याकरणिक संरचनाएँ सम्भव है। एक में मोहन, कर्त्ता के रूप में सक्रिय प्राणी (एजेन्ट) के रूप में कार्य करता है और दूसरे में वह करण के रूप में मात्र क्रिया के साधन के रूप में प्रयुक्त होगा। इसी के अनुसार क्रिया के दो अर्थ भी सम्भव हो पाते हैं। हिन्दी में इसके दो समानार्थी संदेश सम्भव हैं— 1. मोहन शीला को डराता है और 2. शीला मोहन से डरती है। विश्लेषण के उपरान्त प्राप्त इन दोनों संदेशों के बाही अनुवादक पाठ के संदर्भ के अनुसार उनमें से किसी एक या दोनों संदेशों को अनुदित पाठ में संप्रेषित करने का निर्णय लेता है।

विश्लेषण से प्राप्त अर्थबोध का लक्ष्यभाषा में अन्तरण अनुवाद प्रक्रिया का दूसरा सोपान है। प्रत्येक भाषा मूल संदेश को अपने ढंग से भाषिक इकाइयों में बाँधती है। अत: संदेश को एक भाषा से दूसरी भाषा में अन्तरित करने का मतलब ही है अभिव्यक्ति के धरातल पर उसका पुनर्विन्यास करना। नाइडा के अनुसार पुनर्विन्यास की यह प्रक्रिया कुछ-कुछ उसी प्रकार की है जिस प्रकार कुछ विभिन्न आकार के बक्सों के सामान को उससे भिन्न आकार के दूसरे बक्सों में दोबारा सुव्यवस्थित ढंग से सजाया गया। पुनर्विन्यास की यह प्रक्रिया कभी मात्र ध्वनि/लिपि स्तर तक सीमित होती है जैसे अंग्रेजी के शब्दों "एकेडमी", "टेकनीक", "इंटरिम", "कॉमेडी" क्रमश: अकादमी, तकनीक, अन्तरिम और कामदी के रूप में, और कभी नवीन अभिव्यक्ति के रूप में भाषा के सभी स्तरों पर। हिन्दी की लोकोक्ति "नाच न आवे आँगन टेढ़ा" के अंग्रेजी अनुवाद A bad carpenter quarrels with his tools में न तो नाच का प्रसंग है और न ही आँगन और उसके टेढ़े होने का। पर संदेश के धरातल पर ये दोनों अभिव्यक्तियाँ सममूल्य है।

पुनर्गठन अनुवाद प्रक्रिया का तीसरा सोपान है। ध्यान देने की बात है कि प्रत्येक भाषा की अपनी अभिव्यक्ति-प्रणाली और कथन-रीति होती है। लक्ष्यभाषा में अनुदित पाठ का निर्माण अगर मूलरचना के संदेश को यथारूप रखने के प्रयास से जुड़ा होता है, तो उसके साथ लक्ष्यभाषा की उस अभिव्यक्ति संस्कार के साथ ही सम्बद्ध रहता है, तो अनुदित पाठ को सहज, स्वाभाविक और बोधगम्य बनाता है। अनुदित पाठ के रचयिता के रूप में अनुवादक कई प्रकार की छूट ले सकता है, यथा पद्य में लिखी मूलकृति का यह गद्यानुवाद कर सकता है पर मूलकृति की काव्यात्मकता का बिना ह्रास किए हुए मूल रचना के सात-आठ वाक्यों के संदेश को चार-पाँच वाक्यों अथवा दस ग्यारह वाक्यों में बाँध या फैला सकता है पर मूल संदेश में बिना कुछ जोड़े या घटाए, व्याकरणिक संरचना में भी वह परिवर्तन ला सकता है, यथा कर्मवाच्य में व्यक्त मूल अभिव्यक्ति को अनुदित पाठ में वह कर्तृवाच्य में बदल सकता है। (बशर्ते यह बदलाव लक्ष्य-भाषा की प्रकृति की माँग का परिणाम हो)।

बाइबिल का अनुवादक होने के कारण नाइडा की दृष्टि मूलत: एक विशिष्ट प्रकार के पाठ के अनुवाद तक सीमित थी। उनके अनुवाद सम्बन्धी उदाहरण की प्राचीन पाठ, उसमें निहित गूढ़ाई की पकड़, विकसित तथा अविकसित भाषाओं में संदेश के संप्रेषण की समस्या आदि से जुड़े थे।

2. **न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित प्रारूप**—अनुवाद-प्रक्रिया पर न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित नाइडा के समान कुछ चरणों की अपेक्षा रखता है, पर अपने चिंतन में वह अधिक व्यापक है। इसे निम्नलिखित आरेख-2 से दिखाया जाना सम्भव है।

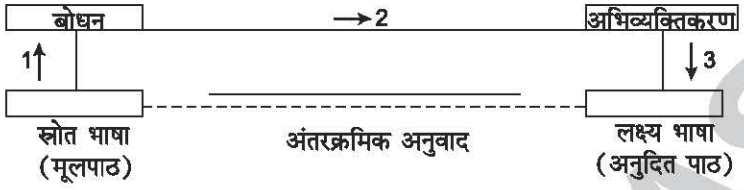

आरेख-2

न्यूमार्क और नाइडा द्वारा प्रस्तावित आरेख की तुलना से स्पष्ट होता है कि अनुवाद प्रक्रिया सम्बन्धी संकल्पना में अगर उनमें समानता है, तो एक सीमा तक विभिन्नता भी है। न्यूमार्क अनुवाद प्रक्रिया की दो दिशाएँ स्वीकार करते हैं और इसीलिए मूलपाठ और अनुदित पाठ के सह-सम्बन्ध को दो स्तरों पर स्थापित करते हैं। पहला सम्बन्ध दो पाठों के अंतरक्रमिक अनुवाद पर आधारित है, जिसे उन्होंने खण्डित रेखा के माध्यम से जोड़ा है। अंतरक्रमिक अनुवाद, शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद होता है। अत: कई संदर्भों में न केवल अपनी प्रकृति में अपारदर्शी होता है, बल्कि भ्रामक भी होता है। खण्डित रेखा से जोड़ने का मतलब ही है कि यह अनुवाद की सही प्रक्रिया नहीं है, भले ही कुछ अनुवादक इस रास्ते को अपनाने की ओर प्रवृत्त हों और कुछ को यह मार्ग सहज और सीधा लगे।

अनुवाद का दूसरा रास्ता मूलपाठ के अर्थबोधन और लक्ष्यभाषा में उच्च अर्थ के अभिव्यक्तिकरण का है। न्यूमार्क द्वारा संकेतिक बोधन की प्रक्रिया, नाइडा द्वारा प्रस्तावित विश्लेषण की प्रक्रिया से अधिक व्यापक संकल्पना हैं, क्योंकि इसमें विश्लेषण से प्राप्त अर्थ के साथ-साथ अनुवादक द्वारा मूलपाठ की व्याख्या का अंश भी सम्मिलित है। कई भाषिक पाठ या उक्तियाँ अनुवादक की व्याख्या की अपेक्षा रखती है, अन्यथा अर्थ पारदर्शी नहीं बन पाता।

हम कुछ उदाहरणों द्वारा इस प्रारूप को यहाँ स्पष्ट करना चाहेंगे। किसी ट्रक पर अंकित "पब्लिक" के लिए "लोक/जन" और "केरियर" के लिए "वाहन" मानते हुए अनुवाद लोकवाहन/जनवाहन सम्भव है। पर यह अनुवाद पारदर्शी अनुवाद नहीं माना जा सकता और न ही पूर्णरूप से बोधगम्य। बोधन के धरातल पर "पब्लिक केरियर" का एक अर्थ यह भी है कि उक्त वाहन किसी की निजी सम्पत्ति इस रूप में नहीं है कि सामान्य व्यक्ति इसका उपयोग कर सके। इसका जनसाधरण के लिए उपयोग सम्भव है बशर्ते कि व्यक्ति इसका उचित भाड़ा दे। अत: अर्थ के एक धरातल पर इसका अन्वय सम्भव है— A carrier which can be hired by public अत: पारदर्शी अनुवाद के रूप में उसका अनुवाद "भाड़े का ट्रक" भी सम्भव है।

बोधन, व्याख्या सापेक्ष होता है और यह व्याख्या स्रोतभाषा में अन्वय के रूप में सम्भव है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी का एक वाक्य लें—Judgement has been reserved. अंतरक्रमिक अनुवाद के रूप में हिन्दी में कहा जा सकता है— निर्णय आरक्षित/सुरक्षित कर लिया गया है। यह अनुवाद के रूप में न केवल अपारदर्शी है बल्कि अर्थ-संप्रेषण में भ्रामक भी है। "निर्णय का आरक्षण/सुरक्षा" अपने आशय को स्पष्ट नहीं कर पाता। अत: यह अर्थ बोधन के धरातल पर स्रोतभाषा में ही अन्वय की अपेक्षा रखता है— यथा Judgement will not be announced immediately/Judgement will be announced later. आदि।

बोधन के बाद का चरण है लक्ष्यभाषा में संदेश के अभिव्यक्तिकरण का, जो पुनर्गठन और पुन:सर्जना की भी अपेक्षा रखता है। ध्यान देने की बात है कि प्रत्येक भाषा की अपनी बनावट और बुनावट होती है, उसकी अपनी शैली और संस्कार होता है, अपना मिजाज और तेवर होता है। लक्षय भाषा में अनुदित पाठ के अभिव्यक्तीकरण के चरण में संदेश को यथासम्भव सुरक्षित रखते हुए एक भाषा के रचनाविधान और संस्कार से दूसरी भाषा के रचनाविधान और संस्कार से दूसरी भाषा के रचना संस्कार और शैली संस्कार की यात्रा करनी होती है। अंग्रेजी के वाक्य— I have two books का अनुवाद होगा मेरे पास दो पुस्तकें है, पर I have two daughters का अनुवाद "मेरे पास दो लड़कियाँ है" गलत माना जाएगा। हिन्दी के भाषा-व्यवहार के अनुरूप होगा— "मेरे दो लड़कियाँ है।" यह भाषा संस्कार ही है जिसके अनुसार A line in reply will be appreciated का अनुवाद उत्तर में "लिखी एक पंक्ति प्रशंसित की जाएगी" उत्तर गलत माना जाएगा जबकि "उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।" अनुवाद सही माना

TOUCH 'n PASS

जाएगा। इसी प्रकार I wonder if this is true का अनुवाद "मुझे इस सच्चाई में संदेश है" अधिक उपयुक्त माना जाएगा। इस चरण पर Judgement has been reserved का हिन्दी में अभिव्यक्तिकरण होगा— "निर्णय अभी नहीं सुनाया जाएगा।"

अनुवाद प्रक्रिया के अंतिम चरण का सम्बन्ध पाठ निर्माण से है। इस चरण पर अनुवादक न केवल लक्ष्य-भाषा के अनुरूप संदेश को भाषिक अभिव्यक्ति का जामा पहनाता है, बल्कि मूलभाषा के पाठ की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सहपाठ का निर्माण करता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का No admission या No smoking का बोधन के धरातल पर अन्वय होगा Admission is not allowed या Smoking is not allowed और अभिव्यक्तिकरण के चरण का हिन्दी में कथन होगा "अंन्दर आना मना है, सिगरेट बीड़ी पीना मना है।" पर यह सम्भव है कि पाठ-निर्माण के चौथे चरण में हम अनुवाद करें "प्रवेश निषिद्ध।" इसी प्रकार Judgement has been reserved का अभिव्यक्तिकरण के चरण का हिन्दी रूपांतरण "निर्णय अभी नहीं सुनाया जाएगा।" स्वीकार हो सकता है। पर पाठ-निर्माण के चरण पर इसका अनुवाद "निर्णय बाद में सुनाया जाएगा।" अधिक सार्थक माना जाएगा।

अनुवाद प्रक्रिया के इस विभिन्न चरणों पर पाई जानेवाली अंग्रेजी-हिन्दी के दो अभिव्यक्तियों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं—

1. स्रोत (मूल) भाषा पाठ
   (क) No smoking
   (ख) Judgement has been reserved
2. अंतरक्रमिक अनुवाद
   (क) नहीं धुआँ करना/धूम्रपान
   (ख) निर्णय रख लिया गया सुरक्षित
3. बोधन
   (क) Smoking is not allowed here.
   (ख) Judgement will not be announced immediately.
4. अभिव्यक्तिकरण
   (क) बीड़ी-सिगरेट पीना मना है।
   (ख) निर्णय अभी नहीं सुनाया जाएगा।
5. पाठ-निर्माण
   (क) धुम्रपान-निषेध
   (ख) निर्णय बाद में सुनाया जाएगा।

भूमिका-समस्या प्रारूप—श्रीवास्तव और गौस्वामी के अनुवाद की प्रक्रिया का एक ओर प्रारूप पस्तुत किया है। उन्होंने एक तरफ अनुवाद को प्रतीक सिद्धान्त के साथ जोड़कर देखने का प्रयत्न किया है और दूसरी तरफ अनुवाद प्रक्रिया को दो भाषाओं के बीच संप्रेषण व्यापार के संदर्भ में देखने की कोशिश की है। उनके अनुसार संदेश (कथ्य) का प्रतीकांतरण अनुवाद है। पाठ को भाषिक प्रतीक के रूप में देखा जाना सम्भव है। प्रत्येक प्रतीक अपने संकेतन व्यापार में संकेतक (वाचक, अभिव्यक्ति) और संकेतित (वाच्य, कथन) की समन्वित इकाई होती है। अनुवादक का कार्य प्रतीकांतरण के समय संकेतिक के मर्म (संदेश) को यथासम्भव अक्षुण्ण बनाए रखना होता है। यह सभी सम्भव है जब दो पाठों (मूल और अनुदित) की अभिव्यक्ति पद्धति (संकेतक) और कथ्य व्याख्या (संकेतार्थ) को सममूल्य और समतुल्य बनाए रखे। इस तथ्य को निम्नलिखित आरेख द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

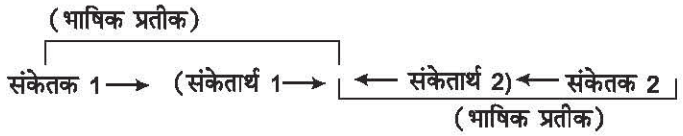

आरेख-3

यहाँ ध्यान देने की बात है कि संदेश, संकेतिक कथ्य का मर्म होता है जो भाषिक प्रतीक के संदर्भ में अभिव्यक्ति और कथ्य के समन्वयन से बँधकर सामने उभरता तो अवश्य है, पर उसके दायरे में बँधा नहीं होता। उदाहरण के लिए "मन्दिर में जल चढ़ाने"

TOUCH 'n' PASS

की उक्ति और दूसरी भाषा में प्रतीकांतरण की समस्या को ही लें। प्रेमचन्द की कहानी "कफन" में प्रयुक्त हिन्दी की यह उक्ति अंग्रेजी की चार भाषांतरित अभिव्यक्तियों में उपलब्ध है—

(क) To offer obligations (ख) To offer Incense Water

(ग) To offer holy Water, और

(घ) To offer Prayers.

अनुवाद (क) और (घ) में पानी का उल्लेख नहीं है और (ख) और (ग) में पानी का उल्लेख तो है, पर उसे विशिष्ट जल में रूप में अनुदित किया गया है। इसका कारण स्पष्ट है (मन्दिर में जल चढ़ाने) के संदेश के मर्म (संकेतन) को सम्बन्ध पूजा से है जो चारों अंग्रेजी अनुवादों के भूल में है और जो मूल और अनुदित पाठ को सममूल्य बनाता है।

जैसा कि आरेख (1) में बताया गया है, अनुवाद प्रक्रिया का सम्बन्ध दो भाषाओं के बीच के संप्रेषण, व्यापार से है। इस संप्रेषण व्यापार में अनुवादक को तीन निश्चित भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है। साथ ही भाषांतर अर्थव्यापार से सम्बद्ध रहता है। अत: अनुवादक को अर्थव्याख्या की तीन प्रक्रियाओं और उसके समरूपों से जूझना पड़ता है। अनुवाद प्रक्रिया के भूमिका-समस्या प्रारूप के अनुसार उसके तीन प्रसंग सामने आते हैं—

1 अनुवादक की भूमिका	2 प्रक्रिया	3 समस्या
1. (मूलपाठ करा) पाठक	बोधन	अर्थग्रहण की समस्या
2. द्विभाषिक	अंतरण	अर्थांतरण की समस्या
3. (अनुदित पाठ का) रचयिता	सर्जन	अर्थ-संप्रेषण की समस्या

प्र.8. अनुवाद के अन्य प्रमुख प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

अनुवाद के कुछ प्रमुख प्रकार : सामान्य परिचय

अनुवाद के कुछ प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं—

1. **शब्दानुवाद**—शब्दानुवाद से अभिप्राय उस अनुवाद से है जिसमें स्रोत भाषा और लक्ष्य-भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखे बिना स्रोत-भाषा के शब्द-प्रति का लक्ष्य-भाषा में अनुवाद कर दिया जाता है। इसे पंक्ति-दर-पंक्ति, वाक्य-दर वाक्य अनुवाद भी कहते हैं। इसके तीन उपभेद होते हैं—
   (क) **शब्दक्रमाग्रही**—इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक मूल सामग्री की हर शब्दाभिव्यक्ति का सामान्य रूप से उसी क्रम में सामग्री दी जाती है; जैसे—I am reading a book. का अनुवाद होगा— 'मैं हूँ पढ़ रहा एक पुस्तक।'
   (ख) **शब्दग्रही**—इसमें मूल शब्द क्रम का आग्रह नहीं होता, पर मूल रचना के प्रत्येक शब्द के अनुवाद का आग्रह होता हैं; जैसे— 'Thanks for the pain, you have taken' का अनुवाद होगा— 'कष्ट उठाने के लिए आपको धन्यवाद।' यहाँ 'उठाना' taken का अनुवाद हिन्दी की प्रकृति को अनदेखा कर दिया गया है। हिन्दी में 'कष्ट उठाने' के स्थान पर 'कष्ट करने' का प्रयोग होता है।
   (ग) **सम्यकाग्रही**—शब्दानुवाद के तीसरे प्रकार के अनुवाद में अनुवादक मूल रचना को कथ्य एवं कथन दोनों दृष्टियों से सम्यक् अनुवाद करने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार के अनुवाद में वह न तो अपनी ओर से अभिव्यक्त इकाई में कुछ जोड़ता है न मूल अभिव्यक्त इकाई में कुछ घटता ही हैं। सूचना प्रधान साहित्य के अनुवाद में इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है।
2. **सहजानुवाद (अर्थानुवाद)**—इसे आदर्श अनुवाद भी कहा जा सकता है। इसमें अनुवादक स्रोत भाषा में अर्थत: एवं शब्दश: निकटतम सहज अनुवाद करता है। इसमें अनुवादक किसी आग्रह-दुराग्रह, आरोपण-प्रत्यारोपण से मुक्त होकर सिर्फ यह प्रयत्न करता है कि लक्ष्य भाषा में अनुवाद को पढ़कर पाठक श्रोता को स्रोत भाषा की समृद्धि का ज्ञान तो हो ही, परन्तु अनुदित रचना को पढ़ते-पढ़ते पाठक या श्रोता को स्रोत भाषा का स्मरण न हो, बल्कि वह उस रचना के आनन्द को, मूल भाषा के पाठकों के समान ही उसी गहराई, उसी संवेदना तथा सम्प्रेषण की तीव्रता ग्रहण करें।
   डॉ० भोलानाथ तिवारी ने आदर्श अनुवाद के विषय में कहा है कि "आदर्श अनुवादक सीरिंज की वह सूई है, जो सीरिंज की दवा को ज्यों-की-त्यों मरीज के शरीर में पहुँचा देता है।"

TOUCH 'n' PASS

3. **भावानुवाद**—अनुवाद के क्षेत्र में अन्य सभी अनुवादों की अपेक्षा भावानुवाद को उत्तम कोटि का अनुवाद माना जाता है। भावानुवाद में शब्दानुवाद की तरह केवल शब्द, वाक्यांश तथा वाक्य प्रयोग आदि पर ध्यान न देकर स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के मूल अर्थ, विचार और भावाभिव्यक्ति पर ही अधिक ध्यान दिया जाता है। भावानुवाद में मूल पाठ की आत्मा अर्थात् मूल कथ्य की सामग्री को ही मुख्य मानकर उसे लक्ष्य भाषा में यथायोग्य पद्धति से सम्प्रेषित किया जाता है। अनुवाद के क्षेत्र में कभी-कभी ऐसी स्थितियाँ पैदा होती है, जब अनुवाद किसी मूल पाठ या वाक्यांश का ठीक-ठीक शब्दानुवाद करने में असमर्थ होता है। तब ऐसी स्थिति में उस सामग्री के अनुवाद के लिए भावानुवाद का ही सहारा लेना पड़ता है। डॉ० भोलानाथ तिवारी की मान्यता है— "सामान्यत: मूल सामग्री यदि सूक्ष्म भावों वाली है तो उसका भावानुवाद करते हैं और यदि वह तथ्यात्मक, वैज्ञानिक या प्रधान है तो उसका शब्दानुवाद करते हैं।" भावानुवाद मूल पाठ के ही समान सुबोध एवं सुपाठ्य होता है। पाठक को ऐसा नहीं लगता की वह अनुवाद पढ़ रहा है। साहित्यिक रचनाओं के अनुवाद में प्राय: इसी शैली का आश्रय लिया जाता है।
4. **छायानुवाद**—हिन्दी में छायानुवाद तथा भावानुवाद शब्द एक-दूसरे के पर्याय रूप में प्रयुक्त होते हैं, जबकि अनुवाद के स्वरूपों में पर्याप्त अन्तर है। जब किसी रचना में कुछ परिवर्तन कर अन्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है, तब ऐसे अनुवाद को छायानुवाद कहते हैं। इसमें लेखक मूल रचना की छाया ग्रहण कर स्वतन्त्र भाव से उस रचना को पुन: लिखता है। विशेषकर विदेशी भाषा की रचना का अनुवाद करते समय इसी शैली को अपनाया जाता है। हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार जैनेन्द्र ने रूसी साहित्यकार टॉलस्टॉय की कहानियों का अनुवाद करते समय इसी शैली का आश्रय लिया है। ऐसे अनुवाद शुद्ध रूप से अनुवाद नहीं कहे जा सकते। इसलिए कुछ विद्वान इसे अनुवाद और मौलिक साहित्य के बीच की वस्तु मानते हैं।

   हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार **जैनेंद्र** ने टॉल्सटॉय की कहानियों का अनुवाद करते समय छायानुवाद शैली आश्रय लिया है। जिसे शुद्ध अनुवाद नहीं कहा जा सकता।
5. **सारानुवाद**—इसमें स्रोत भाषा की मूल सामग्री का संक्षिप्त अनुवाद किया जाता है। इस पद्धति का उपयोग सार्वजनिक सभाओं, संगोष्ठियों, संसद एवं विधान सभा आदि में दिये गये भाषणों, वक्तव्यों आदि की सूचना देने के लिए अखबारों के संवाददाता करते हैं। सारानुवाद का काम परिश्रम साध्य है तथा पर्याप्त अभ्यास की अपेक्षा रखता है। अपनी संक्षिप्तता, सरलता, स्पष्टता तथा लक्ष्य भाषा के स्वाभाविक-सहज, प्रवाह के कारण व्यावहारिक कार्यों के सामान्य अनुवाद की तुलना में सारानुवाद अधिक उपयोगी पाया जाता है। इसका प्रमुख दोष यह है कि इसमें अनुवादक का दृष्टिकोण ही प्रमुख होता है।
6. **व्याख्यानुवाद**—इसे **टीकानुवाद** भी कहा जा सकता है। इसमें मूल पाठ की व्याख्या या टीका के साथ अनुवाद किया जाता है। कुछ अनुवादक मूल पाठ का अनुवाद करते समय उसके प्रत्येक शब्द तथा पद के अतिरिक्त व्याख्या भी करते हैं। श्री लोकमान्य तिलक की 'गीता रहस्य' इस प्रकार के अनुवाद का उदाहरण है।
7. **वार्तानुवाद**—कभी-कभी दो विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच कोई व्यक्ति भाषा माध्यम बनता है और उनकी आपसी बातचीत को अपने दो अथवा अधिक भाषाओं के ज्ञान के कारण तुरन्त ही एक-दूसरे के सम्मुख ही उनकी वार्ता के सहमति के मुद्धों से उन्हीं की भाषा में अनुवाद कर देता है। इस प्रकार के अनुवाद को **भाषा अनुवाद** भी कहा जा सकता है, क्योंकि वह तुरन्त किया जाता है।
8. **रूपान्तरण**—मूल रचना को अपनी रुचि के अनुसार रूपान्तरित करना रूपान्तरण है। अधिकतर इसमें विधान्तरण होता है। एक विधा की रचना को कुछ मामूली परिवर्तनों के साथ दूसरी विधा में परिवर्तित किया जाता है।
9. **भाषान्तर**—यद्यपि अनुवाद और भाषान्तर शब्द एक-दूसरे के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होते हैं, जबकि भाषान्तर अनुवाद का एक भेद है। जब स्रोत भाषा की किसी कृति के पूरे के पूरे अर्थ को बिना किसी परिवर्तन अथवा घटाव बढ़ाव के लक्ष्य-भाषा में कह दिया जाता है, तब उसे **भाषान्तर** कहते हैं।

TOUCH 'n' PASS

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. जे०सी० केटफोर्ड के अनुसार अनुवाद के कितने प्रकार है?
(क) चार (ख) पाँच (ग) छः (घ) सात
उत्तर (घ) सात

प्र.2. डॉ० भोलानाथ तिवारी के अनुसार अनुवाद के लगभग कितने भेद हैं?
(क) ग्यारह (ख) पन्द्रह (ग) अठारह (घ) बाईस
उत्तर (ग) अठारह

प्र.3. आकाशवाणी तथा दूरदर्शन में कितनी भाषाओं में समाचार प्रसारित होते हैं?
(क) 24 भाषाओं में (ख) 22 भाषाओं में
(ग) 8 भाषाओं में (घ) केवल 2 भाषाओं में
उत्तर (ख) 22 भाषाओं में

प्र.4. आजादी के पूर्व हमारे सरकारी कार्यालयों की भाषा थी–
(क) हिन्दी (ख) अंग्रेजी (ग) उर्दू (घ) अरबी
उत्तर (ख) अंग्रेजी

प्र.5. सांस्कृतिक सेतु कहा गया है–
(क) संस्कृति को (ख) सन्दर्भ को (ग) अनुवाद को (घ) ये सभी
उत्तर (ग) अनुवाद को

प्र.6. अनुवाद की सीमाओं को कितने वर्गों में विभाजित किया जा सकता है?
(क) चार (ख) दो (ग) तीन (घ) चार
उत्तर (ग) तीन

प्र.7. अनुवाद करने वाले व्यक्ति को ..... कहते हैं।
(क) अनुमोदक (ख) अनुवाक (ग) अनुवादक (घ) अनुचर
उत्तर (ग) अनुवादक

प्र.8. जिस भाषा से अनुवाद करते हैं, उसे कहते हैं–
(क) श्रोत भाषा (ख) राज भाषा (ग) मान भाषा (घ) प्रांतीय भाषा
उत्तर (क) श्रोत भाषा

प्र.9. अनुवाद की सीमाएँ है/हैं–
(क) पाठ-प्रकृतिपरक (ख) सामाजिक-सांस्कृतिक (ग) भाषापरक (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.10. अनुवाद के प्रमुख प्रभेद कितने होते हैं?
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच
उत्तर (ख) तीन

प्र.11. अनुवाद के सिद्धान्त कितने हैं?
(क) चार (ख) पाँच (ग) छः (घ) सात
उत्तर (ग) छः

प्र.12. निम्नलिखित में से कौन-सा/से अनुवाद के प्रभेद है/हैं?
(क) शब्दानुवाद (ख) भावानुवाद (ग) छायानुवाद (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

TOUCH 'n' PASS

प्र.13. अनुवाद का सिद्धान्त नहीं है–
(क) संचारी (ख) भाषाई (ग) लाक्षणिक (घ) काव्य शास्त्रीय
उत्तर (घ) काव्य शास्त्रीय

प्र.14. भाषा श्रेणी के आधार पर अनुवाद के कितने प्रकार होते हैं?
(क) चार (ख) तीन (ग) दो (घ) छः
उत्तर (ख) तीन

प्र.15. भाषा स्तर के आधार पर अनुवाद के कितने प्रकार होते हैं?
(क) चार (ख) तीन (ग) दो (घ) एक
उत्तर (ग) दो

प्र.16. पाठ्य विस्तार के आधार पर अनुवाद के कितने प्रकार होते हैं?
(क) छः (ख) आठ (ग) चार (घ) दो
उत्तर (घ) दो

प्र.17. भाषा श्रेणी के आधार पर निम्न में से कौन-सा/से अनुवाद के प्रकार है/हैं?
(क) मुक्तानुवाद (ख) आंशिक अनुवाद (ग) पुर्णानुवाद (घ) सीमित अनुवाद
उत्तर (क) मुक्तानुवाद

प्र.18. निम्न में से कौन भाषा स्तर के आधार पर अनुवाद का प्रकार है?
(क) सीमित (ख) मुक्तानुवाद (ग) शाब्दिक (घ) पूर्णानुवाद
उत्तर (क) सीमित

प्र.19. पाठ्य विस्तार के आधार पर कौन अनुवाद का प्रकार है?
(क) पूर्णानुवाद (ख) आंशिक अनुवाद
(ग) दोनों (क) और (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) दोनों (क) और (ख)

प्र.20. अदालतों में पैरवी किस भाषा में की जाती है?
(क) अंग्रेजी (ख) हिन्दी
(ग) अंग्रेजी तथा हिन्दी (घ) अंग्रेजी, हिन्दी तथा उर्दू
उत्तर (क) अंग्रेजी

प्र.21. कैटफोर्ड ने अनुवाद की सीमाएँ कितने प्रकार की बतायी हैं?
(क) चार (ख) दो (ग) तीन (घ) आठ
उत्तर (ख) दो

प्र.22. कैटफोर्ड के अनुसार अनुवाद की सीमा का प्रकार है–
(क) भाषा परक (ख) पाठ-प्रकृतिपरक (ग) ये दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) भाषा परक

प्र.23. भावना की सुव्यवस्थित अभिव्यक्ति को कहते हैं?
(क) साहित्य (ख) आत्मकथा (ग) ये दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) साहित्य

प्र.24. व्याकरण की किस कोटी का अनुवाद सामान्यतः नहीं किया जाता–
(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ख) पदार्थ वाचक संज्ञा
(ग) समूह वाचक संज्ञा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा

TOUCH 'n PASS

प्र.25. पौडी का सही लिप्यंतरण है–

(क) Pauri (ख) Podi (ग) Pori (घ) Paudi

उत्तर (क) Pauri

प्र.26. टीकानुवाद कहते हैं–

(क) रूपान्तरण को (ख) सारानुवाद को (ग) व्याख्यानुवाद को (घ) छायानुवाद को

उत्तर (ग) व्याख्यानुवाद को

प्र.27. ट्रांसलेशन शब्द का निर्माण मूलतः किस भाषा से हुआ है?

(क) ग्रीक (ख) लैटिन (ग) फ्रैंच (घ) अंग्रेजी

उत्तर (ख) लैटिन

प्र.28. मशीनी अनुवाद की कौन-सी पद्धति मानव अनुवाद प्रक्रिया के सर्वाधिक निकट है?

(क) प्रत्यक्ष मशीनी अनुवाद पद्धति (ख) अंतरण मशीनी अनुवाद पद्धति

(ग) अंतर भाषिक मशीनी अनुवाद पद्धति (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ग) अंतर भाषिक मशीनी अनुवाद पद्धति

प्र.29. अंतरण मशीनी अनुवाद पद्धति की प्रक्रिया में क्या शामिल है?

(क) विश्लेषण (ख) अंतरण (ग) पुनर्गठन (घ) ये सभी

उत्तर (घ) ये सभी

प्र.30. ''विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करना अनुवाद है'' यह कथन किसका है?

(क) देवेंद्र शर्मा (ख) पटनायक (ग) भोलानाथ तिवारी (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (क) देवेंद्र शर्मा

प्र.31. अनुवाद का महत्त्व क्या है?

(क) संस्कृति का संवाहक (ख) ज्ञान वृद्धि में सहायक

(ग) तुलनात्मक अध्ययन में सहायता (घ) ये सभी

उत्तर (घ) ये सभी

प्र.32. प्रसिद्ध साहित्यकार जैनेंद्र ने टॉल्सटॉय की कहानियों का अनुवाद करते समय किस शैली का आश्रय लिया है?

(क) छायानुवाद शैली (ख) भावानुवाद शैली

(ग) सारानुवाद शैली (घ) व्याख्यानुवाद शैली

उत्तर (क) छायानुवाद शैली

❑

TOUCH 'n PASS

UNIT-III

अनुवाद का सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. प्रत्येक भाषा की संरचना कैसी होती है?
उत्तर प्रत्येक भाषा की संरचना व्याकरणिक और वाक्य-विन्यासगत होती है।

प्र.2. प्रत्येक भाषा की प्रकृति किसके अनुरूप होती है?
उत्तर प्रत्येक भाषा की अपनी प्रकृति होती है, जो भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तत्त्वों पर आधारित और लौकिक जगत या उस वस्तु के प्रति उस भाषा समाज के दृष्टिकोण और विचारों तथा भावों के अनुरूप होती है।

प्र.3. संस्कृति के विकास का प्रमुख माध्यम क्या होता है?
उत्तर संस्कृति के विकास का प्रमुख माध्यम अनुवाद ही है क्योंकि सभी संस्कृतियों में मौखिक और लिखित साहित्य का अनुवाद एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया (चक्र) है।

प्र.4. संस्कृति के विकास का बड़ा कारक कौन-सा है?
उत्तर भाषा एवं साहित्य का विकास संस्कृति के विकास का एक बड़ा कारक होता है।

प्र.5. जब दो संस्कृतियाँ आपस में टकराती हैं तब दोनों संस्कृतियों के बीच सामंजस्य कौन स्थापित करता है?
उत्तर जब दो संस्कृतियाँ आपस में टकराती हैं तब भाषा दोनों संस्कृतियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने में सहायक का कार्य करती है।

प्र.6. आरम्भिक उर्दू तथा हिन्दी भाषा में क्या अन्तर है?
उत्तर आरम्भिक उर्दू तथा हिन्दी भाषा में इतना ही अन्तर है कि उर्दू में फारसी शब्दों का तथा हिन्दी भाषा में तत्सम शब्दों का बाहुल्य है। धीरे-धीरे उर्दू तथा हिन्दी दोनों ही अलग-अलग भाषा के रूप में विकसित हो गयी।

प्र.7. बौद्ध आदर्शों को किस कविता में अक्षर बद्ध किया गया है?
उत्तर बौद्ध आदर्शों को इरोहा-कविता में अक्षर बद्ध किया गया है।

प्र.8. संस्कृत पुस्तकों का अनुवाद अरबी भाषा में कराने का एक विस्तृत कार्यक्रम किसने आरम्भ किया?
उत्तर संस्कृत पुस्तकों का अनुवाद अरबी भाषा में कराने का एक विस्तृत कार्यक्रम खिलाफत अब्बासी वंश ने आरम्भ किया।

प्र.9. अनुवाद में किसका समन्वय अति आवश्यक है?
उत्तर अनुवाद में अर्थ व भाव दोनों का ही समन्वय अति आवश्यक है।

प्र.10. विषय संस्कृतियों की भाषाओं के बीच अनुवाद करते समय किसका ध्यान रखना पड़ता है?
उत्तर विषय संस्कृतियों की भाषाओं के बीच अनुवाद करते समय वाक्य विन्यास का विशेष ध्यान रखना पड़ता है।

प्र.11. उपनिवेश के कारण हिन्दी भाषा किन-किन भाषाओं से प्रभावित हुई?
उत्तर उपनिवेश के कारण हिन्दी भाषा अंग्रेजी, फ्रांसिसी, पुर्तगाली आदि भाषाओं से प्रभावित हुई।

TOUCH 'n' PASS

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद में भाषा की विन्यासगत विशिष्टता पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

अनुवाद में भाषा की विन्यासगत विशिष्टता

विन्यास की दृष्टि से भी प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्टता होती है। प्रत्येक भाषा की व्याकरणिक और वाक्यविन्यासगत संरचना होती है। प्रत्येक भाषा में एक अलग प्रकार की लयात्मकता और बोलने में उतार-चढ़ाव होता है। जैसे, संस्कृत में पद विभक्ति की प्रधानता होती है। उसमें कर्मवाच्यीकरण और वाक्यों में शब्दों का क्रम विपर्य आम बात होती है। इससे, किसी विशेष प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से वाक्य रचना करने में सहायता मिलती है। संस्कृत में समस्त (समासयुक्त) पद का भी विशेष प्रभाव उत्पन्न करने के लिए एक युक्ति के रूप में प्रयोग किया जाता है। दूसरी तरफ, अंग्रेजी में शब्दों का क्रम निश्चित होता है, क्रम बदलने पर अभिप्रेत अर्थ की हानि होती है। अंग्रेजी में समस्त पद का प्रचलन नहीं है। इसी प्रकार, अंग्रेजी भाषा के वाक्य-गठन और हिन्दी के वाक्य-गठन में अन्तर है।

विन्यास के कारण आने वाली कठिनाई विषम संस्कृतियों की भाषाओं के बीच अनुवाद करने में ज्यादा होती है। जो भाषाएँ एक ही सांस्कृतिक समूह की होती हैं उनमें बहुत हद तक वाक्य-गठन और शब्दों की समानता होती है। भारत की अधिकतर भाषाएँ एक ही सांस्कृतिक समूह की है। उन सब में वाक्य गठन समान रूप से होता है। दूसरी ओर, यूरोप की अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रांसीसी आदि भाषाएँ एक भिन्न सांस्कृतिक समूह की है। उन सब में एक दूसरे प्रकार का वाक्य गठन होता है जो भारतीय भाषाओं में होने वाले वाक्य गठन से भिन्न है। यहाँ हम अंग्रेजी के एक वाक्य का उदाहरण लेंगे और देखेंगे कि सम संस्कृति और विषम संस्कृति की भाषाओं में उसका अनुवाद करने पर उसके गठन में क्या अन्तर आता है—

अंग्रेजी I Love My Country.

फ्रांसीसी J 'amine (Je aime) mon pays.

उपर्युक्त दोनों भाषाओं में वाक्य गठन बिल्कुल एक समान है। दोनों में कर्त्ता क्रिया और कर्म का समान स्थान है।

इसी प्रकार का हिन्दी और बांग्ला भाषाओं में अनुवाद करने पर हम पाते हैं कि हिन्दी और बांग्ला में वाक्य गठन एक जैसा है लेकिन यह अंग्रेजी और फ्रांसीसी के वाक्य गठन के विपरित है।

हिन्दी—मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ।

बांग्ला—आमि आमार देश के भालों वाशी।

उपर्युक्त अनुवादों में जहाँ अंग्रेजी और फ्रांसीसी में कर्त्ता के बाद क्रिया और अंत में कर्म आया है वहीं हिन्दी और बांग्ला में कर्त्ता के बाद कर्म और अंत में क्रिया आई है।

अत: हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि एक ही सांस्कृतिक समूह की भाषाओं में वाक्य विन्यास समान होता और शब्द भी समान होते हैं अथवा उनका समान स्रोत होता है। विषयम संस्कृति की भाषाओं में इस प्रकार की समानता नहीं होती।

प्र.2. अनुवाद में भाषाओं की सांस्कृतिक विशिष्टता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

अनुवाद में भाषाओं की सांस्कृतिक विशिष्टता

प्रत्येक भाषा की अपनी प्रकृति होती है जो भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तत्त्वों पर आधारित और लौकिक जगत या वस्तु के प्रति उस भाषा समाज के दृष्टिकोण और विचारों तथा भावों के अनुरूप होती है। भाषा की इस प्रकृति के अनुसार ही उसमें अभिव्यक्ति का ढंग विकसित होता है।

1. अनुवाद में भाषा की चरित्रगत विशिष्टता का विशेष महत्त्व होता है। एक ही भाव की अभिव्यक्ति अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग ढंग से होती है। एक छोटा सा उदाहरण देने से यह बात स्पष्ट हो जाएगी। जहाँ भारत में, विशेषकर हिन्दी भाषी क्षेत्र में, जब हम किसी से मिलते हैं या बिदा लेते हैं तो "नमस्कार" या "राम-राम" आदि एक ही प्रकार से अभिवादन करते हैं। इसके विपरीत अंग्रेजी में और अन्य यूरोपीय भाषाओं में भिन्न-भिन्न समयों पर भिन्न प्रकार से अभिवादन किया जाता है। अंग्रेजी में मिलते समय यथास्थिति good morning, good afternon, good evening, good day आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार बिदा होते समय good bye या good night कहा जाता है। जब हिन्दी में good night का शाब्दिक अनुवाद "शुभरात्रि" किया जाए तो वह शाब्दिक दृष्टि से भले ही ठीक हो हिन्दी भाषा की सांस्कृतिक विशिष्टता के अनुरूप नहीं होता।

2. भाषा की सांस्कृतिक विशिष्टता सामाजिक मान्यताओं और भावों की अनुभूति पर भी आधारित होती है। यहाँ कुछ उदाहरण देना उपयोगी होगा। हिन्दी में नाते-रिश्ते की शब्दावली जितनी लम्बी है उतनी अंग्रेजी में नहीं हैं। अंग्रेजी में एक ही शब्द Uncle- चाचा, ताऊ, मौसा, फूफा, मामा आदि के लिए प्रयोग किया जाता हैं। अंग्रेजी में भाई और बहन, बड़े हों या छोटे brother और sister ही कहलाते हैं। हिन्दी तथा बांग्ला आदि भाषाओं में बड़े भाई के लिए दादा और बड़ी बहन के लिए दीदी शब्द का प्रयोग आदर प्रकट करने के लिए किया जाता है। इसी प्रकार, अन्य नाते-रिश्तों के लिए भी अंग्रेजी का अपेक्षा हिन्दी में अधिक शब्द उपलब्ध हैं इसका कारण यह हो सकता है अंग्रेजी भाषी क्षेत्रों की अपेक्षा हिन्दी भाषी क्षेत्रों में परिवार की संकल्पना अधिक व्यापक है। अन्य भारतीय भाषाओं में भी नाते-रिश्ते के अनेक विशेष शब्द हैं। तमिल में ''भाभी'' के लिए दो शब्द है ''इनम्मा'' और ''इतिमा''। इस दोनों के प्रयोग में अन्तर है। ''इनम्मा'' शब्द का प्रयोग लड़कियाँ अपने भाई की पत्नी के लिए करती हैं जबकि लड़के अपने भाई की पत्नी के लिए ''इतिमा'' शब्द का प्रयोग करते हैं।

   एक दूसरा उदाहरण देने से यह बात और भी स्पष्ट हो जाएगी। हिन्दी और कई अन्य भारतीय भाषाओं में स्त्री के लिए ''सौभाग्यवती'' शब्द का प्रयोग विशेष अर्थ में किया जाता है। सौभाग्यवती वह स्त्री है जो विवाहित है तथा उसका पति जीवित है। इतना ही नहीं, सौभाग्यवती स्त्री का उल्लेख करने पर ऐसी स्त्री का चित्र आँखों के सामने आता है जिसके हाथों में चूड़ियाँ, गले में मंगल सूत्र, माथे पर बिन्दी और माँग में सिन्दूर है, जो रंग-बिरंगे वस्त्र पहनती है और अनेक प्रकार से शृंगार करके अपने ''सौभाग्य'' सूचक चिन्हों का प्रदर्शन करती है। यदि अंग्रेजी अनुवाद में इस शब्द के लिए केवल fortunate woman, lucky woman कहा जाए तो इस सम्पूर्ण संदर्भ की लेशमात्र भी अभिव्यक्ति नहीं होगी। भारत की सामाजिक प्रथा के अनुसार, स्त्री के लिए ''सौभाग्यवती'' शब्द का प्रयोग एक विशिष्ट अनुभूति का सूचक है जो अन्य समाजों में प्रचलित नहीं है।

   प्रत्येक समाज में सौंदर्य बोध और उसके मानकों की भी विशिष्टता होती है। एक ही रूप, रंग और आकार की वस्तु विभिन्न समाजों में विभिन्न प्रकार की अनुभूति पैदा करती है। अनुवाद में इस अन्तर को समझना आवश्यक होता है।

3. भाषाओं में विशिष्टता भौगोलिक और स्थानिक कारणों से भी आती है। किसी भी क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति उसके आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को बहुत प्रभावित करती है और यह प्रभाव उस क्षेत्र की भाषा में परिलक्षित होता है। समुद्रतटीय क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में मछली पकड़ने, नौवहन आदि का विशेष स्थान होता है। वहाँ के लोगों की जीवन शैली समुद्र से सम्बन्धित उद्यमों से जुड़ी होती है और उनकी सामाजिक मान्यताएँ, आस्थाएँ और मनोवेग उन्हीं उद्यमों से जुड़े होते हैं। फलत: उनकी भाषा में अनेक ऐसे शब्द होते हैं जो उन क्षेत्रों की भाषा में नहीं होते जिनकी भौगोलिक स्थिति भिन्न होती है। तमिल में नौवहन से सम्बन्धित शब्दों की भरमार है जिनके समतुल्य हिन्दी में नहीं है क्योंकि हिन्दी प्रधान रूप से उन क्षेत्रों में बोली जाती है। जो समुद्र से दूर हैं। केरल की मलयालम भाषा में अनेक प्रकार की नौकाओं के नाम-सर्पाकार ''चुंडनवल्लम'' से लेकर सबसे छोटी ''कोलुपुवल्लम'' नामक डोंगी तक-शामिल हैं। इन नावों को तथा बड़े-बड़े पोतों को बाँधने के लिए प्रयुक्त रस्सी, रस्सा आदि के भी कई भेद हैं और उनके स्थानीय नाम हैं।

   इसी प्रकार भारत के गर्म और मैदानी हिन्दी भाषी क्षेत्रों में रहने वाले एक ही प्रकार की ''बर्फ'' को पहचानते हैं जो खाई या पी जाती है और बर्फ के कारखाने में बनाई जाती है। बहुत से लोग, जिन्होंने बर्फ को आसमान से गिरते भी देखा है, एक दूसरी तरह की बर्फ को भी पहचानते हैं। अंग्रेजी में दोनों के लिए 'Ice' और 'snow'-दो अलग-अलग नाम हैं। रोमानियन भाषा में पाँच तरह की बर्फ-प्राकृतिक बर्फ की फुहार, बर्फ की चट्टान, खाने वाली बर्फ, पत्तों पर जमी बर्फ, स्कींइग करने योग्य बर्फ- के अलग-अलग नाम हैं।

4. स्थान भेद के कारण दो भाषाओं के बीच तो अंतर होता ही है लेकिन ऐसा भी होता है कि एक ही भाषा अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग तरीके से बोली और लिखी जाती है। हिन्दी का ही उदाहरण लें तो हम यह पाते हैं कि भारत के समूचे हिन्दी भाषी क्षेत्र में एक-जैसी हिन्दी नहीं बोली जाती। जो हिन्दी बिहार में बोली जाती है वह हरियाणा या राजस्थान में बोली जाने वाली हिन्दी से भिन्न है। हिन्दी का यह आंचलिक रूप कहलाता है। इस आंचलिकता से ही हिन्दी भाषा में सांस्कृतिक विविधता आई है। इसी प्रकार, अन्य भाषाओं के उदाहरण भी दिए जा सकते हैं। यह हम पहले ही बता चुके हैं कि विभिन्न देशों में बोली और लिखी जाने वाली अंग्रेजी के विभिन्न रूप हैं। स्पेनिश भी ऐसी भाषा है जो यूरोप और अमेरिका के अनेक देशों में बोली और लिखी जाती है। प्रत्येक देश में उसकी अलग सांस्कृतिक पहचान हैं।

TOUCH 'n PASS

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. संस्कृति के विकास में अनुवाद की क्या भूमिका है? इसके मौखिक साहित्य के अनुवाद की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

संस्कृति के विकास में अनुवाद की भूमिका

भाषा और साहित्य के विकास में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है और भाषा तथा साहित्य संस्कृति की अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम हो सकते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि संस्कृति के विकास का एक बड़ा माध्यम अनुवाद है। विश्व के इतिहास पर नजर डालने से पता चलता है कि सभी संस्कृतियों में मौखिक और लिखित साहित्य का अनुवाद है। विश्व के इतिहास पर नजर डालने से पता चलता है कि सभी संस्कृतियों में मौखिक और लिखित साहित्य का अनुवाद का निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया रही है। एक भाषा का साहित्य किसी न किसी रूप में दूसरी भाषा में, दूसरी से तीसरी भाषा में और, इस प्रकार अनेक भाषाओं में स्थान पाता है। साहित्य की यात्रा का यह चक्र निरन्तर चलता रहता है तथा संस्कृति और सभ्यता के विकास और प्रसार को प्रति प्रदान करता है।

संस्कृति के विकास में अनुवाद की मुख्य भूमिका दो प्रकार से होती है—1. मौखिक साहित्य का अनुवाद, 2. लिखित अनुवाद।

मौखिक साहित्य के अनुवाद की भूमिका

संस्कृति के विकास में मौखिक साहित्य और उसके अनुवाद की विशेष भूमिका होती है। लिखित साहित्य की भाँति मौखिक साहित्य को एक भाषा से दूसरी भाषा, एक समाज से दूसरे समाज में प्रवेश पाने के लिए किसी अनुवादक की प्रतीक्षा नहीं करनी होती। मैमित्तिक सामाजिक आदान-प्रदान या कार्य-व्यापार के दौरान लोग एक दूसरे की भाषा को जानने और समझने लगते हैं और इस प्रकार एक भाषा के मौखिक साहित्य को दूसरी भाषा में प्रवेश मिल जाता है। एक भाषा और समाज के चुटकले, कहावतें, लोककथाएँ, गीत, लोरियाँ-लोक साहित्य के अनेक रूप अनेक भाषाओं में स्वत: प्रचलित हो जाते हैं। ऐसा साहित्य छोटे-छोटे नगरों, गाँवों, कस्बों आदि में रहने वाले सामान्य लोगों के दैनिक जीवन के प्रत्येक पक्ष में सम्बधित होता है। इस प्रकार का साहित्य एक ही देश की विभिन्न भाषाओं और समाजों में प्रचलित नहीं होता वरन् उसका एक अतर्राष्ट्रीय स्वरूप भी होता है। टेलर (Taylor) द्वारा संग्रहित English Riddles में अंग्रेजी भाषा में प्रचलित पहेलियों के अतिरिक्त, शताब्दियों पुराने उनके ही प्राचीन रूपों, अफ्रीका, भारत आदि अन्य देशों में प्रचलित रूपों का भी संग्रह है। ये पहेलियाँ शताब्दियों से अनेक भाषाओं में प्रचलित रही है और सभी के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि उनमें से कौन सी पहेली किस भाषा में आई। इस प्रकार लोक साहित्य, अदृश्य रहकर, अनेक संस्कृतियों को प्रभावित करता है।

प्राय: अनेक प्रकार का लिखित साहित्य भी एक भाषा से दूसरी भाषा में मौखिक माध्यम द्वारा पहुँचता है और उस भाषा में पहुँचकर फिर से लिखित रूप ले लेता है और उससे आगे, तीसरी भाषा में प्रवेश करने के लिए फिर मौखिक रूप ले लेता है। जातक कथाओं और पंचतंत्र की कहानियों के बारे में ऐसा ही कुछ घटित होता रहा है। लोक साहित्य अपनी इस यात्रा के दौरान, स्थानीय और सामाजिक सांस्कृतिक-सामाजिक स्थितियों के अनुरूप, परिवर्तित होता रहता है। उदाहरणार्थ, रामायण की गाथा, मैसूर के लोक गायकों द्वारा जिस रूप में पाई जाती है उसमें मुख्य रूप से सीता की व्यथा गाथा होती है— जन्म से लेकर धरती में समा जाने तक की कहानी है। इससे भिन्न, तमिल की लोक कथा "माइली रावनन" में राम द्वारा दशशीश रावण का वध किए जाने के बाद एक सहस्त्रशीश धारी रावण के उदय का उल्लेख है जिसके सामने राम भी नहीं ठहर पाते तथा जिसका वध सीता द्वारा किया जाता है। इसी प्रकार, लोक कथाओं में लक्ष्मी, सरस्वती आदि देवियों का जो चरित्र-चित्रण मिलता है वह लिखित पौराणिक पाठों से भिन्न है। जहाँ पौराणिक लिखित पाठ में वर्णित काली दैत्यों का वध करती है वहाँ लोक गाथाओं में चित्रित देवी मानवीय संकटों, आपत्तियों आदि को उत्पन्न करने वाली और उनका निवारण करने वाली होती है। यह महामारी फैलाती है और महामारी से मानवों की रक्षा भी करती है। गाँव की देवी जो सब प्रकार के संकट पैदा करती है, और उनसे छुटकारा भी दिलाती है, उसी देवी का परिवर्तित स्थानीय रूप है जिसका वर्णन लिखित ग्रंथों में किया गया है। गाँव की देवी का यह रूप भिन्न-भिन्न स्थानों और भिन्न-भिन्न भाषाभाषी क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है।

वस्तुत: मौखिक अनुवाद की परम्परा उतनी ही पुरानी है जितनी मानव सभ्यता है। जब से मानव ने भाषा का आविष्कार किया तभी से मानव को एक-दूसरे की भाषा को समझने की आवश्यकता हुई और उसने अनुवाद का आविष्कार किया। तभी से किसी न किसी रूप में अनुवाद की प्रक्रिया आरम्भ हुई। जब लिखाई का अविष्कार नहीं हुआ था तब मौखिक अनुवाद ही एक-दूसरे की

भाषा को समझने का माध्यम था। इस मौखिक साहित्य के द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्र एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। यही इस देश की संस्कृति का आधार था। आज भी ऐसे बहुसंख्य लोग मिलेंगे जो लिखना-पढ़ना नहीं जानते फिर भी एक भाषा में कही गई बातों को समझकर दूसरी भाषा में व्यक्त करते हैं। मानव में भाषा को सीखने की सहज प्रवृत्ति होती है। यह प्रवृत्ति प्रौढ़ों की अपेक्षा बच्चों और किशोरों में अधिक प्रबल होती है। प्राय: यह देखा जाता है कि जब कोई परिवार ऐसे देश में जाकर बसता है जहाँ की भाषा से वह अपरिचित होता है तो उस परिवार के बच्चे उस देश की भाषा को शीघ्र समझने और बोलने लगते हैं और अपने परिवार के उन सदस्यों की, जो उस भाषा को नहीं समझ पाते, अनुवाद करके अपना काम-काज करने में सहायता करते हैं। सामाजिक संसर्ग में अनुवाद का इस प्रकार प्रयोग आज के युग में और भी बढ़ गया है क्योंकि संचार और परिवहन के साधनों के विकास के कारण, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में आ रहे परिवर्तनों के कारण तथा आर्थिक तथा सामाजिक गतिविधियों के प्रसार के परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोग एक देश से दूसरे देश में काम के लिए जाते हैं या वहाँ जाकर बस जाते हैं।

प्र.2. अनुवाद के सन्दर्भ में संस्कृति, भाषा और साहित्य के अंत: सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर अनुवाद के सन्दर्भ में संस्कृति, भाषा और साहित्य का अंत:सम्बन्ध

किसी भी संस्कृति के विकास में भाषा और साहित्य का बड़ा योगदान होता है। साहित्य के द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति होती है और सामाजिक तथा सांस्कृतिक मानकों की स्थापना भी होती है। भाषा ही मानव चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा का संस्कृति के साथ संश्लिष्ट सम्बन्ध है क्योंकि भाषा मनोभावों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के कारण संस्कृति का अंग होती है और उसे निरूपित भी करती है। अत: भाषा और साहित्य का विकास संस्कृति के विकास का एक बड़ा कारक होता है।

जब दो संस्कृतियाँ टकराती हैं, भाषा दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में सहायक का काम करती है। दो जातियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ एक-दूसरे को इस प्रकार प्रभावित करती हैं कि दोनों का ही रूप बदलता है। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो सभी भाषाओं को कम या ज्यादा प्रभावित करती है। किसी भी भाषा का रूप सदा एक-सा नहीं रहता। दूसरी भाषाओं के प्रभाव से उसमें निरन्तर बदलाव आता रहता है।

भारत में मुसलमानों के आगमन के पश्चात् भारतीय और अरबी संस्कृति के टकराव से जब दोनों संस्कृतियाँ एक-दूसरे के निकट आई तो एक-दूसरे की भाषा समझना अनिवार्य होता था। मुसलमान भारत में बस गए और दोनों जातियाँ एक-दूसरे को समझने लगीं। अरबी भाषा के पश्चात् भारत में फारसी का बोलबाला होने लगा। इस प्रकार भारत में बोली और लिखी जाने वाली भाषाओं में अरबी और फारसी भाषाओं के शब्दों का प्रवेश हुआ। फारसी से हिन्दी एवं संस्कृत में तथा हिन्दी और संस्कृत के फारसी में अनुवाद होने लगे। इन्हीं अनुवादों के द्वारा दो संस्कृतियों के टकराव से ऐसी भाषा का रूप विकसित हुआ जो आगे चलकर उर्दू के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस उर्दू भाषा में फारसी शब्दों की भरमार थी। आरम्भिक उर्दू और हिन्दी में इतना ही अंतर है कि उर्दू में फारसी शब्दों का और हिन्दी में तत्सम शब्दों का बाहुल्य है धीरे-धीरे उर्दू और हिन्दी दोनों अलग-अलग भाषाओं के रूप में विकसित हुई। दोनों की अपनी-अपनी साहित्यिक महत्ता स्थापित हुई।

इस बीच भारत का सम्पर्क यूरोपीय संस्कृति से हुआ। सोलहवीं शताब्दी में अनेक यूरोपीय देशों ने भारत के साथ व्यापार शुरू किया और यहाँ अपने उपनिवेश कायम किये। फलस्वरूप हिन्दी भाषा अंग्रेजी फ्रांसीसी, पुर्तगाली आदि भाषाओं से प्रभावित हुई और उसमें उन भाषाओं के शब्दों का प्रचलन बढ़ा। हिन्दी और संस्कृत ग्रंथों का यूरोपीय भाषाओं में और यूरोपीय भाषाओं, विशेषकर अंग्रेजी और फ्रांसीसी भाषाओं के ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद हुआ।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा दोनों का विकास दो चरणों में समानान्तर रूप से हुआ। उन्नीसवीं सदी के मध्य में जब राजा लक्ष्मण सिंह ने संस्कृत से "शाकुन्तला नाटक" का अनुवाद किया वह मुगल शासन का अवसान काल था। उस समय प्रचलित राजकीय भाषा फारसी का भारतीय रूप रेखता या उर्दू थी। परन्तु उर्दू को भी प्रचलित लोक भाषा का रूप प्राप्त नहीं हो सका था। ऐसी स्थिति में राजा साहब ने हिन्दी बोली को ही अपने अनुवाद का माध्यम बनाया। उनका अनुवाद ब्रजभाषा काव्य का बहुत की सुन्दर रूप प्रस्तुत करता है। लेकिन आज का कवि अभिज्ञान शाकुंतलम के अनुवाद के लिए ब्रजभाषा को न चुनकर खड़ी बोली को चुनेगा क्योंकि आज खड़ी बोली ही साहित्य की भाषा है। यह बात केवल हिन्दी पर ही लागू नहीं होती। अन्य भाषाओं का रूप भी समय के साथ बदलता रहता है। इसीलिए क्लासिक साहित्य के अनुवाद में यह समस्या रहती है कि प्रत्येक युग में उसका अनुवाद आधुनिक परिवर्तित भाषा में करना पड़ता है। होमर के प्राचीन ग्रीक भाषा में लिखे गए साहित्य को समझने में आज के ग्रीक भाषी पाठकों भाषा में करना पड़ता है। होमर के प्राचीन ग्रीक भाषा में लिखे गए साहित्य को समझने में आज के ग्रीक भाषी पाठकों को कठिनाई आ सकती है। इसलिए उसको आधुनिक ग्रीक में अनुवाद करना आवश्यक हुआ। इंग्लैंड

TOUCH 'n PASS

में शेक्सपियर और चौसर के काल में बोली और लिखी जाने वाली अंग्रेजी भाषा जिस रूप में विकसित हुई थी उसका भी अपना अलग इतिहास है। जर्मनी, फ्रांस, रोम, ग्रीस आदि अनेक देशों की संस्कृतियों और भाषाओं के प्रभाव से ही उसका वह रूप विकसित हुआ था। तब से अंग्रेजी की विकास-यात्रा रुकी नहीं है और जिस रूप में आज लिखी और बोली जाती है वह शेक्सपियर और चौसर के काल की अंग्रेजी से भिन्न है। इस बीच अंग्रेजी भाषा और उसको बोलने और लिखने वालों का सम्पर्क विश्व की अनेक संस्कृतियों और भाषाओं से हुआ और अंग्रेजी के स्वरूप में तद्नुसार परिवर्तन आया। इतना ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के बाद में अंग्रेजी का प्रसार अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि देशों में हुआ। इनमें से अधिकांश देशों में अंग्रेजी को आज भी राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। इन देशों के लोगों ने अंग्रेजी को सीखकर उसे अपने तरीके से लिखना और बोलना शुरू किया। इस प्रकार, उनमें अंग्रेजी अलग-अलग रूप में विकसित हुई और प्रत्येक देश का अपना ही अंग्रेजी साहित्य विकसित हुआ। अंग्रेजी भाषा और साहित्य के अनेक रूप विकसित हुए। आज भारत में बोली और लिखी जाने वाली अंग्रेजी उस अंग्रेजी से भिन्न है जो इंग्लैंड या अमेरिका में बोली और लिखी जाती है। भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले भारतीय अनुवादकों के सामने यह समस्या आती है कि जिस प्रकार की अंग्रेजी भाषा में वे अनुवाद करते हैं वह इंग्लैंड और अमेरिका के निवासियों को विदेशी भाषा सी लगती है। भारत में आज भी बहुत हद तक उस तरह की अंग्रेजी भाषा लिखी और बोली जाती है जो विक्टोरिया के जमाने में प्रचलित थी। इस बीच इंग्लैंड और अमेरिका में अंग्रेजी का स्वरूप बहुत बदल चुका है। साहित्य अकादमी द्वारा हिन्दी कविताओं के अनुवाद के लिए एक कार्यशाला 1990 में दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें अनेक कवियों और अनुवादकों के अतिरिक्त आयोवा विश्वविद्यालय के विद्वान और अनुवादक डेनियल वीसबोर्ट ने भी भाग लिया। इस कार्यशाला के दौरान यह तथ्य सामने आया कि भारतीय विद्वानों ने हिन्दी कविताओं के अनुवाद जिस अंग्रेजी भाषा में किए उसे डेनियल वीसबोर्ट नहीं समझ पाए।

प्र.3. संस्कृति के विकास में लिखित अनुवाद की भूमिका का विस्तृत उल्लेख कीजिए।

उत्तर

संस्कृति के विकास में लिखित अनुवाद की भूमिका

मौखिक साहित्य के स्वत:स्फूर्त अनुवादों के अतिरिक्त, विभिन्न संस्कृतियों को एक-दूसरे के निकट लाने के उद्देश्य से किए गए अनुवादों की परम्परा भी प्राचीन है।

1. एशिया में भारतीय ग्रंथों के अनुवाद के द्वारा अनेक देशों में बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ। संस्कृत और पालि से चीनी भाषा में अनुवाद का कार्य ईसा की पहली शताब्दी से ही शुरू हो गया था। चीनी त्रिपिटिक के ताइशो संस्करण में 360 से अधिक भारतीय ग्रंथों का चीनी में अनुवाद है। चीनी भाषा में भारतीय ग्रंथों के अनुवाद का यह कार्य कई शताब्दियों तक चलता रहा।

   परिणामस्वरूप, अनेक एशियाई देशों में बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रचार हुआ। चीनी भाषा में बौद्ध ग्रंथ चीन में आदरणीय बन गए और चीनी जनता उन्हें पूजने लगी। इनमें से अनेक ग्रंथों के पाठों को चट्टानों पर अंकित करने की परम्परा भी कई प्रांतों में आरम्भ की गई।
2. जापान में इन चीनी अनुवादों के परिणामस्वरूप बौद्ध-धर्म के प्रसार के साथ-साथ सभ्यता का विकास होने लगा। बौद्ध-धर्म ने वहाँ नए-नए विचार क्षेत्र आरम्भ किए। बौद्ध आदर्शों को इरोहा-कविता में अक्षरबद्ध किया गया। दो प्रकार की काना अक्षरमालों का विकास हुआ। शिक्षा का सार्वजनिक प्रसार हुआ। जापानवासी यद्यपि धर्म सूत्रों को चीनी भाषा में पढ़ते थे, तथापि, इसके परिणामस्वरूप, जापानी भाषा में साहित्य सर्जना हुई और वहाँ बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ।

   भारत की अध्यात्मक विद्या और दर्शन के उत्तम ग्रंथों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया गया। फलत: तिब्बती भाषा का एक साहित्यिक और परिष्कृत भाषा के रूप में विकास हुआ। नौवीं से तेरहवीं शताब्दी की अवधि में कुल मिलाकर 4000 से अधिक भारतीय कृतियों का तिब्बती भाषा में अनुवाद हुआ। धीरे-धीरे वहाँ एक समृद्ध साहित्य का जन्म हुआ। साहित्यिक अनुवाद और विशद व्याख्याओं के आन्दोलन ने तिब्बत में बौद्धिक चेतना को जन्म दिया। यह कहना गलत नहीं होगा कि सहस्रों सूत्रों और उनकी टीकाओं के तिब्बती अनुवाद ने ही वहाँ नवजागरण का सूत्रपात्र किया।
3. चौदहवीं शताब्दी में मंगोल भाषा में भी बौद्ध सूत्रों का अनुवाद शुरू किया गया। कंजूर के 108 खंडों के अतिरिक्त मंगोल भाषा में तंजूर में भी भारतीय कृतियों के अनुवाद मिलते हैं। इन कृतियों में व्याकरण, छंदशास्त्र और आत्मज्ञान आदि विषयों की कृतियाँ शामिल हैं। अमरकोश, काव्यादर्श आदि कृतियों के मंगोल अनुवादों ने मंगोलिया की साहित्यिक

परम्परा को प्रभावित किया। मंगोल विश्व कोश में भारतीय आयुर्वेद और रसायन शास्त्र के अनेक ग्रंथों के भी अनुवाद मिलते हैं।

4. भारतीय ग्रंथों का चीनी, तिब्बती और मंगोल भाषा में अनुवाद होने के बाद उन भाषाओं से मांचू भाषा में भी अनुवाद हुआ। यह काम चीन पर एक शताब्दी तक रहे मांचू सम्राटों के शासनकाल के दौरान हुआ।
5. इन्डोनेशिया, श्रीलंका, बर्मा, आलोस, थाईलैंड और कम्पूचिया में भी अनेक संस्कृत तथा पालि ग्रंथों का अनुवाद किया गया। इन अनुवादों के परिणामस्वरूप उन देशों का साहित्य समृद्ध हुआ और वहाँ भारतीय धर्म, चिंतन और संस्कृति का प्रसार हुआ।
6. जहाँ सुदूर पूर्व और दक्षिण पूर्व के देशों में अनुवाद के माध्यम से भारतीय दर्शन और धर्म का प्रसार हुआ वहीं अनुवाद पश्चिम एशियाई देशों में ज्ञान साहित्य के प्रसार का माध्यम बना। खिलाफत अब्बासी वंश के साथ में आने के बाद भारत और अरब के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान का युग आरम्भ हुआ। अब्बासियों ने संस्कृत पुस्तकों का अनुवाद अरबी में कराने का एक विस्तृत कार्यक्रम आरम्भ किया। अंकगणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, ज्योतिष, नैतिक कहानियाँ और किस्से, कूटनीति, राजनीतिशास्त्र और घर के भीतर खेले जाने वाले खेलों आदि विषयों पर लिखित संस्कृत पुस्तकों का अरबी में अनुवाद किया गया और वहाँ से उनका प्रचार यूरोप तथा अफ्रीका में भी हुआ। मुहम्मद बिना रव्वारजमी ने सबसे पहले अंकगणित का अनुवाद अरबी भाषा में किया। जिस अंकमाला को अरबी में अस्काम-ए-अरबिया (अरबी गिनती) कहा जाता है वह अरबों ने हिन्दुओं से सीखी। बाद में, समूचे यूरोप में भारतीय गणित का प्रचार हुआ। भारत और अरब के बीच साहित्यिक आदान-प्रदान के कार्य में अलबरुनी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।
7. यह उल्लेखनीय है भारतीय पुस्तकों के अनुवादों ने अरबी संस्कृति को जितना प्रभावित किया उससे कहीं ज्यादा अरबी संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया। इसका कारण यह था कि मुसलमान भारत में विजेताओं के रूप में आए और यहाँ आकर बस गए। उनके आने के बाद अरबी और फारसी भाषा और साहित्य का वर्चस्व भारत में लम्बे समय तक कायम रहा। अरबी और फारसी के अनेक ग्रंथों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। अरबी और फारसी भाषाएँ भारत में शासकीय भाषाओं के रूप में प्रतिष्ठित हुई। उनके प्रभाव से भारतीय भाषाओं के स्वरूप में परिवर्तन आया।
8. पश्चिमी देशों के साम्राज्यवादी प्रसार ने भी भारतीय संस्कृति और यहाँ की भाषा तथा साहित्य को बहुत प्रभावित किया। साम्राज्यवाद के प्रसार के साथ संस्कृति के विश्वव्यापीकरण का युग शुरू हुआ।
   उन्नीसवीं शताब्दी में संस्कृति के इस विश्वव्यापीकरण में तेजी आई और अनुवाद का महत्त्व बहुत बढ़ गया। विश्व के अनेक देशों के साहित्य का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ और यूरोपीय देशों के साहित्य का उन देशों में अनुवाद हुआ। यह उल्लेखनीय है कि अनेक संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद पहले अंग्रेजी में हुआ और बाद में हिन्दी में हुआ। इस तरह आम भारतवासियों का अपनी विस्मृत संस्कृति से पुनः परिचय संस्कृत ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद के फलस्वरूप हुआ।
9. यूरोप के देशों में जहाँ एक ओर एशियाई संस्कृति का प्रचार अरबी के माध्यम से हुआ वहाँ, दूसरी ओर, यूरोपीय देशों को ग्रीस और रोम के साहित्य ने भी प्रभावित किया। ग्रीक और लैटिन भाषाओं ने, क्लासिक भाषाओं के रूप में, यूरोप की सभी भाषाओं को प्रभावित किया। लेकिन बाइबिल के अनुवाद के बाद एक ऐसी साहित्यिक क्रांति आई जिसने समूचे यूरोप को ही नहीं वरन् अनेक देशों की संस्कृतियों को प्रभावित किया। बाइबिल का विश्व की लगभग सभी भाषाओं में मानक अनुवाद किया गया जिसके परिणामस्वरूप ईसाई धर्म का प्रचार तो हुआ ही, साथ ही, अनुवाद की आधुनिक परम्परा भी विकसित हुई। विश्व की अनेक ऐसी भाषाएँ थी जिनकी कोई अपनी लिपि नहीं थी। उन भाषाओं में बाइबिल के अनुवाद का यूरोपीय लिपियों में लिप्यांकन किया गया। इस प्रकार उन देशों में बाइबिल के साथ यूरोपीय भाषाओं का भी प्रवेश और प्रसार हुआ।
10. आज जब विश्व 21वीं शताब्दी में प्रवेश कर चुका है, संचार परिवर्तन के साधनों के विकास में इतनी बड़ी क्रांति आई है कि देशों के बीच की दूरी समाप्त हो गई है। देशों के बीच प्राचीन और आधुनिक ज्ञान का आदान-प्रदान तेजी से बढ़ रहा है। उदाहरणार्थ, जहाँ एक ओर विश्व भर के लोग भारत के प्राचीन दर्शन, अध्यात्म और सांस्कृतिक परम्पराओं को आत्मसात करने में लगे हैं वहीं, उतनी ही तेजी से, भारत में पश्चिमी संस्कृति का प्रसार हो रहा है। पॉप संगीत का नशा युवाओं की नसों में दौड़ रहा है।

TOUCH 'n PASS

हॉलीवुड की फिल्मों और अंग्रेजी में बनाए गए कार्यक्रम को हिन्दी अनुवाद के साथ टेलीविजन के चैनलों पर प्रदर्शित किया जा रहा है। इन अनुवादों में हिन्दी एक नए रूप में सामने आ रही है। इन कार्यक्रमों में समाचार पढ़ते समय, या फिल्म के संवादों में हिन्दी जिस रूप में बोली जाती है उसमें अंग्रेजी शब्दों और वाक्यों की भरमार रहती है। एक तरह से, मौखिक अनुवाद एक बार फिर सांस्कृतिक अंतरण का माध्यम बन रहा है। यह वैसी ही स्थिति है जैसी मुसलमानों के भारत में आने के बाद भारतीय भाषाओं में अरबी और फारसी के शब्दों के प्रवेश से उत्पन्न हुई थी। इस स्थिति के चलते हो सकता है कि आज से कुछ शताब्दियों बाद हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं का वह रूप न रहे जो आज है। अनुवाद के माध्यम से भाषा के स्वरूप में परिवर्तन की यह घटना हमारी आँखों के सामने घटित हो रही है। यह क्रम, ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुरूप, सभी भाषाओं को प्रभावित करता है।

प्र.4. सामाजिक-सांस्कृतिक विशिष्टताओं के अनुवाद में पुनः सृजन का विस्तृत उल्लेख कीजिए।

उत्तर

सामाजिक-सांस्कृतिक विशिष्टताओं के अनुवाद में पुनः सृजन

अनुवाद की कठिनाइयों व समस्याओं का सर्वेक्षण कई दृष्टिकोणों से किया जा सकता है। यह बात इस तथ्य पर निर्भर करती है। कि अनुवाद का उद्देश्य और उसकी आवश्यकता क्या है। इस विषय में दो विपरीत धारणाएँ हैं। एक तरफ तो यह माना जाता है कि अनुवाद मूल रचना के विकल्प के रूप में सामने आना चाहिए, अनुवाद मूल निष्ठ होना चाहिए, अर्थ प्रधान अर्थात् शाब्दिक होना चाहिए। दूसरी ओर, यह कहाँ जाता है कि अनुवाद एक सृजनात्मक क्रिया है। उसका उद्देश्य केवल मूल कृति का अर्थ उद्घाटित करना ही नहीं वरन् मूल रचना द्वारा छोड़े गए प्रभावों को प्रस्तुत करना है। यदि पहली धारणा को मान्यता दी जाए तो यह तथ्य सामने आएगा कि कुछ रचनाएँ ऐसी हो सकती हैं जिनका पूर्णत: सार्थक, अर्थात् शाब्दिक अनुवाद हो ही नहीं सकता। अत: ऐसा अनुवाद करने से पहले यह देखना होगा कि रचना अनुवाद करने योग्य है या नहीं। दूसरी धारणा को महत्त्व देने का परिणाम यह हो सकता है कि हर अनुवादक अपनी मानसिक संरचना और भावात्मक दृष्टि के अनुसार ही मूल रचना से प्रभावित होगा और अनुवाद पर उसकी कल्पना की विशिष्टता भी अनिवार्यत: प्रभाव डालेगी। इस प्रकार अनुवाद में नाम पर वह जो कुछ जो प्रस्तुत करेगा आवश्यक नहीं कि वह मूल रचना से निकटता भी रखता हो।

1. व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो अनुवाद के विषय में उपरोक्त दोनों धारणाओं में से शुद्धत: किसी एक को ही मान्यता देना सम्भव नहीं है। अनुवाद में अर्थ और भाव दोनों का ही समन्वय आवश्यक है। सांस्कृतिक अर्थच्छवियों के अनुवाद में खासतौर पर ऐसा कोई एकांगी नियम लागू नहीं किया जा सकता। ऐसी रचनाओं का अनुवाद करते समय अनुवादक को न केवल दो भाषाओं में वरन् दो संस्कृतियों में प्रवेश करना होता है। प्राय: ऐसा होता है कि मूल रचना में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनके पर्याय लक्ष्य भाषा में नहीं होते क्योंकि लक्ष्य भाषा की संस्कृति में उन संकल्पनाओं का प्रचलन ही नहीं होता जिसके वे सूचक होते हैं। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी में dating शब्द का प्रयोग किया जाता है। अंग्रेजी समाज में dating को जो महत्त्व है वह भारत के लोगों की कल्पना के बाहर की बात है। हिन्दी में इसका कोई पर्यायवाची नहीं है। अत: हिन्दी अनुवाद में हमें "डेटिंग" शब्द का ही प्रयोग करना होगा। विकल्प के तौर पर यदि हम कोई नया शब्द गढ़ेंगें तो एक दुस्साहस होगा। हिन्दी में पहले भी बहुत शब्द गढ़े जा चुके हैं जिन्हें कोई पूछता नहीं है, केवल ऐसे सरकारी अनुवादों में प्रयोग किए जाते हैं जिनका कोई पाठक नहीं होता। दूसरा विकल्प यह है कि अनुवाद में dating शब्द का खुलासा किया जाए, अर्थात् उसकी व्याख्या करके उसका अर्थ स्पष्ट किया जाए। लेकिन सभी प्रकार के अनुवाद में व्याख्या के द्वारा अर्थ रचना करना सम्भव नहीं होता। जहाँ सम्भव हो और आवश्यक हो वहाँ यह विकल्प अपनाया जा सकता है और dating शब्द की व्याख्या के रूप में ऐसा कुछ लिखा जा सकता है—
"पश्चिमी देशों की प्रथा जिसमें लड़के और लड़कियाँ एक दूसरे को जानने और समझने का अंतत: अपने जीवन साथी का चुनाव करने के लिए एक-दूसरे के साथ घूमते-फिरते हैं।" लेकिन यह व्याख्या इतनी लम्बी है कि अनुवादक के सामने यह समस्या आएगी कि उसे किस स्थल पर अनुवाद में शामिल किया जाए पाद टिप्पणी के रूप में या अलग से जोड़ी गई शब्दावली में। यह तो स्पष्ट है कि अनुवाद में मूल भाषा का शब्द "डेटिंग" ही प्रयोग करना होगा। सम्भव है कि इस प्रकार अनुवाद में प्रयोग किए जाने के बाद यह शब्द हिन्दी में प्रचलित हो जाए। आखिर इसी प्रकार विदेशी भाषा के अनेक शब्द हिन्दी में प्रचलित हुए हैं और हिन्दी के भी अनेक शब्द विदेशी भाषाओं में प्रचलित हुए हैं। उदाहरण के लिए विश्व की कोई ऐसी भाषा नहीं है जिसमें आज "योग" शब्द का प्रयोग न किया जाता हो। योग शब्द का सामान्य प्रचलित अर्थ संप्रेषित करने के लिए अंग्रेजी के अनुवाद में इसी शब्द का लिप्यांतरण किया जाता है। लेकिन विशेष स्थिति में "योग"

शब्द का अंग्रेजी में अनुवाद करते समय उसकी व्याख्या करने की आवश्यकता पड़ सकती है। पतंजलि के योग/सूत्रों का अंग्रेजी में अनुवाद करते समय यह आवश्यक होगा कि अंग्रेजी अनुवाद में किसी स्थल पर यह स्पष्ट किया जाए "Yoga is a method by which an indivisual may become united with the God."

2. वास्तव में अनुवादक के लिए भाषा-संरचना के वैभिन्य से अधिक सांस्कृतिक-वैभिन्य तुलनात्मक दृष्टि से समस्या पैदा करता है। यदि अनुवादक बार-बार पाद टिप्पणी से शब्द की व्याख्या करता है तो पाठक के लिए अनुवाद के प्रवाह में बाधा उत्पन्न होती है। लेकिन विषय संस्कृति के पाठकों के लिए अनुवाद करते समय "पाद-टिप्पणी" की आवश्यकता पड़ती है।
3. साहित्यिक रचनाएँ भाव प्रधान होती हैं। उनमें विशेषकर कविता में, शब्दों का प्रयोग किसी विशेष भाव को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। अत: ऐसी रचनाओं में अधिक महत्त्व उनके ध्वनितार्थ का होता है। यह ध्वनितार्थ ऐसे शब्दों के पीछे छिपा होता है जिनका सांस्कृतिक या सामाजिक संदर्भ होता है। अनुवादक को उन संदर्भों को समझकर उनके पीछे छिपे ध्वनितार्थ को ग्रहण करना चाहिए और उसे लक्ष्य भाषा में व्यक्त करना चाहिए। ऐसा करते समय उसे यथा सम्भव यह प्रयत्न करना चाहिए कि लक्ष्य भाषा ध्वनितार्थ ऐसे शब्दों में व्यक्त करे जिनमें मूल की रचनागत विशिष्टता भी समाने आ जाए। यह कार्य श्रम साध्य है, लेकिन दोनों संस्कृतियों और भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान रखने वाला अनुवादक थोड़े परिश्रम से यह कार्य कर सकता है। ऐसे अनुवाद में मूल रचना के महत्त्वपूर्ण अंशों और उसके कलात्मक पक्षों पर अनुवादक की दृष्टि केन्द्रित रहनी चाहिए ताकि मूल कृति से अनुवाद की निकटता बनी रहे। इस प्रकार का भावानुवाद करते समय अनुवादक को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह अनुवाद में अपनी भावनाओं तथा अपने विचारों को भी न ढाल दे। उमर ख्य्याम की रूबाइयों के विख्यात अनुवादक फिटज्जेराल्ड से यही गलती हुई। वह यह नहीं समझ सका कि ईरानी संस्कृति और इतिहास में शराब का क्या महत्त्व था। जहाँ खय्याम ने शराब को ईरानी राष्ट्रवाद से जोड़ा था वहाँ फिटज्जेराल्ड ने शराब को भोगवाद का प्रतीक समझकर रूबाइयों के लेखक को भोगावाद के प्रर्वतक के रूप में प्रस्तुत किया।
4. मूल रचना के ध्वनितार्थ को समझकर उसे व्यक्त करने में किस प्रकार कठिनाई आती है यह कबीर के दोहे के निम्नलिखित अनुवाद से ज्ञात होता है—

कबीर का दोहा—दस द्वार का पींजरा, ता मैं पंछी पौन ।
रहै अंचरज होत है, गये अचम्बा कौन ।।

अंग्रेजी अनुवाद—"Ten are the doors to the Cage
There the life-bird stays
That is stays so long is strange
Its flight should not amaze.

The body is like a ten doors Cage in which stays the life-bird, the breath of life. It is rather strange that the bird stays so long without flying away, but its flight, should not amaze. Kabir stresses the uncertain spell of human life."

उपर्युक्त अनुवाद तुकांत छंद में किया गया है। मूल अनुवाद के बाद व्याख्या भी दी गई। मूल कविता में प्रतीकों के द्वारा भाव व्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है। ये प्रतीक है दस द्वार, पींजरा, पंछी पौन। पद्यानुवाद में शब्दार्थ ही दिया गया है। ध्वनितार्थ को व्यक्त करने के लिए दोहे की व्याख्या की गई है। व्याख्या में यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है कि शरीर रूपी पिंजरे के दस द्वार खुले रहने पर भी प्राण पंछी उसमें से नहीं उड़ता— यह एक अचंभ है। लेकिन अनुवाद और उसकी व्याख्या से यह पता नहीं चलता कि पिंजरे के दस द्वार कौन से हैं। भारतीय संस्कृति से परिचित लोग यह समझ सकते हैं। कि ये दस द्वार हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रिया और पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। लेकिन अंग्रेजी अनुवाद पढ़ने वाले सभी पाठक इससे परिचित हों— यह आवश्यक नहीं। उनको यह अनुवाद अधूरा लग सकता है। यदि अनुवादक महोदय "दस द्वार" की व्याख्या कर देते तो ध्वनितार्थ बिल्कुल स्पष्ट हो जाता ।

5. अनुवाद के एक अन्य उदाहरण के द्वारा हम यह समझने का प्रत्यत्न करेंगे कि अनुवाद में किस प्रकार मूल भाषा की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में निकटतम पर्याय का चयन किय जाना चाहिए—

TOUCH 'n PASS

शेक्सपियर के "मैकबेथ" में जब मैकबेथ डंकन की हत्या कर चुका होता है तो अपने रक्तरंजित हाथों को देखकर कहता है—

Will all great Neptune's Ocean wash this blood
Clean from my hand? No; this my hand will rather
The Multitudinous seas incarnadine,
Making the green red.

हरिवंश राय बच्चन द्वारा इस अंश का अनुवाद इस तरह किया गया है—

"जो मेरे हाथों में भूल लगा
उसको तो महावरूण का सारा परिवार भी नहीं धो सकता।
यही नहीं ये मेरे हाथ करेंगे उच्छाल फेनोच्छवासित
जलीय को भी रक्तारूण। जो कि हरा है लाल बनेगा।"

उपर्युक्त मूल अवतरण में एक सामान्य अनुवादक के सामने यह समस्या आ सकती थी कि Neptune के लिए अनुवाद में किस शब्द का प्रयोग किया जाए। उसके लिए सबसे सरल विकल्प यही था कि वह हिन्दी में केवल "नेपच्यून" शब्द का प्रयोग करता या उसकी पहचान बताने के लिए "समुद्र का देवता नेपच्यून" लिख सकता था। लेकिन यहाँ हमारे अनुवादक को दोनों भाषाओं की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का पूरा ज्ञान था और वे यह जानते थे कि भारतीय संस्कृति में भी एक जल का देवता है जिसका नाम "वरूण" है। इसलिए उन्होंने Neptune के लिए "वरूण" शब्द का प्रयोग किया। यहाँ यह स्मरणीय है कि यह सदैव सम्भव नहीं हो सकता कि लक्ष्य भाषा में वैसा ही प्रतीक उपलब्ध हो। ऐसी सूरत में यही अच्छा है कि मूल शब्द को ही अनुवाद में रखा जाए और यदि सम्भव हो तो उसे परिभाषित कर दिया जाए (उदाहरणार्थ— समुद्र का देवता नेपच्यून)।

6. विषम संस्कृतियों की भाषाओं के बीच अनुवाद करते समय वाक्य विन्यास का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। सबसे अधिक कठिनाई कर्त्तृवाच्य और कर्मवाच्य के अनुवाद में आती है। अंग्रेजी में कर्म वाच्य का मुक्त प्रयोग होता जबकि हिन्दी में कर्त्तवाच्य का प्रयोग अधिक होता है। अंग्रेजी में कहा जाता है—

This book has been read by me हिन्दी में— "यह पुस्तक मेरे द्वारा पढ़ ली गई हैं। कहना गलत होगा। हिन्दी में कहना होगा— यह पुस्तक मैंने पढ़ ली है। अत: यह आवश्यक है कि अनुवाद में मूल भाषा की वाक्य रचना को लक्ष्य भाषा की रचना पद्धति के अनुसार बदला जाए।

संस्कृत काव्य से एक उदाहरण दिया जा रहा है—त्वामारूढ़ं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ता
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिता: प्रत्ययादाश्वसन्त्य: ।
क: संनद्धे विरहविधुरां त्वैय्युपेक्षेत जस्यां
न स्वादन्योडप्यहमिव जनो य: पराधीनवृत्ति: ।।

संस्कृत की उपर्युक्त वाक्य संरचना के अनुसार अंग्रेजी में अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है—

'To see you riding high on the path of the wind, women those husbands trand to far lands, pushing back their straggline hair, will eagerly look up and draw comfort; for where you arrive all clad and girt for action, who can ignore his lovely wife distraught unless subject like me to an alien will?

लेकिन अंग्रेजी में इस प्रकार की वाक्य रचना सम्भव नहीं है। अंग्रेजी वाक्य कर्त्ता से शुरू होना चाहिए। संस्कृत के अवतरण को पढ़ने से मानस में एक सम्पूर्ण चित्र अंकित होता है जिसमें शीर्ष पर पवन पर आरूढ़ मेघ जा रहा है और नीचे से सिद्ध स्त्रियाँ उसे देख रही हैं। यही प्रमाद उत्पन्न करने के लिए संस्कृत अवतरण में सबसे पहले पवन पर आरूढ़ मेघ का उल्लेख किया गया। अंग्रेजी अनुवाद में, विन्यास कि सीमा के कारण, यह प्रभाव उत्पन्न नहीं किया जा सकता। अत: चन्द्रराजन द्वारा अंग्रेजी में इस प्रकार अनुवाद किया गया है—

'Women whose husbands travel to far lands.
Pushing back their straggling hair

TOUCH 'n PASS

Will eagerly look up to see you
Riding high on the path of the wind
And draw comfort; for when you arrive
All clad and girt for action,
Who can ignore his lovely wife distraught
Unless subject like me to an alien will?

यहाँ कर्त्ता के तुरन्त बाद कर्म को रखकर अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। अनुवादक ने अंग्रेजी की रचना पद्धति की रक्षा करते हुए अनवाद किया है। निष्कर्ष यही है कि विन्यास की दृष्टि से प्रत्येक स्थिति दूसरी से भिन्न हो सकती है और अनुवादक को यथाशक्ति उसका समाधान खोजना होता है।

अनुवाद करते समय यह याद रखना जरूरी होता है कि भाषा का केवल दृश्य रूप ही नहीं होता है वरन् श्रव्य रूप भी होता है। उसमें लय का प्रभाव भी उतना ही होता है जितना अर्थ और भाव का। इसलिए प्राय: यह कहा जाता है कि कविता का अनुवाद कविता में ही किया जाना चाहिए। लेकिन इस विषय में कोई नियम नहीं बनाया जा सकता। मूल पाठ की लय का लक्ष्य भाषा में पूर्णत: अनुवाद लगभग असम्भव है क्योंकि प्रत्येक भाषा का अपना छंद विधान होता है। इतना अवश्य किया जा सकता है कि लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार अनुवाद को लयबद्ध किया जाए। अनुवाद पद्य में हो या गद्य में उसमें अनुभूति की वही सघनता, कथ्य में वही उतार-चढ़ाव और प्रवाह लाने का प्रयत्न करना चाहिए जो मूल पाठ में है। उर्दू की एक गजल के एक अंश के हिन्दी अनुवाद के उदाहरण से यह बात समझने का प्रयत्न करेंगे। मोहसिन जैदी की निम्नलिखित गजल का डॉ सुधेश द्वारा हिन्दी में किया गया अनुवाद भी उसके नीचे दिया जा रहा है—

उर्दू गजल—दोस्ती का जिसे दावा था जबानी कितना,
है वही आज मेरा दुश्मने जानी कितना।
प्यास का अपनी तऐयुन नहीं कि मैं,
देखना चाहूँगा दरिया में है पानी कितना।
कोई बलताओं कि कब आएगी रुत फूलों की,
रह गया होगा अभी दौर-ए-खिलानी कितना।

हिन्दी में अनुवाद—गहरे सम्बन्धों के
मौखिक आश्वासन
जिसने थे दिये बहुत से
आज वही लगता
प्राणों का दुश्मन।
कितना प्यासा हूँ
इसके निश्चय की नहीं जरूरत
अब मुझे देखना है
गहरे दरिया में
कितना पानी है?
फूलों की ऋतु आएगी
पर कब आएगी?
जरा पूछना हरियाली से
पतझर का आंतक
रहेगा कब तक?

इस अनुवाद में गजल के संगीत तत्त्व और गजल के रूप की रक्षा नहीं की जा सकी है, पर प्रत्येक शेर के भाव को हिन्दी के मुहावरे में रूपान्तरित करने की कोशिश अवश्य की गई है। अनुवाद में एक जैसी लय के निर्वाह का प्रयत्न किया गया है। फिर भी मूल गजल की गोयता या उसकी संगीतात्मकतार, जो गजल के मुख्य गुणों में से एक है, अनुदित रचना में नहीं मिलती। यहाँ विशेष

TOUCH 'n PASS

उल्लेखनीय बात यह है कि उपर्युक्त गजल के अनुवादक महोदय ने स्वतंत्र रूप से अनेक गजले लिखी हैं। पर स्वतंत्र रूप से गजल लिखना एक बात है और गजल के रूप में अनुवाद करना बिल्कुल दूसरी बात है।

अंत में यह कहा जा सकता है मूल भाषा के प्रतीकों, मुहावरों लोकोक्तियों आदि में प्राय: कुछ ऐसा होता है जो किसी न किसी रूप में लक्ष्य भाषा में भी उपलब्ध होता है, चाहे वह मूल भाषा के शत-प्रतिशत समान न हो। इन समान या निकट के तत्त्वों का अन्य भाषा में अनुवादक की कल्पनाशीलता से ही सम्भव हो सकता है। इसके लिए उसे लक्ष्य भाषा के सांस्कृतिक परिवेश से पूरी तरह से परिचित होना पडेगा। वहीं से उसे मिलते-जुलते मुहावरे, प्रतीक उपमान आदि मिल सकते हैं और वह मूल रचना के भाव को मार्मिकता से व्यक्त कर सकता है। यह ठीक है कि प्रतीकों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का शब्दानुवाद लक्ष्य भाषा में हास्यापद होगा और इस दृष्टि से उनका स्पष्टीकरण कोई मार्मिकता नहीं रखता भले ही वह अर्थ को उद्घाटित करने में सफल हो। यदि अनुवाद भी प्रतीकात्मक हो सके (प्रतीक के स्थान पर प्रतीक का उपयोग करके) तो उसमें मूल रचना की मार्मिकता आ जाएगी, यद्यपि यह एक चुनौती भरा काम है। ऐसा करते समय अनुवादक को दुहरी सावधानी बरतनी होगी। एक तो उसे मूल भाषा के शब्द के निहितार्थ को पकड़ना होगा (केवल शब्दार्थ या वाच्यार्थ को नहीं), और दूसरे उसे लक्ष्य भाषा के मुहावरे की भी रक्षा करनी होगी।

एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट होगी। यहाँ रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता और उसका हिन्दी अनुवाद दिया जा रहा है—

'I have felt your muffled
Steps in may blood,
Everlasting past.
I have seen your hushed
Countenance in the heart of
The garrulous day.
You have come to write the
Unfinished stories of our
Father in unseen script in
The pages of our
Destiny.
You lead back to life the
Unremembered days for the
Shaping of new images.

हिन्दी अनुवाद—हे शाश्वत् अतीत
मैंने दबे पैरों तुम्हारी आहट को
अपने खून में महसूस किया है।
दिन के शोर-शराबे में
मैंने तुम्हारा खामोश चेहरा देखा है।
तुम आए हो
हमारे पिता की अधूरी कथाएँ लिखने
हमारी किस्मत के पृष्ठों पर
अपनी अनजान लिखावट में ।
तुम भूले हुए दिनों को
फिर जिंदा करते हो
नई मूर्तियाँ गढ़ने को ।

उपर्युक्त अनुवाद में बोलचाल की भाषा में सहज की उपलब्ध मुहावरों का प्रयोग किया गया है। यदि अनुवाद बांग्ला से किया गया होता तो सम्भवत: कुछ मुहावरे बांग्ला से ज्यों-के-त्यों लिए जा सकते थे क्योंकि बांग्ला और हिन्दी में समानता है।

TOUCH 'n' PASS

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. एक सामाजिक मानदंड के लिए क्रिया उन्मुख है–
(क) स्वीकार्यता (ख) नियंत्रण (ग) अनुरूपता (घ) अनुमोदन
उत्तर (ग) अनुरूपता

प्र.2. संस्कृति-बाध्य या संस्कृति विशिष्ट लक्षण–संस्कृति के रूप में जाने जाते हैं–
(क) विरोध करना (ख) नैतिक (ग) ईमिक (घ) सार्वभौमिक
उत्तर (ग) ईमिक

प्र.3. ''संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है।'' यह किसने कहा?
(क) इमाईल दुर्खीम (ख) ई०बी० टायलर (ग) हर्सकोविट्स (घ) रॉबर्ट ब्राउन
उत्तर (ख) ई०बी० टायलर

प्र.4. किसके अनुसार संस्कृति मानव जाति की स्मृति है?
(क) रोस (ख) ग्नैनिकि (ग) चार्ल्स पेज (घ) जी०एस० घुरिये
उत्तर (घ) जी०एस० घुरिये

प्र.5. हिन्दी भाषा फ्रांसीसी तथा पुर्तगाली आदि भाषाओं से कब प्रभावित हुई?
(क) सोलहवीं शताब्दी में (ख) पन्द्रहवीं शताब्दी में
(ग) चौदहवीं शताब्दी में (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) सोलहवीं शताब्दी में

प्र.6. 'शांकुन्तला नाटक' का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद किसने किया?
(क) इमाईल दुर्खीम (ख) राजा लक्ष्मण सिंह
(ग) हर्सकोविट्स (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) राजा लक्ष्मण सिंह

प्र.7. बौद्ध आदर्शों को ..... में अक्षरबद्ध किया गया।
(क) साहित्य में (ख) उपन्यासों में
(ग) इरोहा-कविता में (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) इरोहा-कविता में

प्र.8. संस्कृति के विकास का प्रमुख माध्यम है–
(क) अनुवाद (ख) सृजन (ग) दोनों (क) और (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) अनुवाद

प्र.9. किसके द्वारा संस्कृत ग्रंथों (पुस्तकों) का अनुवाद अरबी में कराया गया?
(क) खिलाफत अब्बासी वंश (ख) सैय्यद खाँ
(ग) दोनों (क) और (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) खिलाफत अब्बासी वंश

प्र.10. अंकगणित का अरबी भाषा में सर्वप्रथम अनुवाद किसने किया?
(क) भास्कर (ख) मुहम्मद बिना रव्वारजमी
(ग) खिलाफत अब्बासी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) मुहम्मद बिना रव्वारजमी

प्र.11. हिन्दी भाषा में सांस्कृतिक विविधता का मुख्य कारण है–
(क) रंग-रूप (ख) आस्थाएँ (ग) आंचलिकता (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) आंचलिकता

TOUCH 'n' PASS

प्र.12. भाषाओं में विविधताएँ आने का कारण है–
(क) भौगोलिक (ख) स्थानिक (ग) सांस्कृतिक (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.13. 'माइली रावनन' का सम्बन्ध है–
(क) कन्नड की लोक-कथा से (ख) तमिल की लोक-कथा से
(ग) मलयालम की लोक-कथा से (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) तमिल की लोक-कथा से

प्र.14. English Riddles पुस्तक के लेखक हैं–
(क) टेलर (ख) चार्ल्स पेज (ग) ग्नैनिकि (घ) रोस
उत्तर (क) टेलर

प्र.15. अनुवाद किसके स्थानान्तरण की प्रक्रिया पर निर्भर है?
(क) मूल पाठ (ख) लिखित पाठ
(ग) कविता पाठ (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) मूल पाठ

प्र.16. चीनी त्रिपिटक के संस्करण में लगभग कितने भारतीय ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद है?
(क) 3660 (ख) 4665 (ग) 5670 (घ) 2680
उत्तर (क) 3660

प्र.17. किस सन् में सर विलियम जोन्स द्वारा स्थापित बंगाल की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ने प्राचीन भारतीय साहित्य की खोज तथा अनुवाद प्रकाशन कार्य आरम्भ किया?
(क) 1770 (ख) 1775 (ग) 1780 (घ) 1785
उत्तर (ख) 1775

प्र.18. Neptune के लिए हरिवंश राय बच्चन ने क्या अनुवाद हिन्दी में किया?
(क) नेपच्यून (ख) वरूण (ग) समुन्द्र (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) वरूण

प्र.19. 'माइली रावनन' लोक-कथा में रावण का वध किया गया–
(क) राम के द्वारा (ख) सीता के द्वारा
(ग) लक्ष्मी के द्वारा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) सीता के द्वारा

प्र.20. मौखिक अनुवाद की परम्परा कितनी पुरानी है?
(क) मानव सभ्यता के समान (ख) मानव सभ्यता से पहले
(ग) आधुनिक (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) मानव सभ्यता के समान

प्र.21. साहित्य अकादमी द्वारा हिन्दी कविताओं के अनुवाद के लिए कार्यशाला दिल्ली में कब आयोजित की गयी?
(क) 1910 (ख) 1920 (ग) 1950 (घ) 1990
उत्तर (घ) 1990

प्र.22. मंगोल भाषा में बौद्ध सूत्रों का अनुवाद कब शुरू हुआ?
(क) पाँचवीं शताब्दी में (ख) चौथी शताब्दी में
(ग) चौदहवीं शताब्दी में (घ) पन्द्रहवीं शताब्दी में
उत्तर (ग) चौदहवीं शताब्दी में

TOUCH 'n PASS

प्र.23. भारतीय ग्रंथों का अनुवाद किया गया–
(क) मांचू भाषा में (ख) चीनी भाषा में (ग) तिब्बती भाषा में (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.24. Dating का हिन्दी में लिप्यांतरण होगा–
(क) डेटिंग (ख) Dating (ग) एक प्रथा (घ) ये सभी
उत्तर (क) डेटिंग

प्र.25. "अनुवाद विश्व के सभी कार्यों से अधिक महत्त्वपूर्ण और महानतम कार्य है" यह कथन किसका है?
(क) नाइडा (ख) जे०एस० डब्ल्यू (ग) डी०एन० शर्मा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) जे०एस० डब्ल्यू

प्र.26. संज्ञा का अनुवाद किया जाता है?
(क) भाषा परिवर्तन करके (ख) लिपि परिवर्तन करके
(ग) भाषा और लिपि दोनों परिवर्तन करके (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) लिपि परिवर्तन करके

प्र.27. नाइडा द्वारा प्रस्तुत अनुवाद के परोक्ष प्रक्रिया में निम्नलिखित में से क्या शामिल है?
(क) विश्लेषण (ख) अंतरण (ग) पुनर्गठन (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.28. बाथगेट द्वारा प्रस्तुत अनुवाद प्रक्रिया के प्रारूप को किस नाम से जाना जाता है?
(क) संक्रियात्मक प्रारूप (ख) असंक्रियात्मक प्रारूप
(ग) दोनों (क) और (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) संक्रियात्मक प्रारूप

प्र.29. बाथगेट द्वारा प्रस्तावित अनुवाद प्रक्रिया के चरणों में क्या शामिल है?
(क) समन्वय (ख) विश्लेषण (ग) बोधन (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.30. न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित अनुवाद प्रक्रिया में शामिल है?
(क) अंतर क्रमिक अनुवाद (ख) अर्थ बोधन और लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्तिकरण
(ग) (क) और (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) (क) और (ख) दोनों

प्र.31. निम्नलिखित में से कौन संस्कृति की विशेषता है?
(क) संस्कृति सीखी जाती है (ख) संस्कृति एक जीवन विधि है
(ग) संस्कृति परिवर्तनशील होती है (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

TOUCH 'n PASS

UNIT-IV

अनुवाद के साधन

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अंत:भाषिक अनुवाद को क्या कहते हैं?

उत्तर अंत:भाषिक अनुवाद एक ही भाषा की किसी एक प्रतीक व्यवस्था से उसी भाषा की किसी अन्य प्रतीक व्यवस्था के बीच किया गया अनुवाद है; जैसे– अवधि में लिखे गए रामचरित मानस का खड़ी बोली या ब्रज में अनुवाद।

प्र.2. एकभाषिक कोश किसे कहते हैं?

उत्तर एकभाषिक कोश में किसी एक भाषा के शब्दों का वर्णक्रमानुसार संग्रह होता है और उसी भाषा में शब्द भी दिये जाते हैं।

प्र.3. परिभाषा कोश किसे कहते हैं?

उत्तर परिभाषा कोशों में पारिभाषिक शब्दों का मात्र अर्थ ही नहीं दिया जाता बल्कि उनसे सम्बद्ध अवधारणा को भी स्पष्ट किया जाता है।

प्र.4. उच्चारण कोश किसे कहा जाता है?

उत्तर उच्चारण कोश वे कोश होते हैं जिनमें प्राय: अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों के माध्यम से शब्दों का सही उच्चारण किया जाता है। ध्वनि प्रतीकों के माध्यम से शब्दों का सही उच्चारण किया जाता है।

प्र.5. विश्व कोश का महत्त्व किसके समान होता है?

उत्तर विश्व कोश का महत्त्व साहित्य कोश के ही समान होता है।

प्र.6. साहित्य कोश में किसकी जानकारी दी जाती है?

उत्तर साहित्य कोश में एक या अधिक भाषाओं के साहित्य, साहित्यकारों विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा धाराओं व साहित्यिक रचनाओं के विषय में जानकारी दी जाती है।

प्र.7. अनुवाद की प्रथम शर्त क्या है?

उत्तर अनुवाद की प्रथम शर्त है– अनुवादक की कुशलता, स्रोत व लक्ष्य, दोनो भाषाओं पर उसका समान अधिकार।

प्र.8. भाषिकेतर कोश में कौन-से विषय आते हैं?

उत्तर भाषिकेतर कोश के अन्तर्गत निम्न विषय आते हैं– साहित्य, धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि।

प्र.9. शब्द कोश का क्या अर्थ होता है?

उत्तर शब्द कोश का अर्थ है– शब्दों का कोश अर्थात् खजाना।

प्र.10. स्तरीय शब्द कोश में किसका उल्लेख होता है?

उत्तर स्तरीय शब्द कोश में शब्दों की व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, पर्याय और प्रयोग सन्दर्भों का भी उल्लेख होता है।

प्र.11. थिसॉरस का क्या उद्देश्य है?

उत्तर थिसॉरस का उद्देश्य है– साहित्यिक अभिव्यक्ति को सहज तथा प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त शब्दों तथा मुहावरों का सुझाव या प्रयोग।

TOUCH 'n' PASS

प्र.12. पर्याय कोश में किसका उल्लेख होता है?

उत्तर पर्याय कोश में प्राय: वर्णक्रम में संग्रहीत शब्दों के विभिन्न पर्यायों या प्राय: समानार्थक शब्दों का उल्लेख होता है।

प्र.13. थिसॉरस किस भाषा का शब्द है और इसका क्या अर्थ होता है?

उत्तर थिसॉरस लैटिन भाषा का शब्द है और इसका अर्थ होता है— खजाना या कोशागार ।

प्र.14. कोशों के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर कोश मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रकार के होते हैं—

1. **भाषिक कोश**—इस श्रेणी में हम उन कोशों को रख सकते हैं, जिनका सरोकार भाषा और शैली के विभिन्न पक्षों से होता है। इनके अंतर्गत केवल शब्द ही नहीं, पर्यायों, विशिष्ट शब्द तथा भाषा प्रयोगों, विशिष्ट अभिव्यक्तियों तथा लोकोक्तियों और मुहावरों से सम्बद्ध कोश भी आ जाते हैं। इनमें प्राथमिक स्तर पर आता है शब्द कोश, और उसमें भी **एकभाषिक** और **द्विभाषिक कोश।**
2. **अन्य कोश**—हमने अब तक उन कोशों पर विचार किया जो सीधे भाषा–शब्द, शब्दार्थ, पर्यायवाची शब्द, शब्द प्रयोग, मुहावरों, प्रयुक्तियों, अभिव्यक्ति आदि– से जुड़े हैं। वैसे तो अनुवाद भाषा का ही व्यापार है और इससे जुड़ी हर बात कहीं न कहीं भाषा से जुड़ती है। किन्तु हम कुछ ऐसे कोशों पर बात करेंगे जो सीधे–सीधे भाषा प्रयोग की अपेक्षा कुछ अन्य बातों से जुड़े हैं। इन बातों का महत्त्व भी अनुवाद में कम नहीं है।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद में शब्द कोश की क्या उपयोगिता है?

उत्तर

अनुवाद में शब्द कोश की उपयोगिता

विभिन्न प्रकार के कोशों के सामान्य परिचय के बाद हम अनुवाद के संदर्भ में इनकी उपयोगिता पर विचार कर सकते हैं। भाषाओं के अच्छे जानकार से भी भाषा के तमाम शब्दों के अर्थ और प्रयोगों की जानकारी की अपेक्षा नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त कभी–कभी अनूद्य विषय की कुछ संकल्पनाएँ अनुवादक के लिए अस्पष्ट हो सकती हैं जिससे सटीक अनुवाद में बाधा उत्पन्न होती है। अनुवाद के क्रम में उसके सामने और भी कई कठिन स्थितियाँ आ सकती हैं। उनसे निपटने के लिए विभिन्न प्रकार के कोशों से उसे बहुत सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए—

1. हो सकता है कि अनुवादक को स्वयं स्रोत भाषा के शब्द के ही सटीक अर्थ का ज्ञान न हो। कई बार साहित्यिक कृतियों में अपेक्षाकृत अप्रचलित शब्द का प्रयोग होता है। उनके अनुवाद के लिए उनका सही–सही अर्थ जानना बहुत आवश्यक होता है। ऐसे में स्रोत भाषा के एकभाषिक शब्द कोश की आवश्यकता पड़ती है।
2. किसी शब्द के सामान्य अर्थ का ज्ञान तो प्राय: सबको होता है, पर विशेष संदर्भ में उसका अर्थ कुछ और भी हो सकता है। ऐसे में भी उसका समुचित अर्थ सुनिश्चित करने के लिए एकभाषिक कोश उपयोगी होता है।
3. सामान्य रूप से भी स्रोत भाषा के शब्द का लक्ष्य भाषा में प्रतिशब्द (समकक्ष शब्द—equivalent) ज्ञात न होने पर अनुवादक को द्विभाषिक कोश की सहायता लेनी पड़ती है।
4. व्यावसायिक और तकनीकी विषयों की पारिभाषिक शब्दावली के लिए तो इन विशिष्ट क्षेत्रों से सम्बद्ध द्विभाषिक कोशों की आवश्यकता पड़ती ही है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक, दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय लेखन के अनुवाद में भी इन क्षेत्रों से सम्बद्ध कोश अथवा पारिभाषिक शब्द संग्रह उपयोगी होते हैं। कई बार एक ही वस्तु या अवधारणा के लिए एक से अधिक शब्दों का प्रयोग होने के कारण अनुवादक के लिए स्थिति अस्पष्ट हो जाती है। ऐसे में उसे प्रामाणिक कोशों सें मानक शब्द का चुनाव करने में सहायता मिलती है।
5. कई रचनाओं में स्रोत भाषा के मानक रूप के स्थान पर या फिर मानक रूप के साथ ही उपभाषाओं या उपभाषा (slang) का प्रयोग भी होता है। ऐसे प्रयोगों का अर्थ सुनिश्चित करने के लिए इनसे सम्बद्ध उपभाषा अथवा बोली कोशों का अध्ययन उपयोगी ही नहीं, अनिवार्य भी होता है।

TOUCH 'n' PASS

6. विभिन्न भाषा क्षेत्रों की संस्कृति में भिन्नता होने के कारण एक भाषा में व्यक्त अवधारणा को दूसरी भाषा तक पहुँचना बहुत सरल नहीं होता है। स्वयं अनुवादक के लिए भी कई बार स्रोत भाषा की रचना का सांस्कृतिक संदर्भ बहुत स्पष्ट नहीं रहता। कई बार कुछ मुहावरों तथा भाषा प्रयोगों के पीछे सुदीर्घ सांस्कृतिक परम्परा रहती है और अनुवाद में उसका परिचय देना जरूरी होता है। इन सब स्थितियों में स्रोत भाषा के क्षेत्र में सम्बद्ध संस्कृति कोश से अनुवादक को सहायता मिल सकती है। विभिन्न क्षेत्रों की पुराकथाओं से जुड़े हुए या उनके संदर्भ से युक्त लेखन के अनुवाद में पुराकथा कोश बहुत सहायक होते हैं।
7. किसी शब्द के अनेक पर्यायों में अर्थ का सूक्ष्म अंतर रहता है। इसी प्रकार स्रोत भाषा के एक शब्द के लिए कई बार लक्ष्य भाषा में अनेक प्रति-शब्द मिलते हैं। ऐसे में स्रोत भाषा के शब्द का सटीक तथा सूक्ष्म अर्थ समझने के लिए और लक्ष्य भाषा में उसके लिए उपयुक्त प्रतिशब्द का चुनाव करने के लिए "थिसॉरस" तथा पर्याय कोश बहुत उपयोगी होते हैं।

प्र.2. अनुवाद के सन्दर्भ में विषय कोश की उपयोगिता का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

अनुवाद के सन्दर्भ में विषय कोश की उपयोगिता

विषय कोश मात्र भाषिक ही नहीं भाषिकेतर संदर्भ से भी जुड़े होते हैं किन्तु भाषिक स्तर पर उनकी भूमिका के कारण इस भाग में उनका उल्लेख भी किया जा रहा है। विषय कोशों में सम्बद्ध विषय की शब्दावली संकल्पनाओं आदि की जानकारी रहती है। जब आप किसी विशेष विषय का अनुवाद करते हैं तो मात्र शब्दांतरण पर्याप्त नहीं होता। जब तक आपके सामने हर संकल्पना स्पष्ट नहीं होगी, आप सही अनुवाद कैसे कर सकेंगे? कभी-कभी स्रोत भाषा के किसी तकनीकी शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में उपयुक्त शब्द नहीं मिलता। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय भी यह कठिनाई हमारे सामने कई बार आती है। जिन विज्ञानों और अनुशासनों पर अब तक हिन्दी में कुछ विशेष लिखा नहीं गया है या जो पश्चिम में अभी उभरने की प्रक्रिया में हैं उनसे सम्बद्ध शब्दावली हिन्दी में या तो अभी बनी नहीं है, या फिर लगभग अप्रचलित है। ऐसे में आपको संदर्भ से अर्थ समझकर उपयुक्त शब्द खोजना या बनाना होगा। समझने की इस प्रक्रिया के लिए आपको विषय कोश की सहायता लेनी होगी।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक ही शब्द अलग-अलग विषयों में अलग-अलग अर्थों में व्यवहृत होता है। यह सही है कि द्विभाषिक शब्दकोश में उस शब्द के विभिन्न प्रतिशब्द भी मिल जाते हैं किन्तु उससे यह स्पष्ट नहीं होता कि विषय विशेष में आपको कौन-सा प्रतिशब्द चुनना है या कौन-सा प्रतिशब्द अभी अधिक उपयुक्त होगा। उदाहरण के लिए unity शब्द लीजिए, सामान्य बोलचाल में इसका अर्थ "एकता" होता है किन्तु संख्या के संदर्भ में यह "इकाई" (numerical unity) नाटक के संदर्भ में "अन्विति" (unity of time, place and action) और अभिकल्प के संदर्भ में "सुसंगति" (unity of design or pattern) का अर्थ देता है। दार्शनिक संदर्भ में यह कभी-कभी "अद्वैतता" का अर्थ भी दे सकता है।

इसी प्रकार voice का अर्थ सामान्य बोलचाल में एक होता है और व्याकरण में कुछ और।

The voice of a sentence is important in determining its meaning का अर्थ

किसी वाक्य का अर्थ निर्धारित करने में उसकी आवाज/वाणी बहुत महत्त्वपूर्ण होती है, किसी वाक्य का अर्थ निर्धारित करने में उसका वाक्य बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। राजनीति विज्ञान में इसका अर्थ "ध्वनि" हो सकता है; जैसे— voice vote (ध्वनि मत) सरीखे प्रयोग में।

हिन्दी में भी आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे। "लीला" शब्द को ही लीजिए "बाल लीला", "रासलीला", "प्रणय लीला", "लीला कमल", "ब्रह्म की लीला", "भगवान की लीला" (मुहावरा) आदि अनेक संदर्भों में इस शब्द के आपको अनेक अर्थ मिलेंगे जिन्हें किसी एक प्रतिशब्द में नहीं समेटा जा सकता। विषय कोश आपको यह बतला सकते हैं कि अमुक विषय में इस शब्द से सम्बद्ध अवधारणा क्या है और उसके लिए कौन-सा प्रतिशब्द उपयुक्त होगा। किसी भी अच्छे पुस्तकालय में आपको भाषा विज्ञान, दर्शन, साहित्यशास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, गणित, सांख्यिकी तथा विभिन्न विज्ञानों एवं अनुशासनों से सम्बद्ध इस प्रकार के अनेक विषय कोश तथा Encyclopedia मिल सकते हैं। कुछ विषय तथा एनसाइक्लोपीडिया इस प्रकार हैं—

International Encylopaedia of the social Sciences, ed D.L. Sills, Collier Macmillan Publishers, London.

The McGraw Hill Dictionary of Modern Economics : A Handbook of Terms and Organizations, Greenwald, McGraw Hill, New York.

Encylopaedia of Religion and Ethics, cd. James Hastings, T.T. Clark, Edinburgh.

प्र.3. अनुवाद के सन्दर्भ में उच्चारण कोश के उपयोग को समझाइए।

उत्तर

अनुवाद के सन्दर्भ में उच्चारण कोश का उपयोग

उच्चारण कोश वे कोश होते हैं जिनमें प्राय: अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों (International Phonetic Symbols) के माध्यम से शब्दों का सही उच्चारण दिया जाता है। आप सोच सकते हैं कि अनुवाद— मुख्य रूप से लिखित अनुवाद— में वर्तनी का महत्त्व होता है। उच्चारण का प्रश्न उसमें उठता ही कहाँ है? इसके अतिरिक्त, स्रोत भाषा के शब्दों के उच्चारण की बात अगर उठाई जाए, तो वे अनूदित हो जाते हैं, अनुवाद में उनके उच्चारण का सवाल ही नहीं उठता। फिर शब्दकोशों में तो आमतौर पर उच्चारण दे ही दिए जाते हैं। आपका ऐसा सोचना सामान्य शब्दों के संदर्भ में सही हो सकता है, पर नामों के क्षेत्र में उच्चारण की समस्या आती ही है, विशेषकर अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद के क्रम में। एक तो अंग्रेजी की वर्तनी ऐसी होती है कि उसके आधार पर कोई निर्विकल्प उच्चारण तय नहीं किया जा सकता। दूसरे उसके लेखन में अनेक नाम अन्य विदेशी भाषाओं–फ्रेंच, जर्मन आदि से आए हुए हैं जिनके उच्चारण और भी अलग हैं। ऐसे में हिन्दी में उन नामों को सही–सही लिखना और भी कठिन है। उदाहरण के लिए, वर्तनी के अनुसार Roget, Montpellier, Dumas, Bads और Chevrolet का उच्चारण क्रमश: रोजेट/रोगेट, मॉण्टपेलियर, डुमास, बाच और चेव्रोलेट अधिक तर्कसंगत लगेगा, किन्तु इनके वास्तविक उच्चारण हैं क्रमश: "रॉजे", "मॉपेलिए", "ड्यूमा", "बाख" और "शेवरले।" अत: इनका लिप्यंतरण इनके सही उच्चारण के अनुसार ही होना चाहिए। अनुवाद में व्यक्ति नामों के अतिरिक्त कई बार ग्रंथों, संस्थाओं, स्थानों आदि के नाम उद्धृत करने की भी आवश्यकता पड़ती है। मौखिक अनुवाद में भी इनके सही उच्चारण की जरूरत होती है। सही उच्चारण जानने के लिए उच्चारण कोश का प्रयोग करें। ग्रंथ के आरम्भ में विभिन्न ध्वनियों के संकेतों की तालिका रहती ही है ताकि पढ़ने वालों को इन संकेतों तथा इनसे द्योतित होने वाली ध्वनि का ठीक–ठीक ज्ञान हो सके। इन ग्रंथों की भूमिकाएँ भी आपको पढ़ लेनी चाहिए।

अन्य भाषा भाषियों को सही उच्चारण का ज्ञान कराने वाले कोश अंग्रेजी और हिन्दी, दोनों में ही उपलब्ध हैं।

सहायक कोश—

1. Everyman's English Pronouncing Dictionary by Daniel Jones, ed. A.C. Gimoson, The English Language Book Society.
2. हिन्दी उच्चारण कोश, डॉ० भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

प्र.4. निम्नलिखित कोशों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

1. **साहित्य कोश**
2. **विश्व कोश**

उत्तर

1. साहित्य कोश

साहित्य कोश में एक या अधिक भाषाओं के साहित्य, साहित्यकारों, विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा धाराओं और साहित्यिक रचनाओं के विषय में जानकारी दी जाती है। जब आप साहित्यिक अनुवाद करते हैं तो सम्बद्ध विषय के प्रति आपकी अवधारणा स्पष्ट होनी चाहिए अन्यथा कई बार बड़ी हास्यास्पद भूलें हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, Romanticism का अनुवाद यदि आप "रोमानवाद" कर देते हैं तो इसमें इस शब्द से सम्बद्ध अधिकतर अवधारणाएँ छूट जाएँगी। आप इसके विषय में पढ़ेंगे तो पता चलेगा कि इससे अभिहित रोमान का स्वरूप सामान्य प्रचलित धारणा से भिन्न है। इसीलिए इसके लिए हिन्दी में "स्वच्छंदतावाद" नाम का प्रयोग होता है (हालाँकि यह नाम भी पूरी तरह पर्याप्त नहीं है)। कई बार किसी शब्द के लिए आपको लक्ष्य–भाषा में उपयुक्त प्रतिशब्द नहीं मिलता। नई अवधारणाओं के संदर्भ में प्राय: ऐसा होता है। तब आपको अपनी तरफ से शब्द गढ़ना पड़ेगा। इसके लिए भी अवधारणाओं और संदर्भों का स्वरूप होना इसके लिए आवश्यक है। साहित्य कोश इसमें सहायक होते हैं।

सहायक कोश—

1. भारतीय साहित्य कोश, संपा. डा० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
2. Dictionary of World Literary terms, Joseph T. Shipley, George Allen & Unwin, London.
3. साहित्यिक पारिभाषिक शब्दकोश, डा० महेन्द्र चतुर्वेदी तथा डा० तारकनाथ बाली, बुक्स एण्ड बुक्स, दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य कोश भाग 1 और 2 ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस।

TOUCH n PASS

2. विश्व कोश

विश्व कोश या Encyclopedia में विश्व के अनेक विषयों—धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, इतिहास, भूगोल, ज्ञान-विज्ञान आदि से सम्बद्ध जानकारी दी जाती है जिसे विषय के अधिकारी विद्वानों से लिखवाया जाता है। शीर्षकों को इसमें विषयानुसार न रखकर वर्णक्रम से रखा जाता है ताकि अध्येता किसी भी शब्द को आसानी से ढूँढ सके यह किस विषय से सम्बद्ध शब्द है, यह पता न होने पर भी। विश्वकोश का महत्त्व भी साहित्य कोश के समान ही है—विषयों तथा अवधारणाओं के बारे में समुचित जानकारी देना, जो अनुवाद कर्म के लिए बहुत आवश्यक है। किसी भी पुस्तकालय में आपको अनेक खण्डों में प्रकाशित अंग्रेजी के अनेक विश्व कोश मिल जाएँगे; जैसे—Encyclopedia Brittanica, American Encyclopedia, Collin's Encyclopedia आदि। हिन्दी में भी डॉ० नगेन्द्रनाथ वसु द्वारा प्रस्तुत "हिन्दी विश्व कोश" पच्चीस खण्डों में उपलब्ध है।

प्र.5. अनुवाद में पुराण एवं मिथक कोशों के क्या उपयोग हैं?

उत्तर

अनुवाद में पुराण एवं मिथक कोश के उपयोग

"पुराण एवं मिथक कोश" किसी संस्कृति से सम्बद्ध पुराण, पुराकथाओं, मिथक, पौराणिक एवं मिथकीय चरित्रों एवं घटनाओं का परिचय देते हैं। पुराण सम्बन्धी साहित्य के सन्दर्भ में तो यह जानकारी आवश्यक होती ही है, सृजनात्मक साहित्य में भी इस जानकारी का बड़ा महत्त्व होता है। किसी भी भाषा के साहित्य में अपनी संस्कृति से जुड़े अनेक संदर्भ तथा बिम्ब होते हैं जिनकी समझ सही अनुवाद के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यदि किसी अंग्रेजी वाक्य में कहा जाए— This is his Achille's heel तो क्या इसका अनुवाद "यह उसकी एकिलीज वाली एड़ी है" होगा? यदि आपको यह पता रहे कि ट्रॉय युद्ध के अन्यतम वीर और अजेय योद्धा एकिलीज के शरीर में एक मात्र कमजोर स्थल उसकी एड़ी था जहाँ तीर मारकर उसे पराजित किया जा सकता था तो आपको सही अनुवाद— "यह उसकी (घातक) कमजोरी है" करने में कोई असुविधा नहीं होगी। इसी प्रकार का Herculean effort सही अनुवाद "भगीरथ प्रयत्न" आप तभी कर सकेंगे जब आपको पता हो कि महाशक्तिशाली हरक्यूलिस ने अनेक असाध्य कार्य सिद्ध किए थे। हिन्दी में ही देखिए, यदि किसी व्यक्ति को "नारद मुनि" या "विभीषण" कहा जाता है तो अनुवाद में ये ही नाम रखे जाएंगे या इनसे अभिहित गुण-दोष? "वे तो पूरे नारद मुनि हैं " का अनुवाद यदि He is an absolute Narad Muni कर दिया जाए तो भारतीय संस्कृति और पुराकथाओं से अनभिज्ञ व्यक्ति इसका क्या आशय समझेगा? ऐसे में अनुवाद में यह स्पष्ट करना होगा कि उन्हें लोगों के परस्पर लड़ाने-भिड़ाने में मजा आता है। अत: इसका उपयुक्त अनुवाद होगा— He enjoys/taken pleasure in setting people against each other.

इस प्रकार के संदर्भों को समझने के लिए पुराण एवं मिथक कोशों की सहायता लेना आवश्यक हो जाता है। यदि आप हिन्दी भाषी भारतीय हैं, तब भी आपको कई बार हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद के क्रम में भारतीय पुराकथाओं आदि सम्बन्धी संदर्भों को स्पष्ट समझने की आवश्यकता हो सकती है। ऐसे में भी इस प्रकार के कोश उपयोगी हो सकते हैं।

सहायक कोश

1. Puranic Encyclopedia Veltam Mani, Motilal Banarsidass, Delhi.
2. पौराणिक कोश, राणाप्रसाद शर्मा, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
3. भारतीय मिथक कोश, डॉ० उषा पुरी विद्यावाचस्पति, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
4. ग्रीस पुराण कथा कोश, कमल नसीम, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

प्र.6. मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश

मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश भी अनुवाद कर्म के लिए बहुत आवश्यक है। मुहावरे तथा लोकोक्ति हर भाषा के अनिवार्य अंग होते हैं और भाषा को चुस्त तथा व्यंजक बनाते हैं। लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के ऐसे प्रयोगों की चुस्ती तथा व्यंजकता लाने के लिए मुहावरों तथा लोकोक्तियों का भी समुचित अनुवाद होना चाहिए। यहीं एक परेशानी हो सकती है। मुहावरे अपने शब्दार्थ से भिन्न अर्थ देते हैं। उदाहरण के लिए, "नौ दो ग्यारह होना" का गिनती या गणित से कोई सम्बद्ध नहीं है न "रंगे हाथ" या red handed का हाथों के रंग से। इसलिए मुहावरों का अनुवाद शब्दार्थ शब्दांतरण के माध्यम से तो हो ही नहीं सकता। उसके लिए लक्ष्य भाषा में प्रसंग के उपयुक्त मुहावरों की तलाश करनी होगी।

TOUCH 'n PASS

लोकोक्तियों में अपने भाषा क्षेत्र की संस्कृति का सार तत्व अभिव्यक्ति होता है और इसलिए उन पर अपने क्षेत्र की संस्कृति की गहरी छाप होती है। किन्तु साथ ही वे कुछ सार्वभौम मानवीय सत्यों को भी अभिव्यक्त करती हैं। अत: हर भाषा में समान आशय का वहन करने वाली लोकोक्तियाँ भी प्राय: मिल जाती हैं; जैसे—

अंग्रेजी	हिन्दी
The grass is greener on the other side of the fence	दूर के ढोल सुहावने
Empty vessels makes much noise	अधजल गगरी छलकत जाय

लोकोक्तियों के अनुवाद में हमेशा आपकी कोशिश यह रहनी चाहिए कि स्रोत-भाषा की लोकोक्ति का भाषान्तर करने के स्थान पर लक्ष्य भाषा में उसकी समानार्थक लोकोक्ति का प्रयोग करें। ऐसी समानार्थक लोकोक्तियों और मुहावरों की तलाश में द्विभाषिक मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश सहायक सिद्ध होते हैं। ऐसे एकभाषिक कोश भी बहुत उपयोगी होते हैं। जिनमें मुहावरे/लोकोक्ति के साथ ही उनके अर्थ तथा प्रयोग भी दिए गए रहते हैं जिनसे उनके आशय आपके सामने स्पष्ट हो जाते हैं। इनकी सहायता से आपका अनुवाद अधिक प्रामाणिक हो जाता है।

सहायक कोश—

1. **मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश**, डॉ० हरदेव बाहरी तथा डॉ० श्यामलाकांत वर्मा, विद्या प्रकाशन मन्दिर, नई दिल्ली।
2. **विचारमूलक विश्व लोकोक्ति कोश**—Thesaurus of Universal Proverbs, ओ०पी० गाबा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
3. **अंग्रेजी-हिन्दी मुहावरा लोकोक्ति कोश,** भोलानाथ तिवारी तथा द्विजेन्द्र नाथ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. Oxford Dictionary of Current Idiomatic English, A.P. Cowie, R. Makin and R. McCaig. Oxford University Press, Oxford.

प्र.7. नाम कोश किसे कहते हैं? इसकी उपयोगिता लिखिए।

उत्तर

नाम कोश एवं इसकी उपयोगिता

नाम कोश, विषय कोश तथा उच्चारण कोश के बीच कहीं आते हैं। अनुवाद के दौरान आपके सामने कई बार ऐसे व्यक्तियों तथा स्थानों के नाम आते हैं, जिन्हें लेकर आपके सामने मुख्यत: दो प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं—परिचय सम्बन्धी और उच्चारण सम्बन्धी।

व्यक्ति या स्थान के नाम से उसके बारे में कुछ पता नहीं चलता। यहाँ आप फिर प्रश्न उठा सकते हैं कि अनुवाद में नाम तो ज्यों का त्यों दिया जाता है, व्यक्ति या स्थान के बारे में जानकारी की क्या आवश्यकता है? इसके कई उत्तर हो सकते हैं।

कई बार नाम से पता नहीं चलता है कि उल्लिखित व्यक्ति पुरुष है या महिला। अंग्रेजी में क्रिया के रूप से भी यह पता नहीं चलता। पृष्ठभूमि का ज्ञान न होने से अनुवादक के सामने कुछ इस प्रकार की समस्या आ सकती है कि "Terry Egleton says....." का अनुवाद वह "टेरी ईगलटन कहते हैं ....." करें या "..... कहती हैं ....." करें। कुछ जगह "..... का कहना है"; जैसे— गोलमोल प्रयोगों से काम चला लिया जा सकता है किन्तु हर जगह यह सम्भव नहीं है। इसलिए कई बार अनुवादक बड़े हास्यास्पद ढंग से पुरुषों के लिए स्त्रीलिंग और स्त्रियों के लिए पुल्लिग के प्रयोग कर बैठते हैं।

यदि उल्लिखित व्यक्ति या स्थान के बारे में आपको सामान्य जानकारी हो तो पूरे अनुवाद में आपको एक परिप्रेक्ष्य मिल जाता है और आप उसके अनुसार बात को प्रस्तुत करते हैं। उल्लिखित व्यक्ति दार्शनिक है, कवि, राजनेता या खिलाड़ी है, इसके अनुवाद का विषय-वस्तु पर प्रभाव पड़ता है और प्रस्तुति की भंगिमा पर भी। व्यक्ति सम्बन्धी जानकारी आपको अनुवाद में और भी कई प्रकार के खतरों से बचाती है। कुछ वर्ष पूर्व एक अंग्रेजी पत्रिका में हिन्दी साहित्य सम्बन्धी लेख में एक उद्धरण ऐसा था जिससे स०ही० वात्स्यायन और अज्ञेय के एक नहीं, दो अलग-अलग व्यक्ति होने का आभास मिलता था। एक अन्य स्थान पर समुचित जानकारी के अभाव में 'अज्ञेय' और 'कामसूत्र' के प्रणेता को अभिन्न मान लिया गया था। नाम से संबद्ध कोश उपलब्ध रहने और उनकी सहायता लेने पर इस प्रकार की भयंकर भूलें नहीं होतीं।

इसी प्रकार स्थान के नाम को लेकर भी आपके सामने कई दुविधाएँ हो सकती हैं, मसलन जिसे भौगोलिक नाम का उल्लेख है वह नदी है, पर्वत है, नहर है, शहर या गाँव है, वह किस देश-प्रदेश में स्थित है यह जाने बिना उससे संबद्ध अनुवाद कठिन होता है।

नामों को लेकर दूसरी कठिनाई उनके उच्चारण की है। इस विषय में उच्चारण कोश के संदर्भ में बात हो चुकी है। कई नामों का उच्चारण आपको उच्चारण कोश में मिल जाता है। पर जो कोश विशेषकर नामों के लिए ही होते हैं उनमें अधिक नाम और अधिक

TOUCH 'n' PASS

जानकारी के साथ आते हैं। यही इन कोशों का महत्त्व है। इनमें अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों में यथावश्यक व्यक्ति या स्थान का नाम दिया हुआ रहता है। जिससे उस नाम का उच्चारण आपके सामने बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। इनके अलावा उच्चारण को स्पष्ट करने के लिए अन्य भी कई प्रतीकों का सहारा लिया जाता है और कोश के आरम्भ में ही इन प्रतीकों के बारे में पूरी जानकारी दी जाती है। उदाहरण के लिए, Webster's Biographical Dictionary से इस जानकारी का कुछ अंश देख सकते हैं। व्यक्ति के जीवन, वंश, शिक्षा, कृतित्व आदि से सम्बन्धित और स्थान की प्रकृति, क्षेत्र, इतिहास तथा अन्य विशेषताओं से सम्बन्धित जानकारी भी इसमें रहती है। यह सारी जानकारी किसी भी अध्येता के लिए उपयोगी होती है और अनुवादक के लिए भी इसका विशेष महत्त्व होता है।

नाम कोश के सहायक कोश

1. Webster's New Biographical Dictionary, Marrian-Webster INC, Publishers, Massaclumsetts.
2. Webster's Geographical Dictionary.
3. Concise Oxford Dictionary of English Place Names, 'Eilert Ekwall, Oxford, Clarendon Press'.

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद के सन्दर्भ में कोश का क्या तात्पर्य है?

उत्तर

अनुवाद के सन्दर्भ में कोश का अर्थ

अनुवाद का कार्य मात्र एक भाषा में उपलब्ध सामग्री का दूसरी भाषा में शब्दांतर नहीं है। अनुवाद में शब्दों के अर्थ के साथ कथन के आशय का भी समुचित रूप से वहन होना चाहिए। इसके लिए अनुवादक को केवल अपनी मेधा या स्मरण शक्ति पर ही निर्भर न रहकर विभिन्न साधनों का सहारा लेना पड़ता है। ऐसा एक प्रमुख साधन है— शब्द कोश।

अनुवाद वह माध्यम है जिसके द्वारा एक भाषा की बात दूसरी भाषा में प्रकट की जाती है। वह बात साहित्य, संगीत, कला-कौशल, विज्ञान या अन्य किसी भी विषय से सम्बद्ध हो सकती है। अनुवाद की पहली शर्त है, अनुवादक की कुशलता—स्रोत और लक्ष्य, दोनों भाषाओं पर उसका समान अधिकार; और दूसरी शर्त है, जिस विषय की सामग्री का अनुवाद किया जा रहा हो, उस विषय के बारे में पर्याप्त जानकारी।

भाषा पर अधिकार का एक पक्ष है, दोनों भाषाओं के शब्दार्थ का ही नहीं, विभिन्न सन्दर्भों में उन शब्दों के निहितार्थ का भी ज्ञान। आप जानते हैं कि परम विद्वान व्यक्ति से भी किसी भाषा के एक-एक शब्द के अर्थ और प्रयोग की जानकारी की अपेक्षा नहीं की जा सकती। किसी विशेष स्थिति में उसे किसी शब्द का उपयुक्त प्रतिशब्द ध्यान में नहीं भी आ सकता है, या अनेक प्रतिशब्दों में से सही विकल्प चुनने में उसे दुविधा भी हो सकती है। ऐसे में जो उपकरण उसके लिए सबसे अधिक सहायक सिद्ध हो सकता है, वह है शब्द कोश। विभिन्न प्रकार के शब्द कोशों के अतिरिक्त "थिसॉरस" और "पर्याय कोश" भी उसकी सहायता कर सकते हैं।

विषय का समुचित ज्ञान होने पर भी कई बार कुछ विशेष प्रयोगों या संकल्पनाओं की अवधारणा उसके सामने स्पष्ट नहीं होती है। ऐसे में अनेक प्रकार के विषय कोश, साहित्य कोश, पुराण कोश, विश्व कोश आदि की सहायता लेकर वह विषय को और अच्छी तरह समझने में सक्षम हो सकता है।

सर्वप्रथम भाषा तथा अनुवाद के संदर्भ में "कोश" के अर्थ पर विचार करें। कोश भाषिक भी होते हैं और भाषिकेतर भी। भाषिक कोशों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के शब्द कोश, अभिव्यक्ति कोश "थिसॉरस" (Thesaurus), पर्याय कोश, बोली या उपभाषा कोश, लोकोक्ति तथा मुहावरा कोश आदि आते हैं जिनमें भाषा के शब्द तथा अभिव्यक्तियाँ प्राय: अर्थ तथा प्रयोग संदर्भों के साथ दी जाती है। भाषिकेतर कोशों में विभिन्न विषयों— साहित्य, धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि से सम्बद्ध जानकारी संकलित रहती है। साहित्य कोश, पुराण कोश, विश्व कोश आदि इस श्रेणी में आते हैं।

अनुवाद के संदर्भ में सबसे पहले भाषिक कोशों के मुख्य रूप से शब्दकोशों के महत्त्व पर ध्यान जाता है। जैसा कि नाम से ही प्रकट है, शब्द कोश का अर्थ है शब्दों का कोश अर्थात् खजाना। आम धारणा और पारम्परिक परिभाषा के अनुसार शब्द कोश (Dictionary या Lexicon) ऐसा ग्रंथ है जिसमें किसी भाषा के शब्दों को वर्णक्रम से संकलित करके उनके अर्थ/अर्थों और प्रयोगों का ब्योरा दिया जाता है। स्तरीय शब्द कोशों में इन सबके अतिरिक्त शब्दों को व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, पर्याय और प्रयोग संदर्भों का भी उल्लेख होता है। संस्कृत के "निरुक्त" तथा "निघंटु" ऐसे कोश हैं जिनमें शब्दों के साथ उनकी व्युत्पत्ति भी

दी गई है। आज भी किसी भाषा के मानक शब्द कोश में शब्द के अर्थ के साथ उसके स्रोत का भी उल्लेख रहता है और अगर उसके रूप में परिवर्तन आया हो तो स्रोत वाले मूल शब्द का भी उल्लेख रहता है।

कई आधुनिक शब्दकोशों में केवल प्रचलित या परम्परा और प्रयोग से सिद्ध शब्दों के अतिरिक्त ऐसे शब्द भी होते हैं जो नई वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक प्रगति की आवश्यकताओं से जन्मे हैं। शब्दों के विशिष्ट प्रयोग तथा मुहावरों को भी इसमें शामिल किया जाता है। किन्तु किसी भी सामान्य शब्दकोश में दर्शन, शिल्प, प्रशासन आदि से सम्बद्ध सम्पूर्ण शब्दावली को समाहित करना सम्भव नहीं है। व्यवहार के अतिरिक्त इन विषयों से सम्बद्ध विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली का भी उस चर्चा में प्रयोग होता है। इसलिए हर समृद्ध भाषा में ऐसे कोश भी होते हैं जिनमें विशिष्ट ज्ञान क्षेत्रों या व्यवहार क्षेत्रों से सम्बद्ध शब्दावली उपलब्ध हो। ये शब्दकोश एकभाषिक (Mono–lingual) होते हैं।

शब्दकोश का कार्य केवल एक भाषा के शब्दों का अर्थ या परिचय देने तक ही सीमित नहीं है। आपने ऐसे अनेक शब्दकोश देखे होंगे, जिनमें एक भाषा के शब्दों का अर्थ तथा परिचय दूसरी भाषा में दिया जाता है। इस प्रकार के अंग्रेजी–हिन्दी अथवा हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोशों का उपयोग आपने स्वयं भी कई बार किया होगा। अनुवाद कार्य में ऐसे द्विभाषिक (Bi–lingual) या बहुभाषिक (Multi–lingual) कोश बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

कोश का ही एक रूप "थिसॉरस" भी है जिसमें विचारों और अवधारणाओं को शब्दों तथा उनके पर्यायों को सूचीबद्ध किया जाता है और भिन्न पर्यायों की अवधारणाओं का सूक्ष्म विवेचन करते हुए उनके सटीक अर्थ को इंगित किया जाता है। इससे लेखक को संदर्भ के अनुसार सही शब्द चुनने में सहायता मिलती है। इसी से मिलते–जुलते होते हैं पर्याय कोश, जिनमें प्राय: वर्णक्रम से संग्रहीत शब्दों के साथ उनके पर्यायवाची, समानार्थक और कभी–कभी विपरीतार्थक शब्दों की सूची भी दे दी जाती है।

बोली या उपभाषा कोशों में किसी भाषा से सम्बद्ध बोलियों की शब्दावली का अर्थ तथा व्याकरणिक जानकारी आदि के साथ संग्रह रहता है। अपभाषा कोशों में अमानक भाषा प्रयोग अर्थ सहित संग्रहीत होते हैं। अभिव्यक्ति कोश विशिष्ट भाषा के प्रयोगों या भाषाई मुहावरों के संग्रह होते हैं तो लोकोक्ति तथा मुहावरा कोश भाषा में प्रचलित लोकोक्तियों तथा मुहावरों के अर्थ तथा प्रयोग का परिचय देते हैं। ये सभी कोश **एकभाषिक** भी हो सकते हैं और **द्विभाषिक** भी।

भाषा के अर्थ तथा प्रयोग से सम्बद्ध इन कोशों के अतिरिक्त अनेक प्रकार के भाषिकेतर कोश भी होते हैं जिनमें विभिन्न विषयों से जुड़ी अनेक प्रकार की जानकारी रहती है। आपने विश्व कोश या Encyclopedia अवश्य ही देखे होंगे जिनमें विषयों को वर्णक्रम में रखते हुए विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों से सम्बद्ध जानकारी एकत्रित की जाती है। पुराण तथा पुराकथा कोश, जैसा कि नाम से ही जाहिर है, विभिन्न पुराणों, पुराकथाओं तथा इनमें आई हुई संकल्पनाओं तथा चरित्रों का परिचय देते हैं। संस्कृति कोश देश या क्षेत्र विशेष की संस्कृति के विभिन्न पक्षों को समझने में सहायक होते हैं। इसी प्रकार साहित्य कोश, संदर्भ कोश, परिभाषा कोश और सूक्ति तथा उद्धरण कोश आदि अनेक प्रकार के कोश होते हैं जिनकी लेखन तथा अनुवाद के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्र.2. एकभाषिक एवं द्विभाषिक कोशों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

एकभाषिक कोश

एकभाषिक कोश में किसी एक भाषा के शब्दों का वर्णक्रमानुसार संग्रह होता है और उसी भाषा में उनके अर्थ भी दिए जाते हैं। उदाहरण के लिए—

कड़ाह—संज्ञा पु० (सं.) 1. कड़ाह। बड़ी कड़ाही, 2. कछुए की खोपड़ी, 3. कुआँ, 4. नरक, 5. झोपड़ी, 6. भैंस का बच्चा, 7. ढूह। ऊँचा टीला, 8. सूप।

—(संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर)

अच्छे कोश में किसी दिए गए शब्द के विभिन्न अर्थों के अतिरिक्त उनकी व्याकरणिक कोटि, वे संज्ञा हों तो उसका लिंग, वचन, शब्द का स्रोत तथा विभिन्न प्रयोग भी दिए जाते हैं। कहीं–कहीं उपयुक्त उद्धरणों के माध्यम से शब्द के अर्थ को और अधिक स्पष्ट भी कर दिया जाता है। शब्द के साथ इतनी जानकारी विस्तार से देने में अध्येता का ध्यान भटक सकता है और अर्थ–बोध में उलझन हो सकती है। अत: शब्दकोश के आरम्भ में ही कुछ संकेत तालिकाएँ दे दी जाती हैं, जिनमें विभिन्न सूचनाओं के लिए संक्षिप्त संकेत निर्दिष्ट कर दिए जाते हैं। इन संकेतों के माध्यम से चर्चाधीन शब्द की श्रेणी, प्रकृति, प्रकार्य, संदर्भ, स्रोत, प्रयोग आदि के विषय में अधिक से अधिक जानकारी दे दी जाती है। आपको कोशों में इस प्रकार की सूचियों का भी अध्ययन करना चाहिए। शब्दकोशों के उद्देश्य तथा उनकी पद्धति को समझने के लिए उनकी भूमिकाओं और प्रस्तावनाओं का भी अध्ययन करना चाहिए।

आम धारणा है कि अनुवाद में द्विभाषिक कोश उपयोगी होता है क्योंकि उसमें एक भाषा के शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में दिए जाते हैं किन्तु अनुवादक को एकभाषिक कोश की आवश्यकता भी अक्सर पड़ती है। स्रोत भाषा के किसी अप्रचलित, अल्प प्रचलित या

अपरिचित शब्द का अर्थ जानने के लिए यह अपरिहार्य है। आप कह सकते हैं कि यह कार्य तो द्विभाषिक कोश से भी सिद्ध हो सकता है। किन्तु एक तो एकभाषिक कोश में शब्दों पर अधिक संख्या में और अधिक गहराई तथा विस्तार से विचार होता है और दूसरे उसमें शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग के अनेक विकल्पों पर प्रकाश डाला जाता है जिससे उसका अर्थ-बोध अधिक स्पष्ट तथा सुनिश्चित हो जाता है।

ऐसा कई बार सरल शब्दों के साथ भी होता है कि किसी संदर्भ में उनका सीधा अर्थ संगत नहीं लगता। उदाहरण के लिए, चिड़ियाघर के सूचनापट पर Big cats का उल्लेख हो तो उसका अर्थ "बड़ी बिल्लियाँ" निश्चय ही नहीं होगा। अंग्रेजी शब्दकोश में अर्थ देखें तो पता चलेगा कि इस शब्द का उल्लेख बाघ, तेंदुआ आदि बिल्ली जातीय वन्य प्राणियों के लिए भी होता है और दिए हुए संदर्भ में यही अर्थ संगत है। इसी प्रकार यदि किसी स्त्री के लिए कहा जाए She is a cat तो इसका सीधे-सीधे अनुवाद "वह बिल्ली है" नहीं होगा। यह अनुवाद अपने आप में हास्यास्पद भी है और अस्पष्ट भी क्योंकि इससे लेखक/वक्ता का आशय स्पष्ट नहीं होता। अंग्रेजी शब्दकोश में cat का एक अर्थ spiteful woman भी है। इसके आधार पर इस वाक्य में cat का अनुवाद "द्वेषपूर्ण" या "द्वेषी" हो सकता है।

लक्ष्य भाषा के एकभाषिक शब्दकोश की भी इसी प्रकार आवश्यकता पड़ती रहती है। स्रोत भाषा के किसी शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में एकाधिक प्रतिशब्द हो सकते हैं। सम्भव है अधिक प्रचलित प्रतिशब्द किसी संदर्भ विशेष में अधिक उपयुक्त न हो। ऐसे में शब्दकोश जो अनेक विकल्प सुझाता है उनमें से उपयुक्त अर्थच्छाया वाला शब्द चुना जा सकता है। नीचे कुछ उपयोगी एक भाषा कोशों का उल्लेख किया जा रहा है—

1. **हिन्दी शब्दसागर/संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर,** संपा. रामचन्द्र वर्मा, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. **बृहत् हिन्दी कोश,** संपा. कालिका प्रसाद तथा अन्य, ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी।
3. The Concise Oxford Dictionary, ed. H.W. Fowler & F.Co., Fowler, Oxford University Press.
4. Chambers's Twentieth Century Dictionary, ed. William Ceddie, London, W & R Chambers Ltd.

द्विभाषिक कोश

द्विभाषिक कोश में एक भाषा के शब्दों के अर्थ, उच्चारण तथा प्रयोग संदर्भ दूसरी भाषा में दिए जाते हैं। अनुवाद में इनकी उपयोगिता असंदिग्ध है क्योंकि ये स्रोत तथा लक्ष्य, दोनों भाषाओं के शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग को समाहित करते हैं। स्रोत भाषा या लक्ष्य भाषा में से कोई भी इन कोशों की प्रथम भाषा हो सकती है जिसके शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग दूसरी भाषा में रहते हैं। अंग्रेजी-हिन्दी के परस्पर अनुवाद के संदर्भ में अंग्रेजी-हिन्दी और हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश-इस श्रेणी में आएँगे। अनुवाद में यद्यपि स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा के शब्द पर्याय खोजने होते हैं, लेकिन दोनों ही प्रकार के कोशों की आवश्यकता होती है।

स्रोत भाषा—लक्ष्य भाषा शब्दकोश की उपयोगिता तो आपके सामने स्पष्ट है, किन्तु कई बार, विशेषकर अनुवाद पुनरीक्षण के क्रम में यह देखना आवश्यक हो जाता है कि लक्ष्य भाषा का जो शब्द आपने चुना है वह स्रोत भाषा के सम्बद्ध शब्द का आशय सटीक रूप से दे रहा है या नहीं। उदाहरण के लिए एक वाक्य लीजिए—

He is quite clear in his mind.

अंग्रेजी शब्द clear के अनेक अर्थ हो सकते हैं। आप कौन-सा चुनेंगे? अंग्रेजी-हिन्दी कोश देखिए। डॉ० कामिल बुल्के के कोश में इस शब्द के कई अर्थ दिए गए हैं—

स्पष्ट, स्वच्छ, पारदर्शक, निर्दोष, सुनिश्चित और निर्बोध

उपयुक्त प्रतिशब्द का चयन बहुत कुछ संदर्भ से निर्धारित होता है किन्तु वाक्य का एक सामान्य अर्थ भी होता है जिसकी दृष्टि से कुछ शब्द बिल्कुल अनुपयुक्त होंगे। अर्थ की दृष्टि से शब्द की उपयुक्तता के निर्णय के लिए आप फिर स्रोत भाषा की कसौटी अपना सकते हैं। अर्थात् हिन्दी-अंग्रेजी कोश में इन तमाम प्रतिशब्दों के अंग्रेजी प्रतिशब्द देखिए। मीनाक्षी हिन्दी-अंग्रेजी कोश में ये अर्थ इस प्रकार हैं—

स्पष्ट — clear, evident

स्वच्छ — 1. clear, 2. limpid, clean and clear

पारदर्शक — Transparent

TOUCH 'n PASS

निर्दोष — 1. innocent, blameles, guiltless, 2. unblemished
सुनिश्चित — firmly determined, definite

अब आप देखिए कि इनमें से कौन-सा अंग्रेजी प्रतिशब्द आशय की रक्षा करते हुए मूल वाक्य में सहज भाव से लग सकता है। ऐसे शब्द हैं—clear, firmly determined और definite । अत: इन्हीं के हिन्दी प्रतिशब्दों का प्रयोग उपयुक्त रहेगा—वह अपने मन में बिल्कुल स्पष्ट/सुनिश्चित है।

अब संदर्भ के अनुसार इनमें से उपयुक्त शब्द चुन लीजिए।

इस प्रकार आपने देखा कि अनुवाद में द्विभाषिक कोश दोनों तरह सहायक होते हैं— स्रोत भाषा के लक्ष्य भाषा पर्याय देखने में; और लक्ष्य भाषा के स्रोत भाषा पर्याय देखने में भी। कुछ कोश बहुभाषिक भी होते हैं, जिनमें एक ही कोश में एक भाषा के शब्दों के प्रतिशब्द एक से अधिक भाषाओं में दिए जाते हैं। इसी प्रकार कुछ द्विभाषिक कोश दुतरफा भी होते हैं। अर्थात् उनके पूर्वार्ध में भाषा "क" के शब्दों के अर्थ भाषा "ख" में दिए जाते हैं और उत्तरार्ध में भाषा "ख" के शब्दों के अर्थ भाषा "क" में। इस प्रकार के शब्दकोश सैलानियों के लिए विशेष उपयोगी होते हैं क्योंकि वे अपनी भाषा ("क") के किसी शब्द का अर्थ तुरन्त भाषा ("ख") के ज्ञाता को बतला सकते हैं और साथ ही उसके द्वारा कही गई बात को भी साथ-साथ समझ सकते हैं। अनुवाद के लिए भी ऐसे कोश सहायक होते हैं। नीचे कुछ उपयोगी द्विभाषिक कोशों का उल्लेख किया जा रहा हैं—

1. अंग्रेजी-हिन्दी कोश, डॉ० कामिल बुल्के, कैथोलिक प्रेस, राँची।
2. बृहत् अंग्रेजी-हिन्दी कोश, डॉ० हरदेव बाहरी, ज्ञानमण्डल, वाराणसी।
3. Oxford Hindi English Dictinonary, R.S. McGreger, Oxford University Press, Oxford.
4. 'A Practical Hindi-English Dictionary', Mahendra Chaturvedi, B.N. Tiwari, National Publishing House, Delhi
5. शिक्षार्थी हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोशों, डॉ० हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

प्र.3. परिभाषा कोश के उपयोग पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

परिभाषा कोश के उपयोग

ये परिभाषा कोश अथवा पारिभाषिक कोश मात्र पारिभाषिक शब्दावली कोशों संग्रहों से भिन्न होते हैं। शब्दावली संग्रहों में विभिन्न विषयों तथा अनुशासनों से सम्बद्ध पारिभाषिक शब्दावली दी जाती है। पारिभाषिक शब्दकोश भी विषय विशेष की पारिभाषिक शब्दावली से ही जुड़े हुए होते हैं। ऐसे द्विभाषिक शब्द कोशों में एक भाषा में दी हुई पारिभाषिक शब्दावली के प्रतिशब्द दूसरी भाषा/भाषाओं में दिए जाते हैं। किन्तु परिभाषा कोशों में पारिभाषिक शब्दों का मात्र अर्थ ही नहीं दिया जाता बल्कि उनसे सम्बद्ध अवधारणा को समझाया भी जाता है। इसी प्रकार ये विषय कोशों की श्रेणी में होते हुए भी उनसे कुछ भिन्न हैं। विषय कोशों में विषय से सम्बद्ध सिद्धांतों, अवधारणाओं आदि की जानकारी दी जाती है। इस क्रम में पारिभाषिक शब्द तथा सम्बद्ध अवधारणाएँ भी आ जाती हैं। किन्तु परिभाषा कोश मूलत: शब्दकोश हैं और इनका पूरा बल विषय की जानकारी कराने पर नहीं बल्कि पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और उसके अभिधेय पर रहता है।

आप पूछ सकते हैं कि पारिभाषिक शब्द की अवधारणा को समझना क्यों आवश्यक है जबकि शब्दों का अर्थ देना ही काफी है। पर यह बात आपके सामने कई बार आ चुकी है और अनुवाद अभ्यास के क्रम में स्वयं आपने भी कई बार महसूस किया होगा कि शब्दरूपी किसी ध्वनिसमूह का कोई निर्विकल्प अर्थ नहीं होता। वास्तविक अर्थ पूरे संदर्भ से ही निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए, हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद के क्रम में 'ध्वनि' का अर्थ आप क्या देंगे ? सामान्य अर्थ है sound किन्तु काव्यशास्त्रीय संदर्भ में यह अर्थ असंगत होगा। इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद की कविता 'काली आँखों का अंधकार' की पंक्ति 'अत्यन्त तिरस्कृत अर्थ सदृश' का अनुवाद like extremely disclaimed meaning निश्चय ही नहीं होगा। 'अत्यंत तिरस्कृत वाच्य' भारतीय काव्यशास्त्र की अवधारणा है। इसके समुचित अंग्रेजी प्रतिशब्द के चुनाव के लिए आपके आगे इस अवधारणा का स्पष्ट रहना जरूरी है।

यहाँ आप फिर प्रश्न उठा सकते हैं कि इसके लिए कोश देखना क्यों जरूरी है? काव्यशास्त्र या इसी प्रकार अन्य विषयों के ग्रंथ भी इसमें सहायक हो सकते हैं। किन्तु ध्यान रखें कि अनुवादक को हर विषय का ज्ञान होना जरूरी नहीं है। इसलिए किसी भी विषय के सही ग्रंथ को उठाकर उसमें सम्बद्ध अवधारणा के बारे में पढ़ लेना इतना आसान नहीं है। पहले तो उसे आवश्यकतानुसार उपयुक्त ग्रंथ का पता लगाना होगा। फिर उस अवधारणा से सम्बद्ध भाग को पढ़ना होगा जिसमें स्वाभाविक रूप से ही बहुत सी ऐसी

जानकारी भी शामिल होगी जो वर्तमान प्रसंग में उसके लिए इतनी आवश्यक नहीं भी हो सकती है। अनुवाद कार्य की समय-सीमा को देखते हुए उसके लिए ऐसे ग्रंथ अधिक सहायक होंगे जिनमें अधिक समय या शक्ति नष्ट किए बिना वह आवश्यक अनिवार्य जानकारी पा सके। परिभाषा कोश इसी दृष्टि से बहुत मददगार होते हैं।

परिभाषा कोशों में भी शब्दों का वर्ण क्रमानुसार संयोजन होता है ये एकभाषिक भी हो सकते हैं। जिनमें जिस भाषा का शब्द होता है उसी भाषा में उसके विषय की जानकारी (उच्चारण, इतिहास, अर्थ, प्रयोग संदर्भ तथा आवश्यकतानुसार विभिन्न विद्वानों के मतामत तथा विवेचन आदि) रहती है। अनुवादक के लिए और भी उपयोगी ऐसे द्विभाषिक कोश होते हैं जिनमें एक भाषा के पारिभाषिक शब्द के साथ उसका प्रतिशब्द तथा अन्यान्य जानकारी दूसरी भाषा में रहती है।

उदाहरण के लिए—

Hypochondria (हाइपोकॉन्ड्रिया) : स्वकाय दुश्चिंता

अपने स्वास्थ्य के बारे में विकृत चिन्ता रोगी का यह भाव कि वह शरीर के रोग से पीड़ित है । दृष्टान्त के लिए यह सोचना कि उसे एनीमिया या क्षयरोग हो गया है इत्यादि। यह अकारण और आधारहीन होता है। वस्तुत: व्यक्ति शरीर से स्वस्थ होता है और यह उसकी कोरी कल्पना मात्र रहती है। एडलर के अनुसार यह अवस्था हीनत्व ग्रन्थि के कारण होती है। इस मानसिक विकृत लक्षण को हटाने में मुक्त साहचर्य और संसूचन (suggestion) की विधियाँ विशेष सफल सिद्ध होती है। (मानविकी पारिभाषिक कोश 'मनोविज्ञान खंड')

Epigraph (ऐपिग्राफ) : पुरालेख, सुभाषित।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से इसका अर्थ है "पुरालेख", किन्तु कोई भी ऐसी उक्ति जो संक्षिप्त, सुष्ठु और चमत्कारपूर्ण हो सुभाषित कही जाएगी। इसमें और व्यंग्योक्ति में यह अन्तर है कि व्यंग्योक्ति मूलत: व्यंग्यात्मक ही होनी चाहिए, इसका व्यंग्यात्मक होना अनिवार्य नहीं है। (मानविकी पारिभाषिक कोश, 'साहित्य खंड 3')

आप देख रहे हैं कि इन उदाहरणों में न केवल अवधारणाओं को समझाया गया है बल्कि मिलती-जुलती अवधारणाओं से इनका अन्तर भी स्पष्ट कर दिया गया है। दूसरे उदाहरण में दिये हुए शब्द के दो वैकल्पिक प्रतिशब्द तथा उनके संदर्भ भी स्पष्ट कर दिए गए हैं। इन सब बातों से अनुवादक के लिए इनकी उपयोगिता स्पष्ट हैं।

पुस्तकालयों में आपको दर्शन, साहित्य, धर्म, कला, विज्ञान आदि सभी विषयों से सम्बद्ध परिभाषा कोश/पारिभाषिक कोश मिल जाएँगे। सभी विषयों के ऐसे कोशों का उल्लेख इस पाठ की सीमा में सम्भव नहीं है। आपकी सुविधा के लिए यहाँ सामान्य रूप से उपयोगी कुछ सहायक कोशों का सुझाव दिया जा रहा है—

सहायक कोश—

1. Encyclopedia of Humanities सम्पादक डॉ० नगेन्द्र, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन (दर्शन खंड, साहित्य खंड, मनोविज्ञान खंड)।
2. साहित्य-शास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश, राजेन्द्र द्विवेदी, दिल्ली, आत्माराम एण्ड संस।
3. भाषा-शास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश, राजेन्द्र द्विवेदी, दिल्ली, आत्माराम एण्ड संस।
4. साहित्यिक पारिभाषिक शब्दा-कोश, प्रो० महेन्द्र चतुर्वेदी तथा डॉ० तारकनाथ बाली, दिल्ली, बुक्स एण्ड बुक्स।

***प्र.4.* अनुवाद में थिसॉरस एवं पर्याय कोश का विस्तृत उल्लेख कीजिए।**

उत्तर

थिसॉरस कोश

"थिसॉरस" तथा पर्याय कोश, भाषिक कोशों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहे जा सकते हैं। "थिसॉरस" (Thesaurus) लैटिन शब्द है जिसका शब्दार्थ है "खजाना" या "कोशागार।" ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्सनरी में इसके और भी अर्थ दिए गए हैं, जिनमें से एक है शब्दकोश या विश्व कोश जैसा ज्ञान भण्डार। दूसरा अर्थ है— 'A collection of concepts or words arranged according to sense— अर्थात् "अवधारणाओं/संकल्पनाओं अथवा शब्दों का आशय के अनुसार विन्यस्त संग्रह।" अमेरिका में इसका प्रयोग पर्याय तथा विपर्याय कोश के अर्थ में भी होता है। राजे के प्रसिद्ध "थिसॉरस" का उद्देश्य है— साहित्यिक अभिव्यक्ति को सहज तथा प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त शब्दों तथा मुहावरों का सुझाव। इसके लिए अवधारणाओं के अनुसार शब्दों को वर्गीकृत किया गया है और एक-सा ही अर्थ देते हुए प्रतीत होने वाले अनेक शब्दों को साथ-साथ न देकर केवल उनके विभिन्न प्रयोग समझाए गए हैं बल्कि उनकी सूक्ष्मता पर प्रकाश डालते हुए उनके बीच का अन्तर भी समझाया गया है। हर शब्द की

TOUCH 'n' PASS

सूक्ष्म ध्वनि का परिचय देते हुए इसमें यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द कैसे भिन्न-भिन्न अर्थ संदर्भों का वहन करते हैं और विशेष स्थिति में क्यों इनमें से कोई विशेष विकल्प ही अधिक उपयुक्त होता है।

कोई लेखक रचना के क्रम में एक कठिनाई का अनुभव अवश्य करता है। वह है दिमाग में आशय स्पष्ट होते हुए भी उसके उपयुक्त शब्द का न मिलना। शब्दकोश ऐसे में अपर्याप्त सिद्ध होता है क्योंकि एक उपयुक्त शब्द की खातिर पूरे ग्रंथ को छान मारना सम्भव नहीं होता। ''थिसॉरस'' में वह संबद्ध अवधारणा से जुड़े शब्दों पर विचार करके सही शब्द चुन सकता है। एक शब्द के कई विकल्प उपलब्ध होने के कारण वह आवश्यकतानुसार भिन्न शब्दों का प्रयोग करते हुए दोहराव से भी बच सकता है। अनुवादक को भी ''थिसॉरस'' के प्रयोग से ये सुविधाएँ मिल सकती हैं। यदि ''थिसॉरस'' की भाषा अनुवाद में लक्ष्य भाषा हो तो उसमें वह विशेष अवधारणाओं के अन्तर्गत आने वाले शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त तथा सटीक शब्द का चुनाव कर सकता है। यदि ''थिसॉरस'' की भाषा अनुवाद में स्रोत भाषा है तो किसी शब्द का सही और परिशुद्ध अर्थ समझने में उसे इससे सहायता मिलती है। स्रोत भाषा के शब्द का अर्थ स्पष्ट होने पर उसके लिए अधिक सटीक अनुवाद करना सम्भव होता है।

''थिसॉरस'' में मात्र प्रचलित और मानक शब्दों का ही नहीं चालू भाषा की शब्दावली, आद्याक्षर से बने शब्दों (Acronym) और चर्चाधीन शब्दों से बने मुहावरों का भी विवरण रहता है। इस प्रकार यह मौलिक तथा अनुवाद, दोनों के प्रकार के लेखन कर्म में बहुत उपयोगी रहता है।

सहायक कोश—

Roget's International Thesaurus, Oxford & India Book House Publishing Co. Pvt. Ltd., New Delhi.

पर्याय कोश

पर्याय कोश भी ''थिसॉरस'' से मिलते-जुलते ही होते है। इनमें प्राय: वर्णक्रम से संग्रहीत शब्दों के विभिन्न पर्यायों या प्राय: समानार्थक शब्दों का उल्लेख होता है और साथ ही उनके बीच में अर्थ और प्रयोग के उस सूक्ष्म अन्तर को भी स्पष्ट कर दिया जाता है जिसके कारण किसी विशेष प्रसंग में कोई खास पर्याय ही अधिक उपयुक्त होता है। उदाहरण के लिए, ''कोमल'', ''मुलायम : सुकुमार'', ''मृदुल'', ''नरम'' एक-सा ही अर्थ देते हुए प्रतीत होने पर भी एक ही अर्थ नहीं देते। सुमित्रानंदन पन्त ने ''पल्लव'' की भूमिका में ''लहर'' के विभिन्न पर्यायवाचियों ''वीचि'', ''ऊर्मि '', ''तरंग'' आदि का उल्लेख करते हुए उनके अन्तर को स्पष्ट किया था। अनुवादक के लिए भाषा के इन सूक्ष्म संकेतों को समझना बहुत आवश्यक है।

पर्यायवाची या समानार्थक प्रतीत होने वाले कई शब्दों में सामाजिक या सांस्कृतिक संदर्भ का अन्तर होता है और एक निश्चित पदक्रम होता है। यह पदक्रम आसानी से बदला नहीं जाता। बदलने पर भाषा में संगति नहीं रहती। उदाहरण के लिए, हम ''जलपान'' के स्थान पर ''पानीपान'' या ''चरण स्पर्श'' के स्थान पर ''पैर स्पर्श '' नहीं कह सकते। इसी प्रकार जिस परिवेश या संदर्भ में ''तुम्हारे पिता'' कहा जाता है, उसमें ''तुम्हारे बाप'' नहीं कहा जा सकता। अनुवादक को इन बातों का ज्ञान होना चाहिए तभी उसके लिए किसी प्रसंग में उपयुक्त भाषा का प्रयोग सम्भव होगा। वह स्रोत भाषा में किसी विशेष शब्द के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ से भली-भाँति परिचित होने के बाद लक्ष्य भाषा में भी ऐसे शब्द का प्रयोग करने की कोशिश कर सकता है जिसकी अर्थच्छाया स्रोत भाषा के शब्द के समान हो। पर्याय कोशों में प्राय: अधिक प्रचलित शब्द को मुख्य आधार मानकर अन्य शब्दों को उसके पर्याय के रूप में लिखा जाता है। शब्दों की व्याकरणिक कोटि का भी उसमें उल्लेख रहता है। अधिक विस्तृत पर्याय कोशों में शब्दों के विभिन्न प्रयोग तथा उनसे बनने वाले मुहावरों का भी समावेश होता है। कुछ हिन्दी पर्याय कोशों में मूल हिन्दी शब्दों के अतिरिक्त हाल में आगत ऐसे विदेशी शब्दों (टेंशन, टैरिफ, डायरेक्ट आदि) को भी समाविष्ट कर लिया गया है जो आम बोलचाल में काफी प्रयुक्त होने लगे हैं।

विपर्याय कोश में शब्दों के विलोम या विपर्याय दिए जाते हैं। ये भी कुछ स्थितियों में अनुवाद में सहायक होते हैं क्योंकि किसी खास प्रसंग में उपयुक्त शब्द का सुझाव इनसे भी मिलता है। कभी-कभी एक ही कोश में पर्याय तथा विपर्याय, दोनों प्रकार के शब्द सम्मिलित कर लिए जाते हैं।

सहायक कोश—

1. **मानक हिन्दी पर्याय कोश,** डॉ० हरदेव बाहरी, विद्या प्रकाशन मन्दिर, नई दिल्ली।
2. **हिन्दी पर्यायवाची कोश,** डॉ० भोलानाथ तिवारी, प्रभाव प्रकाशन, दिल्ली।
3. **नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश—** हिन्दी अंग्रेजी, डॉ० बदरीनाथ कपूर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

TOUCH 'n' PASS

प्र.5. कोशों के समुचित उपयोग के लिए उनकी संकेत प्रणाली एवं संकेतों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर

संकेत प्रणाली तथा संकेतों की विशेषताएँ

कोशों में शब्द या विषय के बारे में प्रमुख सूचना के अतिरिक्त अनेक प्रकार की प्रासंगिक सूचना भी विभिन्न प्रकार के संकेतों के माध्यम से दी जाती है। इसलिए कोशों के समुचित उपयोग के लिए पहले उनकी संकेत प्रणाली को समझना आवश्यक है।

कोश में शब्दों का वर्ण क्रमानुसार संग्रह किया जाता है और विभिन्न संदर्भों के अनुसार उनके एक या अधिक अर्थ भी दिए जाते हैं। यहाँ यह बात आपके ध्यान में रहनी चाहिए कि शब्दों का अर्थ उनकी व्याकरणिक कोटि, प्रकृति तथा संदर्भ से नियंत्रित होता है। अत: दिए गए संदर्भ में किसी शब्द का सही अर्थ जानने के लिए जरूरी है कि आपको उसके विषय में अन्य जानकारी भी हो। अच्छे कोश में किसी शब्द प्रविष्टि के विभिन्न अर्थों के अतिरिक्त उसकी व्याकरणिक कोटि (वह संज्ञा शब्द हो तो उसका लिंग, वचन भी), शब्द का स्रोत तथा विभिन्न प्रयोग भी दिए जाते हैं। कहीं-कहीं उपयुक्त उद्धरणों के माध्यम से शब्द के अर्थ को और अधिक स्पष्ट भी कर दिया जाता है।

शब्द के साथ इतनी जानकारी विस्तार से देने से अध्येता का ध्यान भटक सकता है, और अर्थबोध में उलझन हो सकती है। अत: शब्दकोश के आरम्भ में ही कुछ कोड तथा संकेत तालिकाएँ दे दी जाती हैं जिनमें विभिन्न सूचनाओं के लिए संक्षिप्त संकेत निर्दिष्ट कर दिए जाते हैं। एक-दो उदाहरणों के माध्यम से देखिए शब्द के साथ यह पूरी जानकारी किस तरह दी जाती है।

उदाहरण-1. अज—वि. (सं.) जिसका जन्म न हो। अजन्मा। स्वयंभू। संज्ञा पुं, 1. ब्रह्मा । 2. विष्णु। 3. कामदेव। 4. सूर्यवंशीय एक राजा जो दशरथ के पिता थे। 5. बकरा। 6. भेड़ । 7. माया। शक्ति।

पु क्रि.वि. (सं. अद्य) अब। अभी तक (यह शब्द "हूँ" के साथ आता है)। —(हिन्दी शब्द सागर)

यहाँ "अज" शब्द को प्रारम्भ में विशेषण के रूप में लिया गया है अत: इसके बाद विशेषण का संकेत चिह्न "वि." लगाया गया है। तत्पश्चात् कोष्ठक में "सं."इस बात का प्रतीक है कि इस शब्द का स्रोत संस्कृत भाषा है। इसके बाद विशेषण के तौर पर इसके तीन अर्थ दिए गए हैं। इसी का समध्वनिक एक संज्ञा शब्द भी है। प्रविष्टि की दूसरी पंक्ति में यह दिखलाते हुए यह संकेत भी किया गया है कि यह पुल्लिंग (पुं.) शब्द है। संज्ञा के तौर पर इसके अनेक अर्थ बतलाने के बाद प्रविष्टि के अंतिम हिस्से में यह बताया गया है कि पुरानी भाषा (पु.) में यह क्रिया विशेषण (क्रि.वि.) के रूप में भी प्रयुक्त होता है जहाँ इसका विकास संस्कृत शब्द "अद्य" से हुआ और इसका प्रयोग "हूँ" के साथ होता है ("अजहूँ")।

इस प्रकार इस शब्द से सम्बद्ध पूरी जानकारी यहाँ दे दी गई है। आपके सामने कहीं यह शब्द आता है तो आप उसके संदर्भ के अनुसार उसका अर्थ समझ सकते हैं। एक और उदाहरण लीजिए—

उदाहरण-2. पाटला—संज्ञा स्त्री. (सं.) 1. पाडर का वृक्ष। उदा० संसार महु पुरुष त्रिविध पाटल, रसाल, पनस समा। "मानस।" 2. लाल लोध। 3. दुर्गा का एक रूप। 4. गुलाब। उदा०-बंधूको बिम्बो, कमल तिल जू, घाटला और चँवेली। चम्पा कस्मीरो, घरिहि बिघ, हयाँ फूलिहै एक बेली।-- छंदार्णव। --(हिन्दी शब्द सागर)

इस उदाहरण में देखिए, अन्य जानकारी के साथ पहले अर्थ को स्पष्ट करने के लिए मानस से और चौथे अर्थ को स्पष्ट करने के लिए "छंदार्णव" से उदाहरण भी दे दिए गए हैं।

अब एक उदाहरण अंग्रेजी से भी देखिए—

उदाहरण-3 December, di-sember, n., formerly the tenth, now the twelfth month of the year.—adj. Decem–berish, Decem–berly, wintry, –(Chamber's Twentieth Century Dictionary), cold—n. Decem–brist, one of those who took part in the Russian conspira of December, 1825. [L.December–Decem, ten]

देखिए, यहाँ एक सामान्य से अतिपरिचित शब्द के साथ कितनी सूचना दी गई हैं। पहले इसका उच्चारण समझाकर, फिर इसकी व्याकरणिक कोटि—संज्ञा (n.) का संकेत किया गया। फिर यह बतलाया गया है कि पहले यह वर्ष का दसवाँ महीना था मगर अब बारहवाँ महीना है। फिर इसके—इससे ही बने हुए— विशेषण रूप और उनके अर्थ दिए गए हैं। इसके बाद इससे बने हुए एक और संज्ञा शब्द और उसका ऐतिहासिक संदर्भ दिया गया है। अन्त में बतलाया गया है कि यह शब्द अंग्रेजी में लैटिन से आया है जहाँ decem का अर्थ "दस" होता है।

यह तमाम जानकारी कुछ विशेष संकेतों या कूट चिह्नों के माध्यम से आपके सामने आई है। इसी से आप समझ सकते हैं कि कोश में संकेत चिह्नों का कितना महत्त्व है और शब्दकोश में शब्दों के अर्थ को समझने के लिए इनकी जानकारी कितनी जरूरी है। सभी शब्दकोशों के आरम्भ में कोश में प्रयुक्त संकेतों की तालिका दी जाती है। "अं."/ "अ."/ "वँग." आदि संकेत यह दिखलाने के

लिए हैं कि सम्बद्ध शब्द का स्रोत अंग्रेजी/अरबी/बँगला भाषा है। शब्द के साथ उप. लगा हो तो अध्येता समझ सकता है कि वह उपसर्ग है। "क्रि.अ.", "क्रि.स.", "प्रे. रूप" जैसे संकेत क्रिया शब्द की प्रकृति पतन करते हैं। "जा.मं.", "प्रय." आदि संकेत बतलाते हैं कि शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए उद्धरण कहाँ (क्रमश: "जानकी मंगल" और "प्रिय प्रवास") से लिया गया है। इन संकेतों के माध्यम से शब्द को श्रेणी, प्रकृति, प्रकार्य, संदर्भ, स्रोत, प्रयोग आदि के विषय में अधिक से अधिक जानकारी दे दी जाती है। शब्द की व्याकरणिक कोटि तथा प्रकृति, स्वरूप, विषय-संदर्भ, स्रोत, उद्धरण संदर्भ आदि अनेक विषयों के संकेत उसके बारे में दी गई जानकारी को समझना अधिक आसान बनाते हैं, साथ ही यह भी दिखलाते हैं कि शब्द के बारे में कितनी दृष्टियों से विचार करके कितनी जानकारी दी जा रही है।

शब्दकोशों में मुख्यत: अंग्रेजी शब्दकोशों में आपको उच्चारण संकेत भी मिलेंगे ताकि शब्द को आप लिपि तथा ध्वनि, दोनों ही स्तरों पर जान सकें। आप जानते हैं कि अंग्रेजी में एक ही वर्ण प्रसंगानुसार विभिन्न ध्वनियों के लिए प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी शब्द Put ("पुट") और but ("बट") का उदाहरण प्रसिद्ध ही है जहाँ लगभग एक ही स्थिति में आने पर भी स्वर वर्ण u अलग-अलग ध्वनियों के लिए प्रयुक्त होता है। अत: वर्तनी से उच्चारण का निर्णय कठिन है। अंग्रेजी के प्रथम वर्ण a के ही विभिन्न उच्चारणों के लिए चार अलग-अलग ध्वनि संकेतों का प्रयोग किया गया है। ग्रंथों की पूरी तालिकाओं के कुछ अंश आपकी बेहतर समझ के लिए उदाहरण के रूप में यहाँ दिए गए हैं। उच्चारण सम्बन्धी तालिकाओं में पहले कॉलम में भाषा में आने वाली ध्वनियों के संकेत हैं जो अंग्रेजी की वर्णमाला से मेल खाते हुए उसके मात्र पारम्परिक वर्ण नहीं है। आगे के कॉलम में इन संकेतों के सही उच्चारण का परिचय देने के लिए भाषा के बहुप्रचलित शब्द दिए गए हैं जिनके आधार पर आप जान सकें। इस शब्दकोश में जहाँ भी ये संकेत आएँगे, उनका उच्चारण क्या होगा। तालिकाओं के अंतिम कॉलम में इन उदाहरणों के ध्वन्यात्मक लिप्यंतरण के साथ ही (–) चिह्न के माध्यम से शब्द के अक्षरों का विभाजन भी दिखला दिया गया है। जिसकी जानकारी अंग्रेजी के सही उच्चारण के लिए बहुत आवश्यक है। इसलिए इन उच्चारण संकेतों का समुचित ज्ञान शब्दकोश के किसी भी अध्येता के लिए बहुत जरूरी है। इस बात पर ध्यान दें कि शब्दों का ध्वन्यात्मक लिप्यंतरण इन लिपि में नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों में हुआ है।

अंग्रेजी उच्चारण में बलाघात का भी बहुत महत्त्व है एक ही वर्तनी वाले शब्द भी बलाघात के अन्तर से अलग-अलग आशय या अर्थ देने लगते हैं। उदाहरण के लिए, एक शब्द लीजिए– present। इसमें दो अक्षर (syllables) हैं pres-ent। इनमें यदि पहले अक्षर पर बलाघात होता है (pres-ent) तो यह संज्ञा शब्द होगा और इसका अर्थ होगा— "उपहार", और यदि दूसरे अक्षर पर बलाघात हुआ (pres-ent) तो यह क्रिया शब्द होगा जिसका अर्थ होगा– "प्रस्तुत करना"। इसलिए अंग्रेजी शब्दकोशों में उच्चारण और अक्षर विभाजन के साथ ही बलाघात का चिह्न (') भी रहता है।

आप अन्य शब्दकोश लेकर भी इस विषय में अध्ययन करें यह इसलिए भी आवश्यक है कि सामान्य रूप से कुछ संकेत चिह्न तो सभी कोशों के लिए मानक हो गए हैं, पर कभी-कभी कुछ कोशकार अपने कुछ विशिष्ट चिह्नों का भी प्रयोग करते हैं या सामान्यत: प्रचलित चिह्नों का सामान्य से अलग हटे हुए किसी अर्थ में प्रयोग कर लेते हैं। अत: किसी भी शब्दकोश का उपयोग करने से पहले उसकी संकेत प्रणाली का अध्ययन बहुत आवश्यक है।

प्र.6. अनुवाद में उपभाषा एवं अपभाषा कोश की उपयोगिता का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

अनुवाद में उपभाषा कोश की उपयोगिता

उपभाषा कोश में मानक भाषा से जुड़ी हुई किसी बोली के शब्दों और प्रयोगों का अर्थ सहित संग्रह होता है। उपभाषा में हुई किसी रचना के लिए तो ऐसे कोश उपयोगी होते ही हैं, पर कई बार मानक भाषा में लिखे गए साहित्य में– मुख्य रूप से कथा साहित्य में– बोलियों के शब्द तथा प्रयोग भी मिले-जुले होते हैं। हिन्दी में आपको ऐसे असंख्य प्रयोग आंचलिक कथा साहित्य में मिलेंगे। विशुद्ध आंचलिक की श्रेणी में न आने वाले साहित्य में भी कई बार ऐसे अनेक शब्द मिलते हैं जो क्षेत्र विशेष की बोली तक ही सीमित होते हैं। इसी प्रकार अंग्रेजी के कई कथाकारों की रचनाओं में स्कॉटिश तथा वेल्श भाषा प्रयोग मिलते हैं। कथा साहित्य तथा इतर रचनाओं में भी, क्षेत्रीय रीति-रिवाज, कृषि आदि सम्बन्धी उपभाषा के शब्द कई बार आते हैं। उपभाषाओं के बहुप्रचलित शब्द तो मानक भाषा के शब्द-कोशों में मिल जाते हैं; जैसे– स्कॉटिश शब्द bairn (बच्चा) lass (लड़की)। किन्तु अधिकतर शब्द बोली विशिष्ट होने के कारण केवल भाषा के शब्द-कोश में ही मिल सकते हैं। अनुवादक को केवल संदर्भ से शब्द के अर्थ का अनुमान लगाने के स्थान पर कोश से उनका अर्थ देख लेना चाहिए। तभी अनुवाद अधिक संगत और प्रामाणिक होगा। अंग्रेजी उपभाषा शब्दों के लिए आप अग्रलिखित उपभाषा कोश की सहायता ले सकते हैं—

TOUCH 'n' PASS

सहायक उपभाषा कोश

The English Dialect Dictionary, ed. Joseph Wright, Oxford University Press, Oxford.

हिन्दी के संदर्भ में हिन्दी की बोलियों (ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी मैथिली, भोजपुरी आदि) के कोश उपयोगी होंगे।

अनुवाद में अपभाषा कोश की उपयोगिता

अपभाषा कोश सुनने में बड़ा विचित्र लगता है, किन्तु बोलचाल की भाषा में कई ऐसे प्रयोग होते हैं जो मानक भाषा से बहुत भिन्न होते हैं और मात्र मानक भाषा की शब्दावली, शब्दार्थ और प्रयोगों के माध्यम से इनका मतलब नहीं समझा जा सकता। इन्हें अपभाषा या चालू भाषा (slang) के प्रयोग कहा जा सकता है। हिन्दी में ही देखिए, "खुंदक", "ठुल्ला", "पंगा लेना", "फट्टे मारना" आदि शब्द और प्रयोग मात्र मानक भाषा के माध्यम से नहीं समझे जा सकते। कई बार मानक भाषा में प्रयुक्त सहज सामान्य शब्द भी चालू भाषा में कुछ और अर्थ देते हैं; जैसे– "छोड़ना" या "फेंकना" (गप्प मारना, दूर की हाँकना आदि)। अंग्रेजी आदि भाषाओं में भी आपको ऐसे प्रयोग मिलेंगे जिनके शब्दार्थ उनके आशय को बिल्कुल भी प्रकट नहीं करते। उदाहरण के लिए—

—	pickled
—	chunk of wood
—	kick the bucket
—	be a beauty

इनके शब्दार्थ क्रमशः इस प्रकार होंगे—

—	अचार डला हुआ
—	लकड़ी का टुकड़ा
—	बाल्टी को लात मारना
—	सुन्दर (व्यक्ति/वस्तु) होना

वास्तव में इनका निहितार्थ क्रमशः इस प्रकार होगा—

—	नशे में धुत्त
—	किसी काम का न होना
—	मर जाना
—	फूहड़ और अविश्वसनीय व्यक्ति होना

स्मरण रहे कि एकभाषिक कोश पर चर्चा करते समय इस बात का उल्लेख किया गया था कि कभी-कभी किसी शब्द के बहुप्रचलित पर्याय का चलन भी पूरे कथन को गलत या हास्यास्पद बना सकता है। ऐसे में कोश में दिया हुआ अन्य पर्याय काम आता है। लेकिन अपभाषा प्रयोगों के मामले में यह बात नहीं है। ऐसे प्रयोगों के जो अर्थ निकाले जाते हैं, वे उनके कोशीय अर्थ नहीं होते। दूसरे शब्दों में, ऐसे किसी भी शब्द या प्रयोग के अनेक कोशीय अर्थों में से कोई भी अर्थ ऐसे आशय का वहन नहीं करता। सामान्यतः शिष्ट और शालीन भाषा में इस प्रकार के चालू प्रयोग नहीं होते। ऐसे कई प्रयोग फूहड़ और अभद्र भी होते हैं, पर किसी विशेष वर्ग द्वारा या किसी विशेष स्थिति में उनका प्रयोग होता भी है। कथा साहित्य में भी किन्हीं विशेष चरित्रों, परिवेश या स्थितियों के यथार्थ चित्रण के क्रम में इस प्रकार की भाषा का प्रयोग होता है। स्रोत भाषा की रचना में इस तरह के प्रयोग हों तो अनुवाद में दो बातें आवश्यक हैं— (एक) इन प्रयोगों के स्पष्ट और सही अर्थ समझें; और (दूसरी) लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव को बनाए रखने की चेष्टा करें।

सहायक अपभाषा कोश

1. A Dictionary of Slang and Unconventional English, Erik Partridge, Routledge & Kegan Paul Limited, London.

प्र.7. कोशों में प्रयुक्त संकेत प्रणाली में संकेत चिह्नों की कोटियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

संकेत प्रणाली में संकेत चिह्नों की कोटियाँ

कोशों में प्रयुक्त सामान्य संकेत प्रणाली का उल्लेख करते हुए इस बात की ओर भी ध्यान दिलाया गया है कि विभिन्न कोशों में संकेत चिह्न या उनसे संकेतित अर्थ कुछ अलग भी हो सकते हैं। इसलिए हर कोश में संकेत चिह्नों का अध्ययन आवश्यक है। यह

अध्ययन तब आपके लिए अधिक सरल हो जाएगा जब आप यह स्पष्ट रूप से समझ लें कि ये संकेत चिह्न कितने प्रकार के होते हैं और किन-किन संदर्भों से जुड़े हुए होते हैं।

कोशों में प्रयुक्त संकेत चिह्नों को मोटे तौर पर तीन वर्गों में रखा जा सकता है—

1. **मुद्रण युक्तियों पर आधारित संकेत चिह्न**—शब्दकोशों का अध्ययन करें तो आप देखेंगे कि उनमें सारे वर्ण और शब्द एक समान, एक-सी आकृति, आकार और रंग के नहीं होते। कुछ "बोल्ड" (अधिक मोटी रेखाओं में और अधिक काले) होते हैं, कुछ इटैलिक्स में (तिरछे), तो कुछ कैपिटल वर्णों में लिखे होते हैं। इस विविधता के पीछे कोशाकार का निश्चित अभिप्राय होता है। मुद्रण की हर शैली का अपना विशिष्ट संदर्भ और आशय होता है। उदाहरण के लिए, "बोल्ड" (मोटे तथा काले) अक्षरों का प्रयोग प्राय: हर कोश में शब्द प्रविष्टि के लिए होता है, चाहे वह प्रविष्टि मुख्य हो या गौण। मोटे अक्षरों में छपे होने के कारण स्वाभाविक रूप से ही उस शब्द की ओर ध्यान आकर्षित होता है और यह पता चल जाता है कि यही वह शब्द है जिसके विषय में अर्थ आदि सारी सूचना आगे अपेक्षाकृत बारीक अक्षरों में दी गई है।
   इटैलिक्स या तिरछे अक्षरों का प्रयोग अमूमन रोमन लिपि के कोशों में ही होता है और अलग-अलग कोशों में इसे अलग-अलग कार्यों के लिए व्यवहृत किया जाता है। चैम्बर्स शब्दकोश में इसका प्रयोग प्रविष्टि के बाद उसके उच्चारण के निर्देश के लिए किया गया है तो लांगमैन, हॉनबी और कोलिन्स शब्दकोशों में दृष्टान्त वाक्यों के लिए। कामिल बुल्के के अंग्रेजी-हिन्दी कोश में इटैलिक्स का प्रयोग मुख्य अंग्रेजी प्रविष्टि के बाद दिए गए सभी अर्थ संकेतों के लिए हुआ है। आप किसी भी शब्दकोश के उपयोग के पहले उसकी भूमिका तथा संकेत सूची को देखकर सुनिश्चित कर लें कि उसमें इटैलिक्स का प्रयोग किस संदर्भ में हुआ है।
   कैपिटल अक्षरों को प्रयोग भी रोमन लिपि में ही होता है और इटैलिक्स की ही भाँति इन्हें भी कोशकार अलग-अलग प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त करते हैं। लांगमैन के शब्दकोश में इसका प्रयोग यह दिखलाने के लिए हुआ है कि प्रविष्टि में दिया गया शब्द अपने से बड़े एक वर्ग का सदस्य या उपवर्ग है; जैसे—Jacket–GARMENT
   यहाँ कैपिटल वर्णों के प्रयोग से यह समझाया गया है कि Garment (वस्त्र) एक बड़ा वर्ग है जिसके अन्तर्गत Jacket (जैकेट) भी आता है। Concise Oxford Dictionary में कैपिटल वर्णों का प्रयोग यह बताने के लिए हुआ है कि यह मुख्य प्रविष्टि से व्युत्पन्न शब्द बनाने वाला कोई प्रत्यय या उपसर्ग है; जैसे— Fuzzy – Fuzziness
   इसी प्रकार अन्य शब्दकोशों में कोशकारों ने इनका प्रयोग अपनी आवश्यकतानुसार किया है।
2. **संक्षिप्तयों पर आधारित संकेत चिह्न**—इस कोश मे प्रविष्टि सम्बन्धी पूरी जानकारी को विस्तार से देना न सम्भव है न उपयुक्त, क्योंकि एक तो यह बहुत स्थान-सापेक्ष है और दूसरे, इतने विस्तृत षटाटोप में स्वयं शब्द प्रविष्टि दब जाती है। इसलिए अधिकतर जानकारी के लिए शब्द को संक्षिप्त रूप का प्रयोग होता है। सामान्यत: सभी कोशों में अपनी भाषा के अनुसार एक-सी ही संक्षिप्तियों का प्रयोग होता है; जैसे— "उदा." (उदाहरण), "दे." (देखें), "प्रे." (प्रेरणार्थक), वि. (विशेषण), adj. (adjective), 'coll.' (colloquial), 'fr.' (from), 'prep.' (preposition) आदि। किन्तु कुछ कोशों में अपनी आवश्यकतानुसार कोशकार कुछ विशेष संक्षिप्त रूपों का प्रयोग भी कर लेते हैं। अत: कोश का उपयोग करने के पहले आपके लिए उसमें प्रयुक्त संक्षिप्तियों की जानकारी जरूरी है जो कोश के आरम्भ में दी गई तालिकाओं से आसानी से मिल सकती है।
3. **विशेष संकेत चिह्न**—शब्दकोशों में कई बार शब्द-संक्षिप्त के स्थान पर कुछ विशेष संकेत चिह्नों का प्रयोग भी किया जाता है जिनसे अत्यंत संक्षेप में ही अध्येता तक अभीष्ट सूचना पहुँच जाती है। सामान्य कोष्ठक (( )) या कोणीय (<>), कोष्ठक, डैश (–), तारक (*) आदि इसी प्रकार के चिह्न हैं। इनमें से कुछ चिह्न तो प्राय: मानक हो चले हैं किन्तु कुछ चिह्नों का प्रयोग अलग-अलग कोशकार अलग-अलग अर्थ में करते हैं। उदाहरण के लिए, तारक चिह्न (*) का प्रयोग कामिल बुल्के के अंग्रेजी-हिन्दी कोश में स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों का द्योतन करता है तो कालिका प्रसाद के "वृहत् हिन्दी कोश" में पद्य में प्रयुक्त शब्दों का। पद्य में ही प्रयुक्त शब्दों (तथा पुरानी हिन्दी के शब्दों) के लिए "हिन्दी शब्दसागर" एक अलग ही चिह्न (पु.) का प्रयोग किया गया है। विभिन्न प्रकार के कोष्ठकों (( ) [ ], //, < >,) का प्रयोग भी कोशकारों में अलग-अलग उद्देश्य से किया है। यहाँ आपको इनके अतिरिक्त भी कुछ सामान्य चिह्नों का परिचय दिया जा रहा है पर किसी भी कोश के उपयोग के पहले आपके लिए उचित होगा कि कोश की संकेत तालिका में देखकर समझ लें कि उसमें किन चिह्नों का प्रयोग किस उद्देश्य से किया गया है।

~ – इस चिह्न (लहरिल डैश) का प्रयोग सामान्यत: उन शब्दों या शब्दांशों के पहले होता है जो मूल प्रविष्टि में जुड़कर कोई नया शब्द बनाते हैं। उदाहरण के लिए—

उदाहरण- : 1. (Family) परिवार, घराना, 2. (lineage) वंश, कुटुम्ब, कुल, 3. (race) जाति, 4. (class) वर्ग, कुल, परिवार, joint ~ संयुक्त परिवार, ~ allowance परिवार भत्ता, ~ custom कुलाचार, man, गृहस्थ, ~ members, परिवार सदस्य, कुटुम्बी, ~ name, कुल-नाम, वंश-नाम, ~ planning, परिवार नियोजन, ~ tree, वंश-वृक्ष, वंशावली*, ~ wage, परिवार-मजदूरी*।

—(हिन्दी-अंग्रेजी कोश, कामिल बुल्के)

यहाँ देखिए, मूल प्रविष्टि है Family। अन्य शब्द इसके आगे (Joint Family) या पीछे (Family custom) जुड़कर एक नया पद बना रहे हैं। इस शब्द-संयोग में जिस जगह मूल प्रविष्टि (Family) को आना चाहिए, वहाँ इसे बार-बार न दोहराकर केवल इस चिह्न (~) के द्वारा संकेतित कर दिया गया है। अन्य भी कई कोशों में इस चिह्न का प्रयोग प्राय: इसी उद्देश्य से हुआ है।

= – गणित की ही भाँति कोशों में भी इस चिह्न का प्रयोग समान, समतुल्य या पर्यायवाची शब्दों के लिए होता है; जैसे—
खालसा — वि० (अ. खालिस = शुद्ध) .....

– इसका प्रयोग विलोम शब्द के लिए होता है।

< इस चिह्न का प्रयोग उस शब्द के पहले होता है जिससे प्रविष्टि शब्द की व्युत्पत्ति हुई हो।

~ – "हिन्दी शब्दसागर" में इसका प्रयोग धातु का संकेत देने के लिए हुआ है।

⇑ – इस चिह्न का प्रयोग पर्यायवाची नहीं बल्कि मिलते-जुलते अर्थ को व्यक्त करने के लिए होता है। Collins के Cobuild नामक कोश में इसके प्रयोग का उदारहण देखिए— delicate ⇑ beautiful; costume ⇑ clothing

? प्रश्न चिह्न का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ शब्द की व्युत्पत्ति में संदेह हो।

प्र.8. पर्याय कोश के उपयोगों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर

पर्याय कोश का उपयोग

हिन्दी का प्रथम पर्यायवाची कोश सन् 1935 में वाराणसी में प्रकाशित हुआ था। कोशकार पं० श्रीकृष्ण शुक्ल विशारद ने इसमें संस्कृत के पारम्परिक पर्याय कोशों वाली पद्धति अपनाई थी—अर्थात् 'विषयों के वर्ग और फिर हर वर्ग में उपवर्ग तथा उनके अंतर्गत शब्दों की श्रेणियाँ या पर्यायमालाएँ। उदाहरण के लिए, संस्कृत के हलायुध कोश में पाँच कांडों के अंतर्गत प्रमुख वर्ग बाँट दिए गए हैं— स्वर्ग, भूमि, पाताल, सामान्य तथा अनेकार्य। फिर हर कांड के अंतर्गत उससे संबद्ध शब्दों की पर्यायमालाएँ दी गई हैं। कोश के उत्तरार्ध में अकारादि क्रम में सारे शब्दों की सूची दे दी गई है। आप देख चुके हैं कि "थिसॉरस" की पद्धति भी कुछ इसी प्रकार की है। पं० श्रीकृष्ण शुक्ल के पर्याय कोश में भी चार प्रमुख खण्ड थे— देव, जल-स्थल, मानव जगत तथा मानवेतर जीव खण्ड। हर खण्ड के अंतर्गत अनेक वर्ग तथा हर वर्ग के अंतर्गत अनेक पर्यायमालाएँ थीं। सारे खण्डों में मिलाकर कुल 37 वर्ग तथा 2200 से ऊपर पर्यायमालाएँ थीं।

यह पद्धति समयसिद्ध होते हुए भी हिन्दी के परवर्ती प्रमुख पर्याय कोशों में नहीं अपनाई गई है। इसकी एक वजह तो यह है कि इस पद्धति से शब्द ढूँढना कुछ अधिक श्रमसाध्य है और यह समय भी अधिक लेती है। दूसरी वजह यह है कि "थिसॉरस" जितने बड़े पैमाने पर और व्यवस्थित रूप में नहीं। आज के अधिकतर प्रमुख पर्याय कोशों में शब्दकोशों की ही भाँति प्रविष्टियाँ अकारादि क्रम में मिलती है। अन्य सूचनाएँ अवश्य भिन्न-भिन्न कोशों में भिन्न हैं। उदाहरण के लिए, डॉ० हरदेव बाहरी के मानक हिन्दी पर्याय कोश में अकारादि क्रम से शब्द देते हुए हर शब्द की व्याकरणिक कोटि और स्रोत का उल्लेख भी किया गया है। साथ ही अनेकार्थी शब्दों के अलग-अलग अर्थों के पर्याय भी एक ही साथ दे दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, कोश की पहली ही प्रविष्टि देखिए—

उदाहरण 1. अंक : सं (सं.) 1. संख्या, नंबर, क्रमांक, 2. निशान, चिह्न, छाप, 3. गोद, कोड, अंकवार, 4. दाग, धब्बा।

डॉ० भोलानाथ तिवारी के "हिन्दी पर्यायवाची कोश" में भी प्रविष्टियों में अकारादि क्रम अपनाया गया है और अनेकार्थी शब्दों के विभिन्न अर्थों के पर्याय भी एक ही साथ दिए गए हैं। शब्दों की व्याकरणिक कोटि तथा स्रोत का उल्लेख अवश्य इसमें नहीं है। चूँकि इन कोशों में शब्दकोशों की ही भाँति प्रविष्टियाँ अकारादि क्रम से आती हैं अत: जिस किसी शब्द का पर्याय ढूँढना हो उसे कोश में वर्णक्रम के अनुसार देखा जा सकता है। इनमें भी प्राय: बाएँ तथा दाहिने पृष्ठों के सिरों पर इन पृष्ठों की क्रमश: प्रथम तथा अंतिम प्रविष्टि दी हुई रहती है। व्याकरणिक कोटि तथा स्रोत भी उल्लिखित रहने पर अधिक सुविधा अवश्य हो जाती है। आप पहले "कल" तथा present का उदाहरण देख चुके हैं। "कल" संज्ञा, विशेषण, अव्यय— कुछ भी हो सकता है और हर संदर्भ

में इसके पर्यायवाची शब्द भिन्न होंगे। संदर्भ से आप मूल पाठ में इस शब्द की व्याकरणिक कोटि का पता लगा सकते हैं किन्तु यदि कोश में भी व्याकरणिक कोटि का उल्लेख रहे तो आपका कार्य अधिक सहज हो जाता है। आप प्रतिशब्द तथा उसके पर्याय उस सम्बद्ध व्याकरणिक कोटि के अंतर्गत ही ढूँढ सकते हैं। इसी प्रकार स्रोत का ज्ञान भी सहायक होता है। एक शब्द लीजिए—''आपा''। हिन्दी में यह ''अपने अस्तित्व'', ''अपने होने के बोध'', ''अहंकार'' या ''सुधबुध'' का अर्थ देता है जबकि तुर्की भाषा से आए हुए समध्वनिक शब्द ''आपा'' का अर्थ ''बड़ी बहन'' होता है। जिन कोशों में ये सूचनाएँ दी हुई रहती हैं, आप उनका लाभ अवश्य उठाएँ। ये सूचनाएँ संकेतों में दी हुई रहती हैं। उदाहरण के लिए, पीछे उद्धृत अंश को देखिए। ''सं.'' का अर्थ यहाँ ''संज्ञा'' है। जबकि कोष्ठक में ''(सं.)'' का अर्थ ''संस्कृत।'' अर्थात् इस शब्द का स्रोत संस्कृत भाषा है। इस प्रकार के संकेतों की चर्चा पहले हो चुकी है। आप कोश का उपयोग करने के पहले संकेत सूची का अध्ययन अवश्य करें।

कुछ पर्याय कोशों में स्थिति कुछ भिन्न होती है। उनमें अनेकार्थी शब्दों में एक स्थान पर एक ही-बहुप्रचलित अर्थ के पर्याय दिए जाते हैं तथा अन्य अर्थों के पर्याय उस अर्थ में बहुप्रचलित शब्द के साथ दिए जाते हैं। डॉ० बदरीनाथ कपूर के ''नूतन पर्यायवाची तथा विपर्याय कोश'' का उदाहरण लीजिए। फिर हम प्रथम प्रविष्टि को ही लेते हैं—

उदाहरण 2. अंक (पुं.) आँकड़ा, तादाद, नंबर, संख्यांक, हिंदसा।
number, digit, Figure(s), Numeral.

यहाँ ''अंक'' का केवल सबसे अधिक प्रचलित अर्थ लेकर उसी के पर्याय दिए गए हैं। अन्य पर्याय ''चिह्न'', ''गोद'' आदि के अंतर्गत आएँगे जिनमें एक पर्याय ''अंक'' भी होगा। इस स्थिति में आपके सामने परेशानी हो सकती है कि आपके पास अनूद्य पाठ में ''अंक'' अगर गोद के अर्थ में आया है, तो उसका पर्यायवाची कहाँ ढूँढे। वैसे आप शायद सामान्य ज्ञान के आधार पर ''गोद'' के अंतर्गत इस शब्द को देख लें किन्तु जहाँ किसी शब्द के सारे अर्थों से परिचय न हो वहाँ कठिनाई हो सकती है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए कोश के अंतिम खण्ड में सारे पर्याय शब्दों की सूची देखें। उसमें आपको समुचित निर्देश मिल जाएगा कि किसी शब्द को किन-किन संदर्भों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, ''अंक'' के अंतर्गत उसमें ''गोद'' शब्द भी देख लेने का सुझाव दिया गया है। यह सुझाव आपकी समस्या हल कर सकता है।

यहाँ उद्धृत उदाहरण में एक-दो और बातों पर ध्यान दें। यहाँ व्याकरणिक कोटि का संकेत किया गया है। कोष्ठक में ''(पुं.)'' के माध्यम से बतलाया गया है कि यह शब्द पुल्लिग है और लिंगभेद संज्ञा शब्दों की विशेषता है। देखिए, यहाँ संज्ञा का संकेत दूसरी तरह से दिया गया है। इसलिए जरूरी है कि जो भी कोश आप देखें, उसकी प्रणाली का अध्ययन पहले कर लें।

इस कोश में हिन्दी के साथ ही अंग्रेजी प्रतिशब्द तथा उनके पर्यायों का भी उल्लेख है। यह शब्द का अर्थ-सन्दर्भ सुनिश्चित करने के साथ ही अनुवाद में भी कुछ सहायक हो सकता है।

इस विवेचन से आपके सामने एक और बात स्पष्ट हुई होगी। हर कोशकार की अपनी दृष्टि होती है और हर कोश की अपनी विशेषता। इसलिए उनकी विशेषताओं का पूर्णतया सामान्यीकरण करके यह सलाह दी जा सकती है कि पर्याय कोश मात्र का अध्ययन किस प्रकार किया जाए। यहाँ यह संकेत भर दिया गया है कि पर्याय कोशों का प्रयोजन क्या है, उनमें आपको क्या ढूँढना है और ढूँढने के क्रम में किन बातों का ध्यान रखना है, उनमें किस प्रकार की विभिन्नताएँ आपको मिल सकती हैं और उनसे उत्पन्न समस्याओं का समाधान कैसे किया जाए। हो सकता है, आपको कुछ कोश ऐसे मिलें जो इन दिए हुए उदाहरणों से भी भिन्न हों यहाँ सामान्य चर्चा से आप इतना समझ सकते हैं कि शब्द ढूँढने में सहायक जानकारी का स्रोत कोश के आरम्भ में भी हो सकता है, मध्य और अंत में भी। पूरे कोश को भली प्रकार देखें और उसकी भूमिका भी ध्यान से पढ़ लें। तभी कोशों में उपलब्ध जानकारी का आप पूरा लाभ उठा पाएँगे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद की प्रक्रिया में भाषाएँ शामिल नहीं होती हैं–
(क) स्रोत भाषा (ख) लक्ष्य भाषा (ग) मध्यस्थ भाषा (घ) ये सभी
उत्तर (ग) मध्यस्थ भाषा

प्र.2. थिसॉरस शब्द है–
(क) अरबी (ख) लैटिन (ग) फारसी (घ) अंग्रेजी
उत्तर (ख) लैटिन

TOUCH 'n PASS

प्र.3. ..... में अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों के माध्यम से शब्दों का सही उच्चारण दिया जाता है।
(क) शब्द कोश (ख) उच्चारण कोश (ग) ये दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) उच्चारण कोश

प्र.4. कोश का प्रकार है–
(क) शब्द कोश (ख) थिसॉरस (ग) पर्याय कोश (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.5. कोश का प्रकार है–
(क) उच्चारण कोश (ख) भाषिक कोश (ग) विषय कोश (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.6. कोश का प्रकार है–
(क) परिभाषा कोश (ख) विश्व कोश (ग) साहित्य कोश (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.7. कोश का प्रकार है–
(क) मिथक कोश (ख) एक भाषिक कोश (ग) उपभाषा कोश (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.8. किस कोश में अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों के माध्यम से शब्दों का सही उच्चारण दिया जाता है?
(क) मिथक कोश में (ख) उच्चारण कोश में (ग) पुराण कोश में (घ) ये सभी
उत्तर (ख) उच्चारण कोश में

प्र.9. अनुवाद के लिए किस शब्दकोश की आवश्यकता होती है?
(क) भाषिक (ख) द्विभाषिक (ग) बहुभाषिक (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) द्विभाषिक

प्र.10. अनुवाद के स्वरूप के सम्बन्ध में संस्कृत की कितनी प्रमुख अवधारणाएँ हैं?
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच
उत्तर (ग) चार

प्र.11. अनुवाद के स्वरूप के सम्बन्ध में संस्कृत की प्रमुख अवधारणा है–
(क) शब्द कल्पद्रुम (ख) 'शब्दार्थ चिन्तामणि' कोश
(ग) ऋग्वेद (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.12. विश्व कोश का महत्त्व समान है–
(क) अनुवाद (ख) लिप्यांतरण (ग) साहित्य कोश (घ) ये सभी
उत्तर (ग) साहित्य कोश

प्र.13. व्यावसायिक तथा तकनीकी विषयों की पारिभाषिक शब्दावली के लिए आवश्यकता होती है–
(क) द्विभाषिक कोशों की (ख) भाषिक कोशों की
(ग) दोनों (क) ओर (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) द्विभाषिक कोशों की

प्र.14. सम्बद्ध विषय की शब्दावली संकल्पनाओं आदि की जानकारी उपस्थित रहती है–
(क) विश्व कोश में (ख) विषय कोश में
(ग) भाषिक कोश में (घ) शब्द कोश में
उत्तर (ख) विषय कोश में

TOUCH 'n' PASS

प्र.15. निम्नलिखित में से भाषिक कोश है–
(क) अभिव्यक्ति कोश (ख) पर्याय कोश (ग) मुहावरा कोश (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.16. निम्नलिखित में भाषिकेतर कोश है–
(क) साहित्य कोश (ख) पुराण कोश (ग) विश्व कोश (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.17. निम्न में कौन भाषिक कोश नहीं है?
(क) साहित्य कोश (ख) उपभाषा कोश (ग) थिसॉरस (घ) अभिव्यक्ति कोश
उत्तर (क) साहित्य कोश

प्र.18. निम्न में कौन भाषिकेतर कोश नहीं है?
(क) पर्याय कोश (ख) पुराण कोश (ग) विश्व कोश (घ) साहित्य कोश
उत्तर (क) पर्याय कोश

प्र.19. स्त्रोत ग्रंथ के शैली, कहावतों तथा देशीय उपमानों से स्वतंत्र होकर किया जाने वाला अनुवाद क्या कहलाता है?
(क) मूलबंध अनुवाद (ख) मूल मुक्त अनुवाद (ग) छायानुवाद (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) मूल मुक्त अनुवाद

प्र.20. जब अनुवाद में मूल शब्द, वाक्य आदि पर ध्यान न देकर केवल भाव या विचार पर ध्यान दिया जाता है तो उसे क्या कहते हैं?
(क) भावानुवाद (ख) सारानुवाद (ग) छायानुवाद (घ) शब्दानुवाद
उत्तर (क) भावानुवाद

प्र.21. स्त्रोत ग्रंथ के मूल बातों का मूल मुक्त अनुवाद क्या कहलाता है?
(क) भावानुवाद (ख) सारानुवाद (ग) छायानुवाद (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) सारानुवाद

प्र.22. जब मूल का व्याख्या के साथ अनुवाद होता है तो उसे क्या कहते हैं?
(क) व्याख्यानुवाद (ख) शाब्दानुवाद (ग) पठानुवाद (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) व्याख्यानुवाद

प्र.23. शब्दों का वर्णक्रमानुसार संग्रह किस कोश में होता है?
(क) द्विभाषिक (ख) एकभाषिक (ग) विश्व कोश (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) एकभाषिक

प्र.24. किस कोश में स्त्रोत तथा लक्ष्य दोनों भाषाओं के शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग को समाहित करते हैं?
(क) एक भाषिक कोश (ख) द्विभाषिक कोश
(ग) विश्व कोश (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) द्विभाषिक कोश

प्र.25. विपर्याय कोश में दिए जाते हैं–
(क) पर्यायवाची (ख) विलोम (ग) समानार्थक (घ) कोई नहीं
उत्तर (ख) विलोम

प्र.26. मानक भाषा से जूड़ी हुई किसी बोली के शब्दों और प्रयोगों का अर्थ सहित संग्रह होता है–
(क) उपभाषा कोश (ख) द्विभाषिक कोश
(ग) एकभाषिक कोश (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) उपभाषा कोश

TOUCH 'n' PASS

प्र.27. कोशों में प्रयुक्त संकेत चिन्हों को कितने वर्गों में रखा गया है–
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच
उत्तर (ख) तीन

प्र.28. हिन्दी का प्रथम पर्यायवाची कोश कब प्रकाशित हुआ?
(क) 1934 (ख) 1933 (ग) 1935 (घ) 1936
उत्तर (ग) 1935

प्र.29. हिन्दी का प्रथम पर्यायवाची कोश कहाँ प्रकाशित हुआ?
(क) प्रयागराज (ख) वाराणसी (ग) दिल्ली (घ) हरिद्वार
उत्तर (ख) वाराणसी

प्र.30. बिना भाषा परिवर्तित किए लिपि बदल देना क्या कहलाता है?
(क) अनुवाद (ख) लिप्यंतरण (ग) मशीनी अनुवाद (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) लिप्यंतरण

प्र.31. मशीनी अनुवाद की किस पद्धति में व्याकरण के नियमों को ध्यान में रखा जाता है?
(क) प्रत्यक्ष मशीनी अनुवाद पद्धति (ख) अंतरण मशीनी अनुवाद पद्धति
(ग) दोनों (क) और (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) अंतरण मशीनी अनुवाद पद्धति

प्र.32. लिप्यंतरण को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?
(क) ट्रांसलेशन (ख) ट्रांसक्रिप्शन (ग) ट्रांसफर (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) ट्रांसक्रिप्शन

प्र.33. गोलकनाथ तिवारी ने अनुवाद का वर्गीकरण कितने आधार पर किया है?
(क) 3 (ख) 4 (ग) 5 (घ) 6
उत्तर (ख) 4

प्र.34. किसी एक भाषा के शब्दों का वर्णक्रमानुसार संग्रह होता है, कौन-सा संग्रह कहलाता है?
(क) एक भाषिक कोश (ख) द्विभाषिक कोश (ग) उच्चारण कोश (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) एक भाषिक कोश

प्र.35. स्त्रोत ग्रंथ के मूल बातों का मूल मुक्त अनुवाद क्या कहलाता है?
(क) भावानुवाद (ख) सारानुवाद (ग) छायानुवाद (घ) ये सभी
उत्तर (ख) सारानुवाद

प्र.36. जब मूल का व्याख्या के साथ अनुवाद होता है तो उसे क्या कहते हैं?
(क) व्याख्यानुवाद (ख) शब्दानुवाद (ग) पठानुवाद (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) व्याख्यानुवाद

TOUCH 'n PASS

UNIT-V

पारिभाषिक शब्दावली

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. पारिभाषिक शब्द और सामान्य शब्द में क्या अन्तर है?

उत्तर ऐसे शब्द जो किसी विशेष ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, वह पारिभाषिक शब्द होते हैं और जो शब्द एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त नहीं होते हैं वह सामान्य शब्द होते हैं। पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बांध दी गई हो और जिनकी सीमा नहीं बांधी जाती, वे साधारण शब्द होते हैं।

प्र.2. पारिभाषिक शब्दावली का क्या महत्त्व है?

उत्तर जब किसी शब्द का प्रयोग एक सुनिश्चित अर्थ में किया जाता है और लक्षण-व्यंजना में उनका कोई अन्य अर्थ निकालने की कोशिश नहीं होती, उनके अर्थ को पूरी तरह सीमित कर दिया जाता है। तब वह पारिभाषिक शब्द कहलाता है। इस प्रकार की विशेष शब्दावली ही पारिभाषिक शब्दावली कहलाती है।

प्र.3. पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कब हुआ?

उत्तर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली मण्डल का गठन किया गया, जिसने 11 दिसम्बर, 1950 को हुई। इस मण्डल ने प्रथम बैठक में शब्दावली निर्माण के कुछ सिद्धांत निर्धारित किए। उन सिद्धांत के आधार पर वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली का निर्माण करने के लिए शिक्षा मंत्रालय में जनवरी, 1952 में एक हिन्दी अनुभाग की स्थापना की गई।

प्र.4. पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर किसी भी विषय को अनुशासन का रूप देने के लिए जिसे उसकी अवधारणओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक शब्द स्वीकार किए जाये जो सदैव एक ही अर्थ दे जैस आपरेशन—इस शब्द का रक्षा सेवाओं में एक अर्थ, स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक अर्थ है और रेलवे में एक अर्थ है। इसलिए पारिभाषिक शब्दों की आवश्कता है।

प्र.5. पारिभाषिक शब्द का अन्य नाम क्या है?

उत्तर यह विशिष्ट कथन किसी भी विषय-वस्तु या विषय, अर्थ, क्षेत्र अथवा संदर्भ से संबंधित हो सकता है, विशिष्ट विचारों को व्यक्त करने वाला विशिष्ट शब्द है।' पारिभाषिक शब्द के पर्याय के रूप में ' तकनीकी शब्द का भी प्रयोग किया जाता हैं।

प्र.6. पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया क्या होती है?

उत्तर यह अंग्रेजी शब्दों के पर्याय के रूप में निर्मित की गई है क्योंकि जब कोई भाषा-समाज स्वयं ज्ञान विकसित करने के बजाय किसी भाषा- समाज से तकनीकी ज्ञान ग्रहण करता है तो उसे उस भाषा-समाज की शब्दावली भी ग्रहण करनी पड़ती है। इस शब्दावली के आधार पर फिर वह अपनी भाषा में पर्यायों का निर्माण करता है।

प्र.7. अर्द्ध-पारिभाषिक शब्द कौन-से हैं?

उत्तर उन शब्दों को अर्द्ध-पारिभाषिक शब्द कहते हैं जिन शब्दों का प्रयोग सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होने के अतिरिक्त किसी क्षेत्र विशेष के संदर्भ में भी होती है उन्हें अर्द्ध-पारिभाषिक शब्दों की श्रेणी में रखा जा सकता है। जैसे- आदेश,दावा, रस आदि अर्द्ध-पारिभाषिक शब्द हैं।

प्र.8. पारिभाषिक शब्दावली की विकास प्रक्रिया को कितने भागों में बाँटा गया है?

उत्तर पारिभाषिक शब्दावली की विकास प्रक्रिया को दो भागों में बाँटा गया है—
(i) सहज विकास प्रक्रिया तथा (ii) नियोजित विकास प्रक्रिया।

TOUCH 'n PASS

प्र.9. पारिभाषित कोश निर्माण की स्थापना कब और किसके सहयोग से हुई?

उत्तर पारिभाषित कोश निर्माण की स्थापना सन् 1942 में भारतीय हिन्दी के परिषद् के सहयोग द्वारा हुई।

प्र.10. पारिभाषित शब्दावली के निर्माण की युक्तियाँ कौन-सी है?

उत्तर पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रमुख युक्तियाँ है—(i) अंगीकरण, (ii) अनुकूलन, (iii) नवनिर्माण तथा (iv) अनुवाद

प्र.11. अनुकूलन शब्द का क्या अभिप्राय है?

उत्तर अनुकूलन को रूपान्तरण भी कहा जाता है। शब्द के सन्दर्भ में अनुकूलन का अभिप्राय है— शब्द में थोड़ा बहुत परिवर्तन करके उसे अपनी भाषा के अनुरूप डालना।

प्र.12. हिन्दी भाषा में शब्द के कितने स्त्रोत आते हैं?

उत्तर हिन्दी भाषा में शब्द के चार स्त्रोत आते हैं— तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेश शब्द ।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ एवं स्वरूप पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

पारिभाषिक शब्दावली-अर्थ और स्वरूप

भाषा संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। मानव अपने भावों—विचारों अथवा अवधारणाओं को भाषा के द्वारा व्यक्त करता है। भाषा, सार्थक शब्दों का समूह होती है और इसका कार्य भाषा जानने वालों को अर्थ (meaning) का बोध कराता है। शब्द जहाँ सांकेतिक अर्थ का बोध कराके वाच्यार्थ को व्यक्त कराते हैं वही लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ के रूप में अलग—अलग संदर्भों में भिन्न अर्थ का भी बोध कराते हैं। यह भाषा की अत्यधिक महत्त्वपूर्ण इकाई है। भाषा— विशेष में शब्दों की अधिकता, उतने ही अधिक अर्थ—क्षेत्रों को व्यक्त करने की क्षमता को सिद्ध करती है।

आपको हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि शब्द स्वयं में सामान्य और पारिभाषिक अर्थ को व्यक्त करते हैं। जिन शब्दों में कोई तकनीकी पक्ष शामिल नहीं होता, वे सामान्य शब्द होते हैं। इनके विषय में कुछ भी स्पष्ट करने की आवश्कता नहीं होती है। सामान्य शब्द, मूलतः मूर्त वस्तुओं, स्थितियों या अवस्थाओं से संबंधित होते हैं और इन्हे सामान्य कार्य—व्यवहार में प्रयुक्त किया जात है। 'बचपन', 'फल, 'उबालना', 'घर', 'नमक', 'मीठा', 'कलम', 'ठोस', 'पुस्तक', 'बच्चा', 'सूँघना' आदि वस्तुओं, स्थानों, संबंधों या स्थिति आदि के वाचक सामान्य शब्द हैं। लेकिन, पारिभाषिक शब्द स्वयं में विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करने वाले हैं। इसलिए, इन पर विस्तार से विचार जरूरी है। आइए, सबसे पहले यह जानें कि 'पारिभाषिक शब्द' का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ क्या है?

व्युत्पत्तिमूलक अर्थ : साहित्य-भले ही वह ज्ञानात्मक साहित्य हो या फिर आनंद का साहित्य—में शब्दों के संदर्भ में प्रयुक्त होने वाले 'पारिभाषिक शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Technical Term' शब्द के समतुल्य अर्थ में व्यवहार में लाया जाता है। शब्द 'पारिभाषिक' एक विशेषण है जिसकी रचना 'परिभाषा' शब्द में 'इक' प्रत्यय से हुई है। इस तरह, 'पारिभाषिक' का अर्थ है—परिभाषा संबंधी (अर्थात जिसकी परिभाषा की जा सके अथवा जिसकी परिभाषा देने की आवश्यकता हो)।

जहाँ तक 'परिभाषा' शब्द का संबंध है इसकी व्युत्पत्ति 'भाष्' धातु में 'परि' उपसर्ग जोड़कर हुई है। 'भाष्' धातु कथन का और 'परि' उपसर्ग विशिष्टता (अथवा विशेषार्थ) का द्योतक है। इस प्रकार 'परिभाषा' का संबंध विशिष्ट भाष् अर्थात किसी पद, शब्द या कथन की पहचान का स्पष्टीकरण से है। यह विशिष्ट कथन किसी भी विषय-वस्तु या विषय, अर्थ, क्षेत्र अथवा संदर्भ से संबंधित हो सकता है; विशिष्ट विचारों को व्यक्त करने वाला विशिष्ट शब्द है। 'पारिभाषिक' शब्द के पर्याय के रूप में 'तकनीकी' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है।

अंग्रेजी का 'Technical'शब्द, 'Technique' से बना है। यह मूल अंग्रेजी शब्द ग्रीक भाषा के Technika से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है -कला अथवा शिल्प का और 'इक' का अर्थ है- इसका (इससे संबद्ध)। इस प्रकार 'टेक्नी' शब्द का अभिप्राय हुआ— कला अथवा शिल्प का अथवा उससे संबद्ध। ग्रीक में 'टेक्टोन'(Teckton) का अर्थ है- बढ़ई अथवा निर्माता (builder)। लैटिन में टेक्सीयर (Texere) को बुनना अथवा निर्माण करने के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। इस तरह यह ग्रीक शब्द किसी चीज को बनाने अथवा तैयार करने की कला या शिल्प है। अंग्रेजी के 'Technique' शब्द से भी यही अर्थ उजागर होता है।

TOUCH 'n' PASS

कोशगत अर्थ : शब्दकोश के अनुसार 'Technical' शब्द का शब्दिक अभिप्राय है—'of a particular art, science, craft or about art.' अर्थात् 'विशेष कला का अथवा विज्ञान का अथवा कला के बारे में'। स्पष्ट है कि 'Technique' (तकनीकी) शब्द 'बनाने' तैयार करने के अर्थ का वहन करता है। इसके इस अर्थ को 'शब्द' (term) के साथ प्रयोग करने पर अर्थात् 'Technique Term' (तकनीकी शब्द) लिखने पर इसमें यह तात्पर्य निहित हो जाता है कि यह मानव द्वारा निर्मित अथवा अभिकल्पित अथवा अन्वेषित भाव-विचार अथवा वस्तु को उजागर करने वाला शब्द है।

प्र.2. पारिभाषित शब्दावली सम्बन्धी परिभाषाएँ दीजिए।

उत्तर

पारिभाषित शब्दावली सम्बन्धी परिभाषाएँ

पारिभाषिक शब्दों के अर्थ-तत्त्व के बोध के लिए तत्संबंधी परिभाषा या व्याख्या पर भी समुचित ध्यान देना जरूरी है। **रैंडम हाउस** ने पारिभाषिक शब्द की परिभाषा इन शब्दों में दी है—'विशिष्ट विषय जैसे विज्ञान अथवा कला विषय की तकनीकी अभिव्यक्ति के लिए निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त एक शब्द अधिकांशत: कला का शब्द।' **चैंबर्स टैक्निकल डिक्शनरी** की भूमिका में पारिभाषिक शब्द के संबंध में कहा गया है कि 'यह प्रश्न किया जा सकता है कि पारिभाषिक शब्द क्या है? पारिभाषिक शब्द वह शब्द या अभिव्यक्ति है जो मानव की विशिष्ट गतिविधियों या प्रकृति के किसी विशेष पहलू संबंधित ज्ञान की शाखा के विद्वान या कुशल व्यक्ति के लिए विशेष महत्त्व का या मूल्यावान हो।'

पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में **डॉ० गोपाल शर्मा** ने 'अनुवाद कला: कुछ विचार' शीर्षक पुस्तक में लिखा है कि पारिभाषिक शब्द वह है जो किसी विशेष ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता हो तथा जिसका अर्थ परिभाषा द्वारा स्थिर किया गया हो।' वहीं, **डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव** और **प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी** द्वार संपादित पुस्तक 'अनुवाद: सिद्धांत और समस्याएँ' में श्री जीवन नायक ने लिखा है कि 'विशेष ज्ञान के क्षेत्र में जब कोई शब्द निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है तो उसे पारिभाषिक शब्द कहते हैं।'

डॉ०दंगल झाल्टे ने प्रयोजनमूलक हिंदी से संबंधित अपनी पुस्तक 'प्रयोजनमूलक हिन्दी:सिद्धांत और प्रयोग' में पारिभाषिक शब्दावली को परिभषित करते हुए लिखा है—' जो शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त न होकर ज्ञान—विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विषय एवं संदर्भ के अनुरूप विशिष्ट किंतु निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है, उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं। इसे तकनीकी शब्दावली भी कह सकते हैं।'और डॉ० पूरनचंद टंडन ने अपनी पुस्तक 'अनुवाद साधना' में पारिभाषिक शब्दावली को परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'पारिभाषिक' शब्द अर्थपरक (भावपरक) अथवा वैचारिक शब्द (conceptual word) होते हैं अर्थात् वे उपयुक्त संदर्भ में किसी शब्द का अर्थ परिभाषित करते हैं ताकि शब्द की अवधारना मस्तिष्क में बन जाए।'(पृ.106) विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं से पता चलता है कि पारिभाषिक शब्द वे हैं जिनका संबंध सामान्य भाषा—व्यवहार से न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से होता है और प्रत्येक क्षेत्र के लिए अवधारणाओं को औपचारिक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए उसकी अर्थ—सीमा निश्चित रहती है ताकि उन्हे ठीक—ठीक पारिभाषित किया जा सके। उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर **उस शब्द को पारिभाषिक शब्द कहा जा सकता है जो अर्थ एवं प्रयोग की दृष्टि से ज्ञान के किसी विशिष्ट क्षेत्र में रूढ़ होकर एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है और जो परिभाषा से युक्त हो।** इस प्रकार, मानविकी,सामाजिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रशासन, कृषि, बैंकिंग—बीमा, वाणिज्य—व्यापार आदि सहित ज्ञान—विज्ञान की समस्त शाखाओं—प्राशाखाओं से संबंधित शब्दों को 'पारिभाषिक शब्दावली कहा जाता है। वैसे, विज्ञान-प्रौद्योगिकी की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं से सम्बन्धित शब्दावली को संक्षेप में 'वैज्ञानिक शब्दावली' भी कह दिया जाता है, जिसका अर्थ वस्तुत: 'पारिभाषिक शब्दावली' ही होता है।

प्र.3. पारिभाषिक शब्दावली के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार

शब्द, भाषा की स्वतंत्र—सार्थक एंव अत्यधिक महत्त्वपूर्ण इकाई है। हिन्दी भाषा की शब्दावली विभिन्न शब्द—स्रोतों के माध्यम से समृद्ध हुई है। इसमें संस्कृत से सीधे आए तत्सम, हिंदी में नया रूपान्तरण एवं वर्तनी प्राप्त संस्कृत के तद्भव रूप वाले शब्द, हिंदी की बोलियों के देशज और विदेशी भाषाओं से प्राप्त विदेशी शब्द—स्रोत शामिल हैं।

विभिन्न विद्वानों ने प्रयोग के आधार पर शब्दों को भिन्न—भिन्न वर्गों में विभाजित किया है। पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में गंभीर विवेचन—विश्लेषण करने वाले प्रथम भारतीय चिंतक **श्री राजेंद्र लाल मित्र** ने सन् 1877 में प्राकशित 'A Scheme for the rendering of European Scientific Terminology into Vernaculars of India' शीर्षक अपनी पुस्तिका में पारिभाषिक शब्दों को जिन छह वर्गों में विभाजित किया है; वे हैं—(1) सामान्य शब्द: जो कभी—कभी पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता हैं— जैसे सिर, पेड़, लोहा तथा ज्वर। (2) वे शब्द जो सामान्य शब्द के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं तथा पारिभाषिक

TOUCH 'n PASS

शब्द के रूप में भी, किन्तु मुख्यत: मानविकी के क्षेत्र में ये अर्धपारिभाषिक कहे जा सकते हैं- जैसे मांसपेशी, पंखुरी, रवा आदि। (3) इसमें योगरूढ़ि शब्द आते हैं। निर्माण के समय से शब्द वस्तुओं के विशिष्ट गुणों के द्योतक थे, किंतु अब इनका पुराना व्युत्पत्तिजनक अर्थ लुप्त हो गया है और अब ये मात्र नाम रह गए है- जैसे कुनैन, ऑक्सीजन आदि। (4) वनस्पतिविज्ञान तथा प्राणिविज्ञान में प्रयुक्त द्विपदीय (Binomical) नाम, जो मूलत; व्युत्पत्ति की दृष्टि से सार्थक थे किन्तु अब उनके दोनो शब्द 'वंश' और 'जाति' को प्रकट करते हैं। (5) ये तकनीकी शब्द जो अब भी अपना व्युत्पत्तिजनक अर्थ देते हैं। जैसे रवाकरण (क्रिस्टाइलाइजेशन), अंकुरण (जर्मिनेशन) आदि। (6) समस्तपदीप शब्द; इसमें एक या दोनों शब्द अपना व्युत्पत्तिपरक अर्थ देते हैं— जैसे सल्फ्युरिक अम्ल। इस वर्ग के शब्द शरीर रचनाविज्ञान या रसायनविज्ञान के होते हैं। (पारिभाषिक शब्दावली; कुछ समस्याएँ, सपा डॉ० भोलानाथ तिवारी और श्री महेंद्र चतुर्वेदी)

वहीं, डॉ० विनोद गोदरे ने अपनी कृति 'प्रयोजनमूलक हिंदी' में पारिभाषिक शब्दों के वर्गीकरण के निश्चित आधार के अभाव को रेखांकित किया है और माना है कि वर्गीकरण आधारों तथा वर्गीकरण के भेद— प्रभेदों की अधिक विस्तारों की उलझनों से बचने के लिए पारिभाषिक शब्दावली को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: (1) पूर्ण पारिभाषिक शब्दावली, जो विभिन्न अनुसंधानों में ज्ञान, विज्ञान शाखाओं में प्रयुक्त शब्दावली का स्थूलवाचक शब्दावली है। (2) अर्धपारिभाषिक शब्दावली जिसमें सामान्य शब्द संदर्भ विशेष में पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं। चूँकि सामान्यत: ये पारिभाषिक शब्द नहीं होते किंतु कभी—कभार ही संदर्भ की आवश्यकता से पारिभाषिक बनते हैं अत: इन्हें पारिभाषिकोन्मुख सामान्य शब्द कहा जा सकता है। इन्हे अर्धपारिभाषिक शब्द भी कहा जा सकता है।'

अब तक की गई चर्चा के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली को 'अर्ध-पारिभाषिक शब्द': एवं पारिभाषिक शब्द में वर्गीकृत करना उपयुक्त है। अब पारिभाषिक शब्द के 'अर्ध—पारिभाषिक शब्द की ही चर्चा करेंगे।

अर्ध-पारिभाषिक शब्द—अर्ध-पारिभाषिक शब्द, सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों के बीच की स्थिति में आने वाले शब्द होते हैं। इनका सामान्य जीवन-व्यवहार में तो इस्तेमाल होता ही है, किसी भी विशिष्ट ज्ञान-क्षेत्र के संदर्भ में भी इस्तेमाल किया जाता है। इन शब्दों का यह विशिष्ट्य होता है कि इनका पारिभाषिक अर्थ व्याख्या, लोक प्रयोग, अर्थ-विस्तार, अर्थादेश, अर्थ-संकोच द्वारा सिद्ध होता है। लोक—व्यवहार एवं शास्त्र/विज्ञान— विशेष में प्रयुक्त होने के स्तर पर शब्द के इस रूप में कोई परिवर्तन नहीं आता है, ये केवल नया अर्थ लिए हुए होते हैं।' आवेश' 'भिन्न', 'दावा', 'संधि', 'रस', 'पुष्प', 'आदेश', 'रेखा', 'एण', 'हस्ताक्षर', कार्य, 'दंड', 'सूजन','वृक्ष','वेदना', 'स्वीकृत', 'शक्ति', 'प्रणाली', आदि ऐसे ही शब्द हैं। इस तरह के शब्द अर्थांतरण गुण लिए हुए होते हैं यानी ये सामान्य अर्थ में प्रयुक्त किए ही जाते हैं यदि इन्हे स्पष्ट किए जाए तो उससे ज्ञान—विशेष की विशेषता भी नजर आएगी।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. सामान्य शब्द एवं पारिभाषिक शब्द में समानता-असमानता का विस्तृत उल्लेख कीजिए।

उत्तर

सामान्य शब्द एवं पारिभाषिक शब्द में सामान्ता-असामानता

प्रयोग के आधार पर शब्दों के प्रकारों पर ध्यान दें तो यहाँ प्रश्न यह उठता है कि सामान्य शब्द एवं पारिभाषिक शब्द में समानता और असामानता क्या है? होता यह है कि कभी—कभी एक शब्द अलग—अलग संदर्भों में पारिभाषिक रूप भी ग्रहण कर सकता है और सामान्य भी। जैसे, यदि बोलचाल में यह कहें कि 'मुझे उसकी बात पर आपत्ति है' तो यहाँ 'आपत्ति' शब्द सामान्य प्रतीत होता है। किंतु जब इसी शब्द को 'विधि' (Law) के संदर्भ में व्यवहार में लाते हुए कहे कि 'प्रतिवादी की आपत्ति' तो वहाँ 'आपत्ति' एक पारिभाषिक शब्द है। इस प्रकार, यदि शब्द को विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त किया जाए तो वह पारिभाषिक होता है अन्यथा सामान्य। वैसे सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों के बीच समानता और असमानता को शब्दों की संरचना; और अर्थ के आयाम से देखा जा सकता है।

संरचनात्मक स्तर पर समानता

शब्द की संरचना के स्तर पर देखें तो यह आयाम शब्द-निर्माण की विधि से संबंधित है, शब्द-रचना से संबद्ध है। शब्द-निर्माण भाषिक नियमों के अनुसार होता है और व्याकरण पर आधारित होता है। यह व्याकरण सामान्य और पारिभाषिक शब्दों के लिए समान होता है। धातु, उपसर्ग और प्रत्यय के मेल से और संधि-समास आदि से शब्दों की रचना की जाती है। सामान्य एवं परिभाषिक शब्दों का निर्माण इन तीनों उपादानों से होता है। धातु के साथ उपसर्ग-प्रत्यय अथवा शब्द जोड़कर शब्दों की व्युत्पत्ति

की जाती है। उपर्सग-प्रत्यय के अतिरिक्त समास भी शब्द-रचना का तरीका है। इनके माध्यम से शब्द-निर्माण की प्रक्रिया में संधि की सहायता भी ली जा सकती है। भाषा में इनके विशिष्ट नियम होते हैं, जिनसे शब्दों की संरचना बनती है। 'विश्वास', 'अविश्वास', 'विश्वसनीय', 'विश्वनीयता', 'सुंदर', 'असुंदर', ' सुंदरता', 'कुशल', 'अकुशल', 'सकुशल', 'कुशलता', आदि शब्दों की रचना धातुओं में उपसर्ग—प्रत्यय लगने से हुई है। इसी भाँति धातुओं के आगे—पीछे उपसर्ग—प्रत्यय लगाकर पारिभाषिक शब्दों का भी निर्माण किया जाता है क्योंकि पारिभाषिक शब्दों का अपना कोई अलग से व्याकरण नहीं होता है। 'विधि', 'विधिक', 'विधिवेता', 'वैध', 'अवैध', ' विधिहीन', 'विधान','विधायी','विधायक', 'विधेयक', आदि पारिभाषिक शब्दों की रचना भी संस्कृत की धातुओं में उपसर्ग—प्रत्यय लगाकर हुई है।

वैसे इस तथ्य को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि ज्ञान—विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हो रहे विकास के साथ—साथ जो अनेक नए अविष्कार एवं उनसे संबंद्ध अवधारणाएँ विकसित हो रही हैं उन्हें व्यक्त करने के लिए नए शब्दों की माँग दिनोदिन बढ़ रही है। जिस भाषा में इसका विकास होता है उसमें नए शब्द बनते हैं और जो भाषाएँ उस विकास को ग्रहण करती हैं वे उस शब्दावली के लिए विभिन्न युक्तियों से शब्दों का निर्माण—विकास करती हैं। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि इन्हें भाषा के मान्य व्याकरणिक विधानों के अंतर्गत ही निर्मित किया जाता है। कुल मिलकर यही कहा जा सकता है कि संरचना के स्तर पर सामान्य और पारिभाषिक शब्द में कोई अंतर नहीं होता, दोनों समान होते हैं।

अर्थ-संरचना के स्तर पर असमानता

सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों के बीच मूल अंतर, अर्थ—संरचना के स्तर पर ही होता है। भाषा में शब्द अभिधा, लक्षण एवं व्यंजना—शाक्ति से संपन्न होता है। कोई भी व्यक्ति अपनी भाषा में, शब्द को प्रयोजन और दृष्टिकोण के अनुरूप इन अर्थों के संदर्भ में प्रयुक्त कर सकता है। विशेष तौर पर साहित्य की ही बात करें तो शब्दों का लाक्षणिक प्रयोग साहित्य को वैशिष्ट्य प्रदान करता है। जबकि पारिभाषिक शब्द में यह गुण होता है कि विषय—विशेष के संदर्भ में अभिधार्थ या एक ही अर्थ देता है, किसी अन्य संदर्भ में हम उसका वही अर्थ ग्रहण नहीं कर पाते। साहित्यक भाषा में 'आँसुओं की नदी बहाना' लाक्षणिक अर्थ को व्यक्त करता है क्योंकि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसकी आँखें आँसुओं की नदियाँ बहा सके। इस तरह देखा जाए तो यहाँ मूल अर्थ में विचलन लाते हुए अर्थ—विस्तार किया गया है। जबकि ज्ञान—विज्ञान के संदर्भ में 'नदी' शब्द प्रयुक्त होने पर उसका मूल अर्थ स्थिर रूप में नजर आता है। वहाँ उस स्थिति में 'नदी'का मूल अर्थ स्थिर है, उसमें वस्तुनिष्ठता है। पारिभाषिक शब्द शास्त्र—सापेक्ष होते हैं, उनके द्वारा व्यंजित अर्थ में निश्चितता एवं सूक्ष्मता होती है पारिभाषिक शब्दावली की इस प्रकार की विशिष्टता उन्हें अर्थ के स्तर पर सामान्य शब्द से अलग पहचान देती है।

पारिभाषिक शब्द किसी व्यापार, प्रक्रिया अथवा विशिष्ट अवधारणा के अर्थ को व्यक्त करने वाले भी हो सकते हैं। जैस, गणित में 'दशमलव', 'बिन्दु', 'समीकरण', आदि या फिर भाषाविज्ञान में 'ध्वनि', 'स्वन', 'स्वानिम' और 'रूपिम' आदि शब्दों को देखा जा सकता है। इसी तरह से, दर्शनशास्त्र और आध्यात्मिक संदर्भों में 'माया', 'जगत', 'आत्मा', 'मोक्ष' आदि शब्दों का उल्लेख किया जा सकता है। यह स्थिति ठोस वस्तुओं आदि के बोधक पारिभाषिक शब्दों की भी है। जैसे, रसायन विज्ञान में कैल्सियम, 'नाइट्रोजन', 'सोडियम', आदि प्राणिविज्ञान में 'कोशिका', 'धमनी' आदि पारिभाषिक शब्दों की है। पदार्थवाची शब्द विविध प्रकार की भौतिक वस्तुओं से संबंधित होते हैं और ऐसे शब्दों का बाहुल्य प्राय: प्राकृतिक विज्ञानों की परिधि में होता है, जबकि अवधारणवाची शब्द अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और अमूर्तवाची होते हैं। इस प्रकार के शब्दों की परिभाषा देना आवश्यक होता है। इन्हें परिभाषित करने का मूल कारण यह है कि ऊपरी तौर वह शब्द- विशेष भले ही सामान्य अर्थ की प्रतीति कराए किंतु वास्तव में उसका एक अन्य निश्चित अर्थ भी होता है। जैसे भौतिकी के क्षेत्र में 'घनत्व' (density) शब्द को भी लिया जा सकता है जिसका सामान्य अर्थ घनापन अथवा गाढ़ापन है जबकि विषय-विशेष अर्थात विज्ञान के क्षेत्र में इसका प्रयोग 'किसी वस्तु के इकाई आयतन का मात्रा' के अर्थ में होता है।

प्र.2. पारिभाषिक शब्दावली के अभिलक्षणों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

पारिभाषिक शब्दावली के अभिलक्षण

पारिभाषिक शब्दों के अर्थ— तत्त्व को स्पष्ट करने के लिए जहाँ उसकी परिभाषा अथवा व्याख्या पर समुचित ध्यान दिया जाना अपेक्षित है वहीं इनके अचूक अथवा सटीक प्रयोग के लिए उनकी प्राकृति—अभिलक्षणों के बारे में जानना और समझना भी जरूरी है। अर्थगत और संदर्भगत कारणों से पारिभाषिक शब्द विशिष्ट होता है, इसलिए इससे कुछ अपेक्षाएँ जुड़ी हुई होती हैं। विभिन्न

TOUCH 'n PASS

विद्वानों ने पारिभाषिक शब्दों की इन विशिष्ट अपेक्षाओं—अभिलक्षणों पर विचार किया है। उनके आधार पर पारिभाषिक शब्दावली के विशिष्ट अभिलक्षण निम्न प्रकार हैं—

1. **असामान्यता**—'असामान्यता' पारिभाषिक शब्दावली का विशिष्ट अभिलक्षण है। असामान्यता का अर्थ है— पारिभाषिक शब्दों से संबद्ध भाव—विचार अथवा परिकल्पना आमतौर पर व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होता । इसलिए पारिभाषिक शब्द दैनिक जीवन से काफी दूर होते हैं। दैनिक जीवन-व्यवहार की भाषा के लिए पारिभाषिक शब्द असामान्य होते हैं। उदाहरण के तौर पर, 'ईडा', 'पिंगला', 'बक-अंड न्याय', 'अधिसूचना', 'प्रतिभू', 'कर्षण', 'नाभिकीय' आदि पारिभाषिक शब्द ऐसे हैं जो दैनंदिन व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त नहीं होते हैं।
2. **परिभाष्यता**—पारिभाषिक शब्दों की प्रमुख विशेषता अथवा अभिलक्षण है-उसका परिभाषित (defined) होना। कहने का तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्द परिभाषित होते हैं, उन्हे परिभाषा दिए बिना समझा नहीं जा सकता। पारिभाषिक शब्दों का उनकी अवधारणा के अनुरूप परिभाषा देते हुए अथवा अवधारण की व्याख्या 'करते' हुए समझा-समझाया जाता है। उदाहरण के लिए, 'ताप', गुणांक', 'ओम', 'वोल्ट', 'सॉफ्टवेयर', 'घनत्व', 'गुण-सूत्र' आदि पारिभाषिक शब्द देखे जा सकते हैं, जो परिभाष्य होते हैं।
3. **विशिष्ट/नियत अर्थ के संवाहक**—किसी भी भाषा के शब्द विशिष्ट अर्थ को संवहण किए हुए होते हैं। ज्ञान-विशेष के संदर्भ में ये एक अवधारण अथवा अर्थ एक शब्द का सिद्धांत पर आधारित होते हैं अर्थात् पारिभाषिक शब्द एक ही पारिभाषिक अर्थ को व्यक्त करता है। यह अर्थ विषय—क्षेत्र विशेष के संदर्भ में सुनिश्चित होता है। इनके पर्यायवाची नहीं होते हैं। उल्लेखनीय है कि शब्द अपने सुनिश्चित अर्थ की सीमा का अतिक्रमण नहीं कर सकते। जैसे 'पद' पारिभाषिक शब्द को लिया जा सकता है जो प्रशासन के क्षेत्र में ओहदा या कार्यालय में व्यक्ति के स्तर (post) के लिए, काव्य के क्षेत्र में पद्य (verse) के लिए, समाजशास्त्र के क्षेत्र में सामाजिक प्रस्थिति (status) और व्याकरण में शब्दरूप (word) के लिए प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार, अगर हम अंग्रेजी के 'charge' शब्द को देखें तो वह क्षेत्र की भिन्नता के आधार पर भिन्न-भिन्न अर्थ की अभिव्यंजना करने वाला शब्द सिद्ध होता है। प्रशासन के क्षेत्र में वह कार्यभार' का सूचक है तो विज्ञान में 'आवेश' का, लेखा-विधि में 'व्यय' अथवा 'खर्च' का वाणिज्य में 'उधार' का, विधि में आरोप का और आम बोलचाल की सामान्य भाषा में दायित्व अथवा 'जिम्मेदारी' के अर्थ की व्यंजना करता है।
4. **अप्रतिस्थापना**—अप्रतिस्थापना का अर्थ है-पर्याय द्वारा अपूरणीयता। अर्थात् किसी ज्ञान-क्षेत्र विशेष के पारिभाषिक शब्द के लिए एक ही निश्चित पर्याय रखा जा सकता है। इसके लिए कोई भी दूसरा पर्याय प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। इसका यह अर्थ निकलता है कि विशिष्ट ज्ञान क्षेत्र की अवधारणा-विशेष के लिए प्रयुक्त होने वाले विशिष्ट पारिभाषिक शब्द का स्थान कोई अन्य शब्द नहीं ले सकता। जैसे प्रशासनिक क्षेत्र में 'issue'(जारी), विधि के क्षेत्र में 'Proclamation'(उद्घोषणा), 'Notification' क्षेत्र (नोटिफिकेशन), अंतरिक्ष-क्षेत्र में 'INSAT' (इनसेट), 'Satelite'(सेटेलाइट), आदि। इसी तरह से गणित, भौतिक, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान और अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में प्रयुक्त गुण-सूत्र समीकरण, प्रतीक-चिह्न द्विपदनाम, यौगिक नाम आदि के पर्याय पारिभाषिक शब्दों को व्यवहार में नहीं लाया जा सकता।
5. **दुरूहता**—कुछ पारिभाषिक शब्दों में दुरूहता परिव्याप्त होती है, उनका आशय गूढ़ होता है। दुरूहता का तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्दावली में ऐसा अर्थ या आशय छिपा रहता है जो शब्द के विश्लेषण से स्पष्ट नहीं हो पाता, उसे जानने के बावजूद समझा नहीं जा सकता। ऐसे शब्द को ज्ञान विशेष की परंपरा एवं प्रयोग द्वारा समझा जा सकता है। उदाहरण के तौर पर देखें तो काव्यशास्त्र का 'चित्र-तुरंग न्याय', नीतिशास्त्र का 'बक-अंड न्याय' और दर्शनशास्त्र के 'अद्वैत', 'कुंडलिनी', 'माया' एवं 'ब्रह्म' आदि पारिभाषिक शब्दों के आशय में गूढ़ता के कारण उनमें दुरूहता व्याप्त रहती है।
6. **विषय-सापेक्षता**—प्रत्येक विषय के विकास के लिए उसके अनुकूल ऐसी पारिभाषिक शब्दावली के विकास की जरूरत पड़ती है जिसमें विचारों-भावों को पूरी क्षमता के साथ अभिव्यक्त किया जा सके। इस कारण प्रत्येक तकनीकी शब्द किसी-न-किसी विषय-क्षेत्र से संबद्ध होता है और उसी से ही अपना तकनीकी अर्थ एवं परिभाषा प्राप्त करता है। प्रत्येक तकनीकी अथवा पारिभाषिक शब्द में कुछ निश्चित भाव-अवधारणाएँ एवं अर्थ निहित होता है। वैसे यह संभव है कि किसी एक विषय का पारिभाषिक शब्द दूसरे विषय-क्षेत्र में भिन्न तकनीकी अर्थ को अभिव्यक्त करे। किन्तु यह सम्भव नहीं है कि एक ही विषय-क्षेत्र में एक ही तकनीकी शब्द दो भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हों। उसका अर्थ,

TOUCH 'n PASS

विषय-विशेष के संदर्भ में सुनिश्चित होता है और वह उसी अर्थ में व्यवहृत होता है। जैसे— बैंकिग क्षेत्र में 'रेखित चेक', 'ओवरड्राफ्ट', 'मियादी जमा', 'बचत खाता', 'चालू खाता'आदि शब्दों के अभीष्ट अर्थ बैंकिंग व्यवहार क्षेत्र में स्पष्ट होते हैं। 'रेखित चेक' (cross cheque) शब्द सामान्य रूप में इस अर्थ की व्यंजना करता है कि एक ऐसा चेक जिस पर रेखा खींची गई हो। जबकि बैंकिंग व्यवहार-क्षेत्र में इसका पारिभाषिक अर्थ है— एक ऐसा चेक जिसके ऊपर बायीं और दो समानांतर रेखाएँ खिंची हो और उसमें उल्लिखित राशि को केवल उसी व्यक्ति के खाते में अंतरित किया जाता है जिसके नाम पर चेक कटा हो, किसी अन्य व्यक्ति को नहीं।

पारिभाषिक शब्दों को समझने के लिए विषय-विशेष का आधारभूत ज्ञान एवं जानकारी आवश्यक होती है। जो व्यक्ति विषय का जानकार है, जिसने विषय का अध्ययन किया हो और उससे संबंधित कार्यकलाप में संलग्न है उसके लिए विषय-विशेष की शब्दावली का प्रयोग सहज है। इस जानकारी के अभाव में आम आदमी विषय को समझ नहीं सकता। चूँकि अवधारणा से संबंधित तकनीकी शब्द अमूर्त होते हैं। इस कारण उसकी परिभाषा देना जरूरी हो जाता है ताकि उनकी अर्थ-व्याप्ति को समझा जा सके। 'computer', 'virus', 'programme', 'software', 'floppy', 'hard', 'disk', 'pen drive', 'data cable', आदि शब्द तकनीकी रूप लिए हुए हैं और इन शब्दों को अनुप्रयुक्त विज्ञान की एक शाखा अर्थात् कंप्यूटर विज्ञान के संदर्भ में ही समझा जा सकता है कहने का तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्द विषय-सापेक्ष होते हैं।

7. **अर्थ-रूढ़िता**—पारिभाषिक शब्द जहाँ विशिष्ट अर्थ के संवाहक होते हैं,वही वे उस विशिष्ट अर्थ में रूढ़ भी होते हैं। पारिभाषिक शब्द और उस शब्द-विशेष के अर्थ के बीच का संबंध धीरे-धीरे सतत प्रयोग एवं व्यवहार से रूढ़ हो जाता है। यदि पारिभाषिक शब्द अथवा उसके किसी अंश का प्रतिस्थापन करते हुए उसके स्थान पर पर्याय को व्यवहार में लाया जाए तो वह अनुवाद को विकृत कर देता है। जैसे, भौतिकी में 'sound' के लिए हिंदी में 'ध्वनि' शब्द प्रयुक्त होता है। किंतु इसके स्थान पर उसके समतुल्य पर्याय 'स्वन' शब्द को इस्तेमाल नहीं किया जा सकता ।

   कभी-कभी पारिभाषिक शब्द से जो सामान्य अर्थ (वाच्यार्थ) प्रकट होता है, वह उसके तकनीकी अर्थ से भिन्न हो सकता है। उदारण के लिए, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी में 'mouse' उपकरण का इस्तेमाल होता है जिसकी सहायता से कंप्यूटर स्क्रीन पर रेखाएँ आदि खींची जाती है। यह चूहे की भाँति छोटा—सा उपकरण है और इसे मेज पर रखी एक प्लेट पर इधर-उधर घुमाकर इसका वांछित प्रयोग किया जाता है। जबकि इस पारिभाषिक शब्द का अंग्रेजी में शस्त्रीय (मूल) अर्थ यह नहीं है। शास्त्रीय अर्थ से अनभिज्ञ अनुवादक इसे 'चूहा' अनुदित कर सकता है। इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण है— 'labour pain' शब्द। अनुवादक इसका सामान्य अर्थ लेते हुए इसे ' श्रमजन्य पीडा' अनुदित कर सकता है जबकि चिकित्साशास्त्रीय में यह शब्द 'प्रसव पीड़ा' के लिए रूढ़ है।

8. **अर्थ-सूक्ष्मता**—सामान्य शब्द का अर्थ-व्याप्ति अधिक व्यापक होती है। इनमें मुख्य अर्थ के अतिरिक्त कई गौण अर्थ भी निहित होते हैं और इनका लाक्षणिक प्रयोग भी संभव है। जबकि पारिभाषिक शब्दों का अर्थ अत्यंत सूक्ष्म, गहन एवं विस्तृत होता है। वह न केवल किसी विषय-क्षेत्र विशेष के संदर्भ मे अर्थ को व्यक्त करता है बल्कि वह उस अर्थ-विशेष के भी सूक्ष्म अंश का अर्थ उद्घाटित करता है। जैसे, सामान्य शब्द 'किरण' का लाक्षणिक प्रयोग करते हुए उसे 'आशा की किरणें ' के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है जबकि विज्ञान शब्दावली में 'ray' के लिए 'किरण', 'radiation' के लिए 'विकिरण' हो जाता है और 'beam' के लिए 'किरण पुंज' है। आम आदमी इस प्रकार के अत्यंत सूक्ष्म अंतर को नहीं जान पाता है जबकि ज्ञान-विज्ञान में दो विचारों अथवा अवधारणाओं में इसी प्रकार पृथक-पृथक पारिभाषिक शब्दों के माध्यम से सूक्ष्म-अतिसूक्ष्म विभेद को उद्घटित किया जाता है। इस तरह के सूक्ष्म अंतर को दर्शाने वाले अन्य परिभाषिक शब्द है—'चाल' (speed)और 'वेग' (velocity) या फिर 'ताप' (Heat) और 'तापमान' (temperature)।

   पारिभाषिक शब्दावली की अर्थ-सूक्ष्मता का एक पक्ष यह भी है कि वैज्ञानिक-प्रौद्योगिकी सोच एवं अवधारण में परिमार्जन के साथ-सार्थ जो नई मौलिक उद्भावनाएँ सामने आती जाती हैं वैसे-वैसे पारिभाषिक शब्द का अर्थ भी सूक्ष्म में सूक्ष्मतर होता चलता है जैसे अंग्रेजी भाषा के समान्य शब्द 'Programme' और 'memory' शब्द, कंप्यूटर विज्ञान में विशिष्ट एवं सीमित अर्थ के अभिव्यंजक हो चुके हैं।

TOUCH 'n' PASS

9. **अर्थ-भेदकता**—पारिभाषिक शब्दों से अर्थ में भेदकता आती है। इनसे न केवल एक अर्थ की अभिव्यंजना होती है, बल्कि उसके भी सूक्ष्म अंश के अर्थ-बोध के प्रकटन से अर्थ में सूक्ष्मता आती है। ज्ञान-विज्ञान एवं प्रौद्यिगिकी विषयक अवधारणाों के परिमार्जन से तकनीकी शब्दों के अर्थों के भेदोपभेद विकसित होते चलते हैं। ये शब्द भले ही सजातीय प्रतीत हो किंतु उनमें सूक्ष्म अर्थ-भेद होता है। अलग-अलग पारिभाषिक शब्दों का निर्धारण करके इन्हे जहाँ तकनीकी रूप दिया जाता है। वहीं इनके बीच के अर्थ-भेद को भी सुरक्षित रखा जाता है। गैर-तकनीकी क्षेत्र में अथवा सामान्य व्यवहार में भले ही ये सूक्ष्म भेद महत्त्व न रखें लेकिन ज्ञान-विज्ञान अथवा तकनीकी संदर्भ में इन भेदों-उपभेदों का अपना महत्त्व होता है। अंग्रेजी के अर्थशास्त्र से संबंधित 'development','growth' और 'evolution' शब्दों की भी देखा जा सकता है। इसमें से 'development' के लिए अर्थशास्त्र में 'विकास','growth' के लिए 'संवृद्धि' एवं 'evolution' के लिए 'उद्विकास' शब्द सूक्ष्म अर्थ प्रकट करने वाले भिन्न-भिन्न पारिभाषिक शब्द हैं। अनुवादक द्वारा इस प्रकार के अर्थ-भेदों को सटीक शब्द का प्रयोग करके अनुदित पाठ में बनाए रखना महत्त्वपूर्ण होता है उदाहरण के लिए, 'salary' और 'income' शब्द सामान्य संदर्भ में एक ही अर्थ के व्यंजक हैं, जबकि आयकर के संदर्भ में ये दोनो पृथक-पृथक पारिभाषिक अवधारणाएँ (अर्थात 'वेतन' और 'आय') हैं।
10. **कृत्रिम निर्माण एवं प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व**— अधिकांश पारिभाषिक शब्दों का कृत्रिम ढंग से निर्माण किया जाता हैं। ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में नई-नई खोजों, अधुनातन विकास एवं नवीन वस्तुओं के निर्माण के कारण उनकी अभिव्यक्ति, नवीन विषय-वस्तु निरूपण या नई अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए उनके नवीन अनुरूप नए शब्दों का निर्माण जरूरी हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि विषय, स्थिति एवं संदर्भ के अनुरूप शब्दों का निर्माण किया जाता है। यह शब्द-निर्माण कृत्रिम होता है। इसके अतिरिक्त, कभी-कभी आविष्कारों, आविष्कारकर्ता वैज्ञानिकों, सिद्धांत-प्रतिपादकों अथवा प्रतिकों के आधार पर भी कृत्रिम पारिभाषिक शब्दों को गढ़ लिया जाता है। 'जूल', 'म्यू', 'लेम्बडा, 'पाई', 'गेल्वेनाइजेशन' (गेल्वनीकरण)'डार्विनिज्म', 'गाँधीज्म' (गाँधीवाद), 'मार्क्सिज्म' (मार्क्सवाद) 'फासिज्म' (फासीवाद), 'फासिस्ट' (फासीवादी) आदि शब्द ऐसे ही हैं जिन्हे खोजकर्ता, सिद्धांत-प्रतिपादक अथवा प्रतीकों के आधार पर निर्मित किया गया है।
11. **भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति के अनुकूलन**—पारिभाषिक शब्दों का संरचनात्मक स्वरूप भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति के अनुकूल होना चाहिए ताकि उनके व्यवहार में कोई न हो। पारिभाषिक शब्द को जब उच्चरित किया जाए तो उससे निहित अवधारणाा का बोध होने की क्षमता से युक्त होना चाहिए। भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति की अनुकूलता की बात को किसी अन्य भाषा के लिए गए शब्द के संदर्भ में विशेष तौर पर ध्यान देने की होती है। पारिभाषिक शब्दों के बारे में यह देखा गया है कि जो शब्द हिंदी भाषा में चल पड़े हैं वे उसकी प्रकृति के अथवा उच्चारण-सुकरता के अनुकूल ढल गए हैं उदाहरण के लिए,'Ministry' शब्द का समतुल्य हिंदी पारिभाषिक शब्द 'मंत्रालय' है जबकि भाषा संबंधी शुद्धता की दृष्टि से यह 'मंत्र्यालय' (अर्थात मंत्री + आलय) होना चाहिए था। वैसे जो पारिभाषिक शब्द बहुत अधिक प्रयोग में नहीं आए है या फिर जिनकी आम तौर पर जरूरत नहीं पड़ती है उन्हें अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूल ढाल लेना सरल होता है। 'computerisation' के लिए 'कप्यूटरीकरण' शब्द-रचना के स्तर पर और 'tragedy' के लिए 'त्रासदी', 'comedy' के लिए 'कामदी' या फिर 'technique' के लिए 'तकनीक' शब्द निर्माण उच्चारण के स्तर पर अनुकूलन का प्रमाण है। अनुकूलन की इस प्रवृत्ति को केवल हिंदी के संदर्भ में ही नहीं, अन्य भाषाओं के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। जैसे, अंग्रेजी भाषा द्वारा हिंदी के 'संत' और 'खाट' आदि शब्दों को लेने का उल्लेख किया जा सकता है। 'संत' शब्द के लिए अंग्रेजी में 'saint' शब्द का प्रयोग किया जाता है तो 'खाट' के लिए 'cot'। वैसे पारिभाषिक शब्द की सहजता-सरलता एवं शुद्धता में से प्राथमिकता शुद्धता को ही दी जानी चाहिए।
12. **विस्तारशीलता**—विस्तारशीलता, पारिभाषिक शब्दावली का विशिष्ट अभिलक्षण है। विस्तारशीलता का अर्थ है-पारिभाषिक शब्दावली में विस्तार की संभावना होनी चाहिए अर्थात् पारिभाषिक शब्द ऐसा हो जिससे संबंधित विषय, क्षेत्र, सिद्धांत अथवा अवधारणा के अन्य पक्षों को प्रकट करने वाले अन्य अभीष्ट पारिभाषिक शब्द भी गढ़ने की सम्भावना रहे। भाषा में ऐसी विस्तार की सम्भावना रहती है। अंग्रेजी भाषा इस गुण से युक्त है जबकि हिंदी भाषा में इस गुण के अभाव का तथाकथित आक्षेप लगा दिया जाता है। जबकि वास्तविकता यह है कि हिंदी भाषा शब्दावली-विस्तार की सम्भावना के गुण से संपन्न है। उदाहरण के तौर पर, 'विधि' पारिभाषिक शब्द को देखा जा सकता है जिसमें उपसर्ग-प्रत्यय आदि जोड़कर 'विधि' 'विधिक' 'विधिवेता', 'विधिवत', 'वैध', 'अवैध', 'विधिहीन', 'विधान', 'विधायी', 'विधायक', 'विधेयक' आदि पारिभाषिक शब्द बनाए गए हैं। इसी तरह, अंग्रेजी के 'Television',

'Telephone','Teleprinter', 'Telescope' आदि शब्दों के लिए क्रमश: 'दूरदर्शन', 'दूरभाषा','दूरमुद्रक', 'दूरदर्शक' आदि शब्द गढ़े गए।

13. **प्रयोग में एकरूपता से शब्दावली का मानवीकरण संभव**—प्रयोग में एकरूपता से पारिभाषिक शब्दावली का मानवीकरण संभव हो पाता है एकरूपता और मानकीकरण, पारिभाषिक शब्दावली की अनिवार्यता है किसी भी भाषा में अनुवाद के माध्यम से विकसित होने वाली पारिभाषिक शब्दावली के संदर्भ में इस एकरूपता की नितांत आवश्यकता होती है क्योंकि स्रोत भाषा के किसी तकनीकी शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में अलग-अलग तकनीकी पर्यायों के प्रयोग से पाठको को अर्थ-बोध में भम्र, अनुवाद में अव्यवस्था और शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता की स्थिति बन जाएगी।
शब्दावली के क्षेत्र की इसी अराजकता के कारण हिन्दी भाषा में कई अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के लिए दो अथवा उससे अधिक हिंदी पर्याय प्रचलित हैं। जैसे, विज्ञान संबंधी 'generation' शब्द के लिए 'प्रजनन' 'उत्पादन' और उत्पत्ति शब्द। इसी प्रकार भौतिकी में 'pressure' के लिए 'दबाव' या 'बल' और 'heat' के लिए 'गर्मी' अथवा 'उष्णता' पर्यायों की उपलब्धता। इस प्रकार के तकनीकी पर्यायों से शब्दावली को मानक रूप देने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होती है। वैसे इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्षों से प्रयोग में एकरूपता के कारण आज हिन्दी भाषा में 'सौर ऊर्जा' (Solar energy), 'विद्युत' (electricity), 'अवमूल्यन' (devaluation), 'परियोजना' (Project), 'पर्यावरण'(environment), 'प्रदूषण' (pollution), 'संयंत्र' (plant), 'परिसर' (compus), 'अंतरिक्ष' (space), 'प्रेक्षपास्त्र' (missile), 'उपग्रह' (satelite), 'विश्वविद्यालय' (university), 'आयोग' (commission) आदि अनेक पारिभाषिक शब्द मानक रूप धारण कर चुके हैं। किन्तु अभी और अधिक शब्दावली को मानकीकृत किया जाना अपेक्षित है।

14. **तकनीकी शैली के विकास में सहायक**—तकनीकी शब्दों के समावेश से वाक्य-विन्यास में कसाव आता है और भाषा परिपक्व प्रतीत होती है। ज्ञानात्मक साहित्य लेखन और अनुवाद में एक ही अर्थ को सही-सही उद्घाटित करने वाली ऐसी तकनीकी शब्दावली की जरूरत होती है जिसमें विचारों-भावों को उद्घाटित करने की पूर्ण क्षमता हो। इसमें अवधारणाओं और सिद्धांतों की यथातथ्यता की दृष्टि से जरूरी है कि विशेषज्ञों के विचार, शब्दावली के माध्यम से पूरी तरह सुस्पष्ट होते हैं। इससे बाह्य भाषा कलेवर में व्यावसायिक परिपक्वता और कसाव का समावेश हो जाता है जिसके आधार पर अभिव्यक्ति की विशिष्ट शैली उजागर हो जाती है। इस विशिष्ट शैली से ज्ञान की भाषिक प्रस्तुति के लिए प्रयुक्त शब्दों का संक्षेपण हो जाता है और भाषा में बानगी आती है। इससे जहाँ भाषा समृद्ध एवं विस्तारशील होती है वहीं उसमें एक विशिष्ट तकनीकी शैली रूप भी विकसित होती है।
वस्तुत: चर्चा किए गए विभिन्न अभिलक्षणों को ध्यान में रखकर पारिभाषिक शब्दावली को सही परिप्रेक्ष्य में देखा- समझा जा सकता है।

प्र.3. पारिभाषिक शब्दावली की निर्माण प्रक्रिया का विस्तृत विवेचन कीजिए।

उत्तर पारिभाषिक शब्दावली की निर्माण-प्रक्रिया का विकास कैसे होता है? इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि पारिभाषिक शब्द का विकास सहज और नियोजित रूप में संभव हो पाता है। शब्दावली विकास प्रक्रिया के इन दानों आयामों को निम्न प्रकार समझा जा सकता है—

1. **सहज विकास प्रक्रिया**—पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण, प्रयोग एवं विकास की सहज स्थितियाँ सबसे पहले उस भाषा-विशेष में बनती हैं जिसमें तत्संबंधी विषय के मौलिक ज्ञान की उद्भावना होती है। इससे भाषा का सहज विकास होता है। इसे 'प्राकृतिक विकास' भी कहा जाता है। जब कोई सर्जक नवीन अवधारणाओं से संबंधित मौलिक उद्भावनाओं की प्रस्तुति करता है या नई खोज आविष्कार करता है तो उस दौरान नए शब्दों अथवा अभिव्यक्तियों को भी गढ़ता है, उनका नामकरण करता है। अवधारणा के इस नामकरण से भाषा में नया शब्द स्थान प्राप्त कर लेता है, जो सहज रूप से शब्द निर्मित करने की प्रक्रिया का द्योतक है।
शब्दावली की सहज विकास प्रक्रिया को उद्घाटित करते हुए डॉ० सूरजभान सिंह ने 'पारिभाषिक शब्द और अनुवाद प्रक्रिया' शीर्षक अपने लेख में लिखा है कि 'पारिभाषिक शब्दों का विकास उन स्थितियों में होता है जहाँ नई अवधारणाओं को जन्म देने वाला व्यक्ति ही उनका नामकरण करता है। ये नाम या शब्द लेखों, पुस्तकों और व्याख्यानों के माध्यम से प्रयोक्ताओं तक पहुँचते हैं। कुछ समय तक वे समाज की प्रयोगशाला में एक प्रकार के परिवीक्षा-काल से गुजरते हैं और यदि इस दौरान वे प्रचलन में बने रहें तो उन्हे सामाजिक स्वीकृति मिल जाती है और वे भाषा तथा शब्दकोश के अंग बन जाते हैं। जो शब्द इस दौरान प्रयोग में अपने

को जीवित नहीं रख पाते उनका स्वत:लोप हो जाता है।' पारिभाषिक शब्द से इस सहज विकास की इस प्रक्रिया को निम्नलिखित आरेख की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है—

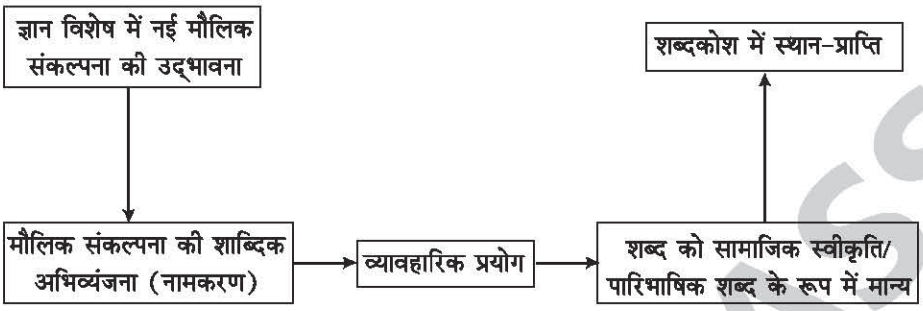

चित्र-: पारिभाषिक शब्दावली की सहज विकास-प्रक्रिया

नई अवधारणाओं या अभिव्यक्तियों की उद्भावना से जहाँ ज्ञान का संवर्धन होता है, वहीं भाषा का भी सहजता-सरलता से विकास होता है शब्दावली की सहज विकास प्रक्रिया से संदर्भ में 'ग्लास्नोस्त' (glasnost) और 'पेरेस्त्रोइका' (perestroika) पारिभाषिक शब्दों का उल्लेख किया जा सकता है, जो अपने विशिष्ट अर्थ-संदर्भ में,संचार माध्यमों के द्वारा विश्व-परिचित हो गए। तत्कालीन सोवियत संघ के राष्ट्रपति गोर्बाचोव ने इन शब्दों का प्रयोग किया था। इनमें से 'ग्लास्नोस्त' का अर्थ-संबंध radical restricting से था यानी साम्यवादी व्यवस्था में आमूलचूल पारिवर्तन कर देना है और 'पेरेस्त्रोइका'का अर्थ है open public criticism अर्थात जनता द्वारा उन्मुक्त आलोचना। इसी प्रकार, 'वाका-वाका' और 'वुवुजेला' पारिभाषिक शब्दों को भी देखा जा सकता है। फुटबाल के वर्ष 2010 में अफ्रीका में आयोजित विश्व कप ने इन दोनों शब्दों को अपने पारिभाषिक रूप में प्रचलित कर दिया। 'वाका-वाका' का अर्थ है—'अब अफ्रीका की बारी' और 'वुवुजेला' अफ्रीका के एक वाद्य यंत्र का नाम है

2. **नियोजित विकास प्रक्रिया**—जो भाषा-समाज नई वस्तुओं एवं अवधारणाओं की उद्भावना करने वाले भाषा-समाज के मौलिक ज्ञान एवं तत्संबंधी शब्दावली को ग्रहण करता है वह पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के लिए नियोजित विकास प्रक्रिया को अपनाकर चलता है। सहज शब्द निर्माण प्रक्रिया में जहाँ नई मौलिक अवधारणाओं की उद्भावना नई शब्दावली को जन्म देती है वहीं नियोजित विकास प्रक्रिया के अंतर्गत अन्य भाषा-समाज में गढ़े गए पारिभाषिक शब्दों के लिए अपनी भाषा में उपयुक्त समानार्थी शब्दों का विधान करना पड़ता है। डॉ० महेंद्र सिंह राणा का कहना है कि 'सायास या नियोजित विकास-प्रक्रिया का अभिप्राय है किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा व्यवहार में लाए जाने वाली मूल भाषा के तकनीकी रूपों के आधार पर स्व-भाषा में नवीन् भाषा रूपों को विकसित करने का प्रयास करना। यह प्रयास मूल/स्रोत भाषा के समान सहज या प्राकृतिक न होकर एक प्रकार की कृत्रिमता लिए होता है क्योंकि यह गृहीता भाषा की सहज या प्राकृतिक विकास-प्रक्रिया नहीं होती। इस प्रकार के विकास को नियोजित करना पड़ता है ताकि नवीन भाषा-रूपों के विकास को सही दिशा दी जा सके।'

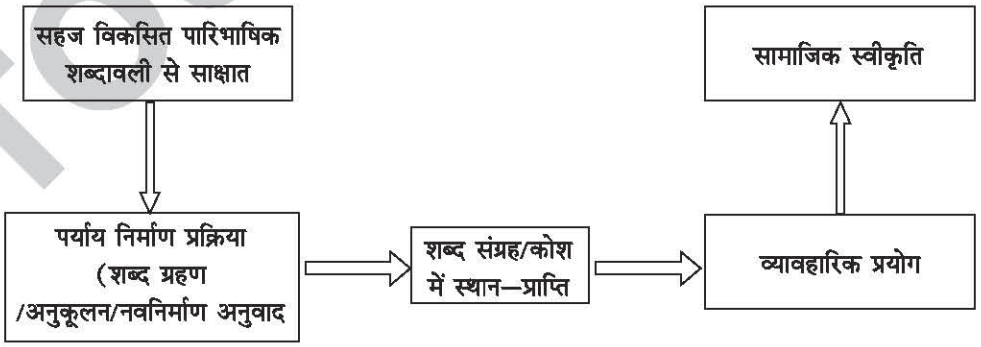

पारिभाषिक शब्दावली की नियोजित विकास प्रक्रिया

किसी भी देश में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हुई मौलिक उद्भावना को अन्य भाषा-समाज से ग्रहण करने के कारण उससे जुड़े रूप को अपनी भाषा में शामिल करने के लिए नियोजित प्रक्रिया अपनाते हुए नई शब्दावली निर्धारित करनी पड़ती है। इसके लिए

अंगीकरण, अनुकूलन, अनुवाद और नव-निर्माण में से किसी-न-किसी तरीके से पारिभाषिक शब्द निर्धारित किए जाते हैं; उनके कोश, शब्दावलियाँ और शब्द—संग्रह बनाए जाते हैं। इसके बाद, उन निर्धारित प्रतिशब्दों का व्यावहारिक धरातल पर प्रयोग करने का प्रयास भी किया जाता है ताकि उन्हें सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हो सके। स्वाभाविक है कि शब्दावली निर्माण की यह प्रक्रिया सहज अथवा प्राकृतिक न होकर सायास होती है। लेकिन, मुख्य उद्देश्य यही रहता है कि शब्दावली के विकास को सही-सार्थक दिशा प्राप्त हो।

प्र.4. पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परम्परा का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परम्परा

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के आरंभिक प्रयास लगभग डेढ़-दो सौ साल पहले शुरू हो गए थे। ये प्रयास व्यक्तिगत, सामूहिक और संस्थागत पर किए गए। इसके अलावा, आजादी के बाद सरकारी स्तरों पर भी प्रयास किए जाते रहे हैं। इन्हें स्वतन्त्रता-पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात प्रयासों के रूप में देखा जा सकता है।

1. **स्वतंत्रता-पूर्व शब्दावली निर्माण के प्रयास**—भारत में पारिभाषिक शब्दावली की परंपरा बहुत प्राचीन है। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व व्याकरण, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष, नाट्यशास्त्र, योग, न्याय, मीमांसा, दर्शन आदि विभिन्न क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग-प्रचलन की भारतीय परंपरा काफी समृद्ध रही है। पारिभाषिक शब्दों को संकलित करने और उन्हें पारिभाषित कर अर्थ निर्धारण की शुरूआत वैदिक युग में ही हो गई थी। स्वाभाविक है कि उस समय जो विज्ञान विषयक ज्ञान उपलब्ध था, उसी की ही पारिभाषिक शब्दावली विकसित हुई होगी। वैदिक साहित्य में पारिभाषिक शब्दों की उपलब्धता के अनुक्रम में निरूक्तोत्तर पारिभाषिक कोश तथा विशेष तोर पर 'निघंटु' उल्लेखनीय है।

माना जाता है कि हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली का विधिवत निर्माण-कार्य शिवाजी महाराजा के शासनकाल (1664–1680) में आरंभ हो गया था। यह परंपरा शिवाजी महाराज की प्रेरणा से रघुनाथ पंत द्वारा 1707 में तैयार किए गए 'राजकोश' से शुरू होती है । उन्होंने प्रशासन, रक्षा एवं खाद्य सामग्री संबंधी पंद्रह सौ शब्दों का एक कोश तैयार किया और इसे विषयवार दस भागों में बाँटा। इसके अलावा, शिवाजी महाराज ने मराठी में 'राज्य—व्यवहार कोश' तथा 'मराठी शब्दों का विश्वकोश ' भी तैयार करवाया था। मध्ययुग में कर्णपूर, दलपतिराय आदि ने भी कुछ कोशों की रचना की थी।

भारत में शब्दकोश निर्माण की परंपरा अंग्रेजों के हिन्दुस्तान आने से पहले रही, लेकिन वास्तव में इसकी शुरुआत 19 वीं शताब्दी के आरम्भ से हुई। यह शब्दावली निर्माण अंग्रेज शासकों की जरूरतों का परिणाम रहा है। इसलिए इस दिशा में आरंभिक प्रयास विदेशी विद्वानों के ही अधिक रहे हैं।

18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देखें तो वर्ष 1790 में मद्रास से प्रकाशित 'डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश एंड हिंन्दुस्तानी का पता चलता है। कोश का संपादन डॉक्टर हेरिस ने किया। जॉन गिलक्राइस्ट ने अपना 'अंग्रेजी—हिन्दुस्तानी कोश' 1787 में कलकत्ता से प्रकाशित किया और इसका द्वितीय संस्करण एडिनबरा से वर्ष 1910 में प्रकाशित हुआ था। वहीं, आरम्भिक प्रयास के रूप में ही 1797 में प्रकाशित 'Dictionary of Mohammad Law, Bengal Revenue Terms, Hindoo and Other Words Used in East Indies, with Application' का उल्लेख भी मिलता है।, हालाँकि अब तक ज्ञात पारिभाषिक शब्दकोशों में से इसे प्रथम माना जाता है, किंतु यह भी वास्तविकता है कि यह पारिभाषिक कोश लंदन से प्रकाशित हुआ था और इसमें रोमन एवं अरबी लिपियों का प्रयोग किया गया था।

इसके अलावा, आरंभिक प्रयासों के अंतर्गत 1809 में अंग्रेजी से हिन्दुस्तानी (हिन्दी) में पुस्तकों के अनुवाद हेतु फान्ट्रा नामक अंग्रेज द्वारा इंग्लैण्ड में स्थापित अनुवाद समिति की स्थापना में, डॉ० मैक्सीनान (1815), डॉ० गरविस, डॉ० स्प्रिंगर और प्रो. बैट्स द्वारा दिया गया योगदान महत्त्वपूर्ण है। डॉ० सत्यप्रकाश तथा बलभद्र प्रसाद मिश्र द्वारा संपादित और उत्तर प्रदेश के प्रयोग में स्थित हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा 1971 में प्रकाशित 'मानक अंग्रेजी—हिन्दी कोश' की भूमिका में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण परंपरा का वर्णन किया गया है। आरंभिक प्रयासों के रूप में शामिल प्रमुख शब्दकोश हैं—

(i) An English and Hindustani Naval Dictionary of Technical Terms and Sea– Phrases– सन् 1811 में प्रकाशित इस शब्दकोश को **जॉसेफ टेलर** ने तैयार किया।

(ii) A Dictionary of Commercial Terms, with Their Synonyms in Various Languages—सन् 1850 में प्रकाशित इस शब्दकोश का संपादन **अलेक्जेंडर फॉकनर** ने किया।

(iii) Kachahari Technicalities and Vocabulary of Law Terms—सन् 1853 में प्रकाशित इस शब्दकोश को **पैट्रिक कार्नेगी** ने तैयार किया।

(iv) Glossary of Judicial Revenue Terms– सन् 1855 में प्रकाशित इस शब्दकोश को **प्रो० एच०एच० विल्सन** ने तैयार किया।

(v) English Hindustani Law and Commercial Dictionary of Words and Phrases used in Civil and Criminal Revenue and Commercial Affairs–
सन् 1858 में प्रकाशित इस शब्दकोश का संपादन **एस०डब्ल्यू फेलन** ने किया।

(vi) Material for Rural Agriculture Glossary of the North– Western Provinces and Awadh–सन् 1879 में प्रकाशित इस शब्दकोश को **विलियम कुक** ने तैयार किया था।

(vii) A Vocabulary of English–Hindustani for the Use of Military Students।

हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण परंपरा के अंतर्गत संस्थागत प्रयासों के रूप में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने उल्लेखनीय प्रयास किए। 16 जुलाई, 1893 को स्थापित काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना के शुरुआती दौर में ही सात विषयों की पारिभाषिक शब्दावली तैयार करने की दिशा में काम शुरू किया। 1898–1906 के बीच काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने बाबू श्यामसुंन्दरदास, माधव राव सप्रे, महावीर प्रसाद द्विवेद्वी, सुधारक द्विवेद्वी और ठाकुर प्रसाद खत्री के संपादकत्व में तैयार विभिन्न विषयों की शब्दावलियाँ प्रकाशित कीं। इनमें से 1901 में गणित (संपा. श्यामसुंन्दरदास), 1902 में दर्शन (संपा. महावीर प्रसाद द्विवेदी) और भौतिकी (संपा. ठाकुर प्रसाद खत्री) के कोश प्रकाशित किए। आगे चलकर सभा ने 'हिन्दी साइंटिफिक वॉकेबुलरी' (हिन्दी वैज्ञानिक कोश) नामक एक संपूर्ण कोश (एक जिल्द में) 1906 में प्रकाशित किया। सभा ने 1912 में 'व्यापारिक पदार्थ कोश' (संपा. ठाकुर प्रसाद खत्री) भी प्रकाशित किया। इसके अलावा, सभा ने प्रो, प्यारेलाल गर्ग द्वारा तैयार की गई हिन्दी की 'कृषि शब्दावली' भी प्रकाशित की। हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का यह पहला संगठित प्रयास था।

1909 में पांडे महेशचरण सिंह की पुस्तक 'रसायन शास्त्र' सामने आई। 1925 में बनारस से हिन्दी विद्युत शब्दावली का प्रकाशन हुआ। गुजरात विद्यापीठ ने 1928 में एक पारिभाषिक शब्दकोश प्रकाशित किया, जो विज्ञान विषयों पर आधारित था।

वर्ष 1930 से 1950 की अवधि के दौरान वैज्ञानिक साहित्य के निर्माण के प्रति लोगों की रुचि में तेजी से वृद्धि हुई। इस दौरान अनेक उल्लेखनीय पारिभाषिक शब्द संग्रह प्रकाशित हुए। 1913 में उत्तर प्रदेश के प्रयोग में स्थापित 'विज्ञान परिषद' ने 1930 में 'वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली' को प्रकाशित किया, जिसका संपादन डॉ० सत्यप्रकाश ने किया था। सुख संपत राय भंडारी ने 1926 में पारिभाषिक कोशों की एक बृहत योजना पर काम शुरू किया, जो 'The Twentieth Century English Hindi Dictionary' के नाम से छह खंडों में 1932 में प्रकाशित होकर पूरी हुई।

व्यक्तिगत स्तर पर सर्वप्रथम व्यवस्थित कार्य डॉ० रघुवीर ने किया है। उन्हें पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का पुरोधा कहा जाता है। उनका यह कार्य 1931 में आरंभ हुआ। लगभग 12 वर्षों के अथक परिश्रम के बाद 1943–46 डॉ० रघुवीर की 'द ग्रेट इंडियन डिक्शनरी' प्रकाशित हुई, जिसे बृहत आकार देकर 1955 में 'कॉम्प्रीहेंसिव इंग्लिश-हिन्दी डिक्शनरी' के नाम से पुन; प्रकाशित किया गया। डॉ० रघुवीर का यह कोश अब तक प्रकाशित कोशों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और सबसे अधिक विवादास्पद तकनीकी शब्दकोश है।

उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रयास से 1950–52 में एक पारिभाषिक कोश तैयार कराया गया, जिसका नाम है— हिन्दी टर्म्स ऑफ सोशियोलॉजी' (1952)। इसमें अंग्रेजी शब्द के समानांतर हिन्दी शब्द दो प्रकार के रखे गए थे। पहला प्रतिशब्द हिन्दुस्तानी का और दूसरा संस्कृत का। जैसे, 'reaction' के लिए पहला शब्द 'पलटकारी' और दूसरा 'प्रतिक्रिया' रखा गया। इसी प्रकार, 'absolutism' के लिए पहला शब्द 'अरोकबाद' दूसरा 'निरंकुशवाद' रखा गया। इसी संदर्भ में हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी द्वारा 1954 में छपी पुस्तिका 'हिन्दुस्तानी के लिए शब्दयाती असूल' आदि में हिन्दुस्तानीवादी संप्रदाय द्वारा बनाए शब्द एवं सिद्धान्तों को जाना—समझा जा सकता है।

पारिभाषिक कोश निर्माण कार्य में 1942 में स्थापित 'भारतीय हिन्दी परिषद्' ने भी अपना योगदान दिया और अंग्रेजी—हिन्दी के वैज्ञानिक कोश निर्माण का काम अपने हाथ में लिया। डॉ० सत्यप्रकाश, प्रो० निहालकरण सेठी, प्रो. फूलदेव सहाय वर्मा, महावीर प्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ० ब्रजमोहन प्रभृति परिषद् के कोशकार रहें। परिषद् ने 'अंग्रेजी—हिन्दी वैज्ञानिक कोश' नाम से दो खंड प्रकाशित किए। इनमें से खंड—1 वर्ष 1948 में और खंड—2 1950 प्रकाशित हुआ। बाद में यह कार्य अधूरा ही रह गया क्योंकि तब तक केंद्र सरकार ने इस दिशा में बड़े पैमाने पर काम शुरू कर दिया था। भारतीय हिन्दी परिषद में प्रो. निहालकरण सेठी और डा० ब्रजमोहन ने पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का जो कार्य किया था, उसके आधार पर डॉ० सेठी ने 'भौतिकी शब्दावली' और

डॉ० ब्रजमोहन ने 'गणित कोश' (1954) प्रकाशित कराया। ये कोश प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की ओर से चौखंभा संस्कृत सीरीज, बनारस से प्रकाशित हुए।

इसी प्रकार, 1937–1949 में पोपटलाल गोविंदलाल शाह के संयोजकत्व में 'एन इंग्लिश–गुजराती ग्लॉसरि ऑफ साइंटिफिक वर्क्स इन नागरी स्क्रिप्ट' प्रकाशित हुआ। कलकत्ता (कोलकाता) की एम. भट्टाचार्य एडं कंपनी से 1942 में 'अंग्रेजी हिन्दी चिकित्सा शब्दकोश' प्रकाशित हुआ। और, सन् 1948 में यशवंत रामकृष्ण दांते और चिंतामणि गणेश कर्वे का 'शास्त्रीय पारिभाषा कोश ' प्रकाशित हुआ जो अब तक प्रकाशित वैज्ञानिक हिन्दी कोशों में सबसे महत्त्वपूर्ण था।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयोग ने 1951 में राहुल सांकृत्यायन और ए.सी. सेनगुप्त के संपादन में 'प्रत्यक्ष शरीर कोश', 1952 में 'जीव रसायन कोश' (डॉ० ब्रजकिशोर मालवीय) तथा 1953 में 'भूतत्त्व विज्ञान कोश' (एस०सी० सेनगुप्त) और 1955 में 'चिकित्सा विज्ञान कोश' प्रकाशित किए। इसके अलावा, केशव प्रसाद मिश्र कृत 'वैद्युत शब्दावली' भी प्रकाशित हुई। 1956 में ही महेश्वर सिंह सूद का 'जंतु विज्ञान कोश' भी प्रकाशित हुआ। फादर कामिज बुल्के कृत 'ए टेक्नीकल हिन्दी ग्लॉसरी' भी सन् 1955 में प्रकाशित हुई। कालांतर में इस प्रकार के प्रयास ठप्प हो गए क्योंकि शब्दावली निर्माण का कार्य बड़े पैमाने पर केंद्र सरकार ने शुरू कर दिया था।

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के व्यापक ऐतिहासिक विकासक्रम में मानविकी–सामाजिक विज्ञान, शासन और विधि आदि के भी कई कोशों का उल्लेख किया जा सकता है। इनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं—'व्यापारिक कोश' (सं. ब्रजवल्लभ, 1908); 'राजनीति शब्दावली' (भगवानदास केला, 1927); 'अर्थशास्त्र शब्दावली' (भगवानदास केला, 1932) और 'अर्थशास्त्र शब्दावली' (पुनर्प्रकाशित)– भगवानदास केला दयाशंकर महत्त्वपूर्ण दुबे, 1949) 'अर्थशास्त्र शब्दावली (गदाधर प्रसाद, 1932); 'वाणिज्य शब्दकोश' (कांतानाथ गर्ग, 1954) आदि।

इसी प्रकार, शासन एवं विधि संबंधी कुछ प्रमुख कोश हैं।–'वल्लभ त्रिभाषिक विधि–कोश' (पं.ब्रजवल्लभ मिश्र,1920), 'सयाजीराव शासनकल्पतरु' (बड़ौदा रियासत द्वारा 1932 में प्रकाशित); 'श्री वास्तव लॉ डिक्शनरी' (श्री परमेश्वरी दयाल श्री वास्तव, 1938–39); 'शासन–शब्दसंग्रह' (हरिहर निवास द्विवेद्वी, 1940); 'न्यायालय शब्दकोश' (हिन्दी सभा, सीतापुर , 1948); 'न्यायालय–शब्दसंग्रह' (जगदीश शरण अग्रवाल, बरेली, 1948); 'शासन–शब्दकोश' (राहुल सांकृत्यायन, विद्यानिवास मिश्र, प्रभाकर माचवे ,हिन्दी साहित्य सम्मेलन संवत 2005 (सन् 1946); 'आरक्षिक (पुलिस) शब्दावली' – (रामचंद्र वर्मा तथा गोपालचद्र सिंह, संवत् 2005 (सन् 1948); 'राजकीय कोश' (गोरखनाथ चौबे, इलाहाबाद, 1948); 'न्यायालय शब्द–संग्रह' (जगदीश शरण अग्रवाल, 1932); 'आंग्ल–भारतीय प्रशासन शब्दकोश' (डॉ० रघुवीर और जी०एस० गुप्ता, नागपुर, 1949); 'डिक्शनरी ऑफ लॉ टर्म्स' (लछमनदास कौशल तथा रंजीत सिंह सरकारिया, 1950 'शासन शब्दप्रकाश' (न्याय विभाग, मध्य भारत, ग्वालियर, 1953) आदि।

वहीं, लोकसभा सचिवालय द्वारा 1957 में प्रकाशित 'ग्लॉसरी ऑफ पार्लियामेंटरी लीगल एंड एडमिनिस्ट्रेटिव टर्म्स का भी उल्लेख किया जा सकता है जिसमें विधि शब्दावली के अलावा, संसद और प्रशासन से जुड़ी प्रशासनिक शब्दवली भी है।

2. **स्वतंत्रता के पश्चात् शब्दावली निर्माण के प्रयास**—हालाँकि यह भी सही है कि आजादी के बाद और खास तौर पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के औपचारिक रूप से स्वरूप ग्रहण करने के बाद से लेकर आज तक पारिभाषिक शब्दावली निर्धारण संबंधी अनेक प्रयास किए गए और किए जा रहे हैं। किंतु शामिल इस विकास–यात्रा का परिदृश्य प्रस्तुत करते समय नहीं किया गया है क्योंकि पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण का औपचारिक रूप से दायित्व वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का है। भारत के उच्चतम न्यायालय ने भी इसकी पुष्टि की है कि केवल आयोग द्वारा की गई शब्दावली को अखिल भारतीय स्तर पर प्रयोग किया जाए। इसलिए यहाँ सिर्फ आयोग के प्रयासों का ही उल्लेख करना उपयुक्त होगा।

स्वतंत्र भारत के शुरुआती वर्षों के दौरान पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में वैयक्तिक, संस्थागत एवं प्रशासनिक स्तरों पर प्रयास किए गए। लेकिन वर्ष 1950 तक आते–आते पारिभाषिक शब्द निर्धारण में मनमाने दृष्टिकोणों और समन्वय के अभाव के कारण एक ही पारिभाषिक शब्द के अलग–अलग प्रयोग चलन में आ रहे थे। इसने शब्दावली प्रयोग के अराजकता की स्थिति पैदा कर दी जिसने सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक शब्दावली का कोश बनाने की दिशा में सोचने पर मजबूर किया और इससे संबंधित एक बोर्ड के गठन की आवश्यकता को जन्म दिया 1950 में 'वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दावली मंडल' का गठन किया गया। और समय–समय पर कई बार नाम बदलते रहने के बाद शब्दावली–निर्माण का काम करने वाले 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' की भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत 1 अक्टूबर, 1961 को औपचारिक स्थापना की गई।

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्द निर्माण करने का दायित्व इस विभाग का है। आयोग, तकनीकी शब्दावली के संकलन, निर्माण, समन्वय, प्रशिक्षण आदि के लिए यही अधिकृत और शीर्षस्थ संस्था के रूप में प्रतिष्ठित है।

शुरू में आयोग ने वर्ष 1953 तक गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और समाज विज्ञान की पाँच शब्दावलियाँ, पुस्तिकाओं के रूप में तैयार की। इसके अलावा, आयोग ने प्रशासन शब्दावली तथा पदनाम शब्दावली का अन्तिम संस्करण तैयार कर 1955 में प्रकाशित किया, जिसे बाद में संशोधित/परिवर्धित करके 1962 में निकाला गया। उसके बाद से अब तक इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। अब यह 'प्रशासनिक शब्दावली' (Glossary of Administrative Terms) के नाम से उपलब्ध है।

इसके अलावा, आयोग ने ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं से सम्बन्धित अनेक विषयवार शब्दावलियाँ, परिभाषा कोश आदि तैयार करने के काम को व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ाया और प्रकाशित किए हैं। इस दिशा में आयोग ने 1962 में 'A Consolidated Glossary of Technical Terms' नामक अंग्रेजी-हिन्दी पारिभाषिक शब्द संग्रह प्रकाशित कराया, जिसमें मानविकी और सामाजिक विज्ञान आदि के पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी प्रतिशब्द दिए गए हैं।

आयोग ने अनेक विषय-क्षेत्रों के शब्द-संग्रह भी प्रकाशित किए हैं। जनवरी, 1970 तक आयोग ने विभिन्न विषयों की अधिकांश शब्दावलियों के विषयवार निर्माण और प्रकाशन का कार्य कर लिया। तत्पश्चात इन शब्दावलियों को समेकित करके बृहत् शब्द-संग्रहों के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय करते हुए आयोग ने 1973 में बृहत् 'बृहत पारिभाषिक शब्द-संग्रह' (विज्ञान) प्रकाशित किया। इसी प्रकार, विषयों के वृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी और सामाजिक विज्ञान) को 1973-74 में प्रकाशित किया था। इनके अतिरिक्त आयोग ने ज्ञान-विज्ञान के भिन्न-भिन्न विषयों के पचास से अधिक परिभाषा कोश भी तैयार किए हैं। आज आयोग द्वारा विभिन्न विषय-क्षेत्रों के कई लाख पारिभाषिक शब्द विकसित किए जा चुके हैं। शब्द निर्माण सम्बन्धी यह कार्य आज भी लगातार चल रहा है।

प्र.5. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धान्तों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धान्त

पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता की स्थिति से निपटने और शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों को निर्धारित करने के लिए आजादी के बाद, भारत सरकार ने 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (Commission for Scientific and Technical Terminology - CSTT) की स्थापना की थी। आयोग को ऐसी तकनीकी शब्दावली की एकरूपता-समरूपता एवं मानकीकरण का दायित्व सौंपा गया जिसमें अखिल भारतीयता की छाप हो। आयोग ने किसी भी अतिवादी दृष्टि का समर्थन करने के स्थान पर राष्ट्रीय लक्ष्य और भाषा-समाज की वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए मध्यम मार्ग का अनुसरण किया। इसके लिए आयोग ने देश के जाने-माने विद्वानों, वैज्ञानिकों, विषय-विशेषज्ञों एवं भाषाविदों से विचार-विनिमय कर तब तक प्रचलित चारों विचारधाराओं में से मूल तत्त्वों को ग्रहण शब्दावली के निर्माण के कई मार्गदर्शक सिद्धांत तैयार किए। ये सिद्धांत वस्तुत: पारिभाषिक शब्दावली सम्बन्धी समन्वयवादी दृष्टिकोण पर ही आधारित हैं।

समन्वयवादी दृष्टि के मूल में संदर्भानुसार उपयुक्त शब्दों को लेने पर बल है जो संस्कृत, अंतर्राष्ट्रीय, अंग्रेजी, देशी भाषाओं/बोलियों आदि में से किसी के भी हो सकते हैं। 'राडार', 'मशीन' आदि अनगिनत अंतर्राष्ट्रीय-अंग्रेजी शब्दों, 'दस्तावेज', 'जिला', 'जमानत' जैसे तुर्की-अरबी-फारसी के शब्दों के अतिरिक्त 'बिचौलिया', 'जच्चाघर' जैसे लोक-प्रचलित शब्दों, 'acknowledgement' के लिए मराठी के 'पावती' तथा slum' के लिए 'झोंपड़-पट्टी'; 'annexure' के लिए कन्नड़ से 'सौध', 'Battalion' के लिए बांग्ला से 'वाहिनी' तथा 'Green Room' के लिए 'साजगृह' जैसे भारतीय शब्दों को अपनाना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। आयोग का 1967 में प्रकाशित 'बृहत पारिभाषिक शब्द-संग्रह' (विज्ञान, दो भाग) का 'आमुख' यह जानकारी देता है कि आयोग ने वैज्ञानिक शब्दों के निर्माण के लिए कौन से सिद्धांत अपनाए हैं। 'आमुख' में दिए गए शब्दावली निर्माण के सिद्धांत निम्न प्रकार से हैं—

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग द्वारा स्वीकृत वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

1. अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत अग्रलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं—

(क) तत्त्वों और यौगिकों के नाम जैसे हाइड्रोजन, कार्बन, कार्बन डाइऑक्साइड आदि;
(ख) तौल और माप की इकाइयाँ और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ, जैसे डाइन, कैलोरी, ऐम्पियर आदि;
(ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं जैसे फारेनहाइट के नाम पर फारेनहाइट तापक्रम, वोल्टा के नाम पर वोल्टमीटर और ऐम्पियर के नाम पर ऐम्पियर आदि;
(घ) वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, भूविज्ञान आदि की द्विपदी नामावली;
(ङ) स्थिरांक जैसे πg आदि;
(च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आम तौर पर सारे संसार में व्यवहार हो रहा है; जैसे—रेडियो, पेट्रोल, रडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन, न्यूट्रॉन आदि;
(छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक चिह्न और सूत्र; जैसे—साइन, कोसाइन, टेन्जेन्ट, लॉग आदि (गणितीय संक्रियाओं में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला में होने चाहिए);

2. प्रतीक, रोमन लिपि में अंतरराष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएँगे परन्तु संक्षिप्त रूप नागरी और मानक रूपों में भी विशेषत: साधारण तौल और माप में लिखे जा सकते हैं, जैसे सेंटीमीटर का प्रतीक cm. हिन्दी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होगा परन्तु इसका संक्षिप्त रूप से.मी. हो सकता है। यह सिद्धांत बाल-साहित्य और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा परन्तु विज्ञान और शिल्प-विज्ञान की मानक पुस्तकों में केवल अंतरराष्ट्रीय प्रतीक जैसे cm. ही प्रयुक्त होना चाहिए।
3. ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों के अक्षर प्रयुक्त किए जा सकते हैं, जैसे—

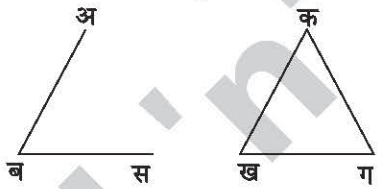

परन्तु त्रिकोणमितीय सम्बन्धों में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्त करने चाहिए, जैसे साइन A, क्रॉस B आदि।

4. अवधारणाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों का सामान्यत: अनुवाद किया जाना चाहिए।
5. हिन्दी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता, अर्थ की परिशुद्धता और सुबोधता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सुधार विरोधी और विशुद्धिवादी प्रवृत्तियों से बचना चाहिए।
6. सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों में यथासम्भव अधिकाधिक एकरूपता लाना ही इनका उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए ऐसे शब्द अपनाने चाहिए जो :
(क) अधिक से अधिक प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त होते हों, और
(ख) संस्कृत धातुओं पर आधारित हों।
7. ऐसे देशी शब्द जो सामान्य प्रयोग के वैज्ञानिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं; जैसे—telegraph, telegram के लिए तार, continent के लिए महाद्वीप, atom के लिए परमाणु आदि। ये सब इसी रूप में व्यवहार किए जाने चाहिए।
8. अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे इंजन, मशीन, लावा, मीटर, लीटर, प्रिज्म, टॉर्च आदि इसी रूप में अपनाए जाने चाहिए।
9. **अंतरराष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण**—अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों में नए चिह्न व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पड़े। अंग्रेजी शब्दों का देवनागरीकरण करते समय लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप हों और उनमें ऐसे परिवर्तन किए जाए जो भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित हों।
10. **लिंग**—हिंदी में अपनाए गए अंतरराष्ट्रीय शब्दों को, अन्यथा कारण न होने पर, पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए।
11. **संकर शब्द**—वैज्ञानिक शब्दावली में संकर शब्द, जैसे ionization के लिए आयनीकरण, voltage के लिए वोल्टता, ring stand के लिए वलय स्टैन्ड, saponifier के लिए साबुनीकारक आदि के रूप सामान्य और प्राकृतिक

TOUCH 'n PASS

भाषाशास्त्रीय क्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्द रूपों को वैज्ञानिक शब्दावली की आवश्यकताओं और सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।

12. **वैज्ञानिक शब्दों में संधि और समास**—कठिन संधियों का यथासम्भव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दों के बीच हाइफन लगा देना चाहिए। इससे नए शब्द-रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलेगी। जहाँ तक संस्कृत पर आधारित 'आदिवृद्धि' का सम्बन्ध है, 'व्यावहारिक', 'लाक्षणिक' आदि प्रचलित संस्कृत तत्सम शब्दों में आदिवृद्धि का प्रयोग ही अपेक्षित है परन्तु नव-निर्मित शब्दों में इससे बचा जा सकता है।
13. **हलंत**—नए अपनाए हुए शब्दों में आवश्यकतानुसार हलंत का प्रयोग करके उन्हें सही रूप में लिखना चाहिए।
14. **पंचम वर्ण का प्रयोग**—पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करना चाहिए, परन्तु lens, patent आदि शब्दों का लिप्यंतरण लेंस, पेटेंट न करके लेन्स, पेटेन्ट ही करना चाहिए।

पारिभाषिक शब्दों के समतुल्य निर्धारित/निर्मित करने हेतु आयोग ने इन सिद्धांतों को स्वीकृत करके अखिल भारतीय पारिभाषिक शब्दावली विकसित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। आयोग द्वारा निर्धारित उपर्युक्त सिद्धांतों को व्यवहार में लाने पर भाषा में शाब्दिक एकरूपता की स्थापना होगी और उसका मानकीकरण हो पाएगा। वहीं, साथ ही, इन सिद्धांतों की सहायता से विदेशी अथवा प्रादेशिक भाषाओं की तकनीकी शब्दावली का अनुवाद भी सरल हो जाएगा।

प्र.6. पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की युक्तियों अथवा तकनीकों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की युक्तियाँ/तकनीकें

किसी भी नई अवधारणा का विकास, अभिव्यक्ति के लिए नए शब्द की माँग करता है। जिस भाषा में नई अवधारणा का विकास होता है वह नए तकनीकी शब्द बनाती है। जो भाषाएँ इस विकास को ग्रहण करती हैं, उन्हें उस शब्दावली निर्माण के लिए नियोजित भाषा विकास की प्रक्रिया को अपनाना पड़ता है। शब्दावली निर्माण की दिशा में पहला प्रयास यह रहता है कि अवधारणा के व्यावहारिक अर्थ को व्यक्त करने वाला अपने भाषा-भण्डार में उपलब्ध पर्याय का चयन किया जाए। इसी दृष्टिकोण के आधार पर अंग्रेजी के 'catharsis' तकनीकी शब्द के लिए हिन्दी भाषा में 'विरेचन' शब्द लिया गया। इसी प्रकार 'hour' के समकक्ष 'घंटा' पर्याय निर्धारित किया गया, जबकि अंग्रेजी 'minute' और 'second' की अवधारणाओं के द्योतक शब्द हिन्दी भाषा-भंडार में पर्याय उपलब्ध न होने के कारण इन्हें ग्रहण करते हुए उनका लिप्यंतरण कर दिया गया 'मिनट' और 'सेकेंड'। इसके अलावा, अपनी भाषिक व्यवस्था के अनुसार नई शब्द-रचना की जाती है या फिर अनुवाद का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के आयाम हैं— अंगीकरण, अनुकूलन, नव-निर्माण एवं अनुवाद। इन चारों आयामों का क्रमशः विवेचन इस प्रकार है—

1. **अंगीकरण**—अंगीकरण का सिद्धांत, अन्य भाषा में विकसित और प्रचलित पारिभाषिक शब्दों को ज्यों का त्यों ग्रहण करने से संबंधित है। कुछ अंतरराष्ट्रीय शब्द ऐसे हैं जिनकी अवधारणा अत्यंत जटिल एवं दुरूह होती है। ऐसे शब्दों को अपनी भाषा में यथावत ग्रहण कर लेना 'अंगीकरण' कहलाता है। कुछ विद्वानों ने इस तरह ली गई शब्दावली को 'उद्धृत शब्दावली' की संज्ञा दी है। इनके अन्तर्गत (क) नाइट्रोजन, ऑक्सीजन जैसे तत्त्वों-यौगिकों के नाम, (ख) मीटर, कैलोरी, डाइन, ऐम्पियर जैसे माप-तौल और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ, (ग) मैंजीफेरा इंडिका (आम/आम्र) जैसे वनस्पतिविज्ञान और प्राणिविज्ञान की द्विपदी नामावली, (घ) डार्विन और मार्क्स जैसे व्यक्तियों के नाम पर निर्मित शब्द (जैसे डार्विनवाद, मार्क्सवाद आदि), (च) रेडियो, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन जैसे आम तौर पर सारे संसार में व्यवहृत शब्द, (छ) π, g आदि जैसे स्थिरांक, (ज) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिह्न, सूत्र, लॉग आदि आते हैं।

   हिन्दी भाषा की पारिभाषिक शब्दावली संस्कृत मूल अथवा परम्परागत एवं प्रयोग में प्रचलित शब्दों, उर्दू, अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं रूपी विभिन्न स्रोतों से समृद्ध हुई है। उदाहरण के लिए, 'मंत्री', 'निरीक्षण', 'राष्ट्र', 'देश', 'निर्णय', 'सरकार', 'कृषि', 'दायित्व' आदि पूर्व-प्रचलित शब्दों अथवा संस्कृत मूल के शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली में स्थान दिया गया है। इसके साथ-साथ 'कच्चा माल', 'भत्ता', 'भाड़ा', 'बचत', 'भर्ती', 'कटौती', 'लागत', 'साख', 'समझौता', 'आँकड़े' आदि अनेक परम्परागत शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली में स्थान दिया गया। इसके अतिरिक्त, 'रसीद', 'अर्जी', 'दस्तावेज', 'जुर्माना', 'दावेदार', 'मुआवजा', 'कुर्की' आदि उर्दू शब्दों को पारिभाषिक अर्थ में गृहीत कर लिया

TOUCH 'n PASS

गया। बांग्ला से 'साज गृह', तेलुगु से 'औत्साहिक', मलयालम से 'चिल्लर', कन्नड़ से 'निवल' और 'प्रतिष्ठान', मराठी से 'आवक', 'जावक' और 'पावती' आदि पारिभाषिक शब्द लिए गए हैं। अंग्रेजी से 'रेलवे', 'गार्ड', 'गैस', 'चौक', 'बोनस', 'बिल', 'रेडियो', 'वायरमैन', 'फिटर' आदि असंख्य शब्दों को ज्यों का त्यों स्वीकार करना, शब्दों के अंगीकरण का उदाहरण है।

हिन्दी में, अंतरराष्ट्रीय शब्दों को अंगीकृत करने का यह अभिप्राय नहीं है कि हमारी अपनी भाषा में शब्द-निर्माण क्षमता का अभाव है। वास्तव में यह भाषिक विकास की एक सामान्य प्रक्रिया है। प्रत्येक भाषा इस दौर से भी अक्सर गुजरती है। अंग्रेजी में दर्शन-योग, न्याय आदि से सम्बन्धित अनेक भारतीय शब्दों का अंगीकरण इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। अंग्रेजी में अंगीकृत इसी प्रकार के कुछ शब्द हैं— Maya, Decoit, Yoga, Jungle, Thug, Chutney, Curry आदि।

2. **अनुकूलन**—अनुकूलन को 'रूपांतरण' भी कहा जाता है। शब्द के संदर्भ में अनुकूलन का अभिप्राय है— शब्द में थोड़ा-बहुत परिवर्तन करते हुए उसे अपनी भाषा के अनुरूप ढालना। शब्दों का अनुकूलन करते समय विदेशी भाषा के उस शब्द-विशेष को अपना मानकर चलने की मूल धारणा काम करती है। किन्तु उस शब्द-विशेष को यथावत न लेकर उसका लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप विकास किया जाता है। अनुकूलन की यह प्रवृत्ति प्रत्येक भाषा की सहज-स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। यह अनुकूलन दो प्रकार से सम्भव हो पाता है—

(क) अपनी भाषा के व्याकरणिक विधान के अनुसार प्रत्यय लगाकर शब्द को अनुकूलित कर लेना। उदाहरण के लिए, हिन्दी के शब्द 'संत' को अंग्रेजी भाषा ने ग्रहण कर लिया, किन्तु उसका विकास अपनी भाषा के व्याकरण के अनुसार करते हुए 'Saint' (न कि Sant)। इसी तरह से हिन्दी का 'लूट' शब्द अंग्रेजी में 'looting' हो गया। इसी प्रकार, 'चंदन' और 'कपूर' जैसे भारतीय शब्द अंग्रेजी में क्रमशः sandal और campher हो गए तो हिन्दी का 'खाट', अंग्रेजी में 'cot' हो गया। हिन्दी के संदर्भ में देखें तो अंग्रेजी के 'voltage' शब्द के लिए प्रयुक्त 'वोल्टता' शब्द देखा जा सकता है, जो 'वोल्ट' के साथ 'ता' प्रत्यय के योग से निर्मित किया गया है। रजिस्ट्रीकरण (रजिस्ट्री+करण), कम्प्यूटरीकरण (कम्प्यूटर + करण), साबुनीकारक (साबुन+कारक), सिलिंडराकार (सिलिंडर + आकार), ऑक्सीकृत (ऑक्सी+कृत), शेयरधारक (शेयर +धारक), गैलवेनोमापी (गैलवेनी+मापी), अपीलकर्त्ता (अपील+कर्त्ता), रेलगाड़ी (रेल+गाड़ी) आदि इसी प्रकार शब्द हैं। मिश्रित रूप वाले ऐसे शब्दों को 'संकर शब्द' (Hybrid words) कहा जाता है।

(ख) मुख-सुख का ध्यान रखते हुए शब्दों की ध्वनियों में थोड़ा-बहुत परिवर्तन करके उसका अपनी भाषा में अनुकूलन करना। हिन्दी भाषा में 'अकादमी', 'फंतासी', 'तकनीक', 'रपट', 'अपीलीय', 'गोदाम', 'त्रासदी', 'कामदी', और 'रिपोर्ताज' आदि शब्द अंग्रेजी के क्रमशः academy, fantasy, technique, report, appellate, tragedy, comedy, guard और reporting शब्दों के ध्वनि-साम्य के आधार पर निर्मित शब्द हैं।

कुल मिलाकर, यही कहा जा सकता है कि अंगीकृत शब्दों को लिप्यंतरित करते समय अपनी भाषा की प्रकृति अथवा मुख-सुख को ध्यान में रखना जरूरी होता है।

3. **नव-निर्माण**—उन पारिभाषिक शब्दों के पर्यायों के लिए नवनिर्माण की आवश्यकता पड़ती है जिनके समुचित पर्याय अपनी भाषा में पहले से ही उपलब्ध न हों और जिनका अंगीकरण अथवा अनुकूलन सम्भव, सुलभ एवं उपयोगी न हो। विकसित से विकसित भाषा तक इस प्रकार के प्रयास करके समान्तर प्रतिशब्द सृजित करती है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने मूल 'धातु' में उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर एवं संधि-समास विधि का प्रयोग करके नव-शब्द निर्माण की युक्ति को भी स्वीकार किया है।

हिन्दी भाषा में शब्द चार स्रोतों से आते हैं— तत्सम तद्भव, देशज और विदेशी शब्द। नए शब्दों के निर्माण के लिए 'धातु' आधार का काम करती है क्योंकि उसमें अर्थ का बीजभाव निहित होता है। संस्कृत भाषा की 520 धातुओं, 20 उपसर्गों एवं 80 प्रत्ययों की सहायता से असंख्य शब्द बनाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, हिन्दी के 'कर्षण अथवा खींचना' के अर्थ में अंग्रेजी का 'traction' शब्द प्रयुक्त होता है। इस 'कर्षण' शब्द की व्युत्पत्ति 'कृष' धातु से हुई है। अगर 'कर्षण' शब्द में 'आ' उपसर्ग लगा दिया जाए तो अंग्रेजी के 'attraction' शब्द के अर्थ का द्योतक 'आकर्षण' शब्द निर्मित हो जाएगा। और इसी प्रकार 'कर्षण' शब्द में 'वि' उपसर्ग लगने पर अंग्रेजी के 'detraction' शब्द के अर्थ का द्योतक 'विकर्षण' शब्द निर्मित हो जाता है।

TOUCH 'n' PASS

इसी तरह से 'legal' शब्द के हिन्दी पर्याय 'वैध' से पहले उपसर्ग लगाकर 'अवैध', पारिभाषिक 'वैधानिक', 'संवैधानिक' आदि पारिभाषिक शब्द निर्मित हुए हैं। 'प्रक्रम', 'प्रक्रिया', 'प्रशिक्षण', 'अनुबंध', 'अभिकलन', 'अनुदान', 'अनुक्रिया', 'उपग्रह', 'प्रभारी', 'संशोधन', 'यांत्रिक', 'परिष्करण', 'गुरुत्व', 'आवर्ती', 'परिशोधन', 'उच्चतर', 'उत्प्रेरक', 'विकेंद्रित', 'पर्यावरण', 'युग्मित', 'भौतिकी', 'सहकारी', 'वरिष्ठतम' आदि अनेक शब्दों को इसी पद्धति से निर्मित किया गया है। नव-शब्द निर्माण का यह सबसे अधिक प्रचलित तरीका है और तमिल, लैटिन-ग्रीक आदि सहित कमोबेश सभी भाषाओं में यह युक्ति व्यवहृत होती है। किन्तु नव शब्द निर्माण के लिए मौलिक चिंतन, सतत अभ्यास, भाषा एवं विषय-विशेषज्ञों का सहयोग अपेक्षित होता है।

4. **अनुवाद**—वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने अनुवाद को शब्दावली निर्माण की एक युक्ति के रूप में अपनाया है। 'जनसंचार माध्यम' (mass media), 'काला धन' (black money), 'तृतीय विश्व' (third world), 'कार्यशाला' (workshop), 'हरित क्रांति' (green revolution), 'आर्थिक अन्वेषक' (economic investigator), 'समय-प्रबंधन' (time management), 'गरीबी रेखा' (poverty line), 'शीत युद्ध' (cold war), 'स्वर्ण जयंती' (golden jubliee), 'रजत जयंती' (silver jubliee), 'हीरक जयंती' (diamond jubliee), 'पाँच तारा' (five star), 'कार्य बल' (Task force), 'श्वेत पत्र' (white paper), 'विश्वग्राम' (global village), 'विकास परिषद' (development council), 'वायु प्रदूषण' (air pollution), 'लौहपट' (iron curtain), 'अशासकीय टिप्पणी' (unofficial note) आदि अनेक पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में अनुवाद पद्धति को अपनाया गया है।

   इसी प्रकार, कभी-कभी तीन अथवा उससे अधिक शब्दों से निर्मित पारिभाषिक शब्द-समूह को भी अनुदित कर दिया जाता है। 'अपर केंद्र निदेशक' (Additional Station Director), 'पश्चिम एशिया शांति सम्मेलन' (West Asia Peace Conference), 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' (World Health Organisation), 'विश्व व्यापार संगठन' (World Trade Organisation), 'जल पूर्ति और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र' (Water Supply and Primary Health Centre) आदि पारिभाषिक शब्द-समूह को अनुदित करने के उदाहरण हैं।

प्र.7. अनुवाद-कार्य में पारिभाषिक प्रतिशब्द-प्रयोग (भूमिका) के प्रमुख आयामों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

अनुवाद-कार्य में पारिभाषिक प्रतिशब्द-प्रयोग के आयाम

ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी विषयों सम्बन्धी सामग्री का अनुवाद करते समय अनुवादक को स्रोत भाषा की पारिभाषिक शब्दावली के समकक्ष लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए। प्रामाणिक सटीक पर्याय केवल पारिभाषिक शब्द-संग्रहों आदि में ही उपलब्ध हो पाते हैं। इसलिए प्रामाणिक पारिभाषिक शब्द-संग्रहों/शब्दावलियों आदि की सहायता लेना जरूरी होता है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने विभिन्न विषय-क्षेत्रों के पारिभाषिक शब्द-संग्रह, विषयवार शब्दावलियाँ और परिभाषा कोश प्रकाशित किए हैं। और, विधि और न्याय मंत्रालय के विधायी विभाग के राजभाषा खण्ड ने 'विधि शब्दावली' और 'भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के कार्यालय' ने 'लेखा और लेखा परीक्षा शब्दावली' प्रकाशित हैं। अनुवाद-कार्य के दौरान, स्रोत भाषा में आए पारिभाषिक शब्दों के लिए प्रतिशब्द के प्रयोग के कई आयाम हैं, जिनका क्रमशः विवेचन इस प्रकार है—

1. **विषय एवं संदर्भ के अनुसार समुचित पर्याय चयन**—अनुवादक से यह अपेक्षा रहती है कि उसे स्रोत भाषा की पारिभाषिक शब्दावली के लक्ष्य भाषा में समतुल्य पर्याय की जानकारी हो और वह समुचित शब्द का ही प्रयोग करे। इससे अनुवादक पारिभाषिक शब्द को लक्ष्य भाषा में परिभाषित करने से बच जाता है और समतुल्य अभिव्यक्ति की सिद्धि भी सम्भव हो पाती है। जैसे, अंग्रेजी शब्द 'President' के लिए हिन्दी पर्याय 'राष्ट्रपति' और 'अध्यक्ष' उपलब्ध हैं और अनुवादकों को विषय और संदर्भ के अनुसार 'राष्ट्रपति' और 'अध्यक्ष' में से उपयुक्त पर्याय चुनना होता है। 'President of India' के संदर्भ में 'राष्ट्रपति' शब्द का प्रयोग किया जाएगा और किसी संस्था-कार्यालय आदि के 'President' के संदर्भ में 'अध्यक्ष' पर्याय प्रयुक्त होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि एक ही शब्द विषय एवं संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न पारिभाषिक अर्थों में प्रयुक्त किया जा सकता है।

   इस प्रकार के शब्दों का अनुवाद करते समय पर्याप्त सावधानी बरतने की जरूरत होती है। जैसे, अंग्रेजी के 'general' शब्द को देखिए। इसकी सहायता से बने कुछ पारिभाषिक शब्द हैं 'general election', 'general good', 'general body meeting', 'General Manager', और 'general principles'। अनुवादक, विषय के अनुसार इनके

भिन्न-भिन्न पारिभाषिक अर्थों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग प्रतिशब्द व्यवहार में लाता है। इसीलिए इन शब्दों के क्रमशः हिन्दी अनुवाद होंगे— 'आम चुनाव', 'सार्वजनिक हित', 'साधारण सभा', 'महाप्रबंधक', और 'सामान्य सिद्धांत'।

2. **विशिष्ट अर्थ-संदर्भ को बनाए रखना**—सामान्यतः प्रत्येक पारिभाषिक शब्द को किसी न किसी विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। इसलिए अनुवाद में इसे हमेशा ध्यान में रखना चाहिए। उदाहरण के लिए, 'order', 'direction' एवं 'instruction' पारिभाषिक शब्दों को देखा जा सकता है, जो कार्यालयी साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रयोजनों के लिए (अर्थात् विशिष्ट अर्थों में) प्रयुक्त होते हैं। इनका अनुवाद क्रमशः 'आदेश', 'निदेश' एवं 'अनुदेश' ही किया जाना चाहिए। इसी तरह 'sanction', 'approval' तथा 'permission' शब्द भी देखे जा सकते हैं, जिनके लिए निर्धारित पारिभाषिक शब्दों— क्रमशः 'स्वीकृति/मंजूरी', 'अनुमोदन' और 'अनुमति' शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए।
3. **शब्द-विशेष की पारिभाषिकता या शैली-वैशिष्ट्य का बोध**—अनुवादक में यह बोध होना चाहिए कि कोई शब्द-विशेष पारिभाषिक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है या शैलीगत प्रयोग के संदर्भ में। अगर शब्द-विशेष पारिभाषिक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है तो अनुवादक द्वारा पारिभाषिक प्रतिशब्द का प्रयोग करना नितांत आवश्यक होता है। किन्तु यदि कोई शब्द-विशेष शैलीगत प्रयोग के संदर्भ में ही प्रयुक्त हुआ है तो पारिभाषिक प्रतिशब्द के प्रयोग की बाध्यता नहीं होती। ऐसे में अनुवादक अर्थ-विशेष को व्यक्त करने वाला कोई अन्य शब्द रख सकता है। इस तथ्य को 'appointment' शब्द के उदाहरण से समझा जा सकता है। 'He has been appointed as a Professor.' वाक्य में 'appointment' शब्द पारिभाषिक अर्थ में प्रयुक्त हआ है, जो यह अर्थ व्यक्त करता है कि व्यक्ति की आचार्य (प्रोफेसर) के पद पर नियुक्ति हुई है। किन्तु यही शब्द 'A well-appointed accommodation is to be provided to Vice Chancellor of the University.' वाक्य में पारिभाषिक अर्थ के स्थान पर शैलीगत अभिव्यक्ति का हिस्सा है। यहाँ यह शब्द 'सुसज्जित' अर्थ को व्यक्त करता है। इस दृष्टि से उक्त वाक्य का अनुवाद होगा— 'विश्वविद्यालय के कुलपति को सुसज्जित आवास दिया जाएगा। (वैसे, 'A well-appointed accommodation' के स्थान पर 'A well-furnished accommodation' भी लिखा जा सकता है।)
4. **आवश्यक न होने पर भारी-भरकम पारिभाषिक शब्द-प्रयोग से बचना**—अनुवादक को पारिभाषिक प्रतिशब्द का प्रयोग करना चाहिए। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि अनुवादक इस आधार-वाक्य का आँख बन्द करके हमेशा अनुकरण ही करता रहे। पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग का उद्देश्य शब्द-विशेष के माध्यम से विषय-वस्तु में पारिभाषिकता लाना है— भले ही वह शब्द हल्का प्रतीत हो अथवा भारी-भरकम। अनुवादक को चाहिए कि यदि विषय-वस्तु में पारिभाषिकता लाना जरूरी न हो तो यथासम्भव भारी-भरकम शब्द प्रयोग से बचा जाए। भारी-भरकम शब्दों के प्रयोग से भाषा में अनावश्यक रूप से दुरूहता आ जाती है। ऐसे में भाषा का सहज प्रवाह बाधित हो जाता है, वह अस्वाभाविक हो जाती है। उदाहरण के लिए, अधिसूचना से सम्बन्धित निम्नलिखित वाक्य और उसका अनुवाद देखिए—

   मूल—The term 'fee' used here shall have the meaning assigned to it in Fundamental Rule 9(6-A).

   अनुवाद— 'फीस' शब्द का वही अर्थ होगा, जो मूल नियम 9 (6-क) में **समानुदिष्ट** है। अंग्रेजी के उक्त वाक्य में आए 'assigned' शब्द के लिए हिन्दी अनुवाद में 'समानुदिष्ट' प्रतिशब्द का प्रयोग किया गया है। अंग्रेजी वाक्य दर्शाता है कि 'Fundamental Rule' में 'fee' का वह अर्थ है जो उसे 'assign' किया गया है, जबकि हिन्दी अनुवाद में इसके भावार्थ को ग्रहण करते हुए इसके लिए प्रतिशब्द प्रयोग से बचा जा सकता है। इस आधार पर उक्त वाक्य का हिन्दी अनुवाद होगा— 'फीस शब्द का अर्थ वही होगा, जो मूल नियम 9 (6-क) में है।'

   इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण 'cost' शब्द से सम्बन्धित है। 'cost' का प्रशासनिक संदर्भ में अर्थ 'लागत' है और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में यह 'खर्च, व्यय' का द्योतक है। किन्तु, आवश्यक न होने पर भाषा में सहजता लाते हुए इसके प्रतिशब्दों के रूप में 'मूल्य चुकाना', 'एवज' आदि सरल शब्दों का भी प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्य और उनके हिन्दी अनुवाद देखे जा सकते हैं—

   (क) The cost of production has reduced by 5%. = उत्पादन **लागत** में 5% की कमी हुई।

   (ख) The flat cost me ₹ 50 lakhs. = मैंने यह फ्लैट ₹ 50 लाख में **खरीदा**।

TOUCH 'n' PASS

(ग) This cost me my holidays. = यह मेरी छुट्टियों की **एवज** में हुआ।

(घ) This attendance in Seminar is on the cost of my holidays. = मैंने अपनी छुट्टियाँ **खर्च करके** इस संगोष्ठी में भाग लिया।

5. **सामान्य प्रतीत होने वाले पारिभाषिक शब्द के अनुवाद का प्रश्न**—अनुवादक को आवश्यक न होने पर भारी-भरकम पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। किन्तु, कभी-कभी इसके विपरीत स्थिति भी बन जाती है अर्थात् ऐसा भी होता है कि मूल में पारिभाषिक शब्द का प्रयोग न करके सामान्य शब्द का ही प्रयोग किया गया हो। किन्तु वह सामान्य प्रतिशब्द भी स्वयं में परिभाषा की माँग करता हो। ऐसी स्थिति में अनुवादक को चाहिए कि वह उस शब्द-विशेष के लिए सामान्य प्रतिशब्द का ही प्रयोग न करके पारिभाषिक प्रतिशब्द का प्रयोग करे। जैसे, 'The Chief Minister goes for the integrity of the State.' वाक्य में अंग्रेजी का 'goes' सामान्य शब्द है। लेकिन यहाँ यह सामान्य अर्थ 'जाने' के संदर्भ में प्रयुक्त न होकर 'resign' (त्याग-पत्र) के लिए प्रयुक्त हुआ है। अगर अनुवादक में इस तरह की समझ नहीं होगी तो वह इसका अनुवाद 'मुख्यमंत्री राज्य की एकता के लिए जाते हैं' कर देगा। उक्त पंक्ति का अनुवाद होगा—'मुख्यमंत्री ने राज्य की एकता के लिए त्याग-पत्र दिया।'

पारिभाषिक शब्दावली के सम्बन्ध में अनुवादक की अज्ञानता को उसकी सबसे बड़ी कमजोरी कहा जा सकता है। इस कारण वह ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित स्रोत भाषा सामग्री में आए सरल से प्रतीत होने वाले शब्दों को पारिभाषिक शब्द न मानकर सामान्य शब्द मान बैठता है और उनका सही अर्थ-संदर्भ जानने/खोजने के स्थान पर अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर शब्दानुवाद कर देता है। जैसे, 'capital punishment' शब्द का सामान्य अनुवाद 'पूँजी दण्ड' कर देना। जबकि यह एक पारिभाषिक शब्द है और इसका हिन्दी प्रतिशब्द है 'मृत्युदण्ड'। इसी प्रकार, 'shoe- flower' शब्द का सामान्य अनुवाद 'पादुका पुष्प', 'Rose wood' शब्द का 'गुलाब की लकड़ी' और 'Rat-snake' शब्द का सामान्य अनुवाद 'चूहा-साँप' कर देना। जबकि इनके सही प्रतिशब्द क्रमशः 'गुड़हल', 'शीशम' और 'धामन साँप' हैं।

6. **पारिभाषिक पर्याय-प्रयोग में छूट**—अनुवादक को अर्ध-पारिभाषिक शब्दों के समतुल्य पारिभाषिक प्रतिशब्द के चयन में लचीला रुख अपनाना चाहिए। पारिभाषिक शब्द संग्रहों में अर्ध-पारिभाषिक शब्दों का भले ही समावेश हो और उनके लक्ष्य भाषा में पर्याय भी दिए गए हों, किन्तु अनुवादक के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह उन प्रतिशब्दों का ही प्रयोग करे। अनुवादक को यह छूट होती है कि समतुल्य पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर सही अर्थाभिव्यंजना के लिए अगर परम्परागत शब्द उपलब्ध हैं तो वह उनका प्रयोग कर सकता है। जैसे, अंग्रेजी के 'approach' पारिभाषिक शब्द का हिन्दी प्रतिशब्द 'उपागम' है, जबकि इसके लिए 'दृष्टिकोण' शब्द भी प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार, शिक्षा (और विशेष तौर पर दूर शिक्षा) के क्षेत्र में 'learning', 'learner', 'interaction' आदि अनेक पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी पर्यायों (क्रमशः 'अधिगम', 'अध्येता', 'अंतःक्रिया) के स्थान आमफहम 'अध्ययन', 'विद्यार्थी', 'परस्पर बातचीत' जैसे शब्दों को व्यवहृत किया जा सकता है। किन्तु, ऐसा करते समय अनुवादक को पर्याप्त सावधानी बरतना अनिवार्य है।

7. **मिलते-जुलते रूपाकृति वाले शब्द-प्रयोग का प्रश्न**—अनुवादक को चाहिए कि वह असमान अवधारणाओं अथवा चीजों के संदर्भ में मिलते-जुलते रूपाकृति वाले शब्दों का प्रयोग करने से बचे। उदाहरण के लिए, सामान्य संदर्भों में यदि किसी विषय अथवा मुद्दे पर 'reaction' किया जाता है तो अनुवादक उसके लिए 'प्रतिक्रिया' शब्द प्रयुक्त करता है किन्तु यदि यही शब्द विज्ञान विषयक सामग्री में आता है (जैसे, 'The reaction is carried out in the presence of oxygen.') तो वहाँ हिन्दी प्रतिशब्द 'प्रतिक्रिया' न होकर 'अभिक्रिया' प्रयुक्त करके हिन्दी अनुवाद 'अभिक्रिया, ऑक्सीजन की उपस्थिति में सम्पन्न होती है।' किया जाएगा। वहीं, बाल विकास (Child Development) जैसे विषयों में इसी 'reaction' शब्द के लिए समतुल्य पर्याय के रूप में 'अनुक्रिया' शब्द को व्यवहार में लाया जाता है। इसी प्रकार, 'कार्यवाही' और 'कार्रवाई' शब्दों को भी देखा जा सकता है। 'कार्यवाही' शब्द अंग्रेजी के 'proceedings' का पर्याय है (जैसे—सदन की कार्यवाही), जबकि 'कार्रवाई' शब्द को 'action' के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है (जैसे—रिपोर्ट पर आवश्यक कार्रवाई करना)।

8. **समरूप शब्द-प्रयोग का प्रश्न**—समरूप शब्द-प्रयोग करने के संदर्भ में यही उपयुक्त प्रतीत होता है कि सम्बद्ध अवधारणाओं अथवा चीजों के संदर्भ में एक ही श्रेणी के (अथवा मिलते-जुलते) शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि किसी अंग्रेजी वाक्य के अनुवाद में अनुवादक ने 'temperature' के लिए 'ताप' शब्द तो प्रयुक्त

TOUCH 'n PASS

किया है किन्तु उसी वाक्य में अगर 'Thermameter' शब्द भी प्रयुक्त हो रहा है तो उसे उसका लिप्यंतरण (अर्थात् 'थर्मामीटर') नहीं करना चाहिए। ऐसे में अनुवादक को चाहिए कि वह एक ही श्रेणी के शब्द का मानक प्रयोग करते हुए 'तापमापी' प्रतिशब्द प्रयुक्त करे। इससे समरूप शब्द-प्रयोग की स्थिति तो बनती ही है, साथ ही अनुवाद बेहतर और सहज रूप से संप्रेष्य भी प्रतीत होता है। वैसे तो, किसी भी प्रकार के ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक को इसका ध्यान रखना चाहिए। लेकिन, विशेष तौर पर विधि (Law) सम्बन्धी सामग्री के अनुवाद में समरूप शब्द प्रयोग की स्थिति को बनाए रखना अपेक्षित ही नहीं, अनिवार्य भी होता है।

9. **कोश के अद्यतन संस्करण का प्रयोग करना**— किसी भी ज्ञान-शाखा में आए दिन नए-नए तकनीकी शब्द गढ़े जाते हैं या फिर अन्य भाषा-समाजों से ग्रहण कर अपनी भाषा में शामिल किए जाते हैं। इस प्रकार के नए-नए शब्दों के जुड़ने से विषय कोशों, परिभाषा कोशों एवं पारिभाषिक शब्द-संग्रहों आदि को समय-समय पर संशोधित-परिवर्धित करने की आवश्यकता पड़ती है एवं उनके नए/संशोधित संस्करण प्रकाशित करने पड़ते हैं। इसके अलावा, पूर्व-निर्धारित प्रतिशब्दों के प्रयोग की व्यावहारिकता या फिर पर्यायों को कम करके मानकीकरण करते हुए संशोधित संस्करण निकाले जाते हैं। इस संदर्भ में हम अंग्रेजी के 'Computer' शब्द को उदाहरण के रूप में देख सकते हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने अपनी पूर्व-प्रकाशित 'प्रशासनिक शब्दावली' में इसके लिए 'संगणक' और 'कम्प्यूटर' शामिल किया हुआ था। किन्तु 'संगणक' शब्द चलन में नहीं आ पाया यानी उसे सामाजिक स्वीकृति नहीं मिली। नतीजा यह हुआ कि आयोग ने परवर्ती 'प्रशासनिक शब्दावली' में इसके लिए केवल 'कम्प्यूटर' शब्द ही निर्धारित कर दिया। अगर अनुवादक पुराने संस्करण का प्रयोग करेगा या उसी को ही ध्यान में रखेगा तो वह 'संगणक' शब्द का ही प्रयोग करेगा, जबकि अद्यतन संस्करण के आधार पर वह 'कम्प्यूटर' शब्द का ही प्रयोग करेगा और, किसी भी अन्य व्यक्ति द्वारा एतराज करने पर वह अद्यतन संस्करण को प्रमाण के तौर पर प्रस्तुत कर सकता है।

अनुवाद-कार्य में पारिभाषिक प्रतिशब्द-प्रयोग के विविध आयामों पर विचार करने पर आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवादक को विषय के प्रति समर्पित रहते हुए पारिभाषिक शब्दावली के प्रति चौकस रहना चाहिए। अनुवादक को चाहिए कि वह पारिभाषिक शब्दों को आत्मसात कर उनका आवश्यकता के अनुसार सटीक पर्याय प्रयोग करे और लक्ष्य भाषा की प्रकृति एवं वाक्य-विन्यास की स्वाभाविकता के प्रति सतर्क भी रहे।

प्र.8. पारिभाषिक शब्दावली सम्बन्धी विभिन्न विचार धाराओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

पारिभाषिक शब्दावली सम्बन्धी विभिन्न विचारधाराएँ

आजादी के समय तक का परिदृश्य यह स्पष्ट करता है कि पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के लिए व्यक्तिगत, सामूहिक और संस्थागत स्तर पर प्रयास किए जाते रहे। लेकिन इन प्रयासों में मत-विभिन्नता देखने को मिलती है। इसका कारण था— हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र में भारत का तत्कालीन विविध-रूपी असाधारण परिदृश्य। जन-सामान्य अंग्रेजी भाषा नहीं जानता था और शिक्षित वर्ग अंग्रेजी भाषा एवं वैज्ञानिक शब्दों से परिचित था। खड़ी बोली में संस्कृत शब्दों का अधिकतम प्रयोग था और हिन्दी-भाषी प्रदेशों में लोग हिन्दी-उर्दू से परिचित थे। आम भाषा-व्यवहार में हिन्दी-उर्दू के बीच का भाषा-रूप अर्थात् हिन्दुस्तानी का प्रयोग अधिक था। इसी विविध-रूपी परिदृश्य में पारिभाषिक शब्दावली के सम्बन्ध में शुद्धतावादी, हिन्दुस्तानीवादी, अंग्रेजीवादी और समन्वयवादी विचारधाराएँ उभरकर सामने आईं। इन्हें 'पारिभाषिक शब्दावली संप्रदायों (Schools)' की संज्ञा प्रदान की जाती है। इन शब्दावली-संप्रदायों का क्रमशः विवेचन निम्न प्रकार से है—

1. **शुद्धतावादी दृष्टिकोण**—पारिभाषिक शब्दावली निर्माण सम्बन्धी शुद्धतावली विचारधारा को 'पुनरुद्धारवादी', 'राष्ट्रीयतावादी', 'संस्कृतवादी', 'प्राचीनतावादी' विचारधारा आदि अन्य अनेक नामों से भी अभिहित किया जाता है। इस वर्ग के लोग भारतीय भाषाओं की समस्त पारिभाषिक शब्दावली संस्कृत भाषा से लेने के पक्ष में हैं। इस विचारधारा मे विश्वास रखने वाले लोगों का मानना है कि संस्कृत में शब्द-रचना की अपार क्षमता है इसलिए किन्हीं अन्य स्रोतों से शब्द-ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है। वे यथासाध्य अधिक-से-अधिक पारिभाषिक शब्दों को प्राचीन संस्कृत वाङ्मय से लेना चाहते हैं, किन्तु जिन आधुनिक पारिभाषिक शब्दों के लिए संस्कृत में प्रतिशब्द उपलब्ध नहीं हो पाते हैं, उनके लिए समास पद्धति द्वारा दो या अधिक संस्कृत शब्दों के मेल से, अथवा संस्कृत शब्द में उपसर्ग-प्रत्यय आदि जोड़कर या फिर आवश्यक होने पर नई धातुएँ बनाकर उनमें प्रत्यय-उपसर्ग जोड़कर नए तत्सम शब्द (संस्कृतनिष्ठ पारिभाषिक

TOUCH 'n' PASS

शब्दावली) निर्मित करने के पक्षधर हैं। डॉ० रघुवीर ने इस दृष्टिकोण का नेतृत्व किया। वे भारतीय शब्द-भंडार को संस्कृतनिष्ठ बनाने के प्रबल समर्थक थे।

यह संप्रदाय पुनरुद्धारवादी इसलिए कहलाता है क्योंकि इस विचार-दृष्टि वालों ने प्राचीन भारतीय शास्त्रों में उपलब्ध शब्दों का उद्धार किया, अंग्रेजी के वैज्ञानिक-तकनीकी शब्दों के समतुल्य नए तत्सम शब्दों की रचना-प्रक्रिया में प्राचीन भाषा संस्कृत के व्याकरण को साधन बनाते हुए प्राचीन व्याकरणिक पद्धति को अपनाया।

शुद्धतावादी संप्रदाय के प्रमुख समर्थक डॉ० रघुवीर का अपनी भाषा को विदेशी शब्दों के प्रभाव से मुक्त रखने के प्रति आग्रह था। वे संसार की अन्य किसी भी भाषा की तुलना में हिन्दी के शब्दों में पारदर्शिता स्वीकार करते थे। उनका कहना था कि संस्कृत भाषा शब्द-निर्माण का अनंत स्रोत है क्योंकि इसकी 520 धातुओं, 20 उपसर्गों एवं 80 प्रत्ययों की सहायता से लाखों-करोड़ों शब्द बनाए जा सकते हैं। अपने शुद्धतावादी दृष्टिकोण के आधार पर डॉ० रघुवीर ने 1955 में प्रकाशित अपने प्रसिद्ध कोश 'A Comprehensive Engligh-Hindi Dictionary' में अंग्रेजी शब्दों के प्रतिशब्द दिए हैं और पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या की है। शब्द-रचना सम्बन्धी मुख्य विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(i) अंग्रेजी भाषा से शब्द लेने के बजाए वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत तथा पाली आदि भाषाओं में विरचित ग्रंथों के रूप में भारतीय परम्परा में विद्यमान उचित शब्दावली को ग्रहण करना। उदाहरण के लिए, 'octoroi' के लिए 'राजतरंगिणी' से 'द्वारादेय' शब्द लेना। इसी प्रकार 'tehsil' के लिए अशोक के शिलालेख से 'भुक्ति'; 'umpire' के लिए महाभारत के 'प्रमाण पुरुष'; 'auction' के लिए कौटिल्य के अर्थशास्त्र से 'कोशविक्रय'; 'earnest money' के लिए याज्ञवल्क्य के 'सत्यंकार'; 'will' के लिए मनुस्मृति से 'रिक्थपत्र'; 'invention' के लिए पाणिनि के 'उपज्ञा' आदि शब्दों को लेना।

(ii) भारतीय परम्परा का अनुसरण करते हुए डॉ० रघुवीर ने अंग्रेजी भाषा के तकनीकी शब्दों के लिए वर्तमान भाषा-साधनों (अर्थात् प्रचलित देशी-विदेशी शब्दों) के स्थान पर नए शब्दों का निर्माण किया। उदाहरण के लिए, 'federal' के लिए प्रचलित 'संघीय' शब्द के स्थान पर 'संघानीय' शब्द निर्मित किया। इसी प्रकार, 'time-barred' के लिए प्रचलित शब्द 'काल-बाधित' के स्थान पर 'काल तिरोहित'; 'deficit financing' के लिए 'घाटे की वित्त-व्यवस्था' के स्थान पर 'हीनार्थ प्रबंधन'; 'Fountain pen' के लिए 'मसीपथ'; 'general election' के लिए 'सामान्य निर्वाचन' आदि शब्द निर्मित किए।

(iii) जिन अवधारणाओं (अथवा वस्तुओं) के लिए शास्त्रीय परम्परा में शब्दों का अभाव है, उनके लिए संस्कृत व्याकरण के नियमों के अनुसार उपसर्ग प्रत्यय एवं धातुओं से नई शब्द-रचना करना। उदाहरण के लिए, Law + ful विधि + वत। इसी आधार पर Law + less + ness = विधि + हीन + ता; Tele + Vision = दूर + दर्शन; Tele + phone = दूर + भाष आदि शब्द बने। इस प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण हैं— Register-पंजी, Registered-पंजीकृत, Registrar-पंजीयक, Registration-पंजीकरण/पंजीयन।

(iv) डॉ० रघुवीर ने आवश्यकता पड़ने पर नए प्रत्ययों का निर्माण भी किया। उदाहरण के लिए 'धातु' शब्द से उन्होंने 'आतु' प्रत्यय बनाया और उसके आधार पर मिश्रातु (Alloy), चर्णातु (Calcium), तेजातु (Radium), हर्यातु (Barium), महातु (Platinum) आदि शब्दों का निर्माण किया। इसी प्रकार, गैसों के नामों के लिए डॉ० रघुवीर ने 'वाति' से 'आति' प्रत्यय बनाया और उसके आधार पर भूयाति (Nitrogen), शिथिराति (Neon), कोट्याति (Xenon) आदि शब्द निर्मित किए।

आदर्शवादी पुनरुद्धार की कामना से अनुप्रेरित डॉ० रघुवीर का शब्दावली निर्माण सम्बन्धी कार्य पूरी तरह से मौलिक, वैज्ञानिक एवं महत्त्वपूर्ण है। डॉ० रघुवीर के इस दृष्टिकोण के जहाँ अनेक प्रशंसक थे वहीं उनकी मान्यताओं को घोर विरोध करने वाले निदंकों की भी कमी नहीं रही। वस्तुत: शब्दावली निर्माण में डॉ० रघुवीर की भूमिका एवं योगदान का समुचित मूल्यांकन नहीं हुआ।

2. **हिन्दुस्तानीवादी विचारधारा**—पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में भाषा में प्रयोगवाद का पक्षधर वर्ग भी था। उनकी यह मान्यता थी कि हमारी मिश्रित संस्कृति के अनुरूप शब्दावली भी हिन्दी-उर्दू मिश्रित 'हिन्दुस्तानी' होनी चाहिए। इस कारण उनका संस्कृत, अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी तथा तद्भव-देशज तत्त्वों की सहायता से शब्दावली निर्माण के प्रयोग में

विश्वास था। हिन्दुस्तानी विचारधारा के प्रवर्तकों में डॉ० जाफर हसन; और पंडित सुंदरलाल का नाम अग्रगण्य है। डॉ० जाफर हसन का हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय से और पंडित सुन्दरलाल का इलाहाबाद की हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी से सम्बन्ध था। किन्तु इन दोनों संस्थाओं की विचारधाराओं में कमोबेश अंतर भी था।

उस्मानिया विश्वविद्यालय में उर्दू के व्याकरणिक ढाँचे में ढली विषयानुरूप शब्दावली बनाने का विशेष ध्यान रखा गया। तद्भव एवं विदेशी शब्दों में उर्दू व्याकरण में उपलब्ध पद्धति से 'ना', 'इयाना' प्रत्यय लगाकर कई शब्द बनाए गए। 'Centralise' के लिए 'केंद्रियाना', 'acknowledgement' के लिए 'रसीदियाना', 'normalise' के लिए 'नार्मलियाना', 'legalise' के लिए 'कानूनियाना', 'individualise' के लिए 'एकजनियाना', 'atomize' के लिए 'अणुयाना', 'standardise' के लिए 'स्टेंडर्डियाना' और 'particularise' के लिए 'खासियाना' शब्द इस प्रकार की शब्दावली निर्माण के उदाहरण हैं। इसी प्रकार, अलगाई 'रचनाई' 'रचनित', 'संकटिक', 'ठगित', 'तजित' आदि शब्द भी हैं जिनमें संस्कृत के प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है। वैसे नए शब्दों के साथ-साथ तत्सम शब्द भी दिए गए (जैसे, 'reaction'—'प्रतिक्रिया, पलटकारी 'revolution'—क्रांति, इंकलाब, 'absolutism'—अरोकवाद, निरंकुशवाद 'adaptation'—अनुकूलकरण, अपनाव; 'schedule'—अनुसूची, फेहरिस्त) और तद्भव शब्दों की ईजाद भी की गई (जैसे, abandoned = तजित, favourtism = पासकारी, retrospect = पिछदर्शन, sportine = खेलिक, dogmatism = हठमतवाद)। इसके अलावा, अंग्रेजी धातुओं के आधार पर नए शब्द भी रचे गए (जैसे, मार्केट, निगेटिव, नॉमहीनता, पोलिटिकी, ऑब्जेक्टिवता आदि)।

इलाहाबाद स्थित हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी के प्रमुख पं० सुन्दरलाल का शब्दावली निर्माण की दिशा में प्रयास भी इसी प्रकार का था। वे ऐसी शब्दावली चाहते थे जो भारत की 'सामासिक संस्कृति' का प्रतिनिधित्व करे, किन्तु वह संस्कृतनिष्ठ शब्दावली न हो। हिन्दुस्तानी का पक्षधर होने के कारण पं० सुंदरलाल की शब्दावली में हिन्दुस्तानी, उर्दू तथा खड़ी बोली के शब्दों का प्रयोग अधिक है और संस्कृत का बहुत कम। उनकी तद्भव रूपों के प्रति आस्था थी। 'संदेसा' (संदेश), 'ब्यौहार' (व्यवहार), 'ब्यौपार' (व्यापार), 'प्रमान' (प्रमाण), 'छेत्र' (क्षेत्र), 'देसीकरन' (देशीकरण) आदि शब्द प्रयोग उनकी इसी आस्था को पुष्ट करते हैं। इसके अतिरिक्त, उपसर्ग-प्रत्ययों के चुनाव में हिन्दी अथवा उर्दू के साधनों को व्यवहार में लाया गया। वे 'international' के लिए 'अंतरकौमी'; 'education' के लिए 'तालीम'; 'chairman' के लिए 'मसनदी'; 'Auditor General' के लिए 'सरपड़तालिया'; 'concurrent' के लिए 'संगचारी'; 'literature' के लिए 'अदब साहित्य'; 'import' के लिए 'आयासी'; 'bye-law' के लिए 'छुट-कानून'; 'trade' के लिए 'ब्यौपार'; 'disqualification' के लिए 'अजोगता'; 'emergency' के लिए 'अचानकी'; 'meeting' के लिए 'मिलनी'; 'adjustment' के लिए 'बैठ-बिठाव'; 'communication' के लिए 'आवाजाई'; 'disfigure' के लिए 'रूप-बिगाड़'; 'disabled' के लिए 'अपाहिज'; और 'adulteration' के लिए 'मिलावट' आदि शब्दों को प्रश्रय देते थे।

इस प्रकार, हिन्दुस्तानी विचारधारा के समर्थकों ने हिन्दी भाषा को सरल, अधिक प्रयोगक्षम और बोधगम्य बनाने के लिए 'मिली-जुली शब्दावली' का निर्माण किया। लेकिन आधारभूत संरचनात्मक ढाँचा न होने के कारण इस दृष्टि के आधार पर शब्द-रचना प्रक्रिया को आगे बढ़ा पाना सम्भव नहीं था। हालाँकि इसे कुछ शब्दों में सफलता मिली किन्तु हिन्दी भाषी समाज ने शब्दावली के देशीकरण की विचारधारा को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया।

3. **अंतर्राष्ट्रीयतावादी विचारधारा**—शुद्धतावादी विचारधारा को 'शब्द-ग्रहणवादी', 'आदानवादी' एवं 'अंग्रेजीवादी' विचारधारा की संज्ञा भी प्रदान की जाती है। इसके पोषक अंग्रेजी तथा अंतर्राष्ट्रीय शब्द अपनाने के पक्षधर थे। इस मत के समर्थकों में डॉ० शांतिस्वरूप भटनागर, डॉ० जे०सी० घोष, डॉ० बीरबल साहनी, डॉ० डी० लूथरा, चक्रवर्ती सी० राजगोपालाचारी जैसे अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील और सरकारी अधिकारी आदि सरीखे व्यक्ति थे। इनका यह मानना रहा है कि विज्ञान-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास पाश्चात्य देशों की देन है इसलिए जिन अवधारणाओं और वस्तुओं के लिए हिन्दी में शब्द नहीं हैं उनके अंग्रेजी एवं अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दों को ज्यों का त्यों या फिर थोड़े-बहुत परिवर्तन करते हुए हिन्दी में ले लिया जाए। उनकी दृष्टि में ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं में नए शब्द हमेशा आते रहेंगे तो फिर हम कब तक आंतरिक अथवा देशीय स्रोतों से शब्द

TOUCH 'n' PASS

खोजते/बनाते रहेंगे। अंग्रेजी भाषा में भी विभिन्न भाषाओं से शब्द-ग्रहण सम्बन्धी प्रवृत्ति व्याप्त है और इस प्रवृत्ति को हिन्दी में भी अपनाना उपयुक्त रहेगा।

शब्द-ग्रहण सम्बन्धी इस धारणा को दो पक्षों से देखा जा सकता है—(1) शब्दों को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लेना; अथवा (2) अंग्रेजी शब्दों में उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर या फिर अपनी भाषा की प्रकृति के अनुसार ध्वनि परिवर्तन करके शब्दों को अनुकूलित रूप में चलन में लाना। 'रेडियो', 'ऑक्सीजन', 'स्टेशन', 'पुलिस', 'लीटर', 'मीटर', 'हीटर', 'राडार', 'गीजर', 'हेक्टेयर', 'फोकस' आदि असंख्य शब्द ज्यों के त्यों शब्द ग्रहण करने के उदाहरण हैं और 'फोकस' जैसे शब्दों के साथ उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर 'फोकसन' और 'फोकसित' आदि शब्द अनुकूलन का रूप है। वहीं 'कामदी', 'तकनीक', 'त्रासदी', 'अंतरिम', 'अकादमी' आदि शब्द ध्वनि-परिवर्तन के रूप में अनुकूलन का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

वस्तुत: यह दृष्टि काफी हद तक सुविचारित एवं उपयुक्त प्रतीत होती है किन्तु इस विचारधारा को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि अगर ऐसा किया जाए तो एक दिन स्थिति ऐसी बन जाएगी जब अपनी भाषा पूरी तरह से कृत्रिम रूप धारण कर लेगी है और तब उसका अपना कोई व्यक्तित्व-अस्तित्व ही नहीं रह जाएगा।

4. **लोकवादी विचारधारा**—पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में लोकवादी प्रवृत्ति को 'स्वभाषावादी विचारधारा' के नाम से भी जाना जाता है। इस विचार-दृष्टि के समर्थकों ने जन-प्रयोग से शब्द ग्रहण करने या जन-प्रचलित शब्दों के योग से शब्द निर्माण का पक्ष लिया; जैसे— 'infiltrator' के लिए 'घुसपैठिया' एवं 'defector' के लिए 'दलबदलू' अथवा 'आयाराम गयाराम' शब्द का प्रयोग करना जन-प्रयोग से शब्द ग्रहण करने की लोकवादी विचार-दृष्टि का परिचायक है। इसी प्रकार, 'detention' के लिए 'नजरबंद', 'Power House' के लिए 'बिजलीघर', 'Post Office' के लिए 'डाकघर', 'train' के लिए 'रेलगाड़ी', 'draft' के लिए 'मसौदा' और 'Maternity Home' के लिए 'जच्चाघर' आदि जन-प्रचलित शब्दों के योग से निर्मित पारिभाषिक शब्द हैं। इसी भाँति कुछ अन्य शब्द हैं— 'बिचौलिया', 'फिरौती', 'हुंडी', 'मंदड़िया', 'तेजड़िया' आदि। वैसे, सभी प्रकार के पारिभाषिक शब्दों को जन-प्रयोग में से जुटा पाना इस विचारधारा की सीमा रही है क्योंकि इसके आधार पर पारिभाषिक शब्दों की भव्य इमारत को खड़ा नहीं किया जा सकता।

पारिभाषिक शब्दावली सम्बन्धी इस तरह की विचारधाराओं के आधार पर शब्दावली निर्माण का निर्माण करने से इस क्षेत्र में अराजकता की स्थिति का पैदा होना स्वाभाविक था। वास्तव में किसी भी भाषा-समाज को अतिशुद्धतावादी नियमों अथवा भाषा के सहज नियमों को तोड़-मरोड़कर या विदेशी शब्दों से अभिभूत करना स्वीकार्य नहीं है। ऐसे में शब्द-रचना की कठिन प्रक्रियाओं को छोड़ने एवं विभिन्न विचारधाराओं के सही बिंदुओं के चयन से समन्वयवादी दृष्टि अपनाना ही शेष रह जाता है। इसके आधार पर एवं नव-शब्द निर्माण का समन्वय किया जा सकता है। आजादी के बाद 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' ने इसी (समन्वयवादी) व्यावहारिक दृष्टि के आधार पर शब्दावली निर्माण कार्य किया, जो निरंतर आज भी जारी है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कब हुआ?

(क) 11 दिसम्बर, 1949 (ख) 11 दिसम्बर, 1950 (ग) 12 दिसम्बर, 1951 (घ) 12 दिसम्बर, 1949

उत्तर (ख) 11 दिसम्बर, 1950

प्र.2. पारिभाषिक शब्दावली की विकास प्रक्रिया को बाँटा गया है–

(क) दो भागों में (ख) तीन भागों में (ग) चार भागों में (घ) कोई नहीं

उत्तर (क) दो भागों में

प्र.3. निम्नलिखित में से कौन-सी पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की युक्ति नहीं है?

(क) अंगीकरण (ख) अनुकूलन (ग) नवनिर्माण (घ) प्रणाली

उत्तर (घ) प्रणाली

प्र.4. हिन्दी भाषा में शब्द के कितने स्त्रोत आते हैं?

(क) दो (ख) चार (ग) दस (घ) बारह

उत्तर (ख) चार

प्र.5. Stamp Duty का पारिभाषिक शब्द क्या है?
(क) कर्त्तव्य पालन (ख) कर्त्तव्य कार्य (ग) मुद्रांक शुल्क (घ) मुद्रांक मोहर
उत्तर (ग) मुद्रांक शुल्क

प्र.6. Commissioner का हिन्दी पर्याय है–
(क) प्रभारी (ख) आयुक्त (ग) अधिशासी अधिकारी (घ) क्षेत्राधिकारी
उत्तर (ख) आयुक्त

प्र.7. Engineer का हिन्दी पर्याय है–
(क) अभियन्ता (ख) अभिकर्त्ता (ग) अधिशासी अधिकारी (घ) यन्त्र परिचालक
उत्तर (क) अभियन्ता

प्र.8. Assembly का पारिभाषिक अर्थ है–
(क) सभा (ख) विधान सभा (ग) परिषद् (घ) लोकसभा
उत्तर (क) सभा

प्र.9. 'विशिष्ट विषय जैसे विज्ञान अथवा कला विषय की तकनीकी अभिव्यक्ति के लिए निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त एक शब्द अधिकांशतः कला का शब्द' कथन किसका है?
(क) डॉ० गोपाल शर्मा (ख) रैंडम हाउस (ग) डॉ० पूरन चंद टंडन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) रैंडम हाउस

प्र.10. 'अनुवाद कला : कुछ विचार' पुस्तक के लेखक हैं–
(क) रैंडम हाउस (ख) श्री राजेंद्र लाल मिश्र (ग) डॉ गोपाल शर्मा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) डॉ गोपाल शर्मा

प्र.11. 'अनुवाद : सिद्धान्त और समस्याएँ' के लेखक कौन हैं?
(क) डॉ० गोपाल शर्मा (ख) डॉ० दंगल झाल्टे (ग) श्री जीवन नायक (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) श्री जीवन नायक

प्र.12. 'अनुवाद : सिद्धान्त और समस्याएँ' के सम्पादक कौन हैं?
(क) डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव (ख) प्रो० कृष्ण कुमार गोस्वामी
(ग) (क) व (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) (क) व (ख) दोनों

प्र.13. अनुवाद साधना के लेखक हैं–
(क) डॉ० दंगल झाल्टे (ख) डॉ० पूरनचंद टंडन (ग) रैंडम हाउस (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) डॉ० पूरनचंद टंडन

प्र.14. ''विशेष ज्ञान के क्षेत्र में जब कोई शब्द निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है तो उसे पारिभाषिक शब्द कहते हैं'' कथन किसका है?
(क) डॉ० दंगल झाल्टे (ख) श्री जीवन नायक (ग) पूरनचंद (घ) रैंडम हाउस
उत्तर (ख) श्री जीवन नायक

प्र.15. श्री राजेन्द्र लाल मिश्र ने पारिभाषिक शब्दों को कितने वर्गों में विभाजित किया है?
(क) चार (ख) छः (ग) आठ (घ) दो
उत्तर (ख) छः

प्र.16. 'प्रयोजन मूलक हिंदी' किसकी कृति है?
(क) डॉ० भोलानाथ तिवारी (ख) डॉ० विनोद गोदरे (ग) श्री महेंद्र चतुर्वेदी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) डॉ० विनोद गोदरे

TOUCH n PASS

प्र.17. Census का अर्थ है–
(क) मतगणना (ख) जनगणना (ग) शताब्दी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) जनगणना

प्र.18. Domicile का अर्थ है–
(क) अधिवास (ख) निवास (ग) प्रवास (घ) सहवास
उत्तर (क) अधिवास

प्र.19. Emoluments का पारिभाषिक अर्थ क्या है?
(क) वेतन (ख) परिलब्धियाँ (ग) प्राप्तियाँ (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) परिलब्धियाँ

प्र.20. Mint का पारिभाषिक रूप है–
(क) खान (ख) कोषागार (ग) टकसाल (घ) वसीयत
उत्तर (ग) टकसाल

प्र.21. Regulated का पारिभाषिक अर्थ है–
(क) विनियमित (ख) नियमित (ग) नियन्त्रित (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) विनियमित

प्र.22. Sedition का अर्थ है–
(क) राजभक्ति (ख) समर्पण (ग) राजद्रोह (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) राजद्रोह

प्र.23. Tenure का अर्थ है–
(क) अवधि (ख) संवर्ग (ग) प्रतिबंध (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) अवधि

प्र.24. Agenda के लिए हिन्दी शब्द है–
(क) कार्य (ख) कार्य-सूची (ग) अनुसूची (घ) कार्यपालन
उत्तर (ख) कार्य-सूची

प्र.25. Additional Secretary का हिन्दी रूपान्तर है–
(क) अपर सचिव (ख) प्रशासक अधिकारी (ग) कृषि (घ) राजदूत
उत्तर (ख) प्रशासक अधिकारी

प्र.26. 'अंग्रेजी-हिन्दुस्तानी कोश' 1787 में किसके द्वारा प्रकाशित किया गया?
(क) जॉन गिलक्राइस्ट (ख) डॉ० हेरिस (ग) डॉ० स्प्रिंगर (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) जॉन गिलक्राइस्ट

प्र.27. किस विकल्प में Endorsement का पारिभाषिक शब्द नहीं होगा?
(क) बेचान (ख) समर्थन (ग) पृष्ठांकन (घ) मूल्यांकन
उत्तर (घ) मूल्यांकन

प्र.28. सरकारी कार्य-व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली भाषा को कहा जाता है–
(क) कार्यालयी (ख) साहित्यिक (ग) वैदिक (घ) अपभ्रंश
उत्तर (क) कार्यालयी

प्र.29. राष्ट्रपति के किस सन् के आदेश के बाद कार्यालयी हिन्दी के अनुवाद कार्य ने गति पकड़ी?
(क) 1955 (ख) 1956 (ग) 1957 (घ) 1958
उत्तर (क) 1955

TOUCH 'n' PASS

प्र.30. हिन्दी की विधि शब्दावली का संग्रह और प्रकाशन का सर्वप्रथम श्रेय किसको है?
(क) एच०एच० विल्सन (ख) बी०एच० विल्सन (ग) एम०एच० विल्सन (घ) बी०आर० विल्सन

उत्तर (क) एच०एच० विल्सन

प्र.31. किस सन में विधि शब्दावली का प्रकाशन हुआ?
(क) 1970 (ख) 1972 (ग) 1974 (घ) 1978

उत्तर (क) 1970

प्र.32. विधि शब्दावली करने के लिए कितनी बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है?
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच

उत्तर (क) दो

प्र.33. निम्नलिखित में से कौन अनुवाद का साधन है?
(क) कोश (ख) पारिभाषिक शब्दावली (ग) कम्प्यूटर (घ) ये सभी

उत्तर (घ) ये सभी

प्र.34. किसके द्वारा पारिभाषिक शब्दावली के सिद्धान्तों का निर्माण किया गया है?
(क) वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग (ख) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
(ग) अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (घ) ये सभी

उत्तर (घ) ये सभी

प्र.35. किस संप्रदाय का मानना है कि हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली के लिए अंग्रेजी तथा अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को यथास्थिति अपना लेना चाहिए?
(क) पुनरुत्थान वादी (ख) आदानवादी (ग) समन्वयवादी (घ) प्रयोगवादी

उत्तर (ख) आदानवादी

प्र.36. Ad-HoC का अर्थ क्या होता है?
(क) समर्थ (ख) तदर्थ (ग) अर्थ (घ) लिप्यर्थ

उत्तर (ख) तदर्थ

प्र.37. ''पारिभाषिक शब्दावली वह कच्चा माल है जिससे कुछ भी बनाया जा सकता है'' यह कथन किसका है?
(क) भोलानाथ तिवारी (ख) पृथ्वी नाथ पांडे (ग) देवेन्द्र शर्मा (घ) देवकीनंदन ठाकुर

उत्तर (ग) देवेन्द्र शर्मा

प्र.38. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?
(क) डॉ० राधाकृष्णन (ख) डॉ० देवेन्द्र शर्मा
(ग) डॉ० एस०सी० कोठारी (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ग) डॉ० एस०सी० कोठारी

TOUCH 'n PASS

UNIT-VI

अनुवाद का पुनरीक्षण, मूल्यांकन तथा समीक्षा

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद में पुनरीक्षण का क्या महत्त्व हैं?

उत्तर भाषायी संशोधन करते समय पुनरीक्षण लक्ष्यभाषा में अनुदित पाठ में आई भाषागत एवं शैलीगत अशुद्धियों को भी सुधारने का यत्न करता है। वह लक्ष्यभाषा की भाषागत व शैलीगत प्रकृति को ध्यान में रखकर किए गए अनुवाद को भी देखता है और महत्त्वपूर्ण चरण लक्ष्यभाषा की सांस्कृतिक सामाजिक स्वीकार्यता में अनुदित पाठ को देखना होता है।

प्र.2. पुनरीक्षण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर पुनरीक्षण अनुवाद की जाँच और सुधार की प्रक्रिया है जो अनुवाद पूरा हो जाने के बाद की जाती है। इस प्रक्रिया में पुनरीक्षण करने वाला व्यक्ति पुनरीक्षक कहलाता है।

प्र.3. अनुवाद प्रशिक्षक किसे कहते हैं?

उत्तर पुनरीक्षक अनुवाद की जाँच, सुधार और सम्पादन करता है। इसके अतिरिक्त भी वह एक और महत्त्वपूर्ण कार्य वहन करता है। यह दायित्व है अनुवाद प्रशिक्षण का। जो अनुवाद के पुनरीक्षण में सुधार व परिवर्तन का कार्य करता है।

प्र.4. पुनरीक्षण और मूल्यांकन में क्या अन्तर है?

उत्तर पुनरीक्षण और मूल्यांकन दोनों ही अनुवाद के बाद की प्रक्रियाएँ है और दोनों में ही अनुवाद की जाँच की जाती है। पुनरीक्षण में जहाँ जाँच के साथ सुधार, संशोधन और सम्पादन शामिल है जबकि मूल्यांकन में केवल जाँच की जाती है। जाँचने के पश्चात् अनुवाद के स्वरूप और गुणवत्ता, उसकी उपलब्धियों और अनुपलब्धियों पर टिप्पणी दी जाती है।

प्र.5. समीक्षा की अवधारणा क्या है?

उत्तर समीक्षा किसी चीज या पाठ की गुणवत्ता का निर्णय या चर्चा है। समीक्षा का अर्थ अध्ययन के भाग के रूप में किसी विषय पर फिर से विचार करना या किसी अन्य समय को देखना भी है। संज्ञा और क्रिया दोनों के रूप में समीक्षा मे कई अन्य इंद्रियाँ हैं। समीक्षा किसी चीज या पाठ की आलोचना है— किसी चीज के अच्छे और बुरे बिन्दुओं पर एक दृष्टि डालना है।

प्र.6. समीक्षा के जनक कौन हैं?

उत्तर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिन्दी पत्रकारिता, नाटक और काव्य के क्षेत्र में उनका बहुमूल्य योगदान रहा। हिन्दी में नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। अत: भारतेन्दु को समीक्षा का जनक माना जाता है।

प्र.7. नई समीक्षा के प्रवर्तक कौन हैं?

उत्तर प्रस्तावना नई समीक्षा की शुरुआत पहले-पहल अंग्रेजी साहित्य में हुई। नई समीक्षा बीसवीं शताब्दी में आंग्ल-अमेरिकी साहित्य में आलोचना की एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में उभरी। **टी०एस० एलियट** को नई समीक्षा के जनक माने जाते हैं।

प्र.8. समीक्षा का क्या महत्त्व है?

उत्तर पाठकों को किसी वस्तु या विषय स्थिति को समझने की सहूलियत के लिए समीक्षा की आवश्यकता होती है यानि कि (review), **उदाहरणार्थ**, हम किसी भी रेस्तरां में ऑनलाइन खाने के विस्तृत जानकारी के लिए उसकी कस्टमर द्वारा दी गई समीक्षा पर नजर डालते हैं और उसी के अनुसार उसका चयन करते हैं और खाने का ऑर्डर देते हैं वैसे ही किसी पुस्तक की समीक्षा करना।

TOUCH 'n PASS

प्र.9. समीक्षा व विवेचना में क्या अन्तर है?

उत्तर समीक्षा का प्रयोग वैज्ञानिक विश्लेषण से अलग सभी विषय वस्तु, यथा साहित्यिक कृतियों, फिल्मों इत्यादि के विवेचन में ही विशेषत: होता है। विश्लेषण में विश्लेषणकर्त्ता के द्वारा अपने मन्तव्य के अभिव्यक्ति का कम प्रयोजन होता है जबकि समीक्षा में समीक्षक अपने दृष्टिकोण का अधिकतम प्रयोग कर सकते हैं; जैसे कि धन्यावाद एवं साधुवाद।

प्र.10. न्यायिक पुनरीक्षण का क्या अर्थ है?

उत्तर न्यायिक पुनरावलोकन से तात्पर्य न्यायालय की उस शक्ति से है जिस शक्ति के बल पर वह विधायिका द्वारा बनाये कानूनों, कार्यपालिका द्वारा जारी किये गये आदेशों, तथा प्रशासन द्वारा किये गये कार्यों की जाँच करती है कि वह मूल ढाँचें के अनुरूप हैं या नहीं।

प्र.11. एक अच्छे अनुवाद में किन गुणों का होना आवश्यक है?

उत्तर एक अच्छे अनुवाद में चार गुणों का होना अनिवार्य है—(i) मूलनिष्ठता, (ii) पठनीयता, (iii) बोध गम्यता तथा (iv) प्रयोजन सिद्धि।

प्र.12. वर्णनात्मक अनुवाद से क्या तात्पर्य है?

उत्तर इसके अन्तर्गत मूल पाठ को अनुवाद से मिलान करते हुए अनुवाद की समीक्षा की जाती है। संरचना और शिल्प दोनों स्तर पर अनुवाद का मूल्यांकन किया जाता है।

प्र.13. मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन महत्त्वपूर्ण बिन्दु क्या हैं?

उत्तर वास्तव में मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन मुख्य सोपान हैं। ये तीन सोपान क्रमश: (i) उद्देश्यों का निर्धारण, (ii) अधिगम क्रियाओं का आयोजन तथा (iii) मूल्यांकन करना हैं।

प्र.14. तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा से क्या अभिप्राय है?

उत्तर तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा में मूल पाठ के साथ उसके एक से अधिक अनुवादों की समीक्षा की जाती है। विभिन्न अनुवाद को तुलनात्मक दृष्टि से देखते हुए उनकी उपलब्धियों और सीमाओं का विश्लेषण किया जाता है।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. पुनरीक्षण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर

पुनरीक्षण

पुनरीक्षण अनुवाद की जाँच और सुधार की प्रक्रिया है जो अनुवाद पूरा हो जाने के बाद की जाती है। अंग्रेजी में इसके लिए Vetting शब्द इस्तेमाल होता है। पुनरीक्षण करने वाला व्यक्ति पुनरीक्षक कहलाता है। जैसा कि पुनरीक्षण नाम से ही स्पष्ट है यह अनुवाद को फिर से देखनें, मूलपाठ से मिलाने, दोनों की परस्पर तुलना करने और अनुवाद में अपेक्षित सुधार संशोधन का कार्य है। इसमें अनुवाद की विभिन्न स्तरों पर और कोणों से जाँच की जाती है तथा जहाँ भी आवश्यक हो 'उसमें सुधार किया जाता है। इस दृष्टि से इस अनुवाद को सँवारना और उसका संपादन करना भी कहा जा सकता है। मूल और अनुवाद की तुलना तथा अनुवाद की उपयुक्तता-अनुपयुक्तता की जाँच परख करने के कारण इसे अनुवाद की समीक्षा करना भी कहा जाता है। 'समीक्षा' की बजाए पुनरीक्षण शब्द अधिक उपयुक्त है क्योंकि किसी पाठ अथवा कृति की समीक्षा करते समय उसकी गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जाता है। उसकी सीमाओं और सम्भावनाओं पर समीक्षक अपनी राय देता है। लेकिन पुनरीक्षण की प्रक्रिया में पुनरीक्षण अपनी राय या टिप्पणी नहीं देता, अनुवाद में ही सुधार संशोधन-सम्पादन करता है और उसे बेहतर बनाने का प्रयास करता है।

अंग्रेजी का Revision शब्द भी दोबारा अवलोकन और जाँच के संदर्भ में उपयुक्त होता है। इस दृष्टि से Vetting और Revision काफी निकट अर्थ रखते हैं। लेकिन अनुवाद के संदर्भ में Vetting शब्द ही उपयुक्त होता है। यह अनुवाद प्रक्रिया का तकनीकी पारिभाषिक शब्द है जो सूचनापरक साहित्य के अनुवाद के विशेषरूप से सम्बन्द्ध है। वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक, वाणिज्यिक, विधिक तथा अन्य सूचना प्रधान विषयों के अनुवाद में इसका विशिष्ट महत्त्व है। साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में पुनरीक्षण शब्द अक्सर नहीं चलता है। कारण, साहित्यिक अनुवाद प्राय: स्वप्रेरणा से और सर्जनात्मक इच्छा की पूर्ति के

TOUCH 'n' PASS

लिए किया जाता है। इसमें अनुवादक भाव-विधान तथा शिल्प सम्बन्धी छूट लेने का अधिकारी होता है। अत: ऐसे अनुवादों के पुनरीक्षण की अपेक्षा नहीं होती। उनकी तो समीक्षा या मूल्यांकन होता है।

हाँ संस्थागत स्तर पर जब साहित्यिक अनुवाद कराया जाता है— साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट या ऐसी ही अन्य संस्थाएँ जब किसी कृति का अनुवाद करती हैं तो उस अनुवाद की जाँज उस क्षेत्र-विशेष के किसी विद्वान द्वारा कराती है। लेकिन यह जाँच भी मूल्यांकनपरक ही होती है।

प्र.2. अनुवाद के संदर्भ में पुनरीक्षण प्रक्रिया किसके द्वारा की जाती है?

उत्तर

अनुवाद के संदर्भ में पुनरीक्षण प्रक्रिया

पुनरीक्षण की प्रक्रिया में क्या-क्या कार्य किए जाते हैं यह जानने के बाद आपके मन में सहज सवाल उठा होगा कि पुनरीक्षण किसका कार्य है। उसे कौन करता है। पुनरीक्षण की प्रक्रिया का अध्ययन करते समय आपने देखा कि यह अनुवाद का अगला चरण है। यानी अनुवाद हो जाने के बाद उसमें सुधार-संशोधन का कार्य है। इस दृष्टि से पुनरीक्षण वही कर सकता है जो अनुवाद कर सकता है यानी अनुवादक ही पुनरीक्षण कर सकता है तो क्या अनुवादक स्वयं अपने अनुवाद का पुनरीक्षण करता है? अनुवादक द्वारा अपने अनुवाद के मूल से मिलान और सुधार को जाँच तो कहा जा सकता है, पुनरीक्षण नहीं।

इससे यह स्पष्ट है कि पुनरीक्षक अनुवादक स्वयं न होकर अन्य व्यक्ति होता है। यह अन्य व्यक्ति कौन है?

संस्थागत स्तर पर कराये गए अनुवाद के लिए औपचारिक रूप से पुनरीक्षण की व्यवस्था होती है। अनुवादकों द्वारा अनुवाद कर लिए जाने के बाद वह अनुवाद पुनरीक्षक को सौंपा जाता है जो पुनरीक्षक करके अनुवाद को अंतिम रूप देता है। विभिन्न सरकारी कार्यालयों तथा संस्थाओं में पुनरीक्षण के लिए बाकायदा नियुक्ति होती है और इस पद पर कार्य करने वाला अधिकारी अनुवाद अधिकारी अथवा हिन्दी अधिकारी या सहायक निदेशक होता है। अनुवाद से सम्बन्द्ध अन्य संस्थाएँ जो अनुवाद कराती है वे अपना पुनरीक्षण कार्य वरिष्ठ विद्वानों अथवा अनुवाद के क्षेत्र के वरिष्ठ और जाने-माने लोगों से कराती हैं।

वैयक्तिक स्तर पर किए गए अनुवाद को भी अनुवादक विषय और भाषा के जानकार व्यक्ति को पढ़ने के लिए देता है और उसके सुझावों पर विचार करता है। दोनों ही स्थितियों में पुनरीक्षक अनुवाद के क्षेत्र का अनुवादक से अधिक जानकार, अनुभवी और वरिष्ठ व्यक्ति होता है। कहा जा सकता है कि पुनरीक्षक बेहतर और उच्चतर श्रेणी का अनुवादक होता है जिसमें स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की गहन जानकारी के अलावा गम्भीर विवेक और आत्मविश्वास होता है। मूलपाठ और अनुदित पाठ की तुलना वह बहुत बारीकी से कर लेता है। किसी प्रकार की भ्रांति का शिकार हुए बगैर वह उपयुक्त-अनुपयुक्त की पहचान करता है। उसमें शब्द के सही प्रयोग के विषय में निर्णय की क्षमता होती है और अनुवाद को लेकर वह किसी प्रकार की दुविधा में नहीं रहता। अपनी इन क्षमताओं से वह अनुवाद को सँवारता और अधिक सुगढ़ बनाता है।

प्र.3. अनुवाद में पुनरीक्षक प्रशिक्षण पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

अनुवाद में पुनरीक्षक प्रशिक्षण

पुनरीक्षक अनुवाद की जाँच, सुधार और सम्पादन करता है। इसके अलावा भी वह एक और महत्त्वपूर्ण दायित्व वहन करता है यह दायित्व है अनुवाद प्रशिक्षक का। इसके लिए पुनरीक्षक कोई कक्षा अथवा कार्यशाला नहीं चलाता। अनुवाद के पुनरीक्षण के दौरान वह जो सुधार और परिवर्तन करता है, उन्हें अनुवादक को दिखाया जाता है। अनुवादक अपने अनुवाद और उसमें किए गए संशोधनों की तुलना करता है। ये संशोधन एक तरह से अध्यापकीय टिप्पणियों (Remarks) का कार्य करते हैं। अनुवाद दोनों की तुलना करने पर समझ जाता है कि उसने कहाँ समझने या प्रस्तुत करने में चूक की है अथवा कहाँ बात को और बेहतर ढंग से या प्रभावशाली ढंग से कहा जा सकता है। जिन संस्थाओं में पुनरीक्षक औपचारिक ढंग से नियुक्त हैं वहाँ तो अनुवाद उनकी ही देखरेख में होता है। अनुवादक को कहाँ कहीं भी समझने, उपयुक्त पर्याय तलाशने अथवा अभिव्यक्त करने में कठिनाई होती है वही वह पुनरीक्षक से सम्पर्क करता है। पुनरीक्षक उसकी समस्या का समाधान देता है। अपने अनुभव और बेहतर जानकारी के आधार पर वह अनुवादक का मार्गदर्शन करता है। संदेह की स्थितियों में वह सही समाधान देकर न केवल अनुवादक का संदेह निवारण करता है बल्कि उसे सही-गलत की पहचान का आत्मविश्वास प्रदान कराने की कोशिश करता है। अच्छे पुनरीक्षक के मार्गदर्शन में अनुवादक अपनी ग्रहणशीलता और अभिव्यक्ति क्षमता को पर्याप्त ढंग से परिमार्जित कर पाता है। वह पुनरीक्षित सामग्री का पुन:पठन करके अपनी भूलों को समझता है और भविष्य में उन भूलों से बचता है। इतना ही नहीं जब कभी अनुवादक महसूस करता है कि वह पुनरीक्षित संशोधन से सहमत नहीं है तो वह पुनरीक्षक से उस विषय पर विचार-विमर्श करके अपनी शंका का समाधान कर सकता है।

इस तरह पुनरीक्षक अनुवादकों की अनुवाद सीखने को प्रक्रिया में उनके प्रशिक्षक का कार्य करता है।

प्र.4. अनुवाद मूल्यांकन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर

अनुवाद मूल्यांकन

पुनरीक्षण और मूल्यांकन दोनों ही अनुवाद के बाद की प्रक्रियाएँ है और दोनों में ही अनुवाद की जाँच की जाती है। पुनरीक्षण में जहाँ जाँच के साथ सुधार, संशोधन और सम्पादन शामिल होता है वहाँ मूल्यांकन में केवल जाँच की जाती है। जाँचने के पश्चात् अनुवाद के स्वरूप और गुणवत्ता, उसकी उपलब्धियों और अनुपलब्धियों पर टिप्पणी दी जाती है।

अनुवाद मूल्यांकन के लिए अंग्रेजी में दो शब्द प्रचलित हैं Translation quality Assessment और Translation Evaluation। वास्तव में दोनों का ही सम्बन्ध अनुवाद की गुणवत्ता की जाँच से है। मूल्यांकन द्वारा यह निर्णय दिया जाता है कि अनुदित पाठ मूल पाठ के स्तर का है अथवा नहीं, उसके सहपाठ के रूप में प्रयुक्त हो सकता है अथवा नहीं। साथ ही यह भी पता लगाया जाता है कि मूलपाठ से अलग रखे जाने पर (अथवा उन लोगों द्वारा पढ़े जाने पर जो स्रोत भाषा नहीं जानते) अनुदित पाठ उस सम्पूर्ण संदेश और उसमें निहित आशय का हवन करता है अथवा नहीं जो मूल पाठ में निहित है। ऊपर अंग्रेजी में दिए गए Assessment तथा Evaluation के लिए यद्यपि हिन्दी में एक ही पर्याय मूल्यांकन प्रयुक्त होता है तथापि दोनों में पर्याप्त अंतर है।

Quality Assessment मुख्यतया सूचनापरक पाठ (Text) का होता है। सार्वजनिक सूचना के लिए सार्वजनिक स्थलों पर लगे बोर्डों पर दी गई सूचना, रेलवे प्लेटफार्मों, बस अड्डे, हवाई अड्डों आदि पर यात्रियोपयोगी सूचनाएँ और यातायात सम्बन्धी जानकारी आदि हो सकती है। इसके अलावा उद्योग निर्मित वस्तुओं के लेबलों पर अथवा उनके साथ सप्लाई की जाने वाली पुस्तिकाओं, पर्चों, पैम्फ्लेटों आदि पर दी गई सूचना भी हो सकती है। व्यापक वर्ग के उपयोग के लिए दी गई वे सभी सूचनाएँ जो पढ़कर तात्कालिक समझी और उपयोग में लाई जाने वाली हों ऐसे पाठों के अंतर्गत आती हैं। इन सूचनाओं का अनुवाद विभिन्न भाषाओं के आम लोगों को तुरन्त संप्रेषण की दृष्टि से किया जाता है।

Evaluation में भी मूलरूप से अनुवाद की गुणवत्ता की ही जाँच की जाती है लेकिन इस शब्द का प्रयोग विविध विषयों के पाठों और कृतियों के अनुवादों की जाँच के लिए प्रयुक्त होता है। इसमें सूचनापरक और सार्वजनिक दोनों के संदर्भ में प्रयुक्त गुणवत्ता की जाँच के साथ-साथ अनुवाद के महत्त्व की स्थापना भी शामिल होती है। यदि मूल्यांकन किसी साहित्यिक रचना का किया जा रहा है तो यह पता लगाया जाता है कि मूलकृति का संदेश अनुवाद में किस हद तक वहन हुआ है। अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवाद ने कृति में क्या छोड़ा है और क्या जोड़ा गया है। क्या कृतिकार के संदेश के अतिरिक्त कोई और संदेश भी अनुवाद वहन कर रहा है यदि हाँ तो वह क्या है? अनुवाद की पुन: सृजन प्रक्रिया के दौरान क्या भाषा और भाव के स्तर पर कोई नूतन उद्‌भावना हुई है। यदि हुई है तो वह किस कारण हुई है अनुवादक की अपनी मनोभूमिका के कारण अथवा रचना और अनुवाद के बीच देश-काल के अंतराल के कारण।

भाषा-शैली के स्तर पर भी मूल और अनुवाद की तुलना करते हुए अनुदित पाठ की जाँच की जाती है। फिर लक्ष्यभाषा की सर्जनात्मक रचनाओं से अनुदित कृति की तुलना की जाती है।

प्र.5. अनुवाद समीक्षा के स्वरूप एवं प्रकृति को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

अनुवाद समीक्षा : स्वरूप और प्रकृति

अनुवाद की जाँच के संदर्भ में प्रचलित एक अन्य शब्द है— अनुवाद समीक्षा। अनुवाद समीक्षा अनुवाद सिद्धान्त का अनुप्रायोगिक पक्ष है। अनुवाद समीक्षा का अभिप्राय मूलपाठ की तुलना में अनुदित पाठ के गुण दोष का विवेचन और अनुठित पाठ का लक्ष्यभाषा की साहित्यिक कृतियों के बीच मूल्यांकन से है। इसके अंतर्गत विवेचन अनुवाद सिद्धान्त की मान्यताओं के आधार पर तो किया ही जाता है अनुदित कृति को स्वतंत्र पाठ के रूप में भी जाँचा परखा जाता है। इसका सम्बन्ध अनुवाद कार्य की निष्पत्ति से है जो अनुवाद की स्तरीयता की ओर ध्यान दिलाता है। वास्तव में अनुवाद कार्य का अध्ययन अनुवाद समीक्षा है जिससे अनुवाद की गुणवत्ता और स्तरीयता का पता चलता है।

अनुवाद समीक्षा अपनी प्रकृति और महत्त्व के कारण एक स्वतंत्र विधा है। जिस प्रकार साहित्य समीक्षक के लिए साहित्य सर्जक होना अनिवार्य नहीं है, उसी प्रकार अनुवाद समीक्षक के लिए अनुवादक होना भी अनिवार्य नहीं है, लेकिन उसे अनुवाद मर्मज्ञ अवश्य होना चाहिए। यदि अनुवाद समीक्षक अनुवादक हो तो वह समीक्षा में अधिक प्रभावकारी भूमिका निभा सकता है। अनुवाद समीक्षा में अनुवाद के कौशल के मूल्यांकन के साथ-साथ लक्ष्यभाषा की अभिव्यक्ति के संसाधनों का भी मूल्यांकन शामिल है। इसमें यह देखा जाता है कि मूलपाठ के विभिन्न पक्षों का उपयुक्त और सही अंतरण किस सीमा तक हुआ है। इसमें

भाषायी और भाषेतर दोनों पक्षों की जाँच समन्वित रूप से होती है। वास्तव में अनुवाद समीक्षा से अनुवाद की स्तरीयता को ऊँचा उठाने में सहायता मिलती है। अनुदित पाठ के गुणों और दोषों का विवेचन कर उसकी त्रुटियों के बारे में जानकारी मिलती है जिससे अनुवाद के स्तर को सुधारा जा सके। यह श्रेष्ठ अनुवाद के मानक स्थापित करता है जो अनुवाद को अधिक बेहतर बनाने में कारगर सिद्ध होते हैं। अनुवाद समीक्षा से मूलभाषा और लक्ष्यभाषा की भाषिक और शैलीपरक असमानताओं की समीक्षा की जा सकती है जो दोनों भाषाओं के व्यतिरेकी अध्ययन में सहायक होती है। इसके साथ ही अनुवाद समीक्षा से महत्त्वपूर्ण लेखकों की रचनाओं और महत्त्वपूर्ण अनुवादकों के अनुवाद कार्य के विवेचन तथा मूल्यांकन में सहायता मिलती है। राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा किए गए "अभिज्ञान शाकुंतलम" के अनुवाद "शकुंतला नाटक" की समीक्षा से मूलपाठ की सूक्ष्मताओं का परिचय मिलता है और अनुवाद कार्य के आदर्श रूप का परिचय मिलता है। अनुवाद समीक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका शिक्षणपरक भी है। अनुवाद समीक्षा से अनुवाद-शिक्षार्थी की अनुवाद सम्बन्धी दृष्टि को व्यावहारिक स्तर पर विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार अनुवाद समीक्षा एक स्वस्थ और उपयोगी विधा है।

अनुवाद समीक्षा में अनुदित पाठ का विवेचन, मूल अभिप्राय, प्रतिपाद्य, भाषा प्रकार्य, प्रयुक्ति भाषा शैली, साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं तथा पाठक वर्ग के संदर्भ में किया जाता है। इन्हीं संदर्भों में मूलपाठ के साथ तुलना की जाती है तथा आकलन करते हुए अनुवाद दोषों का विवेचन किया जाता है। इस प्रकार अनुवाद की सफलता की जाँच करना और उसे मापना अनुवाद समीक्षा के अंतर्गत आता है जिसमें वस्तुनिष्ठ दृष्टि से अनुवाद की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जाता है।

अनुवाद समीक्षा दो प्रकार की होती है—वर्णनात्मक और तुलनात्मक। वर्णनात्मक समीक्षा में मूलपाठ के अनुवाद की समीक्षा की जाती है। तुलनात्मक समीक्षा में मूलपाठ के कम-से-कम दो अनुवादों की समीक्षा की जाती है। इसमें एक ओर मूलपाठ से तुलना और दूसरी ओर दूसरे अनुवाद से तुलना की जाती है।

प्र.6. अनुवाद के पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

अनुवाद के पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा में अंतर

अनुवाद के पुनरीक्षण, अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन का सम्बन्ध सफल अनुवाद के जाँच और परीक्षण से है किन्तु अनुवाद पुनरीक्षण तथा अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन में अंतर यह है कि अनुवाद पुनरीक्षण अनुवाद प्रक्रिया का एक सोपान है। यह सोपान अंतिम है जिसमें अनुदित पाठ की जाँच की जाती है और उसमें सुधार किया जाता है। इसमें लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुसार संशोधन और परिमार्जन किया जाता है किन्तु अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन अनुवाद प्रक्रिया के पूर्ण होने के बाद का विवेचन है। अनुवाद मूल्यांकन और समीक्षा का कार्य अनुदित पाठ के स्वायत्त पाठ बन जाने के बाद आरम्भ होता है। पुनरीक्षण में पुनरीक्षक के लिए अनुवादक होना अनिवार्य है जबकि अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन में समीक्षक का अनुवादक होना अनिवार्य नहीं है। अनुवाद मूल्यांकन में अनुदित पाठ की मूलपाठ के संदर्भ में जाँच करके उसकी गुणवत्ता के विषय में निर्णय दिया जाता है।

भारतीय भाषाओं में विशेषकर हिन्दी में समीक्षा का सम्बन्ध एक ओर आलोचनात्मक अध्ययन से है तो दूसरी ओर कृति के गुणावगुण विवेचन से भी है। समीक्षा में विश्लेषण के साथ-साथ मूल्यांकन भी होता है। परम्परागत समीक्षा के अंतर्गत समसामायिक कृतियों की मूल्यांकनपरक आलोचना कर साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण किया जाता है। अनुवाद को मूल के समकक्ष पाठ के रूप में रखा जा सकता है अथवा नहीं, यह बताया जाता है।

अनुवाद समीक्षा में अनुवाद का मूल्यांकन भी निहित होता है। पूर्व निर्धारित मानदंडों या मूल्यों के आधार पर कृति के गुण-अवगुणों की जाँच-पड़ताल की जाती है। इससे पाठक वर्ग को एक दिशा मिल जाती है और कृति की स्वीकार्यता-अस्वीकार्यता तथा पठनीयता-अपठनीयता के लिए भी मार्गदर्शन होता है।

वास्तव में समीक्षा का मुख्य उद्देश्य आलोचना को वस्तुनिष्ठ बनाना है जिसके लिए तर्कपूर्ण और सटीक विश्लेषण की तुलना की अपेक्षा रहती है। इसमें आलोचक अलग से मूल्यांकन नहीं करता क्योंकि विश्लेषण के भीतर ही मूल्यांकन निहित रहता है। वस्तुत: विश्लेषण के अंतर्गत कृति की रूप रचना और व्यवस्था का अन्वेषण होता है जिसमें मूल्यांकन का साक्ष्य होना आवश्यक है। इस प्रकार समीक्षा कहीं न कहीं मूल्यपरक निर्णय देती है। एक बात अवश्य है कि समीक्षा पूर्वनिर्धारित मूल्यों के बिना सम्भव नहीं है। अत: मूल्यांकन में निश्चित आधारों की सहायता से कृति का विवेचन किया जाता है और यह देखने का प्रयास रहता है कि उन आधारों का निर्वाह सफलतापूर्वक हुआ है या नहीं। मूल्यांकन करते समय विश्लेषण के परिणामों को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। समीक्षा में विश्लेषण मुख्य रूप में रहता है और मूल्यांकन उसके बाद आता है। किन्तु मूल्यांकन में निर्धारित मूल्यों से ही कृति का गुणावगुण निरूपण या गुणदोष विवेचन सम्भव हो पाता है। उन्हीं के संदर्भ में अनुवाद मूल्यांकन और अनुवाद

समीक्षा की जाती है। इस प्रकार अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन अन्योन्याश्रित प्रक्रियाएँ हैं। मूल्यांकन के विकसित आधारों पर समीक्षा अधिक प्रभावकारी होगी और सम्यक् रूप से की गई समीक्षा से मूल्यांकन को सही दिशा प्राप्त होगी। मूल साहित्यिक कृति और उसके अनुवाद की समीक्षा और मूल्यांकन में अंतर केवल यह है कि साहित्यिक कृति को स्वायत्त और स्वनिष्ठ मानकर अध्ययन किया जाता है किन्तु अनुदित पाठ की समीक्षा और मूल्यांकन मूल पाठ को देखे बिना कठिन होगा।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. पुनरीक्षण प्रक्रिया कैसे होती है? विस्तृत उल्लेख कीजिए।

उत्तर

पुनरीक्षण प्रक्रिया

पुनरीक्षण की प्रक्रिया में निम्नलिखित कार्य शामिल हैं—

1. **मूल पाठ और अनुवाद को पढ़ना**—पुनरीक्षक अनुवाद और मूलपाठ को पंक्ति-दर-पंक्ति पढ़ता है। इसमें ऐसा नहीं होता है कि एक बार मूलपाठ को पूरा पढ़ लिया जाए फिर अनुवाद को पूरा पढ़ा जाए। ऐसा करने से तो केवल यह पता लगाया जाएगा कि मूल कृति/पाठ में निहित समस्त भाव अनुदित पाठ में आ पाया है अथवा नहीं। पुनरीक्षण में मूलपाठ की प्रत्येक पंक्ति को अनुदित पाठ में आ पाया है अथवा नहीं। पुनरीक्षण में मूलपाठ की प्रत्येक पंक्ति को अनुदित पाठ की प्रत्येक पंक्ति के साथ पढ़ा जाता है। इससे यह पता लग जाता है कि कोई अंश अनुवाद किए बगैर छूटा तो नहीं है। यदि छूटा है तो क्यों छूटा है? भूलवश अथवा जानबूझकर। यदि जानबूझकर छूटा है तो छोड़ने का कारण भी पता लग जाता है। यह भी पता लगाया जाता है कि वह अंश छोड़ने लायक है या नहीं। यदि भूलवश छूटा है तो पुनरीक्षक उस अंश का अनुवाद करता/कराता है। सूचनापरक साहित्य में अक्सर कथ्य का कोई अंश छोड़ा नहीं जाता क्योंकि वहाँ भावानुवाद नहीं होता। लेकिन यदि किसी अंश को अनुवाद में प्रस्तुत किए बगैर भी बात पूरी हो गई हो या कोई अंश लक्ष्य भाषा के मुहावरे के प्रतिकूल हो तो उसे रखना अनिवार्य नहीं होता।
2. **अनुवाद और मूलपाठ का मिलान/तुलना**—मूलपाठ और अनुवाद को पंक्ति-दर-पंक्ति पढ़ते हुए दोनों की तुलना की जाती है। यह तुलना कथ्य और भाषा शैली दोनों के स्तर पर होती है। तुलना की इस प्रक्रिया में पुनरीक्षक जाँच करता है कि अनुवाद में कोई भूल तो नहीं रह गई। उसमें वही कहा गया है जो स्रोतभाषा पाठ में निहित है। कहीं दोनों का आशय अथवा निहितार्थ अलग-अलग तो नहीं जा पड़ा है। दोनों के कथन के ढंग में कोई ऐसा अंतर तो नहीं हैं कि दोनों की भिन्न-भिन्न ध्वनि निकलती हो। इस प्रक्रिया में पुनरीक्षक अनुवाद की गलतियों का पता लगाता है।
3. **कथ्यगत गलतियों का सुधार**—मूलपाठ और अनुवाद की तुलना करने पर पुनरीक्षक को अनुवाद में जो भी कथ्यगत भूलें अथवा अशुद्धियाँ मिलती हैं उनका सुधार करता है। वह देखता है कि अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है जो मूलपाठ का निकलता है। जहाँ कहीं भी दोनों के अर्थ में भेद होता है वहीं वह अनुदित पाठ में सुधार करके उसे मूल पाठ के निकट लाने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए एक अंग्रेजी पंक्ति और उसका अनुवाद है।
   "I have no reservation about this point."
   "मेरे पास इस मुद्दे पर कोई आरक्षण नहीं है।"
   ऐसी स्थिति में पुनरीक्षक मूल वक्ता के कथन का निहितार्थ प्रस्तुत करके अनुवाद को सुधारता है।
   इस अनुवाद में मूल वक्ता का आशय बिल्कुल भी नहीं आया है।
   मूल वक्ता कहना चाह रहा है कि
   "इस विषय पर मेरा कोई मतभेद/असहमति नहीं है।"
4. **भाषागत गलतियों का सुधार**—कथ्यगत और अर्थगत गलतियों के सुधार के पश्चात् पुनरीक्षक अनुवाद की भाषा सम्बन्धी भूलों का पता लगाता है। वह देखता है कि अनुवाद की भाषा कथ्य के अनुरूप है कि नहीं यानी मूलपाठ के विषय के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग लक्ष्यभाषा में किया गया है अथवा नहीं। आप जानते होंगे कि विभिन्न विषयों की अपनी-अपनी शब्दावली होती है जैसे विज्ञान, विधि और साहित्य के क्षेत्र की शब्दावली में पर्याप्त अंतर होता है अनुवादक स्वयं ध्यान रखता है कि विषयानुकूल शब्दावली प्रयुक्त हो। फिर भी पुनरीक्षक को जाँचना होता है कि कहीं अनुवाद की शब्दावली अनूद्य विषय से दूर तो नहीं जा पड़ी। उदाहरण के लिए Plant के मायने 'पौधा' और 'संयंत्र'

TOUCH 'n' PASS

दोनों हैं। उद्योग सम्बन्धी अनुवाद में उसे देखना है कि आशय किस 'प्लांट' से है किसी औद्योगिक इकाई से अथवा उन पौधों से जिनसे उद्योग के लिए कच्चा माल मिलता है। उदाहरण के लिए दो वाक्यों को देखिए। इसमें रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। पहले वाक्य में Plant आशय संयंत्र से है और दूसरे में पेड़-पौधों से—

(a) Mother dairy plant has been installed.

(b) Eucalyptus plants have been provided to the villagers.

इसके अलावा पुनरीक्षक को यह भी देखना होता है कि कहीं अटपटी भाषा तो नहीं प्रयुक्त हुई है। वाक्य विन्यास सहज है कि नहीं। अनुवाद की भाषा लक्ष्यभाषा की प्रवृत्ति और मुहावरे के अनुकूल है कि नहीं। निम्नलिखित उदाहरण भारत सरकार के मंत्रालय द्वारा जारी विज्ञापन से है। आप इसे पढ़ते ही समझ जाएँगे कि यह मूल भाषा में न लिखा होकर अनुवाद है और अनुवाद कैसा हू-ब-हू शब्दानुवाद "एक प्रदूषित आकाश आपके जीवन को कम बना देता है मोटर वाहनों के प्रदूषण पर नियंत्रण कीजिए।"

अंग्रेजी में कहा गया होगा—

"A polluted sky reduces your life.

Control motor vehicle pollution."

अब हिन्दी में यह जरूरी नहीं है कि आप 'a' के स्थान पर 'एक' अवश्य लिखें। फिर आसमान दो चार नहीं होते, इसलिए भी 'एक' लिखना बेमाने है। इसी तरह 'आपके जीवन को कम बना देता है' हिन्दी मुहावरे के अनुकूल नहीं। इसकी जगह लिखना चाहिए। 'प्रदूषित आकाश आपकी उम्र घटाता' अथवा 'प्रदूषित आकाश से आपकी आयु क्षीण होती है'। इसी तरह 'मोटर वाहनों का प्रदूषण' नहीं 'मोटर वाहनों से होने वाला प्रदूषण' लिखा जाना चाहिए।

इस प्रकार अनुवाद की भाषा सम्बन्धी भूलों का पता लगाकर पुनरीक्षक उपयुक्त शब्दावली प्रयोग करता है तथा वाक्य विन्यास में अपेक्षित संशोधन और सुधार करता है। साथ ही देखता है कि भाषा कथ्य के स्वभाव के अनुकूल तो है। कहने का तात्पर्य है कि गम्भीर, सरल, हास्यप्रधान आदि विषयों के अनुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है या नहीं, यह देखना पुनरीक्षक का दायित्व है।

5. **शैलीगत सुधार**—हर विषय और स्थिति के अनुरूप लेखन की विशिष्ट शैली होती है जिससे भाषा में प्रांजलता और सौष्ठव आता है। अनुवाद में विषयानुकूल शैली का प्रयोग हुआ है अथवा नहीं इसकी जाँच पुनरीक्षक करता है और जहाँ कहीं आवश्यकता होती है वहाँ सुधार करता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित अनुवादों को देखिए—

उदारहरण 1 : The Municipal Commitee will supply egges to the schools.
म्यूनिसिपल कमेटी स्कूल को अण्डे देगी।

उदाहरण 2 : Free treatment for the eyes.
मुफ्त आँखों का इलाज।

उदाहरण 3 : Jai Prakash Narayan has gone again into a state of unconsciousness.
जय प्रकाश नारायण फिर बेहोशी की हालात में चले गए।

उदाहरण 1 के अनुवाद से ऐसा प्रतीत होता है कि नगरपालिका एक मुर्गी है और वह स्कूलों को अण्डे देगी। दूसरे उदाहरण में, अनुवाद से ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे कि आँखें मुफ्त हैं, न कि इलाज। इसी प्रकार तीसरे उदाहरण से यह प्रतीत होता है कि जय प्रकाश नारायण अपनी इच्छा से बेहोश हो गए हैं।

जबकि ऊपर दिए गए तीनों उदाहरणों का सही अनुवाद निम्न प्रकार होना चाहिए।

1. नगरपालिका स्कूलों में अण्डों की आपूर्ति करेगी।
2. आँखों का मुफ्त इलाज।
3. जय प्रकाश नारायण फिर से बेहोश हो गए।

उदाहरण 4 : It was good-bye to Rajiv and hello to V.P. Singh.
यह राजीव को नमस्कार कहना और वी०पी० सिंह को हैलो कहना था।

ऊपर दिए गए वाक्य में good-bye तथा hello दो मुख्य शब्द हैं। किसी व्यक्ति को good-bye "अलविदा" कहने में यह बात अंतर्निहित है कि व्यक्ति आपके पास से तब तक के लिए विदा ले रहा है, जब तक कि दोनों एक-दूसरे को

TOUCH 'n' PASS

दोबारा मिलना नहीं चाहते हों। Hello कहना इस बात की ओर संकेत करता है कि सौहार्द, सत्कार-भाव से अन्दर आने का निमंत्रण देना। इसलिए एक अनुवाद इस प्रकार भी हो सकता है—

"यह राजीव को अलविदा कहना और वी०पी० सिंह को गले लगाना था।"

लेकिन यह अनुवाद भी संदर्भ और प्रसंग को प्रस्तुत नहीं करता है। इसमें एक ऐतिहासिक संदर्भ निहित है। सन् 1989 के चुनाव में वी०पी० सिंह प्रधानमंत्री बने थे, इससे पहले राजीव गाँधी प्रधानमंत्री थे। प्रस्तुत मूल पाठ वाक्य सत्ता परिवर्तन की इस घटना को सूत्र रूप में प्रस्तुत करता है। इसके अनुवाद में भी यही ध्वनित होना चाहिए। इस दृष्टि से सही अनुवाद होगा

"चुनाव के माध्यम से जनता ने प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गाँधी को विदा देते हुए वी०पी०सिंह का स्वागत किया।"

उदाहरण 5 : The dacoit succeeded in escaping.

डाकू भागने में सफल हो गया।

अथवा

उदाहरण 6 : The work is in progress.

कार्य प्रगति पर है।

ये फिर शब्दानुवाद के उदाहरण हैं। उदाहरण 5 के अनुवाद में डाकू के भागने की बात प्रशंसा वाले भाव से कही गई प्रतीत हाती है। जबकि अर्थ की दृष्टि से यह अनुवाद इस प्रकार होना चाहिए, "डाकू बचकर भाग गया" अथवा डाकू निकल भागा।"

इस प्रकार उदाहरण 6 के अनुवाद में "यहाँ काम हो रहा है" लिखना अधिक उपयुक्त होगा।

छोटे-से-छोटे पाठ का यहाँ तक कि किसी निमंत्रण पत्र का अनुवाद है और उसकी भाषा में अपेक्षित विनम्रता एवं शिष्टता नहीं है तो पुनरीक्षक उसमें अपेक्षित सुधार करेगा। यहाँ एक निमंत्रण पत्र का उदाहरण दिया गया है—

The Ministry of Defence
Requests the pleasure of the presence of
.....
at the
Republic Day Prade on
Friday, the 26th January 1996 (6 Magha 1917) at 10.00 a.m.
On Rajpath, New Delhi.
The president will take the salute.

इसके निम्नलिखित अनुवाद को पढ़िए—

रक्षा मंत्रालय
.....
उपस्थिति का हर्ष पाने का अनुरोध करता है।
गणतंत्र दिवस, परेड
पर
शुक्रवार, 26 जनवरी, 1996, (6 माघ 1917) को
10 बजे प्रात:
राजपथ, नई दिल्ली पर
राष्ट्रपति सलामी लेंगे।

TOUCH 'n PASS

यह अनुवाद शाब्दिक रूप से गलत न होने पर भी हिन्दी में लिखे जाने वाले निमंत्रण पत्र की शैली में नहीं प्रस्तुत हुआ है। पुनरीक्षक उसे हिन्दी में निमंत्रण के ढंग से प्रस्तुत करेगा।

इसका सही अनुवाद निम्नलिखित होगा।

रक्षा मंत्रालय

..... को

शुक्रवार, 26 जनवरी, 1996, 6 माघ 1917 को 10 बजे प्रातः नई दिल्ली में राजपथ पर आयोजित गणतंत्र दिवस परेड में सादर आमंत्रित करता है। राष्ट्रपति सलामी लेंगे।

पुनरीक्षक यह भी देखता है कि कहीं गम्भीर अथवा पांडित्यपूर्ण विषय को बहुत अधिक सरलीकृत शैली में तो नहीं कहा गया अथवा अत्यंत सरल विषय को जटिल शैली में तो प्रस्तुत नहीं किया गया तथा मूलकथ्य के मनोभावों एवं स्थितियों के अनुकूल शैली अपनाई गई है अथवा नहीं।

इसी प्रकार पुनरीक्षक देखता है कि अनूद्य सामग्री किन लोगों द्वारा पढ़ी जानी है उन लोगों की अपेक्षाओं के अनुरूप सुधार और संशोधन भी वह अनुवाद में करता है। मान लीजिए कोई अनुदित सामग्री विदेशी लोगों द्वारा पढ़ी जानी है तो पुनरीक्षक को देखना होगा कि अनुवाद कुछ ऐसा तो नहीं है जो विदेशियों को संस्कार अथवा परिवेश की भिन्नता के कारण समझ में न आ सके।

6. **अनुदित पाठ की लक्ष्यभाषा संस्कृति की दृष्टि से जाँच**—प्रत्येक भाषा किसी संस्कृति विशेष से जुड़ी होती है। जिस समाज और संस्कृति को वह भाषा अभिव्यक्त करती है, उस समाज और संस्कृति का अपने में वहन भी करती है। स्रोत-भाषा और लक्ष्यभाषा दो भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी समाजों का प्रतिनिधित्व करती हैं। कभी-कभी यह भिन्नता बहुत अधिक होती है और कभी-कभी बहुत कम। उदाहरण के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं में काफी सांस्कृतिक एकता है लेकिन विदेशी भाषाओं से उनकी वैसी सांस्कृतिक समानता नहीं है। अनुवाद की प्रक्रिया में किया जाने वाला भाषांतरण एक हद तक सांस्कृतिक अंतरण भी होता है। कथ्य को स्रोतभाषा की संस्कृति से लक्ष्यभाषा की संस्कृति में अंतरित किया जाता है।

   पुनरीक्षण करते समय पुनरीक्षक को यह तो देखना ही पड़ता है कि अनुवाद में वही कहा गया है जो स्रोतभाषा में मौजूद है। लेकिन इसके साथ ही यह भी देखना पड़ता है कि लक्ष्यभाषा संस्कृति में वह बात ग्राह्य है अथवा नहीं। कुछ बातें कुछ समाजों में स्वीकार्य होती हैं लेकिन दूसरे समाजों में नहीं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का वाक्य है। "He is as humble as a sheep."

   अब यदि हिन्दी में अनुवाद कर दिया गया है, "वह भेड़ की तरह विनम्र (भला) है।" तो यह सर्वधा अनुपयुक्त है। पुनरीक्षक को विनम्रता की ऐसी उपमा देनी होगी जो हिन्दी भाषा संस्कृति में मान्य है। उदाहरण के लिए वह लिख सकता है "वह तो बिल्कुल गऊ है।"

7. **फार्मेट सम्पादन**—अन्य सब तरह के भूल सुधार और संशोधन के पश्चात् अनुवादक अनुवाद का मूल पाठ के फार्मेट के अनुरूप सम्पादन करता है। प्रत्येक पाठ्य सामग्री का एक बाहरी ढाँचा होता है जिसमें पाठ के विभिन्न अध्यायों/अनुच्छेदों के विभाजन, पैराग्राफ विभाजन, अंकन, विभिन्न खंडों के लिए अलग-अलग अंकों अथवा वर्णाक्षरों का प्रयोग, चित्र-आलेख आदि के निर्धारित स्थान आदि की जाँच करता है और उनमें अपेक्षित सुधार करता है। ऐसा करते समय वह स्रोतभाषा पाठ का अनुपालन करते हुए भी आवश्यकतानुसार लक्ष्यभाषा की प्रवृत्ति का अनुसरण करता है। उदाहरण के लिए विभिन्न खण्डों के लिए वर्णांकित संख्याओं a, b, c, d, e, f, g, h, i, j आदि के लिए यदि हिन्दी में अ, ब, स, द..... संख्याएँ प्रयुक्त की जाएँ तो उपयुक्त नहीं रहतीं। न ही अ, आ, इ, ई ..... स्वरों का वर्णानुक्रम इस उद्देश्य के लिए स्वीकार्य है। हिन्दी वर्णों का गिनती के लिए प्रयोग करना क, ख, ग, घ के क्रम में चलता है। चूँकि यह हिन्दी में मान्य पद्धति है। अतः अनुवाद में इसी को अपनाना अपेक्षित होता है।

TOUCH 'n' PASS

पुनरीक्षक को देखना यह होता है कि जहाँ मूल में संख्यांक 1,2,3,4 है वहाँ अनुवाद में संख्यांक ही रहें, जहाँ रोमन अंक हैं वहाँ उन्हीं को रखा जाए यानी i, ii, iii. iv, को इसी ढंग से लिखा जाए जहाँ वर्णों द्वारा अंकन है वहाँ क, ख, ग वर्ण प्रयुक्त हों।

प्र.2. पुनरीक्षण का क्या महत्त्व होता है? विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

पुनरीक्षण का महत्त्व

अनुवाद एक व्यावहारिक कार्य है, इसलिए इसमें त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। इन्हें अनुवाद दोष भी कहा जा सकता है। मूल पाठ और अनुदित पाठ के बीच जो सम्बन्ध निहित रहता है वह संदेश (अर्थ) पर आधारित होता है। इस संदेश में गड़बड़ी होने पर अनुदित पाठ में निष्पन्न संदेश में दोष आने की सम्भावना रहती है। संदेश भाषा और विषय-वस्तु में से किसी एक में दोष आ जाने से अन्विति बिगड़ जाती है, और संदेश असंप्रेषणीय हो जाता है। इसकी जाँच पड़ताल के लिए पुनरीक्षण की आवश्यकता रहती है। अनुदित पाठ में विभिन्न भाषायी स्तरों पर कई दोष मिल जाते हैं। ध्वनि, वर्तनी, रूप, पदबन्ध, उपवाक्य, वाक्य, और प्रोक्ति आदि संरचनागत इकाइयों के अतिरिक्त शैलीगत दोष भी पाए जाते हैं। भाषा की प्रकृति के अनुसार कई बार वाक्यों में परस्पर संयोजन नहीं होता जिससे पाठ दुर्बोध या अटपटा हो जाता है।

उदाहरण के लिए "The explanation furnished by Shri Sudhir Kumar is not found satisfactory." का अनुवाद "श्री सुधीर कुमार द्वारा प्रस्तुत स्पष्टीकरण संतोषजनक नहीं पाया गया" हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। पुनरीक्षक इसमें सुधारकर लिख देता है कि "श्री सुधीर कुमार ने जो स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया है वह संतोषजनक नहीं पाया गया" तो वह वाक्य हिंदी की प्रकृति के अनुकूल अधिक स्वाभाविक और सहज लगता है। इसी प्रकार no enclosure allowed." का अनुवाद "संलग्नकों की अनुमति नहीं है" किया जाए तो यह न तो संप्रेषणीय होगा और न ही बोधगम्य। पुनरीक्षक इसे संप्रेषणीय और बोधगम्य बनाने के लिए "इस पत्र में कुछ न रखें" वाक्य से संशोधित कर देता है तो यह वाक्य अधिक सरल और सहज लगता है। इस प्रकार अनेक भाषायी दोषों के निराकरण की सम्भावना पुनरीक्षण के दौरान होती है।

विषयवस्तु के स्तर पर विषय और पाठक दोनों का संदर्भ निहित रहता है। मूलपाठ का विषय प्रशासनिक, विधिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक विज्ञान अथवा विज्ञापन सम्बन्धी हो सकता है। अनुवाद करते समय उसमें कई बार शब्दावलीपरक और संरचनागत दोष आ जाते हैं जो विषय के अनुकूल नहीं होते। उदाहरण के लिए "Company Director" के लिए 'कम्पनी निदेशक' या 'कंपनी संचालक' में से किसी एक पर्याय का निर्धारण करना है। अनुवादक द्वारा दिए गए पर्यायों को पुनरीक्षक संदर्भ के अनुसार तौलकर देखता है कि वह पर्याय उपयुक्त हैं अथवा नहीं, उपयुक्त न प्रतीत होने पर वह सही पर्याय निर्धारण करता है। मान लीजिए अनुवादक venom और poison के लिए एक ही शब्द "विष" का प्रयोग करता है किन्तु दोनों की अलग-अलग संकल्पनाएँ होने के कारण पुनरीक्षक उन दोनों में अन्तर करेगा।

विषयवस्तु की प्रकृति के अनुसार भाषा संरचना विशिष्ट होती है। साहित्यिक रचना के अनुदित पाठ की भाषा को परखते समय इस विवेक से काम लिया जाता है कि उसमें कितनी संप्रेषणीयता, सर्जनात्मकता और प्रभावोत्पादकता है और आवश्यकता पड़ने पर उसमें कितना सुधार किया जा सकता है। लेकिन साहित्येतर अनुवाद को यथातथ्य, सहज, सुबोध, और प्रवाहशील बनाने के लिए पुनरीक्षक पर्यवेक्षक की भूमिका अदा करता है।

अनुवाद करते समय अनुवादक कई बार यह भूल जाता है कि मूलकृति का अनुवाद किसके लिए किया जा रहा है। पुनरीक्षण के समय पुनरीक्षक इस बात की ओर ध्यान रखकर संशोधन करता है। उदाहरण के लिए No admission के लिए तीन वैकल्पिक अनुवाद मिलते हैं— (1) प्रवेश निषेध (2) अंदर आना मना है (3) अंदर न आइए। अब यहाँ पुनरीक्षक यह देखेगा कि यह अनुवाद किस वर्ग के लिए किया गया है। उसी के अनुरूप अनुदित पाठ का निर्धारण करेगा और आवश्यकतानुसार संशोधन करेगा। इसीलिए अनुवाद को एक लचीली अवधारणा माना जाता है। क्योंकि इसमें संदर्भगत कारण काम करते हैं और वही उसे सफल अनुवाद की श्रेणी में ले जाते हैं। इसी बिन्दु पर पुनरीक्षण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

कई बार किसी मूल पाठ का अनुवाद कई अनुवादकों से कराया जाता है। प्रत्येक अनुवाद की अपनी शैली होती है। किसी की शैली तत्सम-प्रधान होती है तो किसी अनुवादक की शैली सामान्य बोलचाल की। कोई अनुवादक संयुक्त और मिश्र वाक्यों का अधिक प्रयोग करता है तो कोई सरल वाक्यों का। इस शैलीगत भिन्नता से अनुदित पाठ सहज और सुबोध नहीं हो पाता। पुनरीक्षण के दौरान उस पाठ में शैलीगत एकरूपता लाने का प्रयास रहता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अनुवादक के पास स्रोतभाषा के शब्द के कई वैकल्पिक पर्याय होते हैं और उन्हें अपने विवेक और रुचि से प्रयुक्त करता है। इससे अनुदित कृति की बोधगम्यता और संप्रेषणीयता को आघात पहुँचता है। अत: पुनरीक्षक की भूमिका यहाँ महत्त्वपूर्ण है कि वह इन वैकल्पिक पर्यायों में एकरूपता लाए

ताकि अनुदित पाठ में, विशेषकर तकनीकी साहित्य में बोधगम्यता और सम्प्रेषणीयता में कोई आघात न पहुँचे। यहाँ पुनरीक्षण का महत्त्व अनुदित पाठ में समन्वय और समरूपता लाने में है।

यह बात ध्यान योग्य है कि पुनरीक्षण अनुवाद से अलग विधा नहीं है। यह अनुवाद-प्रक्रिया का अंतिम सोपान माना जा सकता है जो लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुसार अनुदित पाठ को मूलपाठ का सहपाठ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें शब्दावली, संरचना और शैली की एकरूपता तो रहती ही है, साथ में अनुदित पाठ में प्रामाणिकता, संप्रेषणीयता, स्वाभाविकता और प्रभावोत्पादकता लाने का कार्य भी करता है। इस प्रकार पुनरीक्षण में मूल निष्ठता को ध्यान में रखकर अनुवाद को सफल और अच्छा बनाने का प्रयास रहता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि पुनरीक्षण द्वारा अनुवाद की जाँच, सुधार और साज-सँवार की जाती है। इससे अनुवाद की अशुद्धियाँ तो सुधरती ही हैं उसका अनगढ़पन भी दूर होता है और उसमें परिष्कृति और सौष्ठव आता है। वैसे तो अच्छा अनुवादक स्वयं ही अपने अनुवाद को मूल से मिलाकर एक बार दोहराता है और भूल सुधार तथा भाषा शोधन करता है। लेकिन किसी अन्य कुशल एवं सिद्धहस्त अनुवादक द्वारा पुनरीक्षण करने से अनुवाद में वस्तुनिष्ठता आने की सम्भावना अधिक रहती है। अनुवादक का स्वयं अपने अनुवाद के प्रति एक तरह का सर्जनात्मक राग हो जाता है। जो स्वाभाविक ही है। ऐसे में कई बार वह अपने अनुवाद के दोषों को देख पाने में सक्षम नहीं हो पाता लेकिन जब अन्य कुशल पुनरीक्षक मूल और अनुवाद को पढ़ते समय तटस्थ दृष्टि अपनाता है तो मूल और अनुवाद की तुलना काफी बारीकी से कर पाता है और गलतियों को सहजता से पकड़ पाता है।

पुनरीक्षण का महत्त्व न केवल मनुष्य द्वारा किए गए अनुवाद में ही है बल्कि कम्प्यूटर द्वारा किए गए अनुवाद में तो यह एक तरह से अनिवार्य ही है। मशीनी अनुवाद सम्बन्धी इकाई में आपने कम्प्यूटर से अनुवाद के दौरान मानवीय सहायता के विभिन्न पक्षों को पढ़ा है। पूर्व सम्पादन, पश्च सम्पादन आदि प्रक्रिया में अनुवादक वास्तव में पुनरीक्षक की भूमिका ही अदा करता है। कम्प्यूटर द्वारा किए गए अनुवाद को जाँचता और सुधारता है।

प्र.3. अनुवाद मूल्यांकन की कौन-सी पद्धतियाँ होती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियाँ

अनुवाद के मूल्यांकन के लिए कई पद्धतियाँ अपनाई गई हैं ताकि अच्छे अनुवाद की पहचान की जा सके। इन पद्धतियों को प्रभाववादी और व्यवहारवादी दो वर्गों में रखा जा सकता है। प्रभाववादी मूल्यांकन में समीक्षक या मूल्यांकनकर्ता की एक "विशेषज्ञ पाठक" के रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त होती है। व्यवहारवादी मूल्यांकन में सम्भावित पाठकों की प्रतिक्रिया के आधार पर अनुवाद की सफलता को मापा और जाँचा जाता है।

मूल्यांकन की अनेक पद्धतियों का विकास हुआ है। इनमें मुख्य पद्धतियों का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

1. **पुनरनुवाद/पुनःअनुवाद आधारित मूल्यांकन**—इस पद्धति के अंतर्गत मूलपाठ के अनुवाद का स्रोतभाषा में पुनः अनुवाद किया जाता है। इसमें अनुवादक और पुनरनुवादक अलग-अलग व्यक्ति होते हैं। पुनरनुवादित पाठ की तुलना मूलपाठ से की जाती है। उसमें त्रुटियों को पहचाना जाता है। इस पद्धति से अनुवाद की शुद्धता और यथातथ्यता की जाँच कर अनुवाद की सफलता को मापा जा सकता है। पुनरनुवाद आधारित मूल्यांकन पद्धति वास्तव में इसकी जाँच के लिए बनाई गई पद्धति है कि अनुवाद सही है या गलत जो संदेश मूल कथ्य से प्रकट होता है वही अनुवाद से प्रकट हो रहा है या नहीं इसकी जाँच अनुदित कथ्य को पुनः मूल भाषा में अन्तरित करके की जाती है।

   उदाहरण 1. "The train will leave at 5 P.M. from platform No. 4."

   के अनुवाद

   "गाड़ी शाम को पाँच बजे प्लेटफार्म नं. 5 से रवाना होगी।" को पुनः अंग्रेजी में लिखा जाए तो

   "The train will leave at 5 P.M. from platform No. 4."

   ही लिखा जाएगा।

   लेकिन कई बार ऐसी स्थितियाँ भी आती हैं जब अनुदित पाठ का पुनःअनुवाद करने पर वही अनुवाद नहीं होता जो मूल पाठ है। उदाहरण के लिए नीचे लिखे वाक्य और उसके अनुवाद को देखिए। उसका पुनःअनुवाद भी किया गया है फिर मूल और पुनरनुवाद को मिलाइए।

   उदाहरण 2. "Strictly speaking, you cannot take a seat here."

   "कड़े शब्दों में आप यहाँ जगह नहीं ले सकते हैं।"

इस अनुवाद का पुन:अनुवाद करें–

"In strict words you cannot take a place here."

पुन:अनुवाद में "कड़े शब्दों" के लिए 'in strict words' आया है और "जगह" के लिए Place जबकि मूल कथ्य में इन शब्दों का आशय है– "सही-सही कहना" और 'बैठना।' अत: पुन:अनुवाद से वह आशय नहीं निकलता जो मूल शब्दों से निकलता है ऐसा इसीलिए है कि अनुवाद में मूल का पूरा आशय नहीं आया। मूल का आशय प्रकट करते हुए सही अनुवाद होगा।

"सही-सही कहें तो आप यहाँ नहीं बैठ सकते।"

इस वाक्य का पुन:अनुवाद करने पर वही आशय निकलेगा जो मूल कथ्य का निकलता है।

यह पद्धति सूचनापरक पाठों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। यह पद्धति भाषापरक त्रुटियों की जाँच के लिए तो उपयोगी है किन्तु सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य में अधिक कारगर सिद्ध नहीं होती।

उदाहरण के लिए हिन्दी का छोटा सा वाक्य है

"देखो तो सही"
इसका अनुवाद है
Please see
पुनरनुवाद होगा
कृपया देखिए

लेकिन "देखो तो सही" वाला मूलभाव "कृपया देखिए" में नहीं आ पाया। इसके लिए पुन:अनुवाद अच्छा मापदण्ड सिद्ध नहीं हुआ।

अनुवाद करते समय हिन्दी और अंग्रेजी भाषा के सांस्कृतिक संदर्भ को तलाशते हुए "देखो तो सही" का अनुवाद Come, have a look किया जा सकता है। लेकिन पुनरनुवाद कहीं भी पूर्णत: कारगर मापदण्ड सिद्ध नहीं होगा क्योंकि इसका पुनरनुवाद "आइए देखिए" भी हो सकता है और "आओ, देखें" भी। मूलपाठ में जो सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, यह आवश्यक नहीं वह अनुदित पाठ में बोधगम्य और संप्रेषणीय बन सके। हिन्दी में "चरणामृत" "पंचामृत" शब्द यूरोपीय समाज के लिए अपरिचित है, अत: इनका पुनरनुवाद सटीक अर्थ नहीं दे पाएगा।

2. **अनुक्रिया आधारित मूल्यांकन**—इसके अंतर्गत अनुदित पाठ का पाठकों से पाठन कराया जाता है और अनुक्रिया प्राप्त की जाती है। इसी आधार पर अनुवाद को मापा जाता है। इस बात का अवश्य ध्यान दिया जाता है कि अनुदित पाठ वही भूमिका निभाए जो मूलपाठ निभाता है। वास्तव में उत्तम अनुवाद वही है जो पाठक के मन पर वैसा ही प्रभाव डाले जैसा प्रभाव मूलपाठ से उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, प्रेमचन्द के उपन्यास सामाजिक जीवन के जिन अभावों के यथार्थ चित्रण से पाठक में यथार्थ बोध और पीड़ा भाव उत्पन्न करते हैं वही भाव उनके अनुवाद लक्ष्यभाषा के पाठक में उत्पन्न करें। किन्तु यह इतनी आसानी से सम्भव नहीं है। अनुवाद की अनुक्रिया प्रत्येक भाषा-भाषी की समसामयिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। भाषायी दृष्टि से अनुवाद समतुल्यता के सही चयन की दृष्टि से सफल तो हो सकता है किन्तु भूमिका निर्वाह की पूर्ण समतुल्यता लाना सम्भव नहीं है।

अनुक्रिया आधारित एक अन्य पद्धति यह भी है कि समूचे मूलपाठ के या उसके कुछ अंशों के वैकल्पिक अनुवाद तैयार कराए जाएँ और उन पर अलग-अलग पाठकों की अनुक्रिया प्राप्त की जाए कि कौन-सा अनुवाद सुनने में अधिक मधुर है, कौन-सा अधिक पठनीय है, कौन-सा अधिक बोधगम्य है आदि। इसकी भी अपनी सीमाएँ हैं। इसमें अनेक अनुवादों की तुलना तो की जाती है लेकिन मूलकृति की तुलना में अनुवाद की यह जाँच नहीं हो सकती है कि अनुवाद कितना शुद्ध हुआ है।

इसी पद्धति के आधार पर अनुवादशास्त्री नोएडा ने अनुवाद मूल्यांकन के तीन आधार बताए हैं।

(क) **संप्रेषण प्रक्रिया में सहज प्रभाव**—पाठक या संग्राहक कम-से-कम श्रम में पाठ का अधिकतम अर्थ ग्रहण करता है तो वह अच्छा अनुवाद है।

(ख) **कथ्य का बोधन**—यदि मूलपाठ में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यपरक कथ्यों का बोधन अनुदित पाठ में सहज रूप से होता है तो वह भी अच्छा अनुवाद माना जाएगा।

TOUCH 'n' PASS

(ग) **अनुक्रिया की समतुल्यता**—पाठक मूलपाठ के प्रति जिस प्रकार की अपनी अनुक्रिया व्यक्त करता है बिल्कुल उसी प्रकार की अनुक्रिया अनुदित पाठ के प्रति भी व्यक्त करता है तो अनुवाद सफल माना जा सकता है।

अच्छे अनुवाद के सम्बन्ध में नाइडा ने जो ये आधार बताए हैं, वे परिभाषा के स्तर पर प्रभावकारी सिद्ध नहीं होते क्योंकि अनुक्रिया को मापना सम्भव नहीं है। अत: नाइडा ने एक अन्य अनुवादशास्त्री टेबर के सहयोग से इन आधारों में थोड़ा बहुत परिवर्तन कर अच्छे अनुवाद के लिए तीन अन्य आधार सुझाए हैं जो निम्न प्रकार हैं—

(क) **संदेश का सहज संप्रेषण**—अनुदित पाठ में संदेश इतना स्पष्ट हो कि पाठक मूलपाठ के संदेश के समान ही उसे आसानी से समझ सके।

(ख) **पठनीय द्वारा बोधन**—अनुदित पाठ इतना सरल हो कि पाठक उसके पठन से ही उसका आसानी से बोधन कर सके।

(ग) **अनुवाद की पर्याप्तता से पाठक की अभिरुचि**—अनुवाद में इतनी पर्याप्तता और क्षमता हो कि वह पाठक को अपनी ओर आकर्षित कर सके और उसका पाठ के साथ तादात्म्य स्थापित हो सके।

अच्छे-बुरे अनुवाद में भेद करने के लिए ये आधार निर्भात रूप से कार्य कर सकेंगे, इसमें शंका है क्योंकि इन आधारों में वस्तुनिष्ठता और वैज्ञानिकता नहीं मिलती। इसलिए नाइडा और टेबर ने अनुक्रिया सम्बन्धी प्रभाव को मापने के लिए चार प्रायोगिक अध्ययन किए जो क्लोज परीक्षण, पठनीयता, संप्रेषणीयता तथा वाचन पर आधारित थे। किन्तु इनमें भी कुछ-न-कुछ कमियाँ पाई गईं।

3. **क्लोज परीक्षण**—इस पद्धति में अनुदित पाठ का प्राय: पांचवाँ, सातवाँ, नवाँ आदि क्रम से शब्द हटा दिया जाता है। इसमें पचास रिक्तियाँ काफी हैं। इसके बाद पाठकों से इन रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए कहा जाता है। पाठक उस रिक्त स्थान पर जिस शब्द को उपयुक्त समझता है उसकी पूर्ति कर देता है। इसके बाद पूर्तियों से मूल शब्दों का मिलान कर यह देखा जाता है कि पाठक के कितने अनुमान सही हैं। सही अनुमानों की जितनी अधिक संख्या होगी वह अनुवाद उतना अधिक सरल और बोधगम्य माना जाएगा।

यह परीक्षण मूल्यांकन की एक अच्छी पद्धति तो है क्योंकि इससे अनुवाद की बोधगम्यता का परिचय मिल जाता है, किन्तु इसकी अपनी सीमाएँ भी हैं। यह सापेक्षित परीक्षण भी है जो अच्छे अनुवाद को चुनने में सहायता तो करता है किन्तु यह सिद्ध नहीं कर पाता कि वह स्वयं में कितना अच्छा है। इसके अतिरिक्त स्थानों की पूर्ति करते समय पर्यायों के विकल्पों के आधार पर भी अनुवाद का सही मूल्यांकन नहीं हो पाता। मूलपाठ से सम्पर्क न हो पाने के कारण यह मूल्यांकन एकपक्षीय रह जाता है।

4. **वाचन परीक्षण**—यह परीक्षण तीन प्रकार से होता है— 1. तीन-चार लोगों को अनुवाद का सस्वर वाचन करने के लिए कहा जाता है जिसमें यह देखा जाता है कि वाचक वाचन करते समय कहाँ-कहाँ अटकता है, हिचकता है या त्रुटियाँ करता है। इससे अनुवाद की सहजता का पता चलेगा। 2. किसी एक पाठक को अनुदित पाठ देकर यह कहा जाए कि वह इसे पढ़कर इसमें निहित सूचनाएँ अन्य लोगों तक पहुँचाए। वह जितनी अधिक सूचना पहुँचा पाएगा, अनुवाद उतना अच्छा माना जाएगा। 3. अनुवाद का पाठन ऊँचे स्वर में किया जाएगा। इस पाठन से कई त्रुटियाँ स्पष्ट हो जाएँगी।

वाचन परीक्षण की यह पद्धति सिद्धांत रूप में अच्छी लगती हैं किन्तु व्यावहारिक रूप में लम्बी प्रक्रिया है। इसमें एक व्यक्ति की राय पर निर्भर न रहकर अनेक व्यक्तियों की राय मिलती है और उसमें भिन्नता की सम्भावना रहती है। इसमें विभिन्न व्यक्तियों के अपने ज्ञान और उसकी अभिव्यक्ति क्षमता का पता तो चल सकता है किन्तु अनुवाद की कमियों की जानकारी नहीं मिल पाएगी और न ही अनुवाद के विभिन्न शैलीगत रूपों का पता चल पाएगा।

उपर्युक्त सभी पद्धतियों में कोई कमी अवश्य मिलती है। एक तो ये पद्धतियाँ वस्तुनिष्ठ की अपेक्षा व्यक्तिनिष्ठ अधिक हैं और दूसरी मूलपाठ से कोई सम्बन्ध नहीं रखा गया। जिससे जाँच करने पर सही निष्कर्ष निकाला जा सके। इन पद्धतियों में बोधगम्यता की मात्रा को ध्यान में रखकर मूल्यांकन किया गया है लेकिन अच्छे अनुवाद का मूल्यांकन मूलपाठ को ध्यान में रखे बिना करना ठीक नहीं है।

मूलपाठ पर आधारित मूल्यांकन विशिष्ट संदर्भ में उस भाषा के बोलने वालों के सामान्य मानक प्रयोग पर आधारित होता है। अनुवाद भाषिक प्रक्रिया के साथ-साथ सर्जनात्मक प्रक्रिया भी है और संदर्भपरक अर्थ के प्रतिपादन के लिए कई विकल्प भी मिल जाते हैं। अत: अनुवाद के मूल्यांकन में मूल पाठ के गहन विश्लेषण की अपेक्षा रहती है। मूलपाठ के

Touch 'n' Pass

विश्लेषण के लिए अनुवाद में कोशगत अर्थ के साथ-साथ संदर्भगत और पाठगत अर्थ भी होता है। संदर्भगत और पाठगत अर्थ वाक्योपरि सरंचना में निहित होता है जबकि कोशगत अर्थ शब्द और वाक्य स्तर पर ही अर्थवत्ता प्राप्त करता है। इसमें भाषिक और भाषेतर आधार मूल्यांकन में सहायता करते हैं। भाषिक स्तर पर शब्द, वाक्य, प्रोक्ति आदि न केवल वर्ण्य विषय और अन्तर-वाक्य सम्बन्धों का पता चलता है वरन् पाठ के सामान्य और विशिष्ट गुणों की भी जानकारी मिलती है। भाषेतर स्तर में भाषा प्रयोक्ता और भाषा प्रयोग दोनों को दृष्टि में रखा जाता है। इसमें भौगोलिक, सामाजिक और प्रयुक्तिपरक आयाम काम करते हैं जो मूल्यांकन में सहायता करते हैं

निष्कर्ष— इस प्रकार अनुवाद मूल्यांकन न तो व्यक्तिनिष्ठ, एकपक्षीय और तदर्थ होगा और न ही मूलपाठ से कटा हुआ अनुक्रिया पर आधारित आंशिक मूल्यांकन। वह मूलपाठ और अनुदित पाठ का समतुल्यता के विशिष्ट आधार पर सर्वांगीण मूल्यांकन होगा। इससे अनुवाद में पाए जाने वाले विभिन्न दोषों का कारण ढूँढ़ने में सहायता मिलेगी। वास्तव में अनुदित पाठ का पाठक वह है जिसकी भाषा मूलपाठ की भाषा नहीं है, इसलिए अनुदित पाठ की अपनी एक स्वतन्त्र सत्ता होती है। किन्तु यह सत्ता तभी सम्भव है जब वह अनुवाद अच्छा किया हुआ हो। अच्छे अनुवाद की पहचान के लिए कोई मानदण्ड होना चाहिए। उपर्युक्त चर्चा के आधार पर अच्छे अनुवाद में चार गुणों का होना अनिवार्य है— (i) मूलनिष्ठता (ii) पठनीयता (iii) बोधगम्यता (iv) प्रयोजन सिद्धि।

अनुदित पाठ में वे सभी सूचना तत्त्व अवश्य आ जाएँ जो मूलपाठ में अभिप्रेत हैं। यही मूलनिष्ठता है। मूलपाठ के कथ्य या विषयवस्तु का अंतरण करते हुए उसकी विधा या शैली को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। प्रयुक्ति के क्षेत्र में प्रशासन, विधि, विज्ञान की अपनी शब्दावली, शैली और मुहावरा होता है। अत: उसी के अनुरूप अन्तरण की अपेक्षा रहती है। शब्द या वाक्य या प्रोक्ति के स्तर पर यदि मूलपाठ को पृष्ठिभूमि में रखा जाता है, तो सफल अनुवाद की सम्भावना अधिक रहती है। पठनीयता और बोधगम्यता एक दूसरे से जुड़े हुए आयाम हैं। पठनीयता का सम्बन्ध अभिव्यक्ति से है और बोधगम्यता का संदेश से है। एक कथ्य को अभिव्यक्त करने के लिए अनुवादक के पास कई विकल्प हो सकते हैं किन्तु अनुवादक की सर्जनात्मक शक्ति मूलपाठ की सीमाओं से बँधी हैं, इसलिए वह अपनी शिक्षा, अभिरुचि, ज्ञान के कारण उनमें से किसी एक विकल्प को चुनेगा। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि उसने जिस विकल्प का चयन किया है वह सामान्यत: लक्ष्य भाषा का होना आवश्यक है अन्यथा वह बोधगम्य नहीं होगा हालाँकि यह स्थिति कठिन अवश्य है। पठनीयता की एक कसौटी यह भी है कि अनुवाद, अनुवाद न लगे मूल लेखन सा प्रतीत हो। अच्छे अनुवाद की सबसे बड़ी पहचान यही है। यदि यह अनुवाद स्वाभाविक हो गया तो उसमें काफी मात्रा में बोधगम्यता और संप्रेषणीयता भी होगी। अनुवादक ने जिस प्रयोजन के लिए अनुवाद कार्य किया, अगर वह उसमें सफल हो जाता है तो अनुवाद भी सफल हो जाता है। लक्ष्यभाषा का पाठक अगर मूल संदेश को समझ लेता है तो उसका प्रयोजन भी समझ जाएगा। यह अनुवाद लक्ष्यभाषा में स्वीकार्य होने पर अपने प्रयोजन को सिद्ध कर लेता है। इस प्रकार मूलनिष्ठता, पठनीयता, बोधगम्यता और प्रयोजनसिद्धि अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयाम हैं।

प्र.4. वर्णनात्मक अनुवाद समीक्षा का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

उत्तर

वर्णनात्मक अनुवाद समीक्षा

इसके अंतर्गत मूलपाठ का अनुवाद से मिलान करते हुए अनुवाद की समीक्षा की जाती है। संरचना एवं शिल्प दोनों स्तर पर अनुवाद का मूल्यांकन किया जाता है। उदाहरणस्वरूप हम "रामचरित मानस" के गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद के एक अंश को ले रहे हैं और उसकी समीक्षा करने का प्रयास कर रहे हैं।

उदाहरण 1. बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु वचन रबि कर निकर ।। 5 ।।

I bow to the lotus feet of my Guru, who is an ocean of mercy and is no other than Sri Hari Himself in human form, and whose words are sunbeams as it were for dispersing the mass of darkness in the form of gross ignorance.

चौ— बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ।।
अगिअ मूरिमय चूरन चारु। समन सकल भव रुज परिवारु ।। 1 ।।
सुकृति संभु तन बिमल बिभूती। मंजुल मंगल मोद प्रसूती ।।

जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किएँ तिलक गुन गन बस करनी ।। 2 ।।
श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती ।।
दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू ।। 3 ।।
उघरहिं बिमल बिलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ।।
सूझहिं राम चरित मनि मानिक। गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ।। 4 ।।

I greet the pollen-like dust of the lotus feet of my preceptor, refulgent, fragrant and flavoured with love. It is a lovely powder of the life-giving herb, which allays the host of all the attendant ills of mundane existence. It adorns the body of a lucky person even as white ashes beautify the person of Lord Siva, and brings forth sweet blessings and joys. It rubs the dirt off the beautiful mirror in the shape of the devotee's heart; when applied to the forehead in the form of a Tilak (a religious mark), it attracts a host of virtues. The splendour of gems in the form of nails on the feet of the blessed Guru unfolds divine vision in the heart by its very thought. The lustre disperses the shades of infatuation, highly blessed is he in whose bosom it shines. With its very appearance the bright eyes of the mind get opened; the attendant evils and sufferings of the night of mundane existence disappear; and gems and rubies in the shape of stories of Sri Rama, both patent and hidden, wherever and in whatever mine they may be, come to light- (1–4)

यह रामचरित मानस का गद्यानुवाद है जिसमें अनुवादक का मुख्य ध्यान कथ्य को सम्पूर्णता में प्रस्तुत करना रहा है। इसलिए तुलसीदास की कविता का शिल्प परक सौंदर्य यहाँ निरूपित नहीं हो सका है। मूल कविता के बिम्ब विधान का लालित्य अनुवाद में नहीं उभर सका है। कविता का अर्थ और कवि का भाव अंग्रेजी गद्य में पूरी तरह संप्रेषित करा पाना ही अनुवादक का अभीष्ट रहा है। इसलिए हिन्दी भाषा–संस्कृति के परिवेश तथा भारतीय जीवन दृष्टि को अनुवाद में सृजित करने का पूरा प्रयास अनुवादक ने किया है। गुरु के प्रति शिष्य का भक्ति एवं सम्मान भाव विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक बिम्बों द्वारा सृजित हुआ है। अनुवाद में उन बिम्बों को अन्तरित किया गया है। "पद कंज" के लिए lotus feet "पदमु पराग" के लिए pollen/ dust "पद नख मनि" के लिए gems in the form of nails on feet "विमल विलोचन ही के" के लिए bright eyes of mind आदि का प्रयोग किया गया है।

अंग्रेजी पाठक को "रामचरित मानस" के भाव–विधान् का आस्वाद कराने की दृष्टि से यह अनुवाद उपयुक्त है। यद्यपि हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं की सांस्कारिक दूरी रही है।

आगे हम एक और अनुवाद का उदाहरण लेते हैं जयशंकर प्रसाद रचित "कामायनी" के हरीचंद बंसल द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से;

चिंता

1
हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह ।

2
नीचे जल था, ऊपर हिम था, एक तरल था, एक सघन,
एक तत्त्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन ।

3
दूर दूर तक विस्तृत था हिम स्तब्ध उसी के हृदय समान,
नीरवता सी शिला चरण से टकराता फिरता पवमान ।

4
तरुण तपस्वी सा वह बैठा साधन करता सुर–श्मशान,
नीचे प्रलयसिन्धु लहरों का होता था सकरुण अवसान ।

TOUCH 'n' PASS

5
उसी तपस्वी से लम्बे थे देवदारु दो चार खड़े,
हुए हिम-धवल जैसे पत्थर बन कर ठिठुरे रहे अड़े ।
6
अवयव की दृढ़ माँस पेशियाँ, ऊर्जस्वित था वीर्य्य अपार,
स्फीत शिरायें स्वस्थ रक्त का होता था जिनमें संचार ।

Post-Deluge Anxiety

1
Sitting on a lofty peak of Himgiri
in cold shade of a cliff very high,
Viewed the surging Mood of Doom
a man with tears in his eye.
2
'Bove was snow and' neath the ocean,
one dead solid, one mobile;
One element there held the dominion,
was dull or animate in style.
3
Spread the snow to far-off horizon,
frozen was as heart of youth;
Struck the stormy wind at bottom
of hills which were calm and smooth.
4
Young man sat there like an ascetic
meditating on Deity-graves;
Neath the Sea of Doom was frantic
furious with high monstrous waves.
5
Stately like the same young ascetic
stood there a few pine trees,
With snow-covering white as marble,
hardened by the chilly breeze.
6
The fleshy muscles of limbs were moulded
firmly, shone on the lusty frame;
Flowing was healthy blood in heaving
veins at random, lost of aim.

हरीचंद बंसल ने "कामायनी" का पद्य में अनुवाद किया है। उन्होंने "कामायनी" के छंद और तुकान्त का भी अनुसरण किया है। अनुवादक की कोशिश रही है अनुवाद में मूल जैसी लय पैदा हो सके। शब्द लय की आवश्यकतानुसार उन्होंने अंग्रेजी शब्दों को Apostrophe देकर संक्षिप्त भी किया है; जैसे— Above 'Bove' या Beneath का 'Neath' या Amidst का 'Midst' आदि ।

TOUCH n PASS

किन्तु लयात्मकता के चक्कर में कहीं-कहीं अंग्रेजी का मुहावरा हाथ से छूट गया है और अंग्रेजी हिन्दी का अनुसरण करती दिखाई देती है। उदाहरण के लिए "धीरे-धीरे हिम आच्छादन हरने लगा धरातल से" के लिए

Gan to recade the snowy covering from the earth slowly-slowly में 'धीरे-धीरे' के पर्याय स्वरुप slowly-slowly का प्रयोग देखा जा सकता है। पुनरुक्ति हिन्दी की विशेषता है।

मूल के कथ्य और भाव को स्पष्ट करने के लिए अनुवादक ने अपनी ओर से टिप्पणियाँ भी दी हैं। सर्गों के नाम भी कथ्य को स्पष्ट करते हुए रखे है "चिंता" के लिए Post Deluge Anxiety "श्रद्धा" के लिए Shraddha Meets Manu आदि। प्रत्येक सर्ग के आरम्भ में उसका परिचयात्मक संदर्भ देते हुए उसका सार प्रस्तुत किया है ताकि पाठक को कथ्य सहज समझ आ सके। कविता के विम्ब विधान् और अभिधार्थ को अनुवाद में लाने में अनुवादक एक हद तक सफल भी हुआ है। किन्तु कामायनी में कविता के साथ-साथ दर्शन भी चलता है। काव्यार्थ के साथ जो शैवाद्वैत दर्शन परक अर्थ निहित है वह अनुवाद में समाविष्ट नहीं हो सका है। उदाहरण के लिए श्रद्धा सर्ग के निम्नलिखित अंश को देखें।

कर रही लीलामय आनंद माहचिति सजग हुई सी व्यक्त,
विश्व का उन्मीलन अभिराम, इसी से सब होते अनुरक्त ।
काम मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम ।"

Seems awakened Consciousness is,
manifesting in lovely sport
Beauty of the world's evolution,
wherein get all beings absored.
The world bedight with love auspicious
sprang from the Creator's wish,
Slighting which you unmindfully
render failure world of bliss."

मूलपाठ में निहित दर्शन और काव्य सौंदर्य दोनो ही अनुवाद से गायब हैं।

प्र.5. तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर

तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा

तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा में मूलपाठ के साथ उसके एक से अधिक अनुवादों की समीक्षा की जाती है। विभिन्न अनुवाद को तुलनात्मक दृष्टि से देखते हुए उनकी उपलब्धियों और सीमाओं का विश्लेषण किया जाता है। तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा के उदाहरण के रूप में हमने यहाँ Shakespeare के Merchant of Venice के दो अनुवादों को लिया। एक अनुवाद भारतेंदु हरिश्चन्द्र का "दुर्लभ बंधु" नाम से दूसरा रांगेय राघव का "वेनिस का सौदागर" नाम से। यहाँ मूल नाटक के साथ दोनों अनुवादों का कुछ अंश प्रस्तुत किया गया है।

मूल नाटक से उद्धरण

Por, Away then: I am lock'd in one of them;
If you do love me, you will find me out.—
Nerissa, and the rest, stand all aloof.—
Let music sound, while he doth make his choice;
Then, if he lose, he makes a swan-like end,
Fading in music : that the comparison
May stand more proper, my eye shall be the stream,
And wat'ry death-bed for him : He may win;
And what is music then? then music is
Even as the flourish when true subjects bow
To a new-crowned monarch: such it is,
As are those dulcet sound in break of day,

TOUCH 'n' PASS

That creep into the dreaming bridegroom's ear,
And summon him to marriage. Now he goes,
With no less presence, but with much more love,
Than young Alcides, when he did redeem
The virgin tribute paid by howling Troy
To the sea-monster : I stand for sacrifice,
The rest aloof are the Dardanian wives,
With bleared visages, come forth to view
The issue of the exploit. Go, Hercules!
Live thou, I live;—With much, much more dismay
I view the fight, than thou that mak'st the fray.
Music, whilst Bassanto comments on the caskets to himself.

SONG

1. Tell me where is fancy bred,
Or in the heart, or in the head?
How begot, how nourished?

Reply.

2. It is engender'd in the eyes,
With gazing fed; and fancy dies
In the cradle where it lies:
Let, us all ring fancy's knell;
I'll begin it, —Ding, dong, bell.

All. **Ding, dong, bell.**

Bass.— So may the outward shows be least themselves.
The world is still deceiv'd with ornament.
In law, what plea so tainted and corrupt,
But, being season'd with a gracious voice,
Obscures the show of evil? In religion,
What damned error, but some sober brow
Will bless it, and approve, it with a text,
Hiding the grossness with fair ornament?
There is no vice so simple, but assumes
Some mark of virtue on his outward parts.
How many cowards, whose hearts are all as false
As stairs of sand, wear yet upon their chins
The beards of Hercules, and frowning Mars;
Who, inward search'd, have livers white as milk!
And these assume but valour's excrement,
To render them redoubted, Look on beauty,
and you shall see' tis purchas'd by the weight
which therein works a miracle in nature,
Making them lightest that wear most of it :
So are those crispsed snaky golden locks,
Which make such wanton gambols with the wind,

TOUCH n' PASS

Upon supposed fairness, often known
To be the dowry of a second head,—
The scull that bred them, in the sepulchre.
Thus ornament is but the guiled shore
To a most dangerous sea; the beauteous scarf
Veiling an Indian beauty; in a word,
The seeming truth which cunning times put on
To entrap the wisest. Therefore, thou gaudy gold,
Hard food for Midas, I will none of thee :
Nor none of thee, thou pale and common drudge
'Tween man and man : but thou, thou meagre lead,
Which rather threat' nest, than dost promise aught,
Thy plainness moves me more than eloquence,
And here choose I, Joy be the consequencel
Por. How all the other passions fleet to air,
As doubtful thoughts, and rash-embrac'd despair
And shuddring fear, and green-ey'd jealously!
O love, be moderate, allay thy ecastacy,
In measure rain thy joy, scant this excess;
I feel too much thy blesssing, make it less,
For fear I surfeit!

1. **भारतेन्दु द्वारा 'अनुवाद'**

पुरश्री—अच्छा तो आप जायें, उन सन्दूकों में से एक में मेरा चित्र हैं; यदि आप मुझे चाहते होंगे तो वह आप को मिल जायगा। नरश्री तुम अब अलग खड़ी हो जाओ और जब आप संदूक पसन्द करने लगें तो कुछ गाना का भी आरम्भ हो, जिसमें यदि आप कहीं चूक जायें तो जैसे बत्तक अपना दम निकालने के समय गाता है वैसे ही आप के बिदा होने के समय भी गाना होता रहे। यदि कहिए कि बत्तक की समाधि पानी में होती है तो मेरी आँखें नदी बनकर आप के शत्रुओं की समाधि बन जायेगी। यदि कहीं आप ने दाँव मारा तो गाना क्या है मानो उस समय की सलामी का बाजा है जब कोई नया राजा सिंहासन पर बैठता है और उसकी शुभचिंतक प्रजा उसके अभिनन्दन को आती है, या वह मीठी तान है जिसे सुन कर नया वर विवाह के दिन सबेरे ही उठ कर ब्याह की तैयारी करता है। देखिए वह जाते हैं। जब रुद्र उस कुमारी को छुड़ाने गया था जिसे त्र्यम्बक ने समुद्र की एक आपत्ति को सौंप दिया था तो जैसा तेज उसके मुख पर बरसता था वैसा ही उनके मुँह पर बरसता है परन्तु प्रेम तो उसकी अपेक्षा कई अंश अधिक है। मैं भी उस कुमारी की भाँति बलिदान के लिये प्रस्तुत हूँ और यह स्त्रियाँ मानो त्र्यम्बक की रहने वाली हैं और वियोगिन बनी हुई खड़ी देख रही हैं कि इस दुस्तर कर्म का क्या परिणाम होता है। अच्छा मेरे रुद्र जाओ, अब तो मेरा जीवन तुम्हारे प्राण के साथ है। और निश्चय रखिए कि आप का चित्त यद्यपि आप स्वयं लड़ने जाते हैं, इतना न धड़कता होगा जितना मेरा धड़कता है यद्यपि मैं केवल दूर से खड़ी हुई कौतुक देख रही हूँ।

गीत

अहो यह भ्रम उपजत कित आय।
जिय मैं कै सिर मैं जनमत है बढ़त कहाँ सुख पाय ।
ता को यह उत्तर जिय उपजत बढ़त दृष्टि मैं धाय ।
पै यह अति अचरज कै जित यह जनमत तितहि नसाय ।
देखि ऊपरी चमक चतुर हूँ जद्यपि जात भुलाय ।।
पै जब जानत अथिर ताहि तब निज भ्रम पर पछिताय ।
तासों टनटन बजै कहौ अब घण्टा हू घहराय ।

बसंत—सच है जो पदार्थ देखने में भले और भड़कीले होते हैं वस्तुत: कुछ नहीं होते। संसार के लोग बाहरी चमक-दमक में भूल जाया करते हैं। देखिए कानून में कोई दलील कैसी ही झूठी और बे सिर पैर की क्यों न हो यदि उसी को साधु भाषा में नमक मिर्च

लगाकर कहिए तो उसका सब अवगुण छिप जाता है। उसी भाँति धर्म में देखिए तो कैसी ही घृणा के योग्य भूल क्यों न हो कोई न कोई उपयुक्त युक्ति मनुष्य उसके प्रमाण में देकर उसे सराहेगा और उसके दोषों पर सुवर्ण का पर्दा डाल देगा। निरी बुराई पर भी बाहरी भलाई का मुलम्मा चढ़ जाता है। देखिए कितने ऐसे डरपोक मनुष्य, जिनके चित्त बालू की भीत की भाँति निर्बल हैं, दाढ़ी और रूप रंग में मानसिंह और विजयसेन को तुच्छ करते हैं और भीतर देखिए तो उनका दुर्बल अंत:करण दूध सा स्वच्छ है। उन लोगों को कहना चाहिए कि यह केवल वीरपुरूषों का उतरन अपना प्रभाव दिखलाने के निमित्त पहिन लेते हैं सुन्दरता की ओर दृष्टि कीजिए तो विदित होगा कि वह केवल चाँदी की न्यौछावर है जितना रुपया लगाइए उतनी ही भड़क हो। वास्तव में तत्त्वनिरूपण करने पर करामात प्रतीत होने लगती है, जिसके सिर पर जितना अधिक भार है उतना ही विशेष तुच्छ है। यही दशा उन घुंघरवाले सुन्दर कचकलापों की है जो वायु में इस भाँति बल खाते हैं कि मन को लुभा लेते हैं। देखिए एक के सिर से उतर कर दूसरे के सिर चढ़ते हैं और जिस सिर ने उन्हें पाला था अंत में कीड़ों का आहार है। अत: भूषण वसन क्या है मानो–किसी बड़े भयानक समुद्र का ऐसा किनारा है जो थाह बता कर गोता दे या किसी हिन्दुस्तानी स्त्री का भड़कीला दुपट्टा है, अर्थात् यह कहना चाहिए कि समय के छली लोग झूठ को ऐसा सच करके दिखा देते हैं कि बड़े-बड़े बुद्धिमान की बुद्धि चकित हो जाती है। इसलिये चमकीले सोने जिसने महाराज मागधि से उसका खाना लेकर लोहे के चने चबवाए' मैं तुझ को न छुऊँगा और न तुझे ऐ कुरूप चाँदी जिसके लिये एक मनुष्य दूसरे की सेवा करता है। परन्तु तुच्छ सीसे जिसके देखने से आशा के बदले भय उत्पन्न होता है—

वचन रचन तजि और के, तोही पै बिस्वास ।
उदासीन प्रेमी मनहिं, लखि तुव रंग उदास ।।
औरन तजि तासों चुनत, सीसक अब हम तोहि ।
आनँदघन करुयायतन करहु अनंदित मोहि ।।

पुरश्री— (आप ही आप)

मिटयौ सकल भ्रम भीति नसानी ।
नसी निरासा जिय-दुखदानी ।।
मोह-कंवल-रुज दृग सों भाग्यौ ।
संसय तजि मन आनंद पाग्यौ ।।
प्रेम! धीर धरु किन अकुलाई ।
धरत सीवैं तजि पगहि बढ़ाई ।।
आनन्द नीर इतो हिय-जलधर ।
उमगि उमगि जनि बरस धार धर ।
यह सुख नदि उमड़ि जो आई ।
मम घट घट नहीं सकत समाई ।।
होइ न कहूँ अनन्द अजीरन ।
तासों धरु धीरज चंचल मन ।।

'दुर्लभ बंधु' से

2. रांगेय राघव द्वारा अनुवाद से

पोर्शिया—अच्छी बात है, चलो। मैं इनमें से एक में बन्द हूँ। यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो तो अवश्य मुझे ढूँढ निकालोगे। नैरिसा और सब लोग एक तरफ हो जाओ! चुनाव के समय, मधुर संगीत होने दो, ताकि यदि ये असफल भी हो गए तो उस हंस के समान संगीत-माधुरी में तन्मय लौट सकें जो कि मरते समय गाता है और उस तुलना को पूर्ण करने के लिए मेरे नयनों से गिरते अश्रु काम देंगे। किन्तु यदि ये सफल होते हैं तो संगीत ही तूर्यनाद हो जाएगा, जैसे कि सिंहासनारोहण करते समय नये राजा के लिए होता है और यह संगीत उतना ही मधुर होगा, जितना कि सुख निदिया से दुल्हे को विवाह के दिन के लिए जगाने वाला संगीत होता है। बैसेनियों महावीर हरक्यूलीज की भाँति बढ़ते हैं, किन्तु हरक्यूलीज तो केवल योद्धा था, उसमें इनका सा प्रेम कहाँ था! ठीक वैसे ही जैसे ट्रॉय के राजा लाओमिडॉन की पुत्री हिसीओन को उस समय हरक्यूलीज छुड़ाने गया था जबकि ट्रॉय की रोती हुई प्रजा राजकुमारी को समुद्री दैत्य की बलि चढ़ाने जा रही थी। मैं खड़ी हूँ यहाँ उसी हिसिओन की भाँति, और यह नैरिसा, ये मेरी सेविकाएँ खड़ी है उन ट्रॉय नगरवासिनी स्त्रियों की भाँति जो उस महान् साहसपूर्ण कार्य को अश्रुपूर्ण नयनों से देख रही थी।

TOUCH 'n' PASS

बढ़ो ! मेरे हरक्यूलीज ! तुम्हारी सफलता पर मेरा जीवन, मेरे जीवन का आनन्द निर्भर है। यदि तुम असफल होते हो तो वही मेरे लिए मृत्यु है। मैं इस संघर्ष को तुमसे भी अधिक लगाव से देखूँगी, क्योंकि तुम भी इससे उतने प्रभावित नहीं होओगे ! (बैसैनियों जब डिब्बों का निरीक्षण करता हुआ अपने-आप से बोलता है तब संगीत सुनाई देता है।)

गीत

क्षणभंगुर अस्थायी चंचल—
प्रेम कहाँ रहता है छिपता?
मन में, या विचार में बोलो,
कब जन्मा वह कैसे पलता?
बोलो, बोलो !
नयनों में वह जन्म नया धर
रहता तब तक जीवित निर्भर
जब तक लक्ष्य उसे है दिखता
सच्चा प्रेम यही है करता !
ऐसे छलमय चपल प्रेम को
दूर हटाओ, दूर हटाओ,
मैं घंटे अब करूँ निनादित
चलो विदा दो उसको आओ !
सब : चलो, बिदा दो उसको आओ !

बैसैनियो—इसी प्रकार वस्तु के बाह्य रूप और आंतरिक रूप एक-दूसरे से दूर हो सकते हैं, संसार केवल बाह्यरूप से ही प्रताड़ित होता रहता है। न्यायालय में जब तर्क नहीं रहता है तब भी वकील के शब्दाडम्बर से कुरूप अन्याय छिपा रह जाता है। धर्म के क्षेत्र में कोई भी अनर्गलता क्यों न हो, शास्त्र का प्रमाण देकर सब कुछ स्वीकार कर लिया जाता है। कौन-सी कुरीति या बुराई नहीं है जो अपने को किसी अच्छाई के जाल से नहीं ढके रहती? कितने ऐसे कायर, जिनके हृदय धसकती बालू से भी कच्चे होते हैं, देखने में परमवीर हरक्यूलीज की-सी दाढ़ी नहीं रखते, युद्ध-ग्रह मंगल देवता की भाँति कठोर दृष्टि से नहीं देखते? किन्तु उनमें न साहस होता है, न शक्ति ही। सौन्दर्य को ही लें ! कितना ही तो उस शृंगार और प्रसाधन के कारण आकर्षक होता है, चाहे वह सामग्री हाट से कितने ही ऊँचे मोल पर क्यों न खरीदी गई हो। किन्तु यह बाह्य शृंगार तो ठोस नहीं होते। यह तो कृत्रिम सौन्दर्य होता है। मिथ्या रूपसी के सुनहले साँपों से लहराते घुंघराले केशों के साथ क्या यह सत्य नहीं होता कि वे किसी मृत स्त्री के ही होते हैं, जिन्हें वह अपने ऊपर लगा लेती है? आभूषण तो एक भयानक समुद्र के प्रतारण-भरे तीर होते हैं। वह तो उस सुन्दर अवगुंठन की भाँति होते हैं जो एक कृष्णवर्ण भारतीय सुन्दरी के मुख को ढके रहते हैं। ये चतुर जाल तो बुद्धिमानों को भी ठग लेते हैं। ये सत्य होते नहीं, सत्य-से लगते अवश्य हैं। इसलिए तो चमकदार सोने ! अतीत के राजा माइडास का भोजन। मुझे तुझसे कोई काम नहीं। ओ चाँदी ! ओ मनुष्य और मनुष्य के बीच माध्यम के दीन साधन ! मैं तो इस दरिद्र रांगे को चुनूँगा क्योंकि यह कोई झूठा-सा वादा नहीं करता। इसकी सुस्ती मुझे बुलाती है, सोने और चाँदी की चमक मुझे नहीं लुभा सकेगी। मैं इसी को चुनता हूँ और मुझे लगता है कि यही मुझे सफलता दिलाएगा।

पोर्शिया—(स्वगत) कितनी शीघ्र ही वे संदेहात्मक विचार, आतुर, निराशा, काँपना, भय, हरी आँखों वाली ईर्ष्या जैसे भाव विलीन हो गए। आह रे प्रेम! अपने आनन्द पर संयम कर, अपने हर्ष को क्रमशः मेरे मानस पर प्रस्रवित कर, कहीं उसकी अति न हो जाए। विभोर सुख सीमित रह, कहीं मर्यादा का अतिक्रमण न हो जाए।

टिप्पणी— 1. भारतेंदु द्वारा अनुवाद को लें। इस अनुवाद की समीक्षा करते हुए हम पाएँगे कि भारतेंदु ने शेक्सपियर के नाटक के कथ्य को हिंदी में भाषांतरित करने के साथ-साथ उसका सांस्कृतिक अंतरण भी कर दिया है। इसलिए सभी पात्रों के नाम भारतीय हो गए हैं। एंटोनियों (Antonio) अनन्त हो गया है। पोर्शिया (Portia) पुरश्री, बेसेनियो (Bassanio) बसंत हो गया है और सोलिनियो सलोने। इसी तरह स्थान नाम वेनिस (Venice) बंशपुर हो गया है और बेल मोंट Belmont 'बिल्व मठ', ट्राय (Troy) यंबक हो गया है तथा उपाधि ड्यूक (Duke) मंडलेश्वर। नाटक में आए पौराणिक और मिथक संदर्भों का भी भारतीयकरण करते हुए Hercules को रूद्र और मानसिंह तथा Mars को विजयसेन कर दिया गया है। नाम, स्थान पौराणिक संदर्भ आदि बदलने में अनुवादक का उद्देश्य रचना को एक भाषा संस्कृति से दूसरी भाषा संस्कृति में अन्तरित करना रहा है। जिससे पाठक अनुदित रचना से तादात्म्य स्थापित कर सकें और अनुवाद में मूल का सा आनन्द उठा सकें। भाव एवं संवेदना के

स्तर पर अनुवाद शेक्सपियर के नाटक के पर्याप्त निकट रहने पर भी यह अनुदित रचना हिन्दी भाषा की रचनाओं में अपना स्थान बनाती है। इसके लिए इसकी भाषिक सृजनशीलता और सांस्कृतिक अंतरण दोनों ही जिम्मेदार हैं। अनुवाद में इस अंतरण को देशकाल की दृष्टि से भी परखा जाना चाहिए। भारतेन्दु काल में अधिकांश हिन्दी पाठक अंग्रेजी भाषा और जीवन पद्धति से उतने परिचित नहीं थे जितने कि आज हैं। ऐसे में पाठक वर्ग को दृष्टि में रखते हुए नाटक का भारतीयकरण रचना से तादात्म्य स्थापित करने की दृष्टि से प्रासंगिक है।

हालाँकि नामों के रूपातंरण के प्रयास में उन्हें कई बार उनसे जुड़ी कथा का भी रूपांतरण करना पड़ा है। उपर्युक्त उदाहरण में माइडास को महाराजा मागधि कहने पर उनसे संबद्ध लोहे के चने चबाने की कथा रखनी पड़ी है जब कि माइडास जो चीज छू लेता था वह सोना हो जाती थी अंततोगत्वा उसका भोजन भी सोना हो गया था। हिन्दी भाषा के बोलचाल के स्वरूप को लाने की दृष्टि से अनुवाद में मुहावरेदार भाषा का इस्तेमाल किया गया है।

2. अब रांगेय राघव के अनुवाद को लेते हैं। यह अनुवाद पिछले अनुवाद से करीब 60-70 वर्ष बाद का है। इसके समय तक हिन्दी पाठक पश्चिमी जीवन संस्कृति से काफी परिचित हो चुका था। अनुवादक ने नामों और स्थानों में कोई परिवर्तन नहीं किया है भाषा संस्कृति में अंतरण की आवश्यकता उन्होंने महसूस नहीं की। ''दुर्लभ बंधु'' की भाषा में जहाँ भावावेग की प्रबलता है वहीं ''वेनिस का सौदागर'' की भाषा में गद्य की वैचारिकता और तार्किकता है। मुहावरा बोलचाल का ही है लेकिन भाव के स्थान पर विचार और तर्क की प्रधानता वास्तव में दो समयों के अन्तर का बोध कराती है। रांगेय राघव ने पश्चिमी नामों को रखा है। संस्कृति की दृष्टि से जहाँ ऐसा लगा है कि पाठक को संदर्भ नहीं समझ आएगा वहाँ पाद टिप्पणी दे दी है जैसे मरते समय हंस के गीत के विषय में बताया है कि यह योरोप की काव्य रूढ़ि है। इसी तरह माइडास के प्रसंग में उससे सम्बन्धित कथा पाद टिप्पणी में दी है। लेकिन भारतेंदु के अनुवाद में भारतीय पाठक-दर्शक की संवेदना का विशेष ध्यान रखा गया है। उदाहरण के लिए पोर्शिया (पुरश्री) द्वारा बेसेनियो (बसंत) के लिए प्रयुक्त "My eyes shall be stream and wat'ry death..bed for him" का अनुवाद भारतेंदु ने किया है ''मेरी आँखें नदी बन कर आपके शत्रुओं की समाधि बन जाएगी।''

यहाँ मूल में बैसैनियो की हंस जैसी मृत्यु और जल-समाधि का संकेत है लेकिन हिन्दी की कथन शैली में ऐसा कहना अमंगल का सूचक होगा। अत: ''आपके शत्रुओं की समाधि कहा गया है।''

रांगेय राघव ने हंस जैसी मृत्यु के प्रसंग के साथ पाद टिप्पणी दी है और जल-समाधि के प्रसंग को छोड़ दिया है क्योंकि हिन्दी पाठक अथवा दर्शक के सामने कही गई यह बात प्रभावपूर्ण न होती।

भारतेंदु के अनुवाद में कहीं-कहीं संवादों का पद्यानुवाद भी है जैसे पुरश्री का कथन ''मिट्यो सकल भ्रम .....'' रांगेय राघव ने केवल गीतों का ही पद्यानुवाद किया है। दोनों के गीतों के अनुवाद क्रमश: ब्रजभाषा कविता और खड़ी बोली कविता की सरसता और सहजता प्रस्तुत करते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. समीक्षा के जनक कौन हैं?

(क) डॉ० रघुवीर (ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ग) श्यामसुंदरदास (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्र.2. नई समीक्षा के प्रर्वतक के रूप में किसे जाना जाता है?

(क) टी०एस० एलियट (ख) ए०सी० सेनगुप्त (ग) ये दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (क) टी०एस० एलियट

प्र.3. मूल्यांकन प्रक्रिया के मुख्य सोपान कितने हैं?

(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच

उत्तर (ख) तीन

प्र.4. पुनरीक्षण प्रक्रिया किसके द्वारा की जाती है?

(क) साहित्य (ख) अनुवादक (ग) विद्वानों (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ख) अनुवादक

प्र.5. पुनरीक्षण के अनुवाद का परीक्षण कितने स्तर पर किया जाता है?

(क) तीन (ख) चार (ग) दो (घ) पाँच

उत्तर (ग) दो

प्र.6. पुनरीक्षण को अंग्रेजी में क्या कहा जाता है?
(क) वैटिंग (ख) वेटर (ग) क्रिटिसिज्म (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) वैटिंग

प्र.7. अनुवाद के बाद की जाने वाली प्रक्रिया है–
(क) पुनरीक्षण (ख) मूल्यांकन (ग) ये दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) ये दोनों

प्र.8. जाँच के साथ सुधार, संशोधन और सम्पादन किसमें शामिल हैं?
(क) पुनरीक्षण (ख) मूल्यांकन (ग) दोनों (क) और (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) पुनरीक्षण

प्र.9. अनुवाद परीक्षण अनुवाद प्रक्रिया का कौन-सा सोपान है?
(क) प्रथम (ख) अंतिम (ग) मध्य (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) अंतिम

प्र.10. साहित्येतर अनुवाद को यथातथ्य, सहज, सुबोध और प्रवाहशील बनाने के लिए किसकी भुमिका अदा करता है?
(क) पुनरीक्षक पर्यवेक्षक (ख) अनुवादक (ग) दोनों (क) और (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) पुनरीक्षक पर्यवेक्षक

प्र.11. पुनरीक्षक का क्या कार्य होता है?
(क) संशोधन करना (ख) अनुवाद करना (ग) रचना करना (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) संशोधन करना

प्र.12. 'वद्' धातु का अर्थ है–
(क) बोलना (ख) कहना (ग) (क) और (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) (क) और (ख) दोनों

प्र.13. भारतीय मत के कितने उपवर्ग हैं?
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच
उत्तर (क) दो

प्र.14. अनुवाद के सार्थक स्वरूप की संरचना का मुख्य तत्त्व है–
(क) सम्प्रेषण (ख) मूल कथ्य का संतरण
(ग) संस्कृति का संतरण (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.15. निम्नलिखित में से क्या एक अच्छे अनुवादक का गुण है?
(क) स्रोत एवं लक्ष्य दोनों भाषाओं का ज्ञान (ख) संबंधित विषय का संपूर्ण ज्ञान
(ग) स्वतंत्र विचार शक्ति (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.16. किसी काव्य रचना का गद्य, पद्य या मुक्त छंद में अनुवाद कहलाता है?
(क) गद्यानुवाद (ख) पद्यानुवाद (ग) काव्यानुवाद (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) काव्यानुवाद

प्र.17. स्रोत ग्रंथ के शैली, कहावतों तथा देशीय उपमानों से स्वतंत्र होकर किया जाने वाला क्या कहलाता है?
(क) मूल बंध अनुवाद (ख) मूल मूक्त अनुवाद (ग) छायानुवाद (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) मूल मूक्त अनुवाद

प्र.18. गद्य पद्य के आधार पर अनुवाद का भेद है?
(क) गद्यानुवाद (ख) पद्यानुवाद (ग) मुक्तछन्दानुवाद (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

TOUCH 'n' PASS

प्र.19. जब अनुवाद में मूल शब्द, वाक्य आदि पर ध्यान न देकर केवल भाव या विचार पर ध्यान दिया जाता है तो उसे क्या कहते हैं?
(क) भावानुवाद (ख) सारानुवाद (ग) छायानुवाद (घ) शाब्दानुवाद
उत्तर (क) भावानुवाद

प्र.20. किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा अनुवाद की जाँच और परिर्माजन करने की प्रक्रिया क्या कहलाती है?
(क) अनुरीक्षण (ख) पुनरीक्षण (ग) मूल्यांकन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) पुनरीक्षण

प्र.21. पुनरीक्षण करते समय पुनरीक्षण निम्न में से क्या करता है?
(क) अनुदित पाठ का अवलोकन (ख) मूल पाठ से तुलना
(ग) अपेक्षित संशोधन (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.22. अनुवाद का पुनरीक्षण किया जाता है–
(क) शिल्प के स्तर पर (ख) कथ्य के स्तर पर (ग) (क) और (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) (क) और (ख) दोनों

प्र.23. निम्नलिखित में से किसे अनुवाद प्रक्रिया में शामिल किया जाता है?
(क) पुनरीक्षण (ख) मूल्यांकन (ग) समीक्षा (घ) ये सभी
उत्तर (क) पुनरीक्षण

प्र.24. एक पुनरीक्षण में कौन-से गुण होने चाहिए?
(क) विषय का ज्ञान (ख) भाषा विश्लेषण की क्षमता
(ग) तटस्थ भाव से निर्णय लेने की क्षमता (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.25. अनुवाद का परीक्षण करके गुण दोष आदि की जाँच करना क्या कहलाता है?
(क) मूल्यांकन (ख) आलोचना (ग) समालोचना (घ) ये सभी
उत्तर (क) मूल्यांकन

प्र.26. पुनरीक्षण और मूल्यांकन में अन्तर है?
(क) मूल्यांकन में गुण दोष की जाँच की जाती है। पुनरीक्षण में सुधार भी
(ख) पुनरीक्षण अनुवाद की अंतिम सोपान है मूल्यांकन उसके बाद की क्रिया
(ग) (क) और (ख) दोनों (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं
उत्तर (ग) (क) और (ख) दोनों

प्र.27. निम्न में से अनुवाद मूल्यांकन का मुख्य आधार है?
(क) मूलनिष्ठता (ख) पठनीयता (ग) बोधगम्यता (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.28. अनुवाद कार्य का ऐसा अध्ययन जिससे अनुवाद की गुणवत्ता और स्तरीयता का पता चलता है क्या कहलाता है?
(क) पुनरीक्षण (ख) समीक्षा (ग) अध्ययन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) समीक्षा

प्र.29. निम्न में से अनुवाद समीक्षा का सोपान है?
(क) मूलभाषा लक्ष्य भाषा पाठ का विश्लेषण (ख) दोनों की तुलना करना
(ग) भाषागत विशुद्धता का परीक्षण (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.30. पुनरीक्षण करते समय पुनरीक्षण भाषा के किस बिन्दु पर ध्यान देता है?
(क) शब्द चयन (ख) वाक्य विन्यास (ग) व्याकरणिक अशुद्धियाँ (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

TOUCH 'n PASS

UNIT-VII

अनुवाद सैद्धांतिकी-एक

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. प्रशासनिक अनुवाद का सम्बन्ध किससे है और इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर प्रशासनिक अनुवाद का सम्बन्ध विशेष रूप से भारतीय प्रशासन व्यवस्था से है और इसकी आवश्यकता सरकारी नीति के तहत पड़ी।

प्र.2. संक्षिप्ति किससे मिलकर बनी होती है?

उत्तर संक्षिप्ति अक्सर किन्हीं दो शब्दों पदों के प्रथमाक्षरों से मिलकर बनी होती है।

प्र.3. भारत में प्रशासन के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया तो प्रशासन के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता पड़ी।

प्र.4. प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद प्रमुख रूप से किसमें होता है?

उत्तर प्रशासनिक क्षेत्र के अनुवाद प्रमुख रूप से अंग्रेजी से हिन्दी में होता है।

प्र.5. मूलभूत विज्ञान के अन्तर्गत कौन-से विषय आते हैं?

उत्तर मूलभूत विज्ञान के अन्तर्गत मुख्य रूप चार विषय आते हैं—1. भौतिकी, 2. रसायन, 3. गणित एवं 4. प्राणी विज्ञान।

प्र.6. विज्ञान प्रणाली के तीन प्रमुख गुण कौन-से हैं?

उत्तर विज्ञान प्रणाली के तीन प्रमुख गुण हैं—तर्क, प्रामाणिकता और वस्तुनिष्ठता।

प्र.7. विज्ञान की भाषा का उपयोग कुछ क्षेत्रों में कितने स्तरों पर होता है?

उत्तर विज्ञान की भाषा का उपयोग कुछ क्षेत्रों में चार स्तरों पर होता है—1. वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्तर, 2. कार्यालयी स्तर, 3. दैनन्दिन व्यवहार का स्तर तथा 4. प्रचार बिक्री का स्तर।

प्र.8. बजट नियंत्रण से क्या किया जाता है?

उत्तर बजट नियंत्रण से आय-व्यय, लागतों और लाभों का नियंत्रित किया है।

प्र.9. विनिमय पत्र किसे कहते हैं?

उत्तर विनिमय पत्र या प्रतिज्ञा पत्र या चैक का धारक वह व्यक्ति होता है, जो उस प्रपत्र को अपने नाम से रखने का हकदार है वह उस प्रपत्र पर देय राशि प्रपत्र के पक्षकारों से प्राप्त करने या वसूल करने का भी हकदार होता है।

प्र.10. बैंकिंग क्षेत्र में Fate शब्द का अर्थ किसकी स्थिति जानने के लिए किया जाता है?

उत्तर बैंकिंग क्षेत्र में Fate शब्द का अर्थ भुगतान/निपटान की स्थिति जानने के लिए किया जाता है।

प्र.11. बैंकिंग संक्षेपीकरण से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर बैंकिंग अनुवाद की एक विशेषता यह है कि इसमें अति संक्षेपीकरण होता है अभिव्यक्तियाँ भी अति संक्षिप्त होती हैं। इसका कारण यह है कि हजारों-लाखों की मात्रा में दैनिक संव्यवहार करने होते हैं। अत: विस्तार से बचा जाता है, कहीं-कहीं तो शब्द इतने सीमित होते हैं कि बैंक व्यवसायी ही उन्हें समझ सकते हैं; जैसे— Dr to SB A / C 4320 Cr to CCA/C 4623. इतनी संक्षिप्ति का अनुवाद होगा बचत बैंक खाता सं. 4320 को नामे करें तथा नकद उधार खाता संख्या 4623 में जमा करें। इस प्रकार बैंकिंग कारोबार में संक्षिप्तीकरण हुआ है।

TOUCH n PASS

प्र.12. To mail transfer के लिए हिन्दी अनुवाद क्या होगा?

उत्तर To mail transfer के लिए हिन्दी अनुवाद 'डाक अंतरण हेतु' होगा।

प्र.13. विधि की भाषा के किन्हीं तीन लक्षणों के नाम लिखिए।

उत्तर विधि की भाषा के तीन लक्षण हैं—(i) भाषा की संवेदनशीलता, (ii) न्यायालय द्वारा अर्थ व्याख्या तथा (iii) राजपत्र में अधिसूचना।

प्र.14. विधि के क्षेत्र में अनुवाद में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर विधि के क्षेत्र में अनुवाद में दो बातों का ध्यान रखना चाहिए—(i) शाब्दिक अनुवाद तथा (ii) सरलीकरण बहुत सीमित स्थितियों में करना।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. हिन्दी अनुवाद में प्रशासनिक अनुवाद पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

हिन्ही अनुवाद में प्रशासनिक अनुवाद

प्रशासनिक अनुवाद का संबंध विशेष रूप से भारतीय प्रशासन व्यवस्था से है। प्रशासनिक अनुवाद के संबंध में ध्यान देने की बात यह है कि इसकी आवश्यकता किसी अंत:प्रेरणा अथवा बौद्धिक आवश्यकता अथवा शैक्षिक जरूरत के तहत नहीं पड़ी बल्कि सरकारी नीति के तहत पड़ी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् स्वभाषा के माध्यम से स्वशासन की बात उठी और हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाने के लिए ब्रिटिश कानून, कार्यविधि साहित्य और दस्तावेज का हिंदी अनुवाद आवश्यक हुआ। लेकिन बाद में नीति बनी कि राजभाषा के स्तर पर हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग तब तक जारी रखा जाए जब तक अहिंदी-भाषी राज्य इसके लिए सहमति न दे दें। इस नीति के तहत लगभग हर प्रशासनिक कागजात का अनुवाद लगातार करना पड़ता है।

प्रशासनिक अनुवाद करने के लिए अनुवाद अधिकारियों कर्मचारियों की व्यवस्था है। वे रोजगार के रूप में अनुवाद को अपनाते हैं और अपने पदीय दायित्व के रूप में अनुवाद कार्य करते हैं। इसलिए साहित्य के अनुवाद में जिस प्रकार का सृजनात्मक सुख अनुवादक अनुभव करता है वैसा प्रशासनिक क्षेत्र का अनुवादक नहीं करता। हाँ, विषय को भली-भाँति प्रस्तुत कर देने, उसे सहज ढंग से सम्प्रेषणीय बना देने के दायित्व को पूरा करने का संतोष उसे अवश्य मिलता है।

प्रशासनिक हिंदी के स्वरूप निर्माण में अनुवाद की प्रमुख भूमिका रही है। हिंदी की साहित्यिक तथा अन्य ज्ञानपरक प्रयुक्तियों की भाँति इस प्रशासनिक प्रयुक्ति की विशिष्ट ऐतिहासिक परंपरा नहीं रही। अत: आज इस क्षेत्र में अनुदित शब्दावली और अनुदित भाषा में वैसी रवानगी नहीं दिखाई जाती जैसी हिंदी की अन्य प्रयुक्तियों अथवा लोकभाषा में दिखाई देती है।

प्रशासनिक क्षेत्र की तकनीकी शब्दावली को समेकित कर संकलित कर दिया गया है। उसके हिंदी पर्याय निर्धारित कर दिए गए हैं। प्रशासनिक क्षेत्र में उसका व्यवहार भी होता है। लेकिन प्रशासनिक क्षेत्र की भाषा को लेकर आपत्तियाँ भी उठाई जाती हैं। प्रशासनिक अनुवादक की मुश्किल यह होती है कि वह इस शब्दावली का प्रयोग करने के लिए बाध्य है क्योंकि तकनीकी शब्दों के लिए तकनीकी पर्याय रखना ही पड़ता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक अधिक से अधिक इस शब्दावली और अभिव्यक्ति शैली की पठनीयता और सहजता बनाए रखने का प्रयास ही कर सकता है।

शब्दावली के आधार पर इस अनुवाद को कठिन कहना एक हद तक गलत भी हैं क्योंकि शब्दावली तभी तक कठिन होती है जब तक प्रचलन में न आए। प्रचलित हो जाने पर उसकी आदत पड़ जाती है।

प्र.2. प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद का क्या महत्त्व है?

उत्तर

प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व

स्वतंत्र भारत को प्रशासन व्यवस्था का ढाँचा ब्रिटिश राज से मिला है। अंग्रेजों के बनाए नियम कानून आदि सभी अंग्रेजी में थे। साथ ही प्रशासनिक कार्य में लगे अधिकारी-कर्मचारी वर्ग को भी अंग्रेजी में ही काम करने की आदत थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया तो प्रशासन के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता पड़ी। इसके लिए व्यापक स्तर पर व्यवस्था की गई है। हिन्दी में शब्दावली निर्माण, अनुवादकों की भर्ती तथा अनुवाद कार्य के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। सरकार द्वारा विभिन्न मंत्रालयों, कार्यालयों तथा विभागों से सम्बंधित कार्यविधि साहित्य का अनुवाद शुरू कराया गया है।

TOUCH 'n' PASS

हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किए जाने के बावजूद प्रावधान यह है कि अंग्रेजी को सह राजभाषा के रूप में तब तक उपयोग में लाया जा सकता है जब तक कि सभी कार्यालयों के अधिकारी व कर्मचारी हिन्दी नहीं सीख लेते। ऐसे स्थिति में प्रशासनिक स्तर पर द्विभाषिक स्थिति चल रही है। द्विभाषिकता के कारण नए बनने वाले नियम कानून तथा आदेश, परिपत्र, संधि, करार, रिपोर्टें आदि द्विभाषिक प्रस्तुत किए जाते हैं। अंग्रेजी में पहले तैयार करके उनका हिन्दी अनुवाद किया जाता है। इस तरह अनुवाद प्रशासनिक क्षेत्र की अनवरत प्रक्रिया बन गया है। हर एक दस्तावेज द्विभाषिक तैयार होना है इसलिए उसका अनुवाद करना अपेक्षित होता है।

सरकारी कार्यालयों के अलावा सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों, निगमों, कम्पनियों, बैंकों आदि को भी अपने प्रशासनिक कार्यों में सरकारी भाषा नीति का पालन करना आवश्यक है, अत: वहाँ भी अनुवाद की प्रक्रिया निरन्तर चलती है। केन्द्र और राज्य सरकार के बीच प्रशासनिक कार्यों के लिए भी अनुवाद की जरूरत पड़ती है विशेष रूप से अहिन्दी राज्यों के मामले में।

प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद प्रमुख रूप से अंग्रेजी से हिन्दी में होता है। आवश्यकतानुसार थोड़ा बहुत अनुवाद हिन्दी से अंग्रेजी में भी किया जाता है। इस क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व यही है कि वर्तमान परिस्थितियों में यह एक अनिवार्यता बना हुआ है।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुवाद का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुवाद

मूलभूत विज्ञान के अंतर्गत मोटे रूप से चार विषय आते हैं—भौतिकी, गणित, रसायन और प्राणि विज्ञान। वनस्पति विज्ञान, आयुर्विज्ञान, इंजीनियरी, कम्प्यूटर विज्ञान, कृषि आदि विषय इन्हीं से निकले हैं। विज्ञान प्रणाली के तीन प्रमुख गुण माने जाते हैं—तर्क, प्रामाणिकता और वस्तुनिष्ठता।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुवाद के नियमों को निम्न प्रकार से समझ सकते हैं—

1. वैज्ञानिक नियम तर्क पर आधारित होते हैं। उनमें कार्य-कारण सम्बन्ध होता है। दूसरे वैज्ञानिक नियम प्रमाण-साक्ष्य पर आधारित होते हैं। ये वास्तविक तथ्यों, प्रयोगों और विश्लेषण पर आधारित होते हैं। इसलिए वैज्ञानिक निष्कर्ष प्रामाणिक माने जाते हैं, व्यक्तिनिष्ठ नहीं। तीसरे, वैज्ञानिक निष्कर्ष वस्तुनिष्ट होते हैं, व्यक्तिनिष्ठ नहीं। ये देश-काल से बाधित नहीं और न ही ये वैज्ञानिक के व्यक्तिगत दृष्टिकोण अथवा पंसद पर आधरित होते हैं। इसी से वैज्ञानिक नियमों में एक प्रकार की सार्वभौमिकता का गुण आता है।
2. विज्ञान-प्रणाली के ये तीनों गुण किसी-न-किसी वैज्ञानिक भाषा-रूप, शैली शब्दावली में प्रतिबिम्बित होते हैं। जहाँ तक भाषा-रूप और शैली का प्रश्न है, वैज्ञानिक भाषा के वाक्यों में अधिक कसाव होता है, शब्दों का चयन बहुत सावधानी से किया जाता है जिससे किसी प्रकार के अनावश्यक या दोहराव वाले शब्दों का प्रयोग न हो। लाक्षणिक के बजाय अभिधात्मक तथा एकार्थी अभिव्यक्तियों का प्रयोग होता है। फलस्वरूप वैज्ञानिक भाषा के वाक्य अर्थ- गर्भित होते हैं और उनमें बहुत अधिक परिवर्तन नहीं होता। उदाहरण के लिए,

   "Mars is different from our planet in many other ways. In most places and for most of the time it is extremely cold, and the earths strongest winds would be quite calm in comparison with the winds which can blow in the atmosphere of Mars?

   हिन्दी अनुवाद—"मंगल ग्रह हमारे ग्रह से कई तरह से भिन्न है। इसका अधिकांश भाग अधिकांश समय तक अत्यधिक ठण्डा रहता है यहाँ पर इतनी तेज हवाएँ चलती हैं कि धरती की सर्वाधिक तेज हवाएँ भी मंगल ग्रह के वायुमण्डल में चलने वाली हवाओं की तुलना में काफी धीमी और शांत होती है।"
3. विज्ञान के नियम सार्वभौम या नित्य होते हैं। इसलिए इनको व्यक्त करने के लिए भाषा में सामान्यत: नित्यतावाची क्रियाओं का प्रयोग होता है; जैसे— "है", "होता है", "ता है"। वैज्ञानिक भाषा में नियमों तथा पदार्थों के नित्य गुण-धर्मों का विवेचन करने के लिए इसी शैली का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

   "इस वर्ग में कीटों का पिछला भाग प्राय: लम्बा तथा अग्र भाग छोटा होता है। इनके मुँह में विष ग्रंथियाँ होती हैं। जब ये कीट किसी मनुष्य को काटते हैं तो ये विष ग्रंथियाँ क्रियाशील हो जाती हैं और इनसे जलन पैदा होती है।"

   वैज्ञानिक विषयों का अनुवाद करते समय इस तर्कपूर्ण शैली का और नित्यवाची क्रियाओं का प्रयोग ही उपयुक्त रहता है।

TOUCH 'n PASS

4. विज्ञान अपनी विषय-वस्तु को सूक्ष्मता और स्पष्टता के साथ व्यक्त करने के लिए आरेखों, विशेष-चिह्नों तथा चित्रों का प्रयोग करता है। ये युक्तियाँ शाब्दिक व्याख्या की पूरक हैं। उदाहरण के लिए, शाब्दिक व्याख्या से एक त्रिकोण या वर्ग के बारे में जितनी सूचना मिलती है उससे कहीं अधिक इस आरेखों से इनकी अवधारणा स्पष्ट होती है; जैसे— "त्रिकोण" और "वर्ग" के लिए यह आरेख—

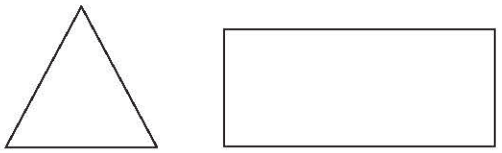

इसी प्रकार के कुछ अन्य चिह्न हैं—

→ :

< : .

> ⊥↑

5. विज्ञान और प्रौद्योगिकी से सम्बद्ध विषयों का अनुवाद करते समय पहला प्रश्न उन विषयों की जानकारी के बारे में उठता है। अर्थात् चिकित्सा, वनस्पति विज्ञान, भौतिकी, रासायनिकी, इंजीनियरी जैसे विषयों का अनुवाद करने के लिए क्या अनुवादक का डॉक्टर, इंजीनियर, रासायनिक, वनस्पतिशास्त्री होना जरूरी है? अगर ऐसा जरूरी हो तो हर विषय का अनुवादक अलग होगा। इसके अलावा, यह विषय-विशेषज्ञ आखिर अनुवाद क्यों करना चाहेगा और फिर उसकी भाषिक-क्षमता की स्थिति क्या होगी? अनुवादक के लिए किसी विज्ञान या प्रौद्योगिकी का विशेषज्ञ होना जरूरी नहीं होता। जरूरी यह होता है कि वह उस "पाठ" को समझता हो और वह उस सामग्री में प्रयुक्त शब्दावली का जानकार (भले की अस्थायी रूप से) हो।
6. विज्ञान में भाषा अवधारणा-केन्द्रित होती है और प्रौद्योगिकी में वस्तु-केन्द्रित। उदाहरण के लिए, उत्पादन विषयक इंजीनियरी की सामग्री का अनुवाद करते समय ... आदि मूल शब्दों, उनके अनूदित रूपों, उनके द्वारा वाच्य वस्तुओं की बनावट, उनकी कार्य-प्रणाली और परिणामों को स्पष्ट बोध के साथ उनके कार्य-बोधक शब्दों ... (क्रियाओं) को जानना जरूरी होगा।
7. विज्ञान की भाषा का स्तर : विज्ञान की भाषा का इस्तेमाल कुछ क्षेत्रों में सामान्यत: चार स्तरों पर होता है—1. वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्तर, 2. कार्यालयी स्तर, 3. दैनन्दिन व्यवहार का स्तर, 4. प्रचार बिक्री का स्तर।
क्षेत्र बदलने पर प्रयोग के स्तरों में भी बदलाव आ जाता है। उदाहरण के लिए, चिकित्साशास्त्र की पारिभाषिक शब्दावली मुख्यत: तीन रूपों में मिलती है—
   (i) **शैक्षिक**—जिसमें ग्रीक और लैटिन भाषा से चली आती वह शब्दावली होती है जिसका प्रयोग शैक्षिक आलेखों में किया जाता है, उदाहरणार्थ Philegmasia । इस शब्दावली का लिप्यंतरण ही किया जाता है।
   (ii) **व्यावसायिक**—यह विशेषज्ञों द्वारा प्रयुक्त शब्दावली होती है। उदाहरण के लिए— Epidemic parotitics इनका भी लिप्यंतरण ही उपयुक्त रहता है।
   (iii) **लोक-प्रचलित**—नीचे दी गई बीमारियों के नामों के समानांतर वैकल्पिक रूप लोक-व्यवहार में प्रचलित हैं— Chikenpox, Scarlet fever जब ऐसे शब्दों के अनुवाद का प्रश्न आता है तो अनुवाद की भाषा में इनके अपने प्रचलित नामों का उपयोग ही किया जाना चाहिए, शाब्दिक अनुवाद नहीं। कुछ उदाहरणों पर ध्यान दें तो बात स्पष्ट होगी। चिकित्साशास्त्र की शब्दावली में प्रचलित बीमारियाँ हैं—

अंग्रेजी	**हिन्दी**
Chiken Pox	छोटी माता
Small Pox	बड़ी माता
Mumps	कनपेड़/गलसुआ
Typhoid	मोतीझाला

TOUCH 'n PASS

Joundice	पीलिया
Stroke	दौरा पड़ना
Heat Stroke	लू लगना

जाहिर है कि इन बीमारियों से बराबर सामना पड़ने के कारण इनके समानांतर नाम हिन्दी में प्रचलित हैं। कोई यह सवाल नहीं उठाता कि आखिर Small Pox 'छोटी माता' क्यों नहीं है जोकि आम आदमी को यह जानकारी होती कि अंग्रेजी के Chiken का विशेषण के रूप में प्रयोग होने पर वह छोटे का अर्थ देता है; जैसे— Chiken Feed.

8. चिकित्सा विज्ञान के अतिरिक्त अन्य विज्ञान शाखाओं में भी शब्द-युग्मों से बने नामों के अनुवाद विशेष जागरूकता और सही पर्याय चयन की आवश्यकता होती है, विशेष रूप से कृषि विज्ञान और जीव विज्ञान के क्षेत्र में। Silver Fish के लिए 'रजत मछली' लिखना वास्तव में जानकारी और जागरूकता की कमी दर्शाता है। वास्तव में ये आम कीड़ा है जो लकड़ी, कागज आदि में लग जाता है। इसी तरह White ants के लिए "सफेद चींटी" लिखना अनुवाद की शब्दानुवादक की प्रवृत्ति का सूचक हैं क्योंकि White ants दीमक है।
कृषि-विज्ञान में तो अक्सर ऐसी गलती की गुंजाइश रहती है क्योंकि कृषि क्षेत्र में सम्बन्धित बहुत शब्दावली गाँवों में कृषि जीवन में उपलब्ध है। इनसे जुड़ी शब्दावली कोश और लोक-व्यवहार, दोनों से ग्रहण करनी पड़ती है अन्यथा, Red gram को 'अरहर' की बजाय 'लाल चना' और Green gram को 'मूँग' की बजाय 'हरा चना' लिखने की सम्भावना बनी रहेगी।
9. यहीं ध्यान देने की बात है कि जिन बीमारियों की जानकारी परम्परागत जीवन-शैली में नहीं थी या कम-से-कम उन्हें नाम नहीं दिए गए थे, उनका अनुवाद करने के बजाय उन्हें ज्यों का त्यों लिप्यंतरित कर दिया जाता है; जैसे— "कैंसर", "टिटनस", "ब्रेन हैमरेज" आदि।
यह प्रवृत्ति चिकित्साशास्त्र के बारे में ही नहीं, सामान्य लोक-व्यवहार में आने वाली वस्तुओं के बारे में भी सही है। "रेफ्रिजरेटर", डीप फ्रीजर", माइक्रो वेव", "कुकिंग रेंज" ऐसे ही शब्द हैं जो कुछ समय बाद हिन्दी में "बटन" और "कमीज" और अंग्रेजी में Dhoti और Kurta की तरह खप कर अभिन्न हो जाएँगे। ऐसे शब्दों के अनुवाद असम्भव तो नहीं होते पर कष्टसाध्य होते हैं और इसीलिए आसानी से प्रचलित भी नहीं होते। कोई "टेलीविजन" और "टेलीफोन" के अनूदित शब्दों "दूरदर्शन" और "दूरभाष" का प्रयोग बोलचाल में शायद की करता हो— वैसे ही, जैसे Engineer के लिए "अभियन्ता" का प्रयोग केवल दफ्तरों के नामपट्ट पर या सरकारी फाइल के अलावा शायद की कहीं होता हो।
कभी-कभी कुछ शब्दों के सहज अनुवाद लोक-व्यवहार के आधार पर प्रचलित हो जाते हैं। ऐसे शब्दों के लिए कोशगत पर्याय खोजने या शब्द गढ़ने के बजाए प्रचलित रूपों को स्वीकार कर लेना ही अनुवादक के हित में होता है। उदाहरण के लिए, Fire Engine के लिए "दमकल" और बिजली के Positive और Negative तारों के लिए "ठण्डा.. गर्म" तार।
यह भी जरूरी नहीं होता कि कोशगत अर्थ हमेशा सही ही हो। शब्द के स्रोत के साथ उसका अर्थगत् अनुषंग जुड़ा रहता है। ऐसी स्थिति में व्यवहार ही प्रमाण होता है। अंग्रेजी भाषा के शब्द Cheese का सही अर्थ "पनीर" नहीं होता। जिसे हम "पनीर" कहते हैं उसके लिए अंग्रेजी शब्द Cottage Cheese अर्थात् Unprocess Cheese है और Unprocess Cheese का अभिप्राय है Processed Cheese। यह जानकारी कोश से नहीं, व्यवहार से ही हासिल होती है।
10. दूसरे प्रकार के अनुवादों से प्रौद्योगिकी अनुवाद की पहचान मुख्य रूप से उसकी पारिभाषिक शब्दावली के कारण होती है। प्रौद्योगिकी की पारिभाषिक शब्दावली का अनुवाद करते समय एक बात पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। ऐसे अनेक शब्द हैं जिनका विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अलग-अलग अर्थों में प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए Force, Power, Strength, thrust आदि।
प्रौद्योगिकी विषयों के अनुवाद में एक समस्या और आती है। कभी-कभी लेखक किसी तकनीकी वस्तु के लिए पारिभाषिक शब्द के स्थान पर वर्णनात्मक पद का प्रयोग करता है। ऐसा प्रायः तीन स्थितियों में होता है—1. वस्तु नई हो, और उसे कोई नाम न दिया गया हो— इस स्थिति में अनुवाद में कोई समस्या नहीं होगी, 2. पारिभाषिक शब्दावली की पुनरावृत्ति बचाने के लिए अथवा 3. किसी अन्य पारिभाषिक शब्द से अंतर के लिए वर्णनात्मक पद का प्रयोग किया गया हो। इन दोनों स्थितियों में, यदि पारिभाषिक शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में कोई शब्द उपलब्ध हो तो भी अनुवादक को अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने के लिए वर्णनात्मक पद के स्थान पर पारिभाषिक शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

प्र.2. विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में अनुवाद की भाषा-शैली का वर्णन कीजिए।

उत्तर

विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में अनुवाद की भाषा-शैली

वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद के बारे में कभी-कभी यह भी कहा जाता है कि इस प्रकार के अनुवाद में विषय-वस्तु ही सर्वोपरि है, भाषा-शैली का महत्त्व गौण है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं लगाना चाहिए कि वैज्ञानिक अनुवाद तकनीकी शब्दों के पर्याय प्रस्तुत कर देना मात्र है। वास्तव में विषय-वस्तु को सर्वोपरि मानने का मतलब है तथ्यात्मक प्रामाणिकता। ध्यान देने की बात है कि तथ्यों को प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए उन्हें विषयानुरूप शैली में प्रस्तुत करना आवश्यक है अन्यथा अनूदित पाठ महज शब्द-जाल मात्र बनकर रह जाएगा। जाहिर है कि वैज्ञानिक तथ्यों को सहज, स्पष्ट और सम्प्रेषणीय ढंग से प्रस्तुत किया जाए। इसलिए जब कहा जाता है कि वैज्ञानिक लेखन अथवा वैज्ञानिक अनुवाद में शैली पर उतना ध्यान देना अपेक्षित नहीं जितना तथ्यों की प्रामाणिकता पर, तो तात्पर्य यह होता है कि साहित्य की ललित, व्यंजना-प्रधान अथवा व्यंग्य प्रधान शैली यहाँ अपेक्षित नहीं हैं, लेकिन विज्ञान की सहज शैली जरूर अपेक्षित है। इस बात को एक उदाहरण से समझा जा सकता है। पहले हम अंग्रेजी का एक पैराग्राफ देंगे, फिर उसका अनुवाद और उस अनुवाद पर टिप्पणी। तत्पश्चात् उसका बेहतर अनुवाद दिया जाएगा—

'The World Health Organisation had defined drug dependence as a state of psychic (mental) or physical (bodily) dependence or both, on a drug arising in a person at a periodic or continous basis. Drug dependence can be substituted for addiction since it covers all the drugs which give rise to a desire or need for repeated administration.'

हिन्दी अनुवाद—'विश्व स्वास्थ्य संगठन ने औषधि-निर्भरता को मानसिक अथवा शारीरिक अवस्था अथवा दोनों की निर्भरता के रूप में परिभाषित किया है जो एक व्यक्ति को आवधिक अथवा लगातार आधार पर औषधि लेने को बाध्य करती है। औषधि-निर्भरता व्यसन के लिए प्रतिस्थापित हो सकती है क्योंकि यह उन सभी औषधियों का आवरण करती है जो आवृत्तिजन्य आचरण की इच्छा अथवा आवश्यकता को बढ़ावा देती है।'

उपर्युक्त अनुवाद क्यों ठीक नहीं है?

इस अनुवाद में अनुवादक की समस्या पारिभाषिक शब्दावली समझने को नहीं है। वस्तुत: यहाँ कोई खास पारिभाषिक शब्द इस्तेमाल नहीं हुए हैं। यहाँ समस्या कथ्य को भली-भाँति समझने और उसे लक्ष्य भाषा में विज्ञान विषय के उपयुक्त शैली में प्रस्तुत करने की है। परिणामस्वरूप इस अनुवाद को पढ़कर कुछ भी समझ नहीं आता। कथन की स्पष्टता और संप्रेषणीयता के अभाव में कथ्य की तथ्यात्मकता धूमिल हो गई है। इस अनुच्छेद का ठीक अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है—

'विश्व स्वास्थ्य संगठन ने औषधि-निर्भरता को परिभाषित करते हुए कहा कि औषधि-निर्भरता वह स्थिति है जब कोई व्यक्ति किसी औषधि को समय-समय पर अथवा लगातार लेने रहने के कारण मानसिक अथवा शारीरिक रूप से उस औषधि पर निर्भर हो जाता है। औषधि-निर्भरता को व्यसन कहा जा सकता है क्योंकि इसके अंतर्गत वे सभी औषधियाँ आ जाती हैं जो बार-बार लिए जाने की इच्छा या जरूरत उत्पन्न करती है।'

सदैव शब्दानुवाद नहीं होता— वैज्ञानिक लेखन में तथ्यात्मकता की प्रधानता के बावजूद ऐसी स्थितियाँ भी होती है जहाँ अभिव्यक्ति और शैली का महत्त्व होता है। ये विषय अक्सर लोकप्रिय वैज्ञानिक लेखन के होते हैं। इनमें विज्ञान की सूचनओं को जन-सामान्य के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इस तरह की सामग्री के अनुवाद में तथ्यों की प्रामाणिकता के साथ-साथ समुचित सरसता और प्रभावोत्पादकता होनी चाहिए। आगे इस तरह का एक उदाहरण और उसका अनुवाद दिया जा रहा है। आप देखेंगे कि अनुवाद विचारों और भावों का किया गया है, शब्दों का नहीं।

In the days when the world was supposed to have endured for only a few thousand years, it was believed that the different species of plants and animals were fixed and final; they had all been created exactly as they are today, each species by itself. But as men began to discover and study the Record of the Rocks this belief gave place to the suspicion that many species had changed and developed slowly through the course of ages, and this again expanded into a belief in what is called organic evolution, a belief that all species of life upon earth, animals and vegetable alike are descended by slow continous process of change from some very simple ancestral from of life, some almost structureless living substance, far back in so-called Azoic seas.

हिन्दी अनुवाद—सृष्टि की उत्पत्ति के कुछ हजार वर्षों तक यह माना जाता था कि विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और प्राणियों के स्वरूप निश्चित और अपरिवर्तनशील हैं। यह समझा जाता था कि प्रत्येक प्रजाति के जीव और वनस्पति उसी रूप में उत्पन्न हुए थे

जैसे वे आज दिखाई दे रहे हैं। लेकिन जैसे-जैसे मनुष्य चट्टानों के इतिहास की खोज और अध्ययन करता गया वैसे-वैसे उपर्युक्त धारणा के स्थान पर यह धारणा बनने लगी कि बहुत-सी प्रजातियाँ युग-युगांतरों में धीरे-धीरे परिवर्तित और विकसित होती गई। कालांतर में इस धारणा ने जैव-विकासवाद के सिद्धान्त का रूप ले लिया। इस सिद्धान्त के अनुसार, भूमण्डल के समस्त जीव-जन्तु और वनस्पतियाँ तथाकथित निर्जीव-युगीन समुद्रों में रहने वाले किसी अत्यन्त सरल और प्राय: आकृतिहीन जीवधारी से युग-युगांतरों में शनैःशनै परिवर्तित और विकसित हुए हैं।

1. विज्ञान के अनुवाद में भी देश-काल का परिप्रेक्ष्य भी अनुवादक के हाथ से छूटना नहीं चाहिए। बहुत-सी ऐसी विज्ञान की पुस्तकें अथवा लेख हो सकते हैं जिनमें स्थान-विशेष के संदर्भ हों और वे उस देश से सम्बन्धित हों जहाँ वह पुस्तक/लेख आदि लिखा गया हो। मान लीजिए पक्षियों के प्रवास के बारे में ही चर्चा की जा रही हो और उत्तर के किसी देश से लिखी गई पुस्तक में चर्चा हो कि खंजन पक्षी सर्दियों में दक्षिण की ओर चले जाते हैं। यदि भारत में उसका हिन्दी अनुवाद करते समय लिखा जाएगा कि "हमारे प्रवासी पक्षी खंजन शीत ऋतु में दक्षिण की ओर चले जाते हैं।" तो भाषिक रूप से सही होते हुए भी यह अनुवाद गलत हो जाएगा क्योंकि उत्तरी भारत में यह पक्षी सर्दियों में ही आते हैं और पाठक को भ्रम हो जाएगा कि खंजन भारत से सर्दियों में चले जाते हैं।
2. वैज्ञानिक विषयों के अनुवाद करते समय Personal Pronoun (we, our आदि) के प्रयोग पर विशेष गौर करना चाहिए। यह देखने के लिए, संदर्भ किसी देश अथवा किसी स्थान विशेष का तो नहीं। रसायन विज्ञान अथवा भौतिक आदि में इस तरह के देशीय प्रयोग अक्सर नहीं होते लेकिन कृषि, जीव विज्ञान, वानिकी आदि में इनके होने की सम्भावना है।

प्र.3. वाणिज्य एवं बैंकिंग के क्षेत्र में अनुवाद का वर्णन कीजिए।

उत्तर

वाणिज्य एवं बैंकिग के क्षेत्र में अनुवाद

वाणिज्य एवं व्यापार का क्षेत्र जीवन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके अंतर्गत लेखा, लेखा-परीक्षा, बैंकिग, व्यापार आदि जैसे क्षेत्र आते हैं। साथ ही इसका विस्तार अर्थशास्त्र, कम्पनी, निगम, प्रबन्धन आदि तक होता है। इसमें विधिक प्रकृति का कार्य भी शामिल होता है। वाणिज्य के क्षेत्र की काफी परम्परागत शब्दावली भारतीय भाषाओं में मौजूद है। "शुक्रनीति", "अर्थशास्त्र", "मनुस्मृति" आदि ग्रंथों में अर्थ-सम्बन्धी विवेचन होने के कारण राजस्व, कृषि-कर्म, मुद्राओं के टंकण, अर्थदण्ड, राजकोष आदि विषयक शब्दावली संस्कृत में उपलब्ध है। मध्यकाल में भी उद्योग और व्यापार का व्यापक प्रसार होने के कारण भारतीय भाषाओं में महाजनी, राजस्व, बाजार, बही खाता आदि से सम्बन्धित प्रचुर शब्दावली प्रचलन में रही है। आधुनिक युग में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अर्थशास्त्र, वाणिज्य, बैंकिंग आदि क्षेत्रों का भारी विस्तार राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुआ है। प्रशासनिक और औद्योगिक क्षेत्र में अंग्रेजी के व्यापक प्रयोग के चलते वाणिज्य-व्यापार आदि क्षेत्रों में भी अंग्रेजी का व्यापक प्रचलन हुआ है। इन विषयों का सम्बन्ध आम आदमी और वाणिज्य से सम्बद्ध लोग, दोनों से होता है। वाणिज्य व्यापार की भाषा की आवश्यकता व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर तो होती ही है सरकारी कार्यकलाप का भी बड़ा हिस्सा अर्थ जगत से सम्बन्ध रखता है। जनसंचार के क्षेत्र में भी आर्थिक समाचारों और आर्थिक विवरणों-विश्लेषणों का पर्याप्त महत्त्व होता है। अनेक त्रैमासिक, मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्र-पत्रिकाएँ इन विषयों पर प्रकाशित होती है। इनमें से कुछ के तो बहुभाषी संस्करण भी निकलते हैं। इन विषयों की प्रचुर सामग्री के प्रकाशन के साथ ही इनके अनुवाद का महत्त्व भी बढ़ा है। इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में भी वाणिज्य विषयों के अनुवाद का व्यापक महत्त्व है।

जैसा कि चर्चा की जा चुकी है, अर्थशास्त्र, वाणिज्य और व्यापार की पर्याप्त शब्दावली संस्कृत तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। 'मूल्य', 'व्यय', 'धन', 'अर्थ', 'चक्रवृद्धि', 'कालिक वृद्धि', 'कायिक वृद्धि', 'ब्याज', 'खाता', 'जमा, 'नामे", 'जोखिम', 'उठाव', 'उछाला', 'जब्ती', 'सौदा', 'दिवाला' आदि जैसे बहुत से शब्द मौजूद हैं। इन शब्दों को सम्बन्धित विषयों के अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी पर्याय रूप में मानकीकृत कर दिया गया है। अत: अनुवाद में इनका पर्याप्त प्रचलन है।

Price	मूल्य	Undertaking	उपक्रम
Wealth	धन	Corporation	निगम
Capital	पूँजी	Investment	निवेश
Ledger	खाता	Outlay	परिव्यय
Deposit	जमा	Potential	सम्भाव्य
Debit	नामे	Return	प्रतिफल

Risk	जोखिम	Tender	निविदा
Offtake	उठाव	Contract	संविदा
Spurt	उछाला	Commission	कमीशन
Forfeiture	जब्ती	Rebate	छूट
To write off	दिवाला	Mortgage	बंधक
Become	बट्टे खते डालना	Pledge	गिरवी

वाणिज्य-व्यापार, बैंकिंग आदि विषयों की सामग्री अनुवाद करते समय पारिभाषिक शब्दावली के साथ इन विषयों की शैली का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, 'charge the bill against his account' वाक्य का अनुवाद 'बिल को उसके खाते विरुद्ध प्रभारित करे' किया जाए तो गलत हो जाएगा। 'बिल उसके खाते में से प्रभावित करें ' भी ठीक नहीं रहेगा क्योंकि यह शब्दश: अनुवाद है। इसका सही और आर्थिक क्षेत्र की शब्दावली के अनुरूप अनुवाद होगा— 'बिल की रकम उसके खाते में डाल दें ।'

इसी प्रकार, एक और वाक्य है—

'The rupee value against dollar had been stable for quite some time'.

'डॉलर के मुकाबले रुपए का मूल्य काफी समय तक स्थिर रहा।'

यह अनुवाद शाब्दिक है। अर्थशास्त्र की भाषा के अनुरूप इसका सही अनुवाद होगा—

'रुपए और डॉलर की विनियम दर काफी समय तक स्थिर बनी रही।'

आगे अंग्रेजी के कुछ पैराग्राफ और उनका हिन्दी अनुवाद दिया गया है—

Control over capital expenditure or acquision of fixed assets is exercised through the system of evaluation of projects and ranking of projects on the basis of their importance, generally on the basis of their earning capacity. A capital budget is prepared for the business as a whole. The budget is reviewed by the budget committee or appropriation committee. For effective control over capital expenditure, there should be a plan the identify the realisation of benefits from capital expenditure and to make comparison with anticipated results. Such comparison is important in the sense that it serves as an important guide for future capital budgeting activities.

Budgetary control which follows budget preparation serves the purposes of controlling income, expenses, costs and profits. It is also a device whereby cash and liquidity as well as the amount of capital provided by owners and lenders can be regulated by management. Or particular significance is the budgetary control of costs and expenses. When budgets are drawn, managers concerned are required to justify their requirements. The budget provision of expenses become standards which set the limits of expenditure. The actual expenses and performance are compared with the budget standards at specified intervals. Difference, if any, have to be explained by the managers responsible for the same.

हिन्दी अनुवाद—पूँजीगत व्यय या स्थायी परिसम्पत्तियों की सम्प्राप्ति पर नियंत्रण परियोजनाओं के मूल्यांकन और श्रेणीकरण की प्रणाली द्वारा किया जाता है। मूल्यांकन और श्रेणीकरण का यह कार्य परियोजनओं के महत्त्व के आधार पर किया जाता है। यह आधार प्राय: उनकी अर्जन क्षमता होती है। पूँजी बजट समग्र व्यवसाय के लिए बनाया जाता है। इस बजट की समीक्षा बजट समिति या विनियोजन समिति करती है। पूँजीगत व्यय पर सही ढंग से नियंत्रण के लिए योजना का होना आवश्यक होता है। जिससे पूँजीगत व्यय से होने लाभों को जाना जा सके और प्रत्याशित परिणामों से लाभों की तुलना की जा सके। ऐसी तुलना भावी पूँजीगत बजट तैयार करने के कार्यकलाप के लिए महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शिका का काम करती है।

बजट तैयार करने के बाद बजट नियंत्रण करना होता है। बजट नियन्त्रण से आय-व्यय, लागतों और लाभों को नियंत्रित किया जाता है। बजट नियंत्रण ऐसा साधन है जिससे प्रबंधन, नकदी और स्वामियों तथा ऋणदाताओं द्वारा प्रदत्त पूँजी की राशि को नियंत्रित करता है। लागत और व्यय का बजट नियंत्रण विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण होता है। बजट तैयार करते समय सम्बद्ध प्रबन्धकों को अपनी जरूरतों का औचित्य सिद्ध करना पड़ता है। व्यय का बजट प्रावधान व्यय की सीमा का मानक (मानदण्ड) बन जाता है। वास्तविक खर्चों और निष्पादन की बजट मानकों से समय-समय पर तुलना की जाती है। यदि दोनों के बीच अंतर पाये जाते हैं तो उनके लिए जिम्मेदार प्रबन्धकों को उनके बारे में स्पष्टीकरण देना पड़ता है।

TOUCH 'n' PASS

इस अनुवाद में आर्थिक और व्यापार जगत की तकनीकी शब्दावली के समुचित पर्याय इस्तेमाल किए गए हैं— पूँजीगत, परिसम्पत्ति, बजट, लागत, लाभ, विनियोजन, नकदी आदि। शैली मूल कथ्य की भाँति वर्णन-विश्लेषण की ही रखी गई है। व्यय और बजट नियंत्रण की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए अनुवाद में भी कर्मवाच्य प्रयुक्त हुए हैं। हिन्दी में सामान्य बोलचाल में कर्तृवाच्य की ही प्रधानता होती है लेकिन प्रक्रिया का विश्लेषण करते समय कर्मवाच्य ही उपयुक्त रहता है। वाणिज्य के अंतर्गत विधिक प्रकृति के काम-काज भी शामिल होते हैं। आगे जो अंश अनुवाद के उदाहरण के रूप में दिया जा रहा है, वह विधिक प्रकृति का ही है।

उदाहरण—The 'Holder of a promissory note or bill of exchange of cheque means a persons entitled in his own name to the possession of that instrument. He also has the right to receive or recover the amount due thereon from the parties to the instrument. Where the note or bill or cheque is lost or, destroyed, its holder is the person who was entitled to be so at the time of such loss or destruction (section 8). The term 'Holder' does not include a person who, though in possession of the instrument, has not the right to recover the amount due there from the parties there to. It is, therefore, clear that is order to be a holder a person must satisfy the following two conditions :

(a) He must be entitled to the possession of the instrument in his own name.
(b) He must be entitled to recover the amount due on the instrument from the parties liable under the instrument.

The holder of a negotiable instrument can give title to any person honestly acquiring it. It is the very essence of a negotiable instrument that the person in possession of it may be treated as having authority to deal with it, unless something is known to the contrary.

A benamidar is a person who has simply lent his name as the real owner. The Act does not recognise such as a practice and therefore, the person whose name is mentioned, whether real or benami, is to be held the holder.

The significance of the 'holder' also lies in the fact that the Act states that payment of the amount due on a negotiable instrument must, in order to discharge the maker or acceptor, be made to the 'holder' of the instrument (section 78). The holder, therefore, is the only person who can sue upon the instrument, and can give a valid discharge for it.

हिन्दी अनुवाद—प्रतिज्ञा पत्र या विनिमय पत्र या चैक का धारक वह व्यक्ति होता है, जो उस प्रपत्र को अपने नाम में रखने का हकदार है। वह उस प्रपत्र पर देय राशि प्रपत्र के पक्षकारों से प्राप्त करने या वसूल करने का भी हकदार होता है। जब प्रतिज्ञा पत्र, विनियम पत्र या चैक खो जाता है या नष्ट हो जाता है तो इसका धारक वह व्यक्ति है जो ऐसे खोने या नष्ट होने के समय धारक होने का हकदार था (धारा 8)। "धारक" शब्द में वह व्यक्ति शामिल नहीं होता जिसके कब्जे में प्रपत्र है, लेकिन जिसे उसके पक्षकारों से उस पर देय राशि वसूल करने का अधिकार नहीं हैं। इसलिए यह स्पष्ट है कि धारक होने के लिए एक व्यक्ति को निम्नलिखित शर्तें पूरी करनी होगी—

(क) उसे प्रपत्र को अपने नाम में रखने का अधिकार होना चाहिए।
(ख) उसे प्रपत्र पर देय राशि को उसके देनदार पक्षकारों से प्राप्त या वसूल करने का अधिकार होना चाहिए।

किसी विनिमय साध्य प्रपत्र का धारक किसी भी ऐसे व्यक्ति को स्वामित्व दे सकता है जो इसे ईमानदारी से प्राप्त कर रहा है। विनिमय साध्य प्रपत्र की यही असली विशेषता है कि यह जिस व्यक्ति के कब्जे में है उसके पास इसके लेन-देन करने का अधिकार माना जाता है, जब तक कि इसके विपरीत कुछ पता न हो।

बेनामीदार वह व्यक्ति है जिसने वास्तविक स्वामी के रूप में केवल अपना नाम प्रदान किया है। अधिनियम ऐसे चलन को मान्यता नहीं देता और इसलिए वह व्यक्ति जिसके नाम का उल्लेख किया गया है, चाहे वे वास्तविक या बेनामी हो, धारक माना जाता है।

धारक का महत्त्व इस तथ्य में भी है कि अधिनियम यह कहता है कि लिखने वाले या स्वीकर्त्ता को उन्मोचित करने के लिए विनिमय साध्य प्रपत्र पर देय राशि का भुगतान प्रपत्र के धारक को किया जाए (धारा 78)। इसलिए धारक ही एक मात्र ऐसा व्यक्ति है जो प्रपत्र के आधार पर मुकदमा चला सकता है और इसके लिए वैद्य उन्मोचन दे सकता है।

उपर्युक्त अनुच्छेद में प्रयुक्त विधिक शब्दावली पर ध्यान दीजिए— Holder धारक, Promissory note प्रतिज्ञा-पत्र, Bill of Exchange विनिमय-पत्र, Instrument प्रपत्र, आदि। ध्यान देने की बात है कि अनुवाद में तकनीकी पर्याय विधिक शब्दावली से ही चुने गए हैं। यही कारण है कि Party के लिए 'पक्षकार' और Title के लिए 'स्वामित्व' जैसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

प्र.4. प्रशासनिक अनुवाद में प्रशासन तन्त्र की कार्य विधि का वर्णन कीजिए।

उत्तर

प्रशासनिक अनुवाद में प्रशासन तंत्र की कार्य विधि

भारतीय कार्यालयों का प्रशासनिक ढाँचा मूलत: ब्रिटिश शासन से विरासत में मिला है। नौकरशाही का यह समस्त ढाँचा निम्नलिखित प्रमुख सिद्धान्तों पर आधारित है—

(क) **अधिकारियों के बीच पदानुक्रम**—प्रशासन-तंत्र में उच्च और निम्न अधिकारियों के बीच क्रमिक शृंखला होती है जिसमें उच्च अधिकारी अपने अधीनस्थ अधिकारी को आदेश देता है और अधीनस्थ अधिकारी अपने से उच्च अधिकारी से आदेश प्राप्त करता है। यह व्यवस्था मूलत: आदेशों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया और नयाचार (प्रोटोकोल) की परम्परा पर आधारित है।

(ख) **सत्ता का विकेंद्रीकरण**—प्रशासन-तंत्र में शासकीय सत्ता किसी एक व्यक्ति में केन्द्रित न होकर विभिन्न अधिकारियों के बीच बँटी होती है। वास्तविक शासन सत्ता अमूर्त है। अत: हर अधिकारी किसी अमूर्त सत्ता की ओर से या उसके प्रतिनिधि के रूप में अधिकारों का उपयोग करता है, निर्णय लेता है और शासकीय कार्य सम्पन्न करता है। अत: शासकीय सत्ता या कर्त्ता की अमूर्तता शासन-तंत्र का प्रमुख लक्षण है।

प्रशासन-तंत्र के ये तीनों लक्षण किस प्रकार प्रशासन की भाषा को प्रभावित करते हैं, यह निम्न प्रकार हैं—

1. **वस्तुनिष्ठता**—कार्यालयों में निर्णयों का आधार व्यक्ति नहीं, नियम होता है। इसीलिए प्रशासन में नियमों, अधिनियमों, कार्यविधियों, पूर्व-दृष्टांतों, दस्तावेजों, फाइलों, मैनुअलों और हर तरह के विधि-विधानों का एक पूर्ण भंडार मौजूद रहता है। अत: मामलों पर निर्णय व्यक्ति की इच्छा से नहीं, इन्हीं नियमों के विधान से होता है। ऐसी स्थिति में कार्यालय की भाषा में भी वस्तुनिष्ठ औपचारिकता होती है।
2. **औपचारिक भाषा-रूप**—चूँकि समस्त प्रशासनिक ढाँचा नयाचार (प्रोटोकॉल) तथा पदों की क्रमिक शृंखला पर आधारित है, इसलिए कार्यालय की भाषा अत्यंत औपचारिक होती है जिसमें सर्वत्र शिष्टाचार का ध्यान रखा जाता है। यह औपचारिकता और शिष्टाचार आपको टिप्पणियों, पत्रों तथा अन्य दस्तावेजों में जगह-जगह दिखाई देगा। उदाहरण के लिए, पत्रों के आरम्भ और अंत में कई प्रकार की औपाचारिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

Dear Sir	प्रिय महोदय
Dear Dr. Singh	प्रिय डॉ० सिंह
Sir	महोदय
To	सेवा में
With regard	सादर
With compliments	सद्भावनाओं के साथ
Yours faithfully	भवदीय
Yours sincerely	आपका
P.S.	पुनश्च:
Copy to	प्रतिलिपि

3. **कर्मवाच्य में वाक्य रचना**—चूँकि प्रशासन में अधिकार व्यक्ति में नहीं, पद में निहित होता है और कोई भी अधिकारी व्यक्तिगत स्तर पर निर्णय नहीं लेता इसलिए प्रशासन की भाषा में कर्त्ता-रहित, कर्मवाच्य वाक्यों की संख्या बहुत अधिक होती है जिनमें कार्य करने वाला लुप्त या अप्रत्यक्ष रहता है। उदाहरण के तौर पर निम्नलिखित वाक्य देखिए—
   1. Order may be issued to reinstate him.
      उसे बहाल करने के आदेश जारी कर दिए जाएँ।
   2. Suggestions may be accepted
      सुझाव मान लिए जाएँ।

TOUCH 'n' PASS

3. Nothing in this case shall be constructed as
   इस बात का यह अर्थ न निकाला जाए...
4. Mr. Ramesh Kumar is appointed as manager (Admn.) with effect from August 5, 1997.
   श्री रमेश कुमार 5 अगस्त, 1997 से प्रबन्धक (प्रशासन) नियुक्त किए जाते हैं।

हिन्दी अनुवाद के संदर्भ में यह ध्यान रखने की बात है कि अंग्रेजी के कर्मवाच्य (पैसिव) वाक्य हिन्दी में भी कर्मवाच्य हों यह जरूरी नहीं। अंग्रेजी भाषा में पैसिव वाक्यों के प्रयोग की प्रवृत्ति बहुत अधिक है। हिन्दी में कर्तृवाच्य (एक्टिव) के प्रयोग की प्रवृत्ति अधिक सहज है, कर्मवाच्य, पैसिव की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम है, विशेषकर तब जब कर्मवाच्य वाक्यों को सहज हिन्दी कर्तृवाच्य में अनूदित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए—

1. All the papers have been checked by the auditors.
   लेखा-परीक्षकों ने सारे कागजात की जाँच कर ली।
2. About thirty books were published by the Department during this year.
   इस वर्ष विभाग ने लगभग 30 पुस्तकें प्रकाशित की।
3. Orders have been issued by the Director.
   निदेशक ने आदेश जारी कर दिए हैं।

4. **आदेशात्मक रूप**—चूँकि प्रशासन तंत्र में उच्च और अधीनस्थ अधिकारियों के बीच आदेशों का आदान-प्रदान होता है। इसलिए आदेशात्मक वाक्यों के रूप में शासकीय नोटों तथा टिप्पणियों में मिलते हैं। जैसे—

Please discuss/speak	कृपया चर्चा/बात करें।
May be discussed	चर्चा की जाए।
Issue today	आज ही भेजें/जारी करें।
Out to day	आज ही प्रेषित करें।

जिस तरह विज्ञान के अनुवादक को विज्ञान की सामान्य जानकारी अपेक्षित होती है, उसी तरह प्रशासनिक सामग्री का अनुवाद करने वालों को भी प्रशासन व्यवस्था का प्राथमिक ज्ञान होना चाहिए। साथ ही कार्यालय की सामान्य कार्य-पद्धति का परिचय भी होना चाहिए। कार्यालय पद्धति के साथ ही अनुवादक को प्रशासनिक भाषा के प्रति भी जागरुक होना चाहिए। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं की प्रशासनिक प्रयुक्ति की वाक्य रचना पद्धति और मुहावरे की सही पहचान होने पर वह सहज और स्पष्ट भाषा में अनुवाद कर सकेगा।

प्रशासनिक अनुवाद के अंतर्गत केन्द्र सरकार के मंत्रालयों/कार्यालयों, अधीनस्थ कार्यालयों, स्वामित्वाधीन निगमों, उपक्रमों, कम्पनियों, बैंकों आदि की सामग्री का अनुवाद आता है। इसमें प्रमुख रूप से अंग्रेजी से हिन्दी और गौण रूप से हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद शामिल हैं। यह सामग्री मूल रूप से अंग्रेजी में तैयार अवश्य की जाती है और इसमें तकनीकी भाषा की प्रधानता होती है, किन्तु इसका मुहावरा अंग्रेजी भाषा का वर्तमान मुहावरा नहीं होता। अंग्रेजी प्रशासन व्यवस्था से विरासत में मिली अंग्रेजी भाषा का भारतीयकरण इस अंग्रेजी में मिलता है। ऐसे में अनुवादक से अपेक्षाएँ और ज्यादा बढ़ जाती हैं। उससे जटिल सामग्री को सरल-सहज ढंग में प्रस्तुत करने की उम्मीद की जाती है। इतना ही नहीं, कभी-कभी अंग्रेजी में लिखित सामग्री में अस्पष्टता और त्रुटियाँ भी होती हैं। ऐसी स्थिति में गलती का पता लगाने, सुधारने और प्रस्तुति शैली को सुधारने की जिम्मेदारी भी अनुवादक पर आ जाती है। प्रशासनिक सामग्री के अंतर्गत प्रशासनिक पत्रों, फार्मों, रिपोर्टों, नियम पुस्तकों, संविदाओं, करारों आदि का अनुवाद आ जाता है। प्रशासनिक भाषा की औपचारिकता, वर्णनात्मकता, अभिधापरकता आदि को अनुवाद में कायम रखना जरूरी होता है।

विभिन्न प्रकार के सूचनापरक और कार्यविधि साहित्य की जानकारी के अलावा अनुवादक को अन्य क्षेत्रों की भी थोड़ी-बहुत जानकारी अपेक्षित होती है क्योंकि प्रशासन का सम्बन्ध जीवन के विविध क्षेत्रों से होता है। सामान्य प्रशासन के अतिरिक्त, मंत्रालय के विभाग-विशेष का कार्य अन्य विषय क्षेत्रों से जुड़ा होता है; जैसे— वाणिज्य मंत्रालय का वाणिज्य से, शिक्षा-संस्कृति विभाग का शिक्षा और संस्कृति से जुड़े विभिन्न विषयों से इन विभागों की रिपोर्टों में इन विषयों में सम्बद्ध कार्य का ब्यौरा भी प्रस्तुत होता है। इसके अनुवाद में अनुवादक की इन विषयों के प्रति सामान्य जागरूकता काम आती है।

वैसे तो विधि का क्षेत्र एक अलग क्षेत्र है, लेकिन प्रशासन में विधि का कार्यान्वयन किया जाता है। अत: भाषा पर विधि की शब्दावली और प्रकृति का प्रभाव होता है। इसलिए प्रशासनिक भाषा में शर्तसूचक कथनों और वाक्यों का प्रयोग अधिक होता है। अनुवाद में शर्त का स्वरूप बनाए रखना चाहिए। उदाहरण के लिए—

TOUCH n PASS

Persons already in Government service, whether in a permanent or temporary capacity or as work charged employees other than casual or daily rated employees or those serving under Public Enterprises are, however, required to submit an undertaking that they have informed in writing their head office/Department that they have applied for the examination.

एक प्रधान उपवाक्य और दो आश्रित उपवाक्यों वाले इस जटिल वाक्य में सरकारी सेवारत व्यक्तियों के लिए निर्देश है कि वे वचनबद्धता-पत्र दें कि उन्होंने अपने आवेदन के विषय में अपने कार्यालय प्रधान विभाग को सूचित कर दिया है।

हिन्दी अनुवाद—जो लोग पहले से सरकारी सेवा में हैं, भले ही वे स्थायी या अस्थायी हैसियत में या अनियत मजदूरी अथवा दैनिक मजदूरी पर काम करने वाले कर्मचारियों से भिन्न कार्य प्रभारित कर्मचारी हों या सार्वजनिक उपक्रमों के अधीन कार्यरत हों, उन्हें एक वचनबद्धता- पत्र प्रस्तुत करना होगा कि उन्होंने अपने कार्यालय प्रधान/विभागाध्यक्ष को लिखित रूप से सूचना दे दी है कि उन्होंने परीक्षा के लिए आवेदन किया है।

इस अनुवाद में वाक्य इतना लम्बा हो गया है कि समझने में काफी देर लगती है। साथ ही, यह भी स्पष्ट नहीं है कि विभिन्न प्रकार के सरकारी कर्मचारियों में से किन-किन को यह सूचना देनी है। इस वाक्य का अनुवाद यदि दो वाक्यों में किया जाए तो अपेक्षाकृत स्पष्ट होगा; जैसे—जो व्यक्ति पहले से ही सरकारी सेवा में कार्यरत हैं उन्हें यह वचनबद्धता पत्र प्रस्तुत करना जरूरी है कि उन्होंने अपने कार्यालय प्रधान/विभागाध्यक्ष को इस बात की लिखित सूचना दे दी है कि उन्होंने परीक्षा के लिए आवेदन किया है। यह वचनबद्धता-पत्र स्थायी और अस्थायी सरकारी कर्मचारियों के अतिरिक्त कार्य-प्रभारित कर्मचारियों (वे कर्मचारी जिन्हें कार्य के आधार पर वेतन दिया जाता है) सार्वजनिक उपक्रमों के अधीन सेवारत व्यक्तियों को भी प्रस्तुत करना होगा। उपर्युक्त कार्य प्रभारित कर्मचारियों में अनियत अथवा दैनिक अदायगी की दर पर कार्य करने वाले कर्मचारी शामिल नहीं हैं।

हम चर्चा कर चुके हैं कि सरकारी कार्य पद्धति में अधिकारी कर्मचारी वर्ग के बीच एक खास तरह का पदानुक्रम होता है। इस पदानुक्रम का प्रभाव सरकारी भाषा पर भी पड़ता है। अनुवाद में भाषा की इस औपचारिकता को कायम रखना पड़ता है। उदाहरण के लिए, अधिकारी अपने अधीनस्थ व्यक्ति से कोई कागजात माँगते हुए लिखता है The file may be submitted यहाँ May का अर्थ 'सकते हैं' नहीं लिखा जाएगा क्योंकि यह वाक्य आदेशात्मक है। यद्यपि इसकी शैली आदेशात्मक नहीं है, अत: इसका हिन्दी अनुवाद होगा—'फाइल प्रस्तुत करें।'

पदानुक्रम की इसी शैली के अनुरूप कोई अधिकारी/कर्मचारी अपने से ऊपर के अधिकारी को कागजात "प्रस्तुत" करता है उससे कोई कागजात माँगता नहीं।

कार्यालय में रोज के काम-काज में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न अभिव्यक्तियों के लिए हिन्दी में भी अभिव्यक्तियाँ निर्धारित कर दी गई हैं। उन्हें प्रशसनिक शब्दावली के साथ संकलित कर दिया गया है। अनुवाद में उन्हीं का प्रयोग बेहतर रहता है। उदाहरण के लिए—

Action may be taken as proposed	यथा-प्रस्तावित कार्रवाही की जाए
Early order are solicited	प्रार्थना है कि शीर्घ आदेश दिए जाएँ।

संक्षिप्तियाँ/संक्षिप्ताक्षर (Abbreviation)

प्र.5. विधि के क्षेत्र में अनुवाद का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

विधि के क्षेत्र में अनुवाद

विधि की भाषा में भी प्रशासनिक भाषा की काफी विशेषताएँ मिलती हैं लेकिन विधि की भाषा के निम्नलिखित लक्षण विशेष ध्यान देने योग्य हैं—

1. **भाषा की संवेदनशीलता**—विधि की भाषा अत्यंत संवेदनशील होती है जिसमें शब्द या क्रम का थोड़ा-सा भी परिवर्तन अर्थ का अनर्थ कर सकता है। विधि की शब्दावली प्राय: सामान्य कोशीय अर्थ नहीं व्यक्त करती। इसका अर्थ अत्यंत सूक्ष्म और विशिष्ट होता है। उदाहरण के लिए, अति-सामान्य से दिखने वाले शब्द intention, intent और motive या फिर admission और confession कानूनी संदर्भ में विशिष्ट तथा भिन्न अर्थ व्यक्त करते हैं। संविधान के निर्माण के समय निम्नलिखित वाक्य में 'may' के स्थान पर 'shall' के प्रयोग को लेकर एक बहुत बड़ा विवाद खड़ा हो गया।

   English language may, as from the appointed day, continue to be used in addition to Hindi.

इस तरह की संवेदनशीलता के कारण ही किसी भी कानूनी दस्तावेज को जब तक अन्तिम या प्रामाणिक नहीं माना जाता जब तक कोई कानून विशेषज्ञ उसका पुनर्निरीक्षण न कर लें। ये विशेषज्ञ (जो ड्राफ्ट्समैन कहलाते हैं।) कानूनी दस्तावेजों में उपयुक्त स्थान पर उपयुक्त पारिभाषिक शब्दावली या अभिव्यक्तियाँ डालकर दस्तावेजों को अन्तिम रूप देते हैं। इसीलिए कानूनी दस्तावेजों में कई तरह के पारिभाषिक शब्दों या उक्तियों की बार-बार आवृत्ति होती है: जैसे—

Here is after provided	इसमें इसके पश्चात् उपबन्धित
Here under	इसके अधीन
Here to before	इससे पूर्व
Hereby	इसके द्वारा

2. **न्यायालय द्वारा अर्थ व्याख्या**—सामान्यत: किसी भी प्रयुक्ति क्षेत्र में लिखे हुए शब्दों की व्याख्या उनके पाठक करते हैं, लेकिन कानूनी दस्तावेजों की व्याख्या पाठक नहीं अदालत करती है। अर्थ की व्याख्याओं को वकील चुनौती देते हैं, न्यायाधीश उपयुक्त निर्णय देते हैं। कभी-कभी अदालत पुराने अर्थों को भी संशोधित या परिवर्तित कर देती है। इन नई व्याख्याओं को कानून की पुस्तिकाओं में बाकायदा दर्ज कर दिया जाता है।
3. **राजपत्र में अधिसूचना**—कोई भी कानूनी दस्तावेज तभी प्रामाणिक माना जाता है जब राजपत्र (गजट) में उसकी अधिसूचना हो जाती है। अदालत केवल राजपत्र में अधिसूचित दस्तावेज को ही स्वीकार करता है। यहाँ तक कि किसी दस्तावेज का अनुवाद भी तब तक अदालत द्वारा मान्य नहीं होता जब तक वह राजपत्र में अधिसूचित न हो। उदाहरण के लिए, भारतीय संविधान के अंग्रेजी और हिन्दी दोनों संस्करण अधिसूचित हो चुके हैं और अब उनकी भाषा में बिल्कुल परिवर्तन नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार, अनेक महत्त्वपूर्ण सरकारी नियुक्तियाँ राजपत्रों में अधिसूचित होने पर भी प्रभावी होती हैं।
4. **अर्थ की संक्षिप्तता और निश्चितता**—कानूनी भाषा की इस प्रकार की असामान्य विशिष्टता के कारण स्वाभाविक है कि कानूनी दस्तावेजों के वाक्य अत्यंत सारगर्भित और जटिल होते हैं चाहे वह अंग्रेजी हो या हिन्दी। इसमें जो कुछ कहा जाता है उसका वही और उतना ही अर्थ निकलता है जितना अभीष्ट है। शब्दावली में एकार्थकता तथा सुनिश्चितता होती है और वाक्य शैली रूढ़ होती है जिसका प्रयोग करना अनिवार्य होता है। वाक्य शैली बदलते ही अर्थ या आशय के भी बदल जाने की सम्भावना होती है। यही कारण है कि कानून की भाषा सामान्य व्यक्ति की समझ में आसानी से नहीं आती।

इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए विधि के क्षेत्र में अनुवाद में कुछ अन्य बातों का भी ध्यान रखना पड़ता है—

1. **शाब्दिक अनुवाद**—वैज्ञानिक या अन्य प्रकार के तकनीकी अनुवाद में हम बोधगम्यता के लिए शाब्दिक अनुवाद से हटकर कभी-कभी थोड़ा-बहुत भावानुवाद भी करते हैं और अंग्रेजी के वाक्यों को तोड़कर हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुसार उन्हें अनूदित कर देते हैं। कानूनी दस्तावेज के अनुवाद में हम सामान्यत: ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि हर शब्द का उतना ही अर्थ निकलना चाहिए जितना मूल कथ्य में वांछित है। इसलिए अंग्रेजी पाठ की भाषा-शैली और वाक्य-विन्यास को यथासम्भव वैसा ही रखने का प्रयास किया जाता है ताकि किसी प्रकार की अर्थ-हानि या अर्थ-परिवर्तन न हो। यदि कभी शैली और अर्थ में से किसी एक को चुनना हो तो अर्थ को ही प्राथमिकता दी जाती है। इसके लिए लम्बे जटिल वाक्यों का प्रयोग भी खूब किया जाता है इस बात की परवाह किए बगैर कि ऐसा हिन्दी का मूल प्रकृति के अनुकूल नहीं है। नीचे भारतीय संविधान के अंग्रेजी-हिन्दी संस्करण से दो वाक्यों के उदाहरण दिए जा रहे हैं जिसमें आप देखेंगे कि हिन्दी अनुवाद में अंग्रेजी के वाक्य-गठन और शब्दावली का यथासम्भव अनुकरण किया गया है—
   (i) The Indian Independence Act, 1947 and the Government of India Act, 1935 together with all enactments amending or supplementing the latter Act, but not including the abolition of Privy Council Jurisdiction Action 1949, are hereby repealed.
   भारत स्वतन्त्रता अधिनियम, 1947 और भारत शासन अधिनियम 1935 का, पश्चात् कथित अधिनियम की संशोधक या अनुपूरक सभी अधिनियमितियों के साथ, जिनके अन्तर्गत प्रिवी काउन्सिल अधिकारिता कार्य अधिनियम 1949 शामिल नहीं हैं, इसके द्वारा निरसन किया जाता है।
   (ii) AND it is hereby further agreed and declared by the between the parties hereto the said A.B. ..... shall keep the fidelity bond issued by the said company in the full force by payment of premia as and when they fall due and by otherwise confirming to the rules of the said company relating thereto.

इसके पक्षकारों द्वारा घोषणा की जाती है और उनके बीच यह करार भी किया जाता है उक्त क, ख ..... उक्त कम्पनी द्वारा किए गए उक्त विश्वस्तता बंधपत्र के प्रीमियम का, जैसे-जैसे वे शोध्य होते जाए, संदाय करके और उक्त कम्पनी के उससे सम्बन्धित नियमों का पालन करे, बंधपत्र को पूर्णत: प्रवृत्त रखेंगे।

इस उदाहरण में गौर कीजिए कि वाक्य काफी लम्बा है लेकिन उसका अनुवाद एक ही वाक्य में किया गया है। वाक्य के आरम्भ में पक्षकार घोषित करते हैं न कह कर कर्मवाच्य 'पक्षकारों द्वारा घोषणा की जाती है' रखा गया है।

विधि की भाषा में छोटे से छोटे शब्द के अर्थ का महत्त्व होता है। अत: अनुवाद में प्रत्येक शब्द आना चाहिए। इस दृष्टि से 'agreed and declared by and between' का अनुवाद 'द्वारा घोषणा की जाती है' 'उनके बीच यह करार किया जाता है' करके सम्पूर्ण अर्थ लाने का प्रयास किया जाता है।

'Payment', 'due', 'in full force' के लिए क्रमश: 'संदाय', 'शोध्य' और 'पूर्णत: प्रवृत्त' के प्रयोग पर गौर कीजिए। ये पर्याय विधिक क्षेत्र में ही प्रयुक्त होते हैं अन्यथा 'भुगतान/अदायगी', 'देय', पूर्णत: लागू होगा जैसे पर्यायों का प्रयोग होता है।

2. **सरलीकरण बहुत सीमित स्थितियों में**—चर्चा की जा चुकी है कि विधि के क्षेत्र में भावानुवाद नहीं होता। शब्दानुवाद की प्रक्रिया में लक्ष्य भाषा की जरूरतों के अनुसार कभी-कभी थोड़ा-बहुत हेर-फेर शैली में किया जा सकता है लेकिन बहुत सीमित स्थिति में।

भारत के अधिकांश कानूनी दस्तावेज, करार, लीज आदि अंग्रेजी शासन काल से चले आ रहे हैं जिनमें कई निरर्थक या अनावश्यक शब्दावली तथा उक्तियाँ भी हैं। इन्हें कुछ हद तक सरलीकृत किया जा सकता है। कई विभागों ने कुछ सामान्य कानूनी दस्तावेजों (जैसे करार आदि में थोड़ा-बहुत) परिवर्तन कर उन्हें अपेक्षाकृत सरल बना दिया है। अनुवाद करते समय यह ध्यान रखने की बात है कि मूल के किसी अर्थ की हानि न हो। नीचे के उदाहरण में आप पाएँगें कि अनुदित पाठ मूल की तुलना में अधिक सहज और बोधगम्य है—

I ....., the member of the Commission appointed by the Govt. of India, having received a sum of Rs. ..... (Rupees in words .....) s advance from the President of India for performing certain journey connected with my duties hereby agree to that ..... .

मैं ..... भारत सरकार द्वारा नियुक्त ..... आयोग का सदस्य हूँ। मुझे ऐसे सदस्य के रूप में अपने कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में कतिपय यात्रा करने के लिए भारत का राष्ट्रपति से ..... रु. ..... शब्दों में ..... की रकम प्राप्त हुई। मैं यह करार करता हूँ कि ..... ।

प्र.6. बैंकों में प्रक्रियात्मक साहित्य के अनुवाद का उदाहरणसहित वर्णन कीजिए।

उत्तर

बैंकों में प्रक्रियात्मक साहित्य का अनुवाद

बैंकों में सभी प्रकार की लेखन सामग्री एवं प्रक्रियात्मक साहित्य का अनुवाद बड़े पैमाने पर होता है। परिचयात्मक विषय से सम्बन्धित जानकारी के पश्चात् प्रक्रियात्मक साहित्य पर प्रकाश डाला जाएगा।

मैनुअलों, नियम पुस्तकों, हैंडबुकों या परिचलनात्मक गाइडों के रूप में होता है।

बैंकिंग साहित्य के प्रक्रियात्मक साहित्य प्राय: विधिक प्रकृति के होते हैं, क्योंकि बैंकिंग व्यवसाय एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ बैंक व ग्राहक के सम्बन्ध अनेक विधिक भूमिकाओं में बदलते रहते हैं। उदाहरण के लिए, ऋणी व ऋणदाता, न्यासी, परामर्शी, एजेंट, स्वामी आदि कई भूमिकाएँ निभानी होती हैं।

बैंकिंग में प्रक्रियात्मक साहित्य का एक नमूना संलग्न है इस नमूने में आप देखेंगे कि शब्द एवं अभिव्यक्तियाँ बिल्कुल तटस्थ हैं। शब्दों का प्रयोग भी इतना सीमित है कि लगता है शब्दों में ककृपणता बरती गई हो। एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि Pay, Salary, Emoluments जैसे समान प्रतीत होने वाले शब्दों को वेतन, संवेतन, परिलब्धियों जैसे शब्दों से अभिव्यक्त किया गया है। यदि आप शब्द कोश ढूँढ़ें तो शायद संवेतन जैसा शब्द आपको कहीं नहीं मिलेगा परन्तु बैंकिंग शब्दावली में इसका विधिक महत्त्व है, इसलिए यह शब्द गढ़ा गया है। इसका एक नमूना यहाँ दिया जा रहा है—

नमूना-1

'निदेशक मंडल' से बैंक का निदेशक मंडल अभिप्रेत है;

'कैलेंडर वर्ष' से किसी वर्ष की पहली जनवरी से प्रारम्भ होकर उस वर्ष की 31 दिसम्बर को समाप्त होने वाली अवधि अभिप्रेत है;

'सक्षम प्राधिकारी' से निदेशक मंडल द्वारा इस प्रयोजन के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी अभिप्रेत है;
'परिलब्धियों ' से संवेतन और भत्तों का, यदि कोई हो, जोड़ अभिप्रेत है;
'परिवार' से अधिकारी की पत्नी/का पति (यदि पत्नी/पति भी बैंक की/का कर्मचारी नहीं है) और अधिकारी की ऐसी संतान, माता-पिता, भाई और बहनें जो पूर्णत: अधिकारी पर आश्रित हैं, अभिप्रेत हैं और 'परिवार' के अंतर्गत आते हैं किन्तु इसके अंतर्गत विधिक रूप से पृथक पति/पत्नी नहीं आते;
'सरकार' से केन्द्रीय सरकार अभिप्रेत है;
'सरकार के मार्ग-निर्देश' से ऐसे मार्ग-निर्देश अभिप्रेत हैं, जो सरकार द्वारा जारी किए जाएँ और इनके अंतर्गत सरकार के दिनांक 19 जुलाई, 1973 के संकल्प सं. एफ 4 (26) /72 आई आर के अधीन गठित समिति की रिपोर्ट में की गई सरकार द्वारा स्वीकृत सिफारिशें भी, सरकार द्वारा उनमें समय-समय पर किए गए अथवा किए जाने वाले आशोधनों या परिवर्तनों सहित, शामिल हैं;
'प्रबंध निदेशक' से बैंक का प्रबंध निदेशक अभिप्रेत है;
'अधिकारी' से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जिसे विनिमय 4 में विनिर्दिष्ट श्रेणियों में से किसी श्रेणी में नियत या पदोन्नत या नियुक्त किया गया हो और कोई भी ऐसा अन्य व्यक्ति जो नियत तारीख से तत्काल पूर्व बैंक का अधिकारी रहा हो। इसमें विशेषज्ञ या तकनीकी अधिकारी के रूप में नियत या पदोन्नत या नियुक्त व्यक्ति तथा कोई ऐसा अन्य कर्मचारी भी शामिल है जिस पर विनिमय 2 के अधीन इन विनिमयों में से कोई विनिमय लागू किया गया हो;
'वेतन' से अवरोध वेतनवृद्धियों सहित मूल वेतन अभिप्रेत है;
'संवेतन' से वेतन और महँगाई भत्ते का जोड़ अभिप्रेत है; और
'वर्ष' से बारह माह की निरन्तर अवधि अभिप्रेत है।

Board means board of the Bank;
'Calendar year' means the period commencing from the 1st day of january of a year and ending with the 31st day of December of the same year;
'Competent Authority' means the authority designated for the purpose by the Board;
'Emoluments' means the aggregate of salary and allowances, if any;
'Family' means and includes the spouse of the officer (if the spouse is also not an employee of the Bank) and the children, parents, brothers and sisters of the officer wholly dependent on the officer but shall not include a legally separated spouse;
'Government' means the Central Government;
'Guidelines of Government' shall mean such guidelines as may be issued by the Government and shall include the recommendations made in the report of the committee constituted by the Government's Resolution No. F. 4(26) 72/IR dated 19th July, 1973, as accepted by Government together with modifications or alterations there of as may, from time to time, have been or be made by Government;
'Managing Director' means the managing Director of the Bank;
'Officer' means a person fitted into or promoted to or appointed to any of the grade specified in regulation 4 and any other person, who immediately prior to the appointed date, was an officer of the Bank, and shall also include any specialist or technical person as fitted or promoted or appointed and any other employee to whom any of these regulations has been made applicable under regulation 2;
'Pay' means basic pay including stagnation increments;
'Salary' means the aggregate of the pay and dearness allowance;

प्र.7. बैंकों में रिपोर्टों व अन्य सूचनात्मक सामग्री (नमूना) के अनुवाद का उल्लेख कीजिए।

उत्तर बैंकों में रिपोर्टों व अन्य सूचनात्मक सामग्री का अनुवाद

बैंकों में प्राय: वार्षिक रिपोर्टें, तुलना-पत्र आदि का अनुवाद होता है। ऐसे में अनुवाद सामग्री कम होती है व आँकड़े अधिक होते हैं। बैंक के तुलन-पत्र के अनुवाद का एक नमूना देखें—

TOUCH 'n' PASS

नमूना-1
तुलन-पत्र का नमूना

आदर्श बैंक (Adarsh Bank)
31 मार्च, 1999 की स्थिति का तुलन-पत्र/Balance Sheet
As at 31st March, 1999

(000 हटाकर)
(000's Omitted)

	अनुसूची सं. Schedule No.	यथा 31-03-99 को As at 31-03-99 ₹ Rs.	यथा 31-03-98 को As at 31-03-98 ₹ Rs.
पूँजी और देयताएँ (Capital and Liabilities)			
पूँजी (Capital)	1		
आरक्षित निधियाँ और अधिकोष (reserves & Surplus)	2		
जमाराशियाँ (Deposits)	3		
उधार राशियाँ (Borrowings)	4		
अन्य देयताएँ व प्रावधान (Other Liabilities and Provisions)	5		
आस्तियाँ (Assets)			
नकदी, स्वर्ण और भारतीय रिजर्व बैंक में अतिशेष (Cash, Gold and Balances with R.B.I.)	6		
बैंकों में अतिशेष और माँग पर तथा अल्प सूचना पर धन (Balances with Banks & Money at Call & Short Notice)	7		
निवेश (Investments)	8		
अग्रिम (Advances)	9		
स्थिर आस्तियाँ (Fixed Assets)	10		
अन्य आस्तियाँ (Other Assets)	11		
आकस्मिक देयताएँ (Contingent Liabilities)	12		
उगाही के लिए बिल (Bills for Collection)			
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ (Significant Accounting Policies)	17		
लेखा सम्बन्धी टिप्पणियाँ (Note of Accounts)	18		

उपर्युक्त अनुसूचियाँ तुलन-पत्र का अभिन्न अंग है।
The Schedules refered to above form an integral part of the Balance Sheet.

तुलन-पत्र के पश्चात् यह दूसरे किस्म का अनुवाद है। यह वार्षिक रिपोर्ट शैली में तैयार किया गया है। इस नमूने से स्पष्ट झलकता है कि बैंकिंग शब्द जहाँ बोझिल होने का खतरा हो वहाँ इनके स्थान पर लिप्यंतरण कर लिया जाता है; जैसे—साफ्टवेयर का अनुवाद उपलब्ध न होने के कारण इसे साफ्टवेयर ही लिखा गया है। इसी प्रकार आधुनिक बैंकिंग में अंग्रेजी लिप्यंतरण युक्त कई शब्द प्रचलित हैं।

TOUCH 'n' PASS

नमूना-2

इन नीतिगत उपायों का एक केन्द्र बिन्दु वित्तीय प्रणाली को सुदृढ़ बनाने हेतु संरचनात्मक परिवर्तन करना भी था। वर्ष के दौरान भारतीय रिजर्व बैंक ने विशेषत: कृषि, निर्यात, लघु उद्योग तथा सूचना प्रौद्योगिकी एवं सॉफ्टवेयर उद्योग के लिए ऋण वितरण प्रणाली सुधारने हेतु कदम उठाएँ।

जमाराशियों पर ब्याज दरें और अधिक विनियंत्रित की गई। बैंकों को पन्द्रह दिनों से अधिक की परिपक्वता वाली मीयादी जमाराशियों पर ब्याज दरें नियत करते तथा ₹ 15 लाख और उससे अधिक की मीयादी जमाराशियों पर विभेदक ब्याज दरें नियत करने की भी स्वतन्त्रता दी गई।

अपने आस्ति व देयता संविभागों के कारगर प्रबंधन में बैंकों को पर्याप्त लचीलापन प्रदान करने के उद्देश्य से भारतीय रिजर्व बैंक ने आस्ति-देयता प्रबंधन प्रणाली के गठन पर व्यापक दिशा-निर्देश जारी किए।

Structural Changes to strengthen the financial system was also a focal point of the policy measures. During the year, steps were initiated by the Reserve Bank of India to improve the credit delivery system, particularly for agriculture, exports, small scale industries and It and software industry. The interest rates on deposits were further deregulated. The banks were given freedom to offer interest rates on term deposits of maturity above 15 days and also to offer differential interest rates on term deposits of with the objective of providing adequate degree of flexibility to the banks in efficiently managing their asset and liablity portfolios, comprehensive guidelines on setting up of ALM System were issued by the Reserve Bank of India.

बैंकों में फार्मों और पर्चियों का बड़ी मात्रा में उपयोग है, अत: पर्चियों के अनुवाद के दो नमूने भी दिए जा रहे हैं। इन नमूनों को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार खाली स्थानों को भरने के लिए वाक्य रचना बदल जाती है।

नमूना-3

आदर्श बैंक
Adarsh Bank

जमा पर्ची Paying slip एफ F 45 (N)
नकद Cash/ अंतरण Transfer

शाखा :
Branch ..... दिनांक Date

नोट Notes	राशि Amount	
	₹ Rs.	पै. Ps.
500 ×		
100 ×		
50 ×		
20 ×		
10 ×		
5 ×		
2 ×		
1 ×		
सिक्के Coins		
कुल Total		

नकद, स्थानीय तथा बाहरी चेकों के लिए अलग-अलग जमा पर्चियों का प्रयोग करें
Use separate Slips for Cash, Local and Outstation Cheques

खाता सं. A/C No.

In the name of ..... के नाम
रुपए के Repees .....
..... मात्र only.
पीछे दिए गए विवरण के अनुसार नकद/चेक द्वारा
By Cash/Cheques as per the details furnished overleaf

₹ Rs.	पै. Ps.

.....
जमाकर्त्ता के हस्ताक्षर Signature of the Depositor

TOUCH 'n' PASS

					नकद प्राप्त/अंतरण मोहर	.....
टेल्लर सं. Teller No. Writer	सूची सं. L.F. No.	खजांची/स्क्रोल राइटर Scroll No. Entered by	खा. ब.प. सं. Cashier/	द्वारा दर्ज Scroll	Cash Received/ Transfer Seal	विशेष सहायक/ अधिकारी/प्रबंधक Spl. Asst./Officer/ Manager

कृपया चेक के पूर्ण विवरण लिखें Please write full details of cheques.

बैंक का नाम Bank Name	शाखा का नाम Branch Name	चेक सं. Cheque No.	अदाकर्ता बैंक का सोर्ट कूट Sort Code Drawee Bank	आदेशक का खाता सं. (ब.बैं. खाता, चालू खाता) या कम्पनी का खाता सं. ब्याज/ लाभांश वारंट/धन वापसी आदेश के लिए Account No. of Drawer (SB A/C, Current A/C.) or Company for Int./ Dividend Warnants/ Refund Orders	आदेश के मामलों में अं. कूट TR. Code	माँग ड्राफ्ट/भुगतान जारीकर्त्ता कार्यालय का नाम/कूट सं. Name of issue Officer/ Code No. in case of DDs/Payment Orders	राशि Amount	
							₹ Rs.	पै. Ps.
						कुल Total		

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि बैंकिंग अनुवाद स्वयं में ही एक अलग अनुवाद विधा के रूप में उभकर आया है।

प्र.8. प्रशासनिक अनुवाद में संक्षिप्तियाँ/संक्षिप्ताक्षर पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

प्रशासनिक अनुवाद में संक्षिप्तियाँ/संक्षिप्ताक्षर

प्रशासनिक भाषा में संक्षिप्तियों का खूब प्रयोग होता है। संक्षिप्ति (Abbreviation) अक्सर किन्हीं शब्दों या पदों के प्रथमाक्षरों से बनती हैं; जैसे— WHO—World Health Organisation कभी-कभी प्रथम अक्षरों के अतिरिक्त अन्य कुछ अक्षर भी संक्षिप्ति में शामिल होते हैं; जैसे— Wg. Cdr. (Wing Commander)। संक्षिप्ति के अनुवाद की यहाँ अलग से चर्चा करना इसलिए आवश्यक है कि इसमें दो चीजों का विशेष रूप से ध्यान रखना पड़ता है, जो निम्नलिखित हैं—

संक्षिप्ति के पूर्ण रूप शब्दों का पहचानना—इसका अभिप्राय: यह पता लगाना है कि संक्षिप्ति किन शब्दों से बनी है। किसी संक्षिप्ति का अनुवाद तभी हो सकता है जब यह पता चल जाए कि संक्षिप्ति किन शब्दों का संक्षिप्त रूप है। कुछ संक्षिप्तियाँ बहुत अधिक प्रचलन में होती है। अत: लगभग सभी जानते हैं कि वे किन शब्दों से बनी हैं। लकिन सभी संक्षिप्तियाँ बहुत-प्रचलित नहीं होती। संक्षिप्ति निर्माण के पीछे कोई खास नियम या सिद्धान्त नहीं होता— भाषा प्रयोक्ता व्यक्ति/संस्था उन्हें अकसर अपनी जरूरत के हिसाब से बना लेता है/लेती है और वे चल पड़ती है। इसलिए अक्सर नई-नई संक्षिप्तियाँ भी देखने में आती हैं।

किसी विभाग/संस्था के व्यक्ति उस संस्था/विभाग से जुड़ी संक्षिप्तियों को भली-भाँति समझते हैं क्योंकि वे अक्सर उन्हीं के द्वारा बनी होती हैं और उनका प्रयोग उनके रोजमर्रा के कामकाज में होता है। उदाहरण के लिए,

TOUCH 'n' PASS

O.I.G.S.	On India Government Service
OSD	Officer on Special Duty
D.D.	Deputy Director/Doordarshan
D.S.	Deputy Secretary
J.S.	Joint Secretary
L.T.C.	Leave Travel Concession
E.L.	Earned Leave

संदर्भ के अनुसार संक्षिप्ति का सही अर्थ ग्रहण करना—यह आवश्यक नहीं होता कि एक संक्षिप्ति किसी एक नाम/पदबंध से ही सबन्धित हो। उदाहरण के लिए 'C.R.' Central Railways भी हो सकता है और Confidential Report भी। इसी तरह 'B.S.P. Bahujan Samaj Party' भी हो सकती है और Bhilai Steel Plant भी। 'C.P. Central Proviance' भी हो सकता है और Confidential भी। इस तरह संक्षिप्तियाँ काफी भ्रम पैदा कर सकती हैं और अनर्थ भी कर सकती हैं क्योंकि यदि अनुवादक संक्षिप्ति को गलत शब्दों से जोड़ देता है तो उसका अनुवाद भी गलत हो जाएगा। उदाहरण के लिए, Copy to Shri..... for n.a में यदि अनुवादक n.a. का तात्पर्य Not Applicable समझ लेता हो तो वह सही अनुवाद नहीं कर सकता। उसे समझना होगा कि यहाँ n.a. का मायने necessary action है। इसलिए आवश्यक होता है कि संक्षिप्ति का सही-सही स्रोत (Full Form) पता लगाया जाए। प्रश्न यह उठता है कि कैसे पता लगाया जाए। इसमें दो चीजें सर्वाधिक मददगार होती हैं। जिस सामग्री में संक्षिप्ति प्रयुक्त हुई है उसके विषय और संदर्भ पर ध्यान दिया जाए और समझने की कोशिश की जाए कि इस विषय के संदर्भ में कौन-से शब्द प्रयुक्त हुए होंगे। कहने का तात्पर्य है कि सदैव यह देखने का प्रयास करना चाहिए कि कथ्य के संदर्भ विशेष में संक्षिप्ति किन शब्दों की सूचक हो सकती है। उदाहरण के लिए, CAT संक्षिप्ति को लें। यदि अनूद्य सामग्री शिक्षा सम्बन्धी है तो यह संक्षिप्ति परीक्षा सम्बन्धी हो सकती है और इसका पूर्ण रूप Combined Admission Test होगा। लेकिन यदि अनूद्य सामग्री प्रशासनिक एवं न्याय सम्बन्धी है तो इस संक्षिप्ति का प्रयोग Central Administrative Tribunel के सन्दर्भ में हो सकता है।

संक्षिप्ति का पूर्ण रूप पहचानने में अनूद्य सामग्री में भी सहायता मिलती है। अनूद्य सामग्री को ध्यान से पढ़ा जाए और देखा जाए कि संक्षिप्ति से सम्बन्धित शब्द/पद इस सामग्री में ही तो मौजूद नहीं है। अखबार पढ़ते हुए आपने देखा होगा कि किसी संस्था, समिति, निकाय आदि का पूरा नाम एकाध बार देने के बाद प्रथमाक्षरों के आधार पर उसका संक्षिप्त नाम इस्तेमाल कर दिया जाता है; जैसे— एक बार Joint Consultative Committee लिखने के बाद JCC लिखा जाता है। इससे स्थान की काफी बचत होती है। प्रशासनिक अनूद्य सामग्री में भी इस तरह का प्रयोग कई बार होता है।

अब प्रश्न उठता है कि संक्षिप्ति का अनुवाद संक्षिप्ति के रूप में ही किया जाए अथवा किसी और तरह से। ध्यान देने की बात है कि अंग्रेजी भाषा में संक्षिप्ति का प्रचलन खूब है। इतना है कि प्रयोक्ता कई बार स्वयं भी संक्षिप्ति गढ़ लेता है। लेकिन हिन्दी भाषा की स्वाभाविक प्रवृत्ति संक्षिप्ति निर्माण की नहीं है। पत्रकारिता में तो कभी-कभी संक्षिप्तियाँ गढ़ ली जाती है; जैसे— "दक्षेस", "इंका", "जद", "सपा"। मगर उसकी भी सीमा है। अंग्रेजी के P.M. और C.M. को 'प्र०मं०' और 'मु०म०' नहीं कहा जा सकता। ऐसी स्थिति में संक्षिप्ति का अनुवाद करते समय यदि हिन्दी में सांक्षिप्ति गढ़ी जाएगी तो भाषा न केवल अटपटी हो जाएगी बल्कि पढ़ने की समझ में भी नहीं आएगी। M.M.T.C. के लिए "ख.धा.व्या.नि. लिखना समझ में नहीं आएगा। इसलिए विस्तार से 'खनिज एवं धातु व्यापार निगम' लिखना ही उपयुक्त होगा। जब तक कि कोई संक्षिप्ति हिन्दी में खूब प्रचलन में न आ गई हो उससे सम्बन्धित शब्दों का पूर्ण अनुवाद ही बेहतर रहता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. बैंकिंग क्षेत्र में Fate शब्द का अर्थ किसकी स्थिति जानने के लिए किया जाता है?

(क) लेन/देन की स्थिति (ख) भुगतान/निपटान की स्थिति
(ग) बचत की स्थिति (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ख) भुगतान/निपटान की स्थिति

प्र.2. बजट नियंत्रण से क्या किया जाता है?

(क) आय-व्यय का नियंत्रण (ख) लागतों का नियंत्रण
(ग) लाभों का नियंत्रण (घ) ये सभी

उत्तर (घ) ये सभी

प्र.3. विज्ञान की भाषा का उपयोग कुछ क्षेत्रों में कितने स्तरों पर होता है?
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच
उत्तर (ग) चार

प्र.4. विज्ञान प्रणाली के कितने प्रमुख गुण हैं?
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच
उत्तर (ख) तीन

प्र.5. निम्न में से कौन-सा विज्ञान प्रणाली का गुण नहीं है?
(क) तर्क (ख) प्रामाणिकता (ग) वस्तुनिष्ठता (घ) प्रयोग
उत्तर (घ) प्रयोग

प्र.6. मूलभूत विज्ञान के अन्तर्गत कितने विषय आते हैं?
(क) तीन (ख) चार (ग) पाँच (घ) सात
उत्तर (ख) चार

प्र.7. प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद प्रमुख रूप में किसमें होता है?
(क) हिन्दी से अंग्रेजी (ख) अंग्रेजी से हिन्दी (ग) दोनों (क) और (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) अंग्रेजी से हिन्दी

प्र.8. निम्न में से कौन-सा विज्ञान प्रणाली का गुण है?
(क) प्रयोग (ख) प्रमाणिकता (ग) अनुवाद (घ) विस्तार
उत्तर (ख) प्रमाणिकता

प्र.9. निम्न में से कौन-से विषय मूलभूत विज्ञान के अन्तर्गत आते हैं?
(क) भौतिकी (ख) रसायन (ग) गणित (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.10. निम्न में से कौन-सा विषय मूलभूत विज्ञान के अन्तर्गत नहीं आता?
(क) प्राणी विज्ञान (ख) रसायन विज्ञान (ग) सामाजिक विज्ञान (घ) भौतिक विज्ञान
उत्तर (ग) सामाजिक विज्ञान

प्र.11. संक्षिप्ति किससे मिलकर बनी होती है?
(क) दो शब्दों के प्रथमाक्षरों से मिलकर (ख) दो वाक्यों के प्रथम शब्दों से मिलकर
(ग) दो वाक्यों के अन्तिम शब्दों से मिलकर (घ) वाक्यों के प्रथम एवं अन्तिम शब्दों से मिलकर
उत्तर (क) दो शब्दों के प्रथमाक्षरों से मिलकर

प्र.12. निम्न में से कौन-सा विधि की भाषा का लक्षण है?
(क) भाषा की संवेदनशीलता (ख) न्यायालय द्वारा अर्थ व्याख्या
(ग) राजपत्र में अधिसूचना (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.13. संघ की राजभाषा के रूप में किसे घोषित किया गया है?
(क) अंग्रेजी (ख) हिन्दी (ग) उर्दू (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) हिन्दी

प्र.14. विज्ञान अपनी विषय-वस्तु को सूक्ष्मता और स्पष्टता के साथ व्यक्त करने के लिए क्या प्रयोग करता है?
(क) आरेखों का (ख) विशेष-चिह्नों का (ग) चित्रों का(घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.15. कुछ क्षेत्रों में विज्ञान की भाषा का इस्तेमाल कितने स्तरों पर किया जाता है?
(क) दो (ख) चार (ग) छः (घ) आठ
उत्तर (ख) चार

TOUCH 'n' PASS

प्र.16. जिन बीमारियों की जानकारी परम्परागत जीवन-शैली में नहीं थी या कम-से-कम उन्हें नाम नहीं दिए गए थे उन्हें लिखा जाता है–
(क) लिप्यांतरण करके (ख) अनुवादित करके (ग) लिपि बदलकर (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) लिप्यांतरण करके

प्र.17. दूसरे प्रकार के अनुवादों से प्रौद्योगिकी अनुवाद की पहचान मुख्य रूप से किस कारण होती है?
(क) परीक्षण के (ख) पारिभाषिक शब्दावली के
(ग) मुल्यांकन के (घ) समीक्षा के
उत्तर (ख) पारिभाषिक शब्दावली के

प्र.18. जब दो भिन्न भाषा भाषी आपस में बात करते हैं तो उनके बीच के अनुवादक को क्या कहते हैं?
(क) अनुवादक (ख) दुभाषिया (ग) बहुभाषिया (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) दुभाषिया

प्र.19. गुगल ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच लिप्यंतरण की सेवा कब आरम्भ की?
(क) 2008 (ख) 2009 (ग) 2010 (घ) 2011
उत्तर (ख) 2009

प्र.20. Acting का हिन्दी अर्थ क्या होता है?
(क) सहायक (ख) कार्यकारी (ग) अतिरिक्त (घ) प्रभारी
उत्तर (ख) कार्यकारी

प्र.21. पद्नाम का अनुवाद करते समय निम्नलिखित में से कौन-सी समस्या सामने आती है?
(क) संतुलित शब्दों का अभाव (ख) पर्याय चयन की समस्या
(ग) (क) और (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) (क) और (ख) दोनों

प्र.22. एक संकेतों के द्वारा कही गई बात को दूसरे संकेत के माध्यम से व्यक्त करना क्या कहलाता है?
(क) अंतरसंकेतपरक (ख) अन्यभाषिक अनुवाद (ग) सम्भाषिक अनुवाद (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) अंतरसंकेतपरक

प्र.23. Allowance का हिन्दी अर्थ क्या होगा?
(क) भत्ता (ख) आरोप (ग) संशोधन (घ) असंगति
उत्तर (क) भत्ता

प्र.24. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता कार्यालयी हिन्दी की है?
(क) वैज्ञानिकता (ख) अनुप्रयुक्तता (ग) भाषिक विशिष्टता (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.25. भारतीय संविधान में राजभाषा हेतु निम्नलिखित में से किस शब्द का प्रयोग हुआ है?
(क) स्टेट लैंग्वेज (ख) नेशनल लैंग्वेज (ग) ऑफिसियल लैंग्वेज (घ) ऑथराइज्ड लैंग्वेज
उत्तर (ग) ऑफिसियल लैंग्वेज

प्र.26. वह शब्द जो किसी ज्ञान विज्ञान के विशेष क्षेत्र में एक विशिष्ट तथा निश्चित अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है, उसे क्या कहते हैं?
(क) सामान्य शब्द (ख) अर्ध पारिभाषिक शब्द (ग) पारिभाषिक शब्द (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) पारिभाषिक शब्द

TOUCH 'n PASS

UNIT-VIII

अनुवाद सैद्धांतिकी-दो

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. सादृश्यता साहित्यिक अनुवाद के प्रभाव को कैसे प्रभावित करती है?

उत्तर सादृश्यता साहित्यिक अनुवाद के प्रभाव को द्विगुणित करती है।

प्र.2. अनुवाद वस्तुतः सांस्कृतिक रूपान्तरण की प्रक्रिया कैसी होती है?

उत्तर अनुवाद वस्तुतः सांस्कृतिक रूपान्तरण की प्रक्रिया में वह कृति अपनी समूची सांस्कृतिकता के साथ लक्ष्य भाषा की संस्कृति में घुल-मिल जाती है और उसमें अपनी गहरी छाप छोड़ती है। कृति में व्यक्त संवेदना, चरित्रों के संघर्ष, व्यक्त विचार और मानवीय प्रश्न कई बार लक्ष्य भाषा के लिए संजीवनी का कार्य करते हैं।

प्र.3. लक्ष्य भाषा में कौन-सा प्रचलित मुहावरा देना चाहिए?

उत्तर लक्ष्य भाषा में प्रचलित समान्तर मुहावरा देना चाहिए।

प्र.4. साहित्य के अनुवाद के स्वरूप का द्वितीय चरण कौन-सा है?

उत्तर साहित्य के अनुवाद के स्वरूप का द्वितीय चरण भाषान्तरण (लक्ष्य भाषा में अन्तरण) का है।

प्र.5. साहित्य के अनुवाद की कसौटी से क्या तात्पर्य है?

उत्तर साहित्य के अनुवाद की कसौटी का तात्पर्य है कि उसमें मूल पाठ के भाषिक अर्थ-स्तरों सहित उसके भाव, विचार तथा उसमें विन्यस्त संवेदनात्मकता उसी तीव्रता के साथ उपस्थित हो।

प्र.6. कविता का अनुवाद करने वाले अनुवाद को किन बारीकियों का ज्ञान होना चाहिए?

उत्तर कविता का अनुवाद करने वाले अनुवादक को न केवल कविता की बारीकियों की गहरी समझ होनी चाहिए बल्कि उसकी संवेदनात्मकता का भी बोध होना चाहिए।

प्र.7. अनुवाद की सृजनात्मकता के लिए क्या आवश्यक (अनिवार्य) है?

उत्तर अनुवाद की सृजनात्मकता के लिए आवश्यक है कि मूल कृति को उसके समग्र सांस्कृतिक आयामों में समझा जाए और उसे अपने देशकाल के अनुरूप बरता जाए। यह अनुवाद की सृजनात्मकता के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है।

प्र.8. लोकोक्ति या कहावतों का क्या अभिप्राय है?

उत्तर लोकोक्ति या कहावतों का अभिप्राय उस मित कथन से है जो संक्षेप में त्वरित ढंग से किसी व्यावहारिक सत्य को व्यक्त करता है।

प्र.9. साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की कौन-सी समस्याएँ हैं?

उत्तर साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की निम्न समस्याएँ हैं—कविता का अनुवाद, नाटक का अनुवाद, कहानी का अनुवाद, उपन्यास का अनुवाद, निबन्ध का अनुवाद, आलोचना का अनुवाद आदि।

प्र.10. किसी आदर्श नाट्यानुवाद की आवश्यक शर्त क्या है?

उत्तर किसी आदर्श नाट्यानुवाद की एक आवश्यक शर्त यह है कि वह किसी नाट्स-निर्देशक की देख-रेख में किया जाए।

TOUCH 'n' PASS

प्र.11. अनुवादक को सृजनात्मक बनाने के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंतिम तत्त्व क्या होता है?

उत्तर अनुवाद को सृजनात्मक बनाने के लिए जिस अंतिम तत्त्व पर ध्यान देना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, वह है लय का अनुवाद। यह तत्त्व किसी भी अनुवाद की प्रामाणिकता की कसौटी है।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. साहित्यिक अनुवाद और रूपान्तर में क्या अन्तर है?

उत्तर

साहित्यिक अनुवाद और रूपान्तर में अन्तर

साहित्य के अनुवाद और रूपान्तर में पर्याप्त अन्तर है। अनुवाद के मुकाबले रूपान्तर में छूट लेने का अवकाश अधिक होता है। अनुवाद के सामान्य नियम और उसकी तकनीक रूपान्तर पर लागू नहीं होते। रूपान्तर में मुख्य बल कृति की संवेदना पर होता है, इसलिए चरित्रों के नाम तक बदल दिए जा सकते हैं, स्थान और परिस्थितियों के संदर्भ भी। रूपान्तर में विधाओं का रूप परिवर्तन भी आता है; जैसे—कहानी का, कविता या उपन्यास का नाटक में रूपान्तर। रूपान्तर को अनुवाद कहने का जोखिम नहीं लिया जा सकता, क्योंकि यह अपने आप में एक स्वतन्त्र विधा की तरह बर्ताव करता है और अनुवाद के नियमों से अलग भी रहता है। अनुवाद के मुकाबले अधिक सहज और संप्रेष्य होने के कारण इधर उसकी लोकप्रिय काफी बढ़ी है। आकाशवाणी में कहानी या उपन्यास का रेडियो नाट्य रूपान्तरण और इसी तरह अन्य विधाओं का मंचों पर नाट्य रूपान्तरण का चलन अधिक बढ़ा है। इस पर अनुवाद के नियम लागू नहीं होते, इसलिए अनुवाद की सफलता-विफलता के तहत इसे परखा भी नहीं जाता।

प्र.2. काव्यानुवाद की क्या समस्याएँ हैं?

उत्तर

काव्यानुवाद की समस्याएँ

काव्यानुवाद की मुख्य समस्याएँ निम्नांकित हैं—

1. स्रोत भाषा के सभी शब्दों के लिए लक्ष्य भाषा में प्राप्त शब्द आंतरिक, बाह्य तथा प्रभाव की दृष्टि से सर्वदा समान नहीं होते।
2. अंलकारों का अनुवाद काफी कठिन है और कभी-कभी तो असंभव-सा हो जाता है।
3. काव्यानुसार में छंदों की स्थिति भी अलंकारों से कम जटिल नहीं है।
4. काव्यानुवादक कवि होता है, और वह अपने व्यक्तित्व को मूल रचना और अनुवाद के बीच में लाने से अपने को रोक नहीं पाता-अनुवाद योग्य।
5. काव्य की अर्थ-रचना और अभिव्यंजना की जटिलताएँ प्राय: अनूद्य नहीं होती, या बहुत कम ही होती हैं।
6. विशिष्ट कविता का अनुवाद विशिष्ट व्यक्तिनिष्ठ होता है।
7. तत्त्वत: एक भाषा की काव्य-रचना अर्थत:, अभिव्यक्तित: और प्रभावत: केवल उसी भाषा में हो सकती है, किसी अन्य में नहीं।

प्र.3. साहित्य की सादृश्यमूलकता में अनुवाद का क्या महत्त्व है?

उत्तर

साहित्य की सादृश्यमूलकता में अनुवाद का महत्त्व

साहित्य के अनुवाद में सादृश्यमूलकता का अनुवाद बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिये कि 'सादृश्य' साहित्य के अनुवाद का आधार तत्त्व है। यदि यह न हो तो अनुवाद किसी भी तरह से सम्भव नहीं है। प्रत्येक भाषा में चीजों के नाम तथा उनके गुण अलग तरह से दर्शाये जा सकते हैं, पर वे अपनी मूल प्रकृति में एक ही जैसे होते हैं। ऐसे में अनुवादक को उपयुक्त उपमानों की खोज कर सादृश्यमूलक शब्दों का अनुवाद करना पड़ता है। उदाहरण के लिए—

'As Changeable as berry' को लें। इसका हिंदी सादृश्य होगा 'बेर जैसा भूरा'। इसी तरह 'As Changeable as the moon' को हिन्दी में 'चाँद जैसा परिवर्तनशील' तथा 'As Changeable as the weather' को मौसम की तरह बदलने वाला कहेंगे। सादृश्यमूलकता निश्चित रूप से उपमानों में ही अधिक आते हैं, इसलिए इनके अनुवाद में सादृश्यता की खोज जरूरी है। यदि सादृश्यता सम्भव न हो, तो बेहतर यही है कि उनका शाब्दिक अनुवाद किया जाए, अटपटे सादृश्य को छोड़ दिया जाए। इसका एक उदाहरण लें—

TOUCH 'n PASS

'Heaven walks on earth' का सादृश्य होगा स्वर्ग पृथ्वी पर टहल रहा है, पर इसमें असंगति दिख रही है। इसको अगर कहें कि 'स्वर्ग पृथ्वी पर उतर आया है' तो सही सादृश्य बन पायेगा।

सादृश्यता साहित्यिक अनुवाद के प्रभाव को द्विगुणित करती है, इसलिए अनुवादक को इसकी संगति का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

प्र.4. क्या अनुवाद वस्तुतः सांस्कृतिक रूपान्तरण है?

उत्तर

अनुवाद वस्तुतः सांस्कृतिक रूपान्तरण

सही मायनों में अनुवाद सांस्कृतिक रूपान्तरण है। यह एक भाषाई संस्कृति का दूसरी भाषाई संस्कृति में गमन है। अनुवाद के माध्यम से एक भाषा की कृति दूसरी भाषा में पहुँचती है। इस प्रक्रिया में वह कृति अपनी समूची सांस्कृतिकता के साथ लक्ष्य भाषा की संस्कृति में घुल-मिल जाती है और उसमें अपनी गहरी छाप छोड़ती है। कृति में व्यक्त संवेदना, चरित्रों के संघर्ष, व्यक्त विचार और मानवीय प्रश्न कई बार लक्ष्य भाषा के लिए संजीवनी का काम करते हैं। भारत में अफ्रीकी कथाकार चिनुआ अचेबे, रूसी कथाकार चेखव तथा गोर्की सहित लैटिन अमेरिकी कथाकार बोर्खेस की कहानियों ने बहुत असर डाला है और हिन्दी जनता ने इनसे जीवन तथा संघर्ष की प्रेरणाएँ प्राप्त की हैं। इसी तरह भारत की 'गीता', 'महाभारत' तथा 'रामायण' ने पश्चिमी समाज को बहुत प्रभावित किया है। यह प्रक्रिया सांस्कृतिक आवागमन की ही है जिसे अच्छा साहित्यिक अनुवाद सम्भव करता है। अनुवाद के माध्यम से दो भाषाई समाजों का एक-दूसरे में सांस्कृतिक विलय होता है, वे एक-दूसरे को ठीक से समझते हैं। मानवता को अनुभूति के स्तर पर बाँधने में अनुवाद सबसे सफल माध्यम है। अनुवादक यदि अनुवाद की इस सबसे बड़ी भूमिका को नजरंदाज करता है तो उसका अनुवाद अपने मूल कर्म से भटका हुआ ही माना जायेगा। इसका कारण स्पष्ट है; साहित्यिक कृति का अनुवाद हम उस भाषाई समाज की संस्कृति और वहाँ के लोगों की आकांक्षाओं को समझने के लिए ही करते हैं, वहाँ के चिन्तन और कल्पना, संघर्ष और स्वप्न सब को देखने के लिए ही करते हैं; इसलिए यदि हम इन्हीं की उपेक्षा करेंगे तो अनुवाद के दायित्व का निर्वाह कैसे होगा।

प्र.5. अनुवाद के सन्दर्भ में मुहावरे और कहावतों के नियमों पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

मुहावरे और कहावतों के नियम

मुहावरे और कहावतें प्रत्येक भाषा के अपने अभिन्न अंग होते हैं, जिनका अनुवाद प्राय: नहीं हो सकता। उर्दू भाषा के 'साहबे कलाम' इस तथ्य पर अत्यधिक बल देते हुए मुहावरे के अनुवाद या रूपांतरण के प्रयास को सर्वथा अनर्गल मानते हैं। उर्दू के प्रसिद्ध शायर फिराक गोरखपुरी ने मैथिलीशरण गुप्त के 'कटि टूट गई' जैसे प्रयोगों का उपहास करते हुए लिखा है कि सही मुहावरा "कमर टूटना है।" "कमर" का कोई भी पर्याय इसमें नहीं बैठ सकता। इसमें संदेह नहीं कि यह तर्क काफी हद तक संगत है, फिर भी मुहावरों के अनुवाद जाने अनजाने होते रहते हैं। पंत जैसे भाषा मर्मज्ञ कवि ने और छायावाद के अन्य कवियों ने भी अंग्रेजी के अनेक मुहावरों के अत्यंत सार्थक अनुवाद किए हैं जो हिन्दी में प्रचलित हो गए हैं। "कर्षक का उद्धार पुण्य इच्छा है केवल" : (पंत) यहाँ 'पुण्य' इच्छा पायस विश (piouswish) का ही शाब्दिक अनुवाद है जिसकी संगति भाषा की प्रकृति के साथ सहज ही बैठ जाती है। Golden age स्वर्ण युग; Bright future उज्जवल भविष्य, Golden past स्वर्णिम अतीत- आदि इसी प्रकार के मुहावरे हैं जिनके शब्दानुवाद हिन्दी के अंग बन गए हैं। किन्तु ऐसे उदाहरण प्राय: कम ही मिलते हैं और समर्थ लेखकों के आर्ष प्रयोग होने के कारण ही प्रचलित हो गए हैं। नियमत: मुहावरे का शब्दानुवाद न देकर लक्ष्य भाषा में प्रचलित समानान्तर मुहावरा ही देना चाहिए। अंग्रेजी का एक सामान्य प्रयोग है- अप्सेट (upset) जो लक्षण के आश्रित होने के कारण अनेकार्थक मुहावरों का रूप धारण कर लेता है। I am upset का अनुवाद होगा— मैं परेशान हूँ और My programme is upset का अनुवाद होगा मेरा कार्यक्रम अस्तव्यस्त या गड़बड़ हो गया है। To feel at home, to feel out to sorts, To sail in troubled waters जैसे अंग्रेजी मुहावरों के वाच्यार्थ ही देना अधिक संगत होता है। टू फील ऐट होम का सीधा अनुवाद होगा सहजता का अनुभव करना या किसी प्रकार की कठिनाई अनुभव न करना। इसी प्रकार 'टू फील आउट ऑफ सार्टस्' का सीधा अनुवाद है 'तबियत अच्छी न होना' या 'तबियत नासाज होना' और टु सेल इन ट्रबल्ड वाटर्स का भाषांतर होगा विषम 'परिस्थितियों में कार्य करना'। अंग्रेजी के कई एक मुहावरों के समानान्तर मुहावरे हिन्दी If भी प्रचलित हैं । To put the cart before the horse के वजन का आम बोलचाल में मुहावरा है 'ब्याह पीछे सगाई'। लेकिन इस प्रकार के मुहावरे की संगति शिष्ट भाषा के साथ नहीं बैठ सकती, जबकि अंग्रेजी के मुहावरे के विषय में इस प्रकार की कोई बाधा नहीं है।

कहावत के अनुवाद के विषय में भी यही नियम है। उसका शाब्दिक अनुवाद प्राय: ठीक नहीं रहता। कहावत का भी समानान्तर हिन्दी रूप ही दिया जा सकता है। लेकिन यहाँ भी भाषिक स्तर का ध्यान रखना आवश्यक है । उदाहरण के लिए, A bad worksman quarrels with his tools. की समानान्तर कहावत है "नाच न जाने आँगन टेढ़ा" लेकिन यह प्रयोग भी शिष्ट भाषा के उपयुक्त नहीं है। अत: उक्त कहावत का अर्थ देना ही संगत होगा "अनाड़ी आदमी अपना दोष दूसरे के मत्थे मढ़ देता है।" यहाँ हिन्दी की समानार्थक कहावत की बजाय शब्दानुवाद दे देना भी बुरा नहीं होगा— अनाड़ी कारीगर अपने औजारों को दोष देने लगता है।

कहने का अभिप्राय यह है कि मुहावरों और कहावतों का अनुवाद करने के सामान्यत: तीन नियम हैं—

1. सही अर्थ का संप्रेषण करने वाले समानांतर मुहावरे या कहावत का प्रयोग किया जा सकता है। किन्तु यदि समानांतर मुहावरा या कहावत शिष्ट भाषा में प्रयोग करने योग्य नहीं है तो उसके स्थान पर ऐसी व्याख्यात्मक शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए जो मूल के सर्वाधिक निकट हो।
2. समानांतर मुहावरा या कहावत न मिलने पर हिन्दी की प्रकृति के अनुसार उसकी व्याख्या प्रस्तुत करना ही उपयुक्त होता है।
3. यदि अंग्रेजी के मुहावरों का हिन्दी में शब्दानुवाद प्रचलित हो गया है, तो उसका मुक्त भाव से प्रयोग किया जा सकता है।

प्र.6. राष्ट्रीय सामाजिक विकास के सन्दर्भ में भारतीय समाज की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर

राष्ट्रीय सामाजिक विकास के सन्दर्भ में भारतीय समाज की आवश्यकताएँ और अपेक्षाएँ

राष्ट्रीय-सामाजिक विकास के संदर्भ में आज हमारे पास दो विकल्प हैं— या तो हम अनुवाद के माध्यम से दुनिया भर से अपने आप को लगातार जोड़े रखें, अपनी भाषाओं को अनुवाद के द्वारा समृद्ध बनाते हुए इन भाषाओं के माध्यम से राष्ट्रीय-सामाजिक विकास को गति एवं विस्तार प्रदान करें या फिर विदेशी भाषा को ही अपना लें। लेकिन कोई भी विदेशी भाषा हमारा साथ एक सीमा तक ही दे सकती है। जनसामान्य को मूल धारा में लाने और उनकी मौलिकता का विकास करने की क्षमता उसकी अपनी भाषा/भाषाओं में ही होती है। ऐसी स्थिति में यदि हम भारतीय भाषाओं को ज्ञान-विज्ञान की अद्यतन स्थितियों से अनुवाद के माध्यम से जोड़ लेते हैं और यह जुड़ाव कायम रखते हैं तो राष्ट्रीय-सांस्कृतिक विकास की अपनी निजी पहचान बना सकते हैं। हर विषय से सम्बन्धित नई-पुरानी जानकारी इन भाषाओं में उपलब्ध हो जाने पर ज्यादा तादात में लोग उस जानकारी का उपयोग कर सकते हैं।

आज कम्प्यूटर की सुविधा देश में उपलब्ध है और इसके अधिकाधिक उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। यदि हम चाहते हैं कि इसका प्रसार जन-जन तक हो सके तो कम्प्यूटर के लिए हमें भारतीय भाषाओं के साफ्टवेयर विकसित करने होंगे। भारतीय भाषाओं के बीच स्वत:चालित अनुवाद की व्यवस्था करनी होगी। साथ ही भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवाद की व्यवस्था करनी होगी। एक बार यदि यह कार्य सही ढंग से हो जाए तो भारतीय भाषाओं को सूचना विस्फोट के जमाने में पिछड़ जाने के खतरे से बचाया जा सकेगा और भारतीय जन को दुनिया के साथ कदम मिला के चलने का सुलभ मार्ग मिल सकेगा, साथ ही भारत की अपनी सांस्कृतिक पहचान बन सकेगी। कुछ समय पूर्व भारत में व्यापारिक दौरे पर आए कम्प्यूटर विशेषज्ञ बिल गेट्स ने भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर के विकास के महत्त्व और आवश्यकता को रेखांकित किया है यद्यपि भारतीय लोग स्वतंत्र मानसिकता के अभाव में इस दिशा में अब भी जागरूक नहीं हैं। हमें यह जागरूकता पैदा करनी होगी।

आज भी कई भाषाओं में इसका अनुवाद हो रहा है लेकिन उस तादाद में नहीं जिसमें कि अपेक्षित है। साहित्यिक कृतियों के अनुवाद बहुत कुछ अंत: प्रेरणा पर आश्रित होते हैं अत: इस दिशा में विभिन्न भाषाओं से और उनमें अनुवाद खूब हो रहे हैं। लेकिन इस स्थिति में एकरूपता नहीं है। विभिन्न भारतीय भाषाएँ परस्पर अनुवाद के माध्यम से संवाद की दिशा में ज्यादा सक्रिय नहीं है। उनसे अंग्रेजी या हिन्दी में अनुवाद अपेक्षाकृत अधिक होते हैं जबकि होना यह चाहिए कि तमिल, बंगला, पंजाबी या मराठी आपस में अनुवाद के माध्यम से जुड़ें। लेकिन बृहत्तर स्तर पर यह कार्य अभी बाकी है।

प्रयोजनमूलक क्षेत्रों में अनुवाद की प्रक्रिया काफी सीमित है। प्रशासनिक कार्यों के लिए तो अनुवाद का पर्याप्त प्रचलन है लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में व्यावहारिक कार्य-कलाप में भारतीय भाषाएँ बहुत आगे नहीं बढ़ पा रही हैं क्योंकि पर्याप्त अनुवाद करके अपने को समृद्ध बनाने की बजाए वे अनुवाद का आश्रय ग्रहण किए हैं। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में इन भाषाओं में पाठ्य सामग्री का अनुवाद ही अधिक होता है । फलत: विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों की सामग्री सीधे अनूदित होकर नहीं आ पाती। अनुवाद न होने के कारण उनमें विभिन्न विषयों के मौलिक लेखन को भी बढ़ावा नहीं मिल पाता। इस दिशा में बहुत अधिक सक्रियता अपेक्षित है।

TOUCH 'n PASS

प्र.7. नीचे दिये गये अंग्रेजी पाठ का नियमों सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

अंग्रेजी पाठ

Cultural anthropology, on the other hand, has a far wider breadth of interest than related fileds in the social sciences and humanities, each of which takes up some one segment of human activity. The cultural anthropologist generally studies peoples who are outside the stream of European cultural history and attempts, as far as he can, to investigate a given body of custom as a whole, or, if he concentrates on any one aspect of a culture, he takes a primary objective, the analysis of the interrelation of that aspect with the other phases of the life of the people. He analyses these aspects not only as to which is to be distinguished from the others, but as all form a functioning, system that adapts the people to their setting. In this, the anthropologist differs from the economist, the political scientist, the sociologist. the student of comparative religions or of art or literature.

उत्तर

अनुदित पाठ

दूसरी ओर सांस्कृतिक मानवशास्त्र का अन्य संबंधित सामाजिक विज्ञानों और मानव विज्ञानों की तुलना में अभिरुचि का विस्तार कहीं अधिक है, जिनमें से प्रत्येक किसी एक विभाग से सम्बन्धित मानवक्रिया का अध्ययन करता है। सांस्कृतिक मानवशास्त्री सामान्यत: उन जनसमूहों का अध्ययन करता है जो कि यूरोपीय सांस्कृतिक इतिहास की धारा से बाहर है, और वह यथासम्भव किसी विशेष रीति-रिवाज का समग्र रूप में अध्ययन करने का प्रयत्न करता है या, यदि वह संस्कृति के किसी एक पहलू पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है तो उसका प्रमुख लक्ष्य उस पहलू के अन्त: सम्बन्धों का विश्लेषण होता है जो कि लोगों के जीवन के अन्य पहलुओं से वह इन पहलुओं का विश्लेषण केवल इसलिए नहीं करता कि उसे औरों से पृथक दिखाया जाये, बल्कि चूँकि वह सब मिलकर एक कृत्यात्मक पद्धति बनाती है, जो जनता को अपने वातावरण के अनुकूल बनाती है। इसमें मानवशास्त्री, अर्थशास्त्री, राजनीति-शास्त्री, समाजशास्त्री एवं कला तुलनात्मक धर्म या कला या साहित्य के विद्यार्थी से पृथक हैं।

पुनरीक्षित पाठ

दूसरी ओर सांस्कृतिक नृविज्ञान का विषय क्षेत्र सामाजिक विज्ञानों तथा मानविकी के अन्य सम्बन्धित विषयों से अपेक्षाकृत कहीं विस्तृत होता हैं जिनमें मानवीय प्रक्रिया के किसी एक खण्ड का अध्ययन किया जाता है। सांस्कृतिक नृविज्ञानी प्राय: यूरोपीय सांस्कृतिक इतिहास की धारा के बाहर मानव समुदायों का अध्ययन करता है। उसका प्रयास होता है कि वह किसी विशिष्ट रीति-रिवाज के समग्र रूप का अध्ययन करे अथवा यदि वह संस्कृति के किसी एक पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करता है तो उसका मुख्य उद्देश्य जन-जीवन के अन्य पहलुओं के साथ उसी पहलू के अंत: सम्बन्धों का विश्लेषण करना है। वह इन पक्षों का विश्लेषण केवल इसलिए नहीं करता कि प्रत्येक को एक दूसरे से पृथक रूप में पहचाना जा सके। वरन् उन सब से मिलकर एक ऐसी प्रकार्यात्मक प्रणाली निर्मित होती है जो लोगों को अपनी परिस्थितियों के अनुकूल ढाल लेती है। इस सम्बन्ध में नृविज्ञानी का मत अर्थशास्त्री, राजनीतिशास्त्री, समाजशास्त्री तथा तुलनात्मक धर्म, कला या साहित्य के अध्येता विद्वान से भिन्न होता है। उपर्युक्त अनूदित और पुनरीक्षित पाठों में हम देखते हैं कि anthropology और functioning system के लिए क्रमश: "मानवशास्त्र" और "कृत्यात्मक पद्धति" के स्थान पर "नृविज्ञान और प्रकार्यात्मक प्रणाली" शब्द प्रयुक्त किये गये हैं। ये मानक शब्द माने गये हैं। यहाँ setting के लिए "वातावरण" के स्थान पर "परिवेश" का प्रयोग सटीक रहेगा। भाषा में विभिन्न संरचनागत संशोधन भी किए गए हैं। पुनरीक्षित पाठ में वाक्यों का संयोजन हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल है और अधिक बोधगम्य है।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. साहित्य के अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

साहित्य के अनुवाद का स्वरूप

साहित्य के अनुवाद के स्वरूप को समझने के क्रम में जब हम आगे बढ़ते हैं तो पाते हैं कि इसकी बहुस्तरीयता का पहला चरण मूल पाठ को पढ़ना है। इसके तहत अनुवाद के लिए मूल पाठ को मनोयोग से पढ़ना होता है। इस पाठ में हमें उसके भाषिक अर्थ को देखने-समझने के साथ उसमें निहित विचारों और भावों को भी समझना होता है। साहित्य के अनुवाद की यह बड़ी कसौटी है

कि उसमें मूल पाठ के भाषिक अर्थ-स्तरों सहित उसके भाव, विचार तथा उसमें विन्यस्त संवेदनात्मकता उसी तीव्रता के साथ मौजूद हो। इसके लिए यह आवश्यक है कि साहित्य के अनुवादक को या तो उस विधा विशेष का पर्याप्त ज्ञान (यानी वह लेखक हो) या अनुवाद के पूर्व उसने उस कृति को यथासम्भव समग्रता में समझने की चेष्टा की हो। साहित्य के अनुवाद में पाठ-पठन के बाद (मूल) पाठ-विश्लेषण का दूसरा चरण आता है। इसके अनेक आयाम होते हैं। वाक्य का अनुवाद, उपवाक्य, पदबन्ध, शब्द आदि के अनुवाद के अनेक चरण इस पाठ-विश्लेषण के तहत आते हैं। इसी में छंद आते हैं तो प्रतीक और अलंकार आदि भी। इस पाठ-विश्लेषण से ही अनुवादक लक्ष्य भाषा में अनुवाद की पूरी प्रक्रिया को अंतिम रूप देने के उद्देश्य से काम करता है। उसे यह अपने विवेक से देखना होता है कि स्रोत-भाषा के पाठ को किस तरह लक्ष्य-भाषा में अनूदित करे कि वह उसकी अपनी भाषा का पाठ बन जाए।

साहित्य के अनुवाद के स्वरूप का द्वितीय चरण भाषान्तरण (लक्ष्य भाषा में अन्तरण) का है। यह वह प्रक्रिया है जिसमें अनुवादक को देखना होता है कि वह जो भाषान्तरण कर रहा है, उसमें मूल पाठ के सत्व की रक्षा करते हुए उसके संरचनात्मक स्वरूप को क्षति न पहुँचे। कहने का तात्पर्य यह कि मूल पाठ के समूचे विन्यास के संवेद्य स्थलों की पहचान करते हुए अनुवादक को लक्ष्य भाषा में उसके समग्र संवेदनात्मक प्रभावों को रखने की आवश्यकता होती है।

इस प्रक्रिया का तृतीय चरण प्रतिस्थापन (substitution) के अर्थ से सम्बन्धित है। इसमें मूल पाठ से अनूदित सामग्री का लक्ष्य भाषा में समायोजन करके देखा जाता है। लक्ष्य-भाषा के प्रवाह और उसकी आंतरिकता से मेल को महत्त्व देते हुए अनुवादक को मूल पाठ की वाक्य संरचना, पदबन्ध, मुहावरा, शब्द-संगति तथा उसके गठन तक को बदलना पड़ सकता है यदि लक्ष्य भाषा की संरचना के भीतर उसे रखकर देखना हो। कई बार मूल-पाठ के अतिरिक्त वाक्य या शब्दों को भी लक्ष्य भाषा में निकालना पड़ता है। अधिक से अधिक इस बात का ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि मूल पाठ का समग्र भाव लक्ष्य भाषा में आ सके। अगर अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करना हो तो अंग्रेजी और हिन्दी की भाषिक प्रकृति को ध्यान में रखना होगा। प्रतिस्थापन के माध्यम से दो भिन्न भाषाओं के आपसी सहकार और उसके अनुवाद को बहुत व्यवस्थित तथा प्रभावी ढंग से सम्भव किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर अगर यह वाक्य हो कि— 'जयप्रकाश वाज अ गुड लीडर' तो इसका भाषान्तर होगा— 'जयप्रकाश अच्छे नेता थे।' 'अ' यानी 'एक' का प्रयोग हिन्दी में अनावश्यक है। लेकिन अगर इसी का अनुवाद हमें अंग्रेजी में करना हो तो 'अ' जोड़ना आवश्यक होगा।

अनुवाद के साहित्यिक रूप का चतुर्थ चरण मूल पाठ का अनूदित पाठ से तुलनात्मक विश्लेषण का है। अनुवादक इस माध्यम से यह परीक्षण करने का यत्न करता है कि मूल पाठ से किये गए भाषान्तर का समग्र भाव मूल जैसा आ पाया है कि नहीं। इस क्रम में उसे मूल अर्थ, अर्थ की संदर्भानुकूल स्थिति, विचार, ध्वन्यार्थ भाव सहित अपने देशकाल के अनुकूल उसकी प्रभावान्वित का परीक्षण करना होता है और उसके अनुरूप उद्यम भी। मूल पाठ अगर काव्य है या नाटक है, तो उसके अनुरूप छंदों का प्रयोग भी आवश्यक है ताकि केवल उसका प्रभाव ही नहीं, भाषिक स्तर पर उसका रस-ग्रहण भी पाठक कर सके। इस यत्न से मूल पाठ को अनुवाद के अधिकाधिक निकट लाने का प्रयत्न किया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में यह ध्यान में रखने वाली बात है कि मूल पाठ का भाषान्तर महज़ भाषान्तर ही नहीं होता, वह एक सृजनात्मक कर्म भी होता है। यही कारण है कि साहित्यिक सृजनात्मक या रचनात्मक कार्य भी कहा जाता है। अनुवाद अपने मूल स्वरूप में उतना संश्लिष्ट न भी हो तो फर्क नहीं पड़ता, पर साहित्यिक अनुवाद के लिए यह आवश्यक है कि वह रचनात्मक हो। अपनी रचनात्मकता के कारण ही वह मूल के समान महत्त्व का अधिकारी होता है। जब तक उसमें मौलिक लेखन का आस्वाद नहीं आता, तब तक उसकी श्रेष्ठता में संदेह होता है। इस कार्य के लिए आवश्यक है कि अनुवादक अपने मन-प्राण से कृति का अनुवाद करे और अनुवाद से पूर्व उस कृति को अपनी स्मृति का हिस्सा बना ले। कृति को बिना जिए, बिना उसके समग्र प्रभाव का अध्ययन किये और बिना समकालीन जीवन के अनुकूल उसे बनाये ऐसा अनुवाद शायद ही सम्भव हो जो रचनात्मक हो और मूल रचना का आस्वाद दे सके। ऐसा होने पर अनूदित रचना कई बार मूल पाठ से बेहतर बन सकती है जिसके बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं। रचनात्मक अनुवाद तो कम से कम इतने बेहतर तो हो ही सकते हैं जो अपने देशकाल और अपनी सांस्कृतिक स्थितियों के भीतर विजातीय न लगें, यह एक बेहतर साहित्यिक अनुवाद का सबसे बड़ा प्रमाण है।

प्र.2. अनुवाद की सृजनात्मकता का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

अनुवाद की सृजनात्मकता

अनुवाद की सृजनात्मकता के कतिपय बिन्दुओं के आधार पर कुछ ऐसे तथ्यों की ओर नजर डालना अभीष्ट है जो अनुवाद को सही अर्थों में सृजनात्मक बनाते हैं। इस सन्दर्भ में यह ध्यान में रखना जरूरी है कि अनुवादक के लिए लक्ष्य भाषा के साथ-साथ स्रोत भाषा की विधा-विशेष का ज्ञान आवश्यक है जिसमें या जिसका उसे अनुवाद करना है। कविता का अनुवाद करने वाले अनुवादक को न केवल कविता की बारीकियों की गहरी समझ होनी चाहिए बल्कि उसकी संवेदनात्मकता का भी बोध होना

चाहिए। इसी तरह कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध जैसी विधाओं के विषय में भी कहा जा सकता है। जो अनुवादक सम्बद्ध विधा को भली-भाँति नहीं जानता, वह अनुवाद को सृजनात्मक नहीं बना सकता। यह भी ध्यान में रखने की बात है कि अनुवाद को सृजनात्मक बनाने के लिए मूल कृति के पाठ से अनुवादक को एकाधिक बार गुजरना पड़ता है और उस कृति को अपनी सांस्कृतिकता सहित परिवेश को बार-बार जीना पड़ता है। कृति की संवेदना को चरित्रों के माध्यम से जीते हुए अपने परिवेश और संस्कृति के अनुकूल उसे बरते बिना सृजनात्मक अनुवाद सम्भव ही नहीं है। अनुवादक के लिए यह भी चुनौती की बात होती है कि उसे मूल कृति से अनुवाद में ऐसे प्रसंगों से बचना होता है जो उसकी केन्द्रीय विषय-वस्तु के अभिग्रहण में गतिरोध उत्पन्न करते हैं। अनुवाद में उन चीजों का महत्त्व अधिक होता है जो कृति को उसकी पूरी तीव्रता के साथ संप्रेषित करती हैं। इस क्रम में अनुवादक को मूल कृति की रचना के समय रचनाकार के मानस और उसकी उस स्थिति में ले जाना होता है जिससे प्रभावित होकर रचनाकार ने उस रचना को सम्भव किया है। जब तक अनुवादक रचनाकार के उस समय को, चारित्रिक स्थितियों को और परिवेश के अनुरूप उसके समग्र मानसिक बोध को जानने और जीने का प्रयत्न नहीं करता, तब तक सृजनात्मक अनुवाद की केवल कल्पना की जा सकती है, उसका होना संदिग्ध ही होता है।

रचनाकार के तत्कालीन मानस को जानने और रचना को उसकी समूची सांस्कृतिक निर्मिति के साथ समझने के बाद ही अनुवादक को रचना की समग्रता का बोध हो पाता है। इसके बाद अनुवादक सहज ही उसकी संवेदना सहित उसके भाषिक रूपों को समझने लगता है। शब्द, वाक्य, व्यंजना, संवाद, मुहावरे और कृति की पूरी संरचना जब अपने तत्कालीन परिवेश के साथ अनुवादक के सामने खुल जाती है तो अपने समय और संदर्भ के अनुकूल उसे बरतना आसान हो जाता है। इस बात को ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है कि अनुवादक को मूल कृति की रचना के समय की स्थिति, परिवेश, संस्कृति, रुढ़ि, लोकाचार तथा उसकी पृष्ठभूमि का ज्ञान होना चाहिये। सृजनात्मक अनुवाद चूँकि एक सांस्कृतिक रूपान्तरण भी है, इसलिए इसे सबसे बड़ा कारक मानकर चलना चाहिये। उदाहरण के लिए, अगर हमें लैटिन अमेरिकी साहित्य का अनुवाद करना है तो जानना होगा कि उस साहित्य की पृष्ठभूमि क्या है, उसकी सांस्कृतिकता कैसी है, रचना में व्यक्त चरित्रों के संघर्ष का आयाम क्या है, चरित्रों की अस्मिता से जीवन का कौन-सा दर्शन अभिव्यक्त होता है तथा उसके अनुवाद से हम अपने यहाँ की किन-किन स्थितियों से साम्य बिठा सकते हैं। अगर यह सावधानी बरती जायेगी तो मूल कृति की समूची निर्मिति के साथ उसकी संवेदनात्मकता भी अनुवाद में हमारी स्थितियों के अनुकूल संप्रेषित होगी और हमें अनुवाद को पढ़ने के बाद मूल कृति का आस्वाद मिल सकेगा। इस तरह के अनुवादों की हिन्दी में एक स्वस्थ परंपरा रही है। उदाहरण के लिए, टाल्स्टाय के नाटक 'पावर ऑफ डार्कनेस' को देखा जा सकता है जिसका अनुवाद जैनेन्द्र कुमार ने 'पाप और प्रकाश' नाम से किया था। नाटक में हृदय परिवर्तन के भाव को विन्यस्त करते हुए टाल्स्टाय ने पाशविक चरित्रों को बदलते हुए दिखाया है। जैनेन्द्र कुमार ने नाटक के केन्द्रीय विषय को सुरक्षित रखते हुए चरित्र, देशकाल और संस्कृति को अपने देश के अनुकूल रखते हुए उसे मूल कृति जैसा बना दिया है। इसी तरह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और प्रेमचन्द के अनेक अनुवादों को देखा जा सकता है। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी के अनेक लेखकों ने कई विदेशी कृतियों का सृजनात्मक अनुवाद किया है जिसकी संप्रेषणीयता और प्रभावान्विति मूल कृति से तनिक भी कम नहीं है। इस क्रम में सहज ही रघुवीर सहाय द्वारा शेक्सपियर के नाटक 'मैकबेथ' के अनुवाद का ध्यान आ जाता है जिन्होंने 'बरनम वन' नाम से इसका अनुवाद किया है। इस अनुवाद में मूल कृति की केन्द्रीयता सुरक्षित है, पर उसकी पूरी निर्मिति अपनी भाव दशाओं के अनुकूल की गई है। विजातीय बोध का नाटक में आभास भी नहीं हो पाता। इसके विपरीत इसी नाटक के अनुवाद हरिवंश राय 'बच्चन', रांगेय राघव, मथुरा प्रसाद चौधरी, बी. शर्मा आदि ने भी किये हैं, पर यह सभी अनुवादक कृति को उसके भाषिक विन्यास से बाहर लाने में सफल नहीं हो पाये। आशय यह कि अनुवादक की सृजनात्मकता के लिए आवश्यक है कि मूल कृति को उसके समग्र सांस्कृतिक आयामों में समझा जाए और उसे अपने देशकाल के अनुरूप बरता जाए। यह अनुवाद की सृजनात्मकता के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है।

प्र.3. सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद का विस्तृत उल्लेख कीजिए।

उत्तर

सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद

सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद के लिए यह भी आवश्यक है कि हम उसके तकनीकी पक्षों को जानने का प्रयत्न करें। साहित्य से अनुवाद के सम्बन्ध और उसे अधिकाधिक मौलिक बनाने के कतिपय बिन्दुओं पर विचार करने के बाद यहाँ हम उसके कुछ ऐसे पहलुओं पर विचार करेंगे जिसका समाधान किये बिना सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद दूर की कौड़ी लगता है। इस दृष्टि से देखने पर सहज ही हमें अनुवाद के क्रम में आए मुहावरों, लोकोक्तियों, अलंकारों, छंदों तथा समग्रत: रचना में विन्यस्त भाषिक लय को आत्मसात् करना पड़ता है। इस प्रक्रिया से सफलतापूर्वक गुजरकर ही हम ऐसा अनुवाद करने में सफल हो सकते हैं जो मूल रचना का आस्वाद दे सकता है। कहना न होगा कि इससे अनुवाद लक्ष्य भाषा की अपनी रचनाशीलता को उपस्थित कर पाने में सफल हो सकता है। इसमें सर्वप्रथम हम मुहावरो को देखें—

1. **मुहावरा**—यह सर्वविदित है कि मुहावरा भाषा की अर्थबहुलता का सर्वोत्तम पक्ष है। यह किसी भी भाषा की व्यंजनात्मक शक्ति का उदाहरण है। मुहावरों का सम्बन्ध किसी भी भाषा की सांस्कृतिकता और उसकी सामाजिकता से होता है इसलिए वे अपने प्रयोग में अपनी संस्कृति, समाज और परिस्थिति का बोध कराते हैं। इसे 'अर्थ बहुल वाक्य', 'भाव विपुल कथन' तथा 'लक्ष्य-भेद व्यंजना' भी कहा जा सकता है। यह ध्यान में रखने वाली बात है कि मुहावरे रचना में व्यक्त कथ्य के अभिप्रेत अर्थ को बहुत कुशलता से व्यक्त करते हैं। जो अनुवादक स्रोत भाषा के मुहावरे को लक्ष्य भाषा की सांस्कृतिकता से जोड़कर उसका अर्थ नहीं कर पाता, वह रचना की शक्ति को अनुवाद में नहीं ला पाता। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी का एक मुहावरा लें— Coming events cast their shadows before होनहार विरवान के होते चीकने पात। यानी सम्भावनाशील पौधे के पत्ते चिकने होते हैं। दोनों मुहावरों का सम्बन्ध उनकी भाषाई संस्कृति और देशकाल की परिस्थितियों से है। मुहावरों के अनुवाद में यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि वे अनूदित होकर मूल पाठ में प्रयुक्त मुहावरे के अर्थ को व्यक्त करें, उसका अर्थ संकोच न करें।

   मुहावरे को अंग्रेजी में 'idiom' शब्द से अभिहित किया जाता है। हिन्दी में 'मुहावरा', अरबी के 'मुहावर' शब्द से आया है। पहले 'idiom' (इडियम) को भाषा शैली के अर्थ में समझा जाता था, पर अब उसे भाषा की विशिष्ट भंगिमा-अभिव्यक्ति, पदबन्ध या भाषिक संरचना के अर्थ में समझा जाता है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में कहा गया है— 'A Peculiarity of Phraseology approved by uses and often having a meaning other than its laxical grametical one.' अर्थात् साहित्य में ऐसी भाषा का प्रयोग 'idiom' या मुहावरा है जिसका अर्थ तर्क या व्याकरण की दृष्टि से भिन्न होता है।

   मुहावरे किसी भी भाषा का सामर्थ्य बढ़ाने की क्षमता रखते हैं। बिना मुहावरों के भाषा अपनी व्यंजना खो देती है। सृजनात्मक साहित्य में इसीलिए मुहावरों के अनुवाद पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। इसके लिए आवश्यक है— स्रोत भाषा के मुहावरों का लक्ष्य भाषा में समानार्थी या उपयुक्त पर्याय खोजना। यह भी गौरतलब है कि पाठ के अनुरूप यदि संवाद या अनुच्छेदों को केवल आशयों में ग्रहण करने की विवशता हो तो मुहावरों के शाब्दिक अर्थ से भी काम चलाया जा सकता है, पर यह अपवाद मात्र है। अधिकांश अनुवादों में खासकर, सृजनात्मकता को प्रभावी ढंग से रखने के लिए मुहावरों के अनुवाद की अनिवार्यता बढ़ जाती है। मुहावरों की शक्ति को व्यक्त करने के लिए कहा गया है— 'जो जाने मुहावरे का मर्म, वह जाने वेद का मर्म।' अंग्रेजी में 'Fragment of older wisdom' यानी प्राचीन पांडित्य के सूत्र कहकर इसकी महत्ता को निरूपित किया गया है। निष्कर्षत: यही कह सकते हैं कि सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में मुहावरों की बड़ी भूमिका है; क्योंकि सही अर्थों में वे ही उसे सांस्कृतिक रूपान्तरण बनाने में सर्वाधिक सहायक होते हैं। यह समझना बेहद जरूरी है। यहाँ हम एक अंग्रेजी मुहावरा लेते हैं— As you sow, so shall you reap. इसका समानार्थक और इससे भी अधिक व्यंजक हिन्दी मुहावरा है— 'जैसी करनी वैसी भरनी।' इससे यह भी स्पष्ट होता है कि यदि अनुवादक में कल्पनाशीलता हो तो मूल पाठ के मुहावरों से भी अधिक प्रभावी मुहावरों की खोज की जा सकती है जो लक्ष्य भाषा के देशकाल के अधिक अनुरूप हो। इसी तरह एक अन्य मुहावरा है— 'To build castles in the air' इसका समानार्थी हिन्दी मुहावरा देखिये कितना अर्थपूर्ण है— 'ख्याली पुलाव पकाना।' कहने का आशय यह है कि मुहावरे भाषा की सामर्थ्य होते हैं और सृजनात्मक साहित्य में उनकी बड़ी अर्थपूर्ण भूमिका होती है, इसलिए अनुवाद में कल्पनाशीलता और गहरी सूझ-बूझ की दरकार है। इस प्रसंग में देशी भाषाओं के उन मुहावरों को भी प्रयोग में लाया जा सकता है जो आम बोलचाल की भाषा में सहजता से प्रयुक्त होते हैं; जैसे— 'Penny wise, Pounds foolish.' देशी मुहावरे जो इसके समतुल्य और अधिक अर्थबहुल हैं, वे हैं— 'नौ की लकड़ी नब्बे खर्च'। निष्कर्षत: कह सकते हैं कि सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में मुहावरों के अनुवाद पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। लक्ष्य भाषा की प्रकृति, देशकाल, संस्कृति और सामाजिकता को ध्यान में रखते हुए कृति की मांग के अनुरूप यदि प्रयत्न किया जाता है तो सृजनात्मक बनाने में मदद मिलती है।

2. **लोकोक्ति या कहावत**—लोकोक्ति या कहावत को अंग्रेजी में Proverb' कहा जाता है। यह मुहावरों से भिन्न होती है, पर अर्थ-बहुलता और व्यंजना में यह कहावतों के निकट है। साधारणत: लोकोक्ति या कहावतों का अभिप्राय उस मित कथन से है जो संक्षेप में त्वरित ढंग से किसी व्यावहारिक सत्य को व्यक्त करता है। अंग्रेजी में 'Proverb' की परिभाषा करते हुए कहा गया है— 'A proverb is a shourt pithy saying in frequent and widespread use conveying a basic truth of a practical percept लोकोक्तियों के बारे में यह सर्वविदित धारणा है कि यह किसी भी भाषा की अभिव्यक्ति का सबसे प्रभावी माध्यम तो हैं ही, उस भाषा की संस्कृति की अमूल्य विरासत भी होती हैं। इनका सम्बन्ध जीवन के सत्यासत्य से होता है यानी यह जीवन के व्यावहारिक अनुभवों से जन्म लेती हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी

चलती जाती हैं। परम्परा से चली आती लोकोक्तियों में उस भाषा समाज की लोक परम्परा, लोककथा, रीति-रिवाज, धर्म-संस्कार और वर्तमान जीवन-व्यवहार की वास्तविकता का गहरा बोध होता है। किसी भी भाषा की समृद्धि उसकी लोकोक्तियों से आँकी जा सकती है। हिन्दी चूँकि अनेक भाषाओं और बोलियों से समृद्ध है, इसलिए इसकी लोकोक्तियों, कहावतों और मुहावरों का दूसरी किसी भी भाषा से तुलना सम्भव नहीं। यही कारण है कि किसी भी भाषा की कृति का अनुवाद, विशेषकर अंग्रेजी के माध्यम से (यूरोपीय और लैटिन अमेरिकी भाषाओं की कृतियों का) किसी भी कृति का अनुवाद हिन्दी में ज़रा से प्रयास से मौलिक-सा आस्वाद देने लगता है। अनुवादक को केवल अपनी भाषा के समग्र ढाँचे को उसके परिवेश सहित समझने की जरूरत है। अब यदि अंग्रेजी की एक लोकोक्ति को देखें तो इसे आसानी से समझ सकते हैं—'Out of the frying pan into the fire' इसका अनुवाद होगा—

'कड़ाही से निकला आग में गिरा।' पर यदि इसका समानार्थी खोजें तो हिन्दी में बहुत-सी लोकोक्तियाँ मिल जायेंगी- 'आसमान से गिरा, खजूर में अटका', 'गीदड़ से बचा तो शेर सामने', आदि। हिन्दी में लोकोक्तियों की भरमार है और यदि सावधानी से काम किया जाए तो आश्चर्यजनक काम सम्भव है।

इसी तरह बहुत-सी लोकोक्तियाँ सामने रखी जा सकती हैं जिनके प्रयोग से अनुवाद की सृजनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है। अब कुछ ऐसी लोकोक्तियों के अंग्रेजी पर्याय को देखा जा सकता है जिनका आम तौर पर अनुवाद में प्रयोग होता है। यहाँ यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि हिन्दी की लोकोक्तियों के मुकाबले अंग्रेजी लोकोक्तियों की संख्या कम है। इससे यह जाहिर हो जाता है कि अंग्रेजी में प्रचलित ज्यादातर लोकोक्तियों के पर्याय हिन्दी में मौजूद हैं। कुछ लोकोक्तियाँ तो हर भाषा में ऐसी होती ही हैं जिनका पर्याय दूसरे भाषा-समाज में आसानी से नहीं मिलता। उस स्थिति में अनुवादक को शाब्दिक अनुवाद का सहारा लेकर अपनी कल्पनाशीलता से उसे मित-कथन में बदलना पड़ता है। बहरहाल, हम यहाँ अंग्रेजी-हिन्दी लोकोक्तियों के प्रचलित पर्याय देखें—

The obvious needs no evidence. (हाथ कंगन को आरसी क्या)
Like ruler like ruled. (जैसा राजा वैसी प्रजा)
To be stunned. (मति मारी जाना)
To stab in the back. (पीठ में छुरा घोंपना)
Traitors are the worst enemies. (घर का भेदी लंका ढाये)
To turn small concessious into bigger gains. (हाथ पकड़कर पहुँचा पकड़ना)
Over powered by sense of Jealously. (कलेजे पर साँप लोटना)
Put of death. (यमपुरी पहुँचाना)
To care of fig. (जूते की नोक पर रखना)
Hearculean effort. (भगीरथ प्रयत्न)
To make marry. (रंगरलियाँ मनाना)
Achilles heel (दुःखती रग)
A pencea for all (रामबाण)
What god will no first can kill (जाको रखे सांइयाँ मार सके न कोय)
A wolf in sheep's clothing (मुँह में राम बगल में छूरी)
Do live Rome and clash with Pope (जल में रहकर मगरमच्छ से बैर।)

इसके साथ-साथ यह भी गौर करने की बात है कि भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद करने के क्रम में जो लोकोक्तियाँ आती हैं या जो मुहावरे आते हैं वे थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ एक जैसे ही होते हैं। उन्हें थोड़ी-सी सावधानी के साथ बरतने पर काम सहज हो जाता है और अनुवाद हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल हो जाता है। उदाहरण के लिए— 'अंधों में काना राजा' को लें। इसे गुजराती में 'आँधलामाँ काणो राजियो' और बांग्ला में 'अंधेरे देशे काना राजा' कहा जाता है। संस्कृत में इसे 'निरस्तपादप देशे एरण्डोपि द्रुमायते' भी कहते हैं जिसकी भोजपुरी लोकोक्ति है— 'जहाँ पेड़ ना खूँट तहाँ रेंड़ परधान' अर्थात् जिस देश में कोई पेड़-पौधा नहीं होता, वहाँ एरण्ड का पौधा ही प्रधान हो जाता है। तेलुगु में कहते हैं— चेट्टु लेनि ऊललो आमुदपु चेट्टे महा-वृक्षम्। इसी को मराठी में-ओसाड गाँवी एरंड बली कहते हैं।

कुल मिलाकर कह सकते हैं कि सृजनात्मक अनुवाद के लिए मुहावरों के साथ-साथ लोकोक्तियों के अनुवाद की गहरी समझ आवश्यक है। यह भाषा के ढाँचे में निबद्ध उसकी सांस्कृतिकता और जीवन-रस के प्राण-तत्त्व हैं जिनकी उपेक्षा करके हम सृजनात्मक अनुवाद का दावा नहीं कर सकते।

3. **विषय-वस्तु**—अनुवाद में रचना की विषय-वस्तु को समझना और उसके मर्म तक पहुँचना अनुवादक के लिए सबसे बड़ी चुनौती का काम होता है। स्थूल विषय-वस्तु जितनी सहज होती है, सूक्ष्म विषय-वस्तु उतनी ही कठिन। अनुवादक को कृति की विषय-वस्तु को अपने देशकाल और अपनी भाषा के अनुरूप ढालने का यत्न करना होता है जिसमें कृति का भाव, उसमें व्यक्त विचार तथा उसकी घटनात्मकता अपनी पूरी तीव्रता के साथ व्यक्त हो सके। यह अनुवादक की अंत: प्रज्ञा और उसकी प्रतिभा पर निर्भर है कि वह कृति के अन्तर में किस व्याकुलता से प्रवेश कर उसे अपने अन्त: से मिलाता है। उदाहरण के लिए, कालिदास के 'मेघदूतम्' वाल्मीकि की 'रामायण' या भास के 'उत्तर रामचरितम्' (जो सभी संस्कृत में हैं) का अनुवाद करना हो तो उनके भावों का हिन्दी में समंजन प्रमुख होगा, जैसा कि इनके प्राय: सभी अनुवादों में मिलता है। इसी तरह यदि शेक्सपियर के 'मैकबेथ' या 'हैमलेट' का अनुवाद करना हो, तो यदि हम अपनी सांस्कृतिकता के अनुकूल उसे ग्रहण नहीं करेंगे तो अनुवाद एक शाब्दिक क्रीड़ा से अधिक कुछ न होगा। अच्छे अनुवाद के लिए बहुधा इसीलिए रचनाओं के चरित्र, स्थान आदि के नाम भी बदले जाते हैं और ज़ोर सिर्फ कथ्य पर होता है। इस प्रक्रिया में रचना अनुवाद नहीं रूपान्तर हो जाती है। हिन्दी में अंग्रेजी से जो अच्छे अनुवाद हुए हैं, वे सब इसी कोटि में आते हैं।
4. **कृति की शैली**—यह सामान्य रूप से समझ में आने वाली बात है कि भाव को रूपांतरित करना या उसे अनूदित कृति में विन्यस्त करना तो कठिन नहीं है, पर उसकी शैली को लक्ष्य-भाषा में अनूदित करना निश्चय ही बहुत मुश्किल काम है। इसके लिए मूल कृति की भाषा में निबद्ध बिम्बों, प्रतीकों तथा शब्द-शक्तियों के अभिकल्पों को समझकर उसका पर्याय बनाना बेहद कठिन काम है। अनुवादक को भाषा और शैली की बारीकियों को ध्यान में रखकर ही आगे बढ़ना पड़ेगा और कृति के अनुकूल उद्यम भी करना होगा, तब वह सृजनात्मक अनुवाद कर पायेगा। मुहावरों और लोकोक्तियों के साथ-साथ रचना की समग्र शैली को आत्मसात् किये बिना यह संभव नहीं है। स्रोत और लक्ष्य-भाषा की आंतरिक प्रकृति को जानना सृजनात्मक अनुवाद के लिए सबसे अधिक जरूरी है। अब इसे अंग्रेजी और हिन्दी के उदाहरणों में देखें— 'This letter lackd warms' का शाब्दिक अर्थ हुआ— इस पत्र में गर्मी का अभाव है। 'Warms' अंग्रेजी में स्नेह का पर्याय है। इसलिए यहाँ हम 'गर्मी' लिखेंगे तो मूर्खता होगी। हमें लिखना होगा— 'इस पत्र में स्नेह का अभाव है।' इस तरह भाषिक प्रकृति को ध्यान में रखते हुए बिम्बों और प्रतीकों को भी समझना होगा और बरतना भी। बिम्बों को उनकी प्रकृति के अनुरूप और प्रतीकों को स्थितियों और रचना में विन्यस्त वस्तु के संदर्भ के अनुकूल रूपान्तर करने से अनुवाद का कार्य अधिक भावानुकूल होता है।

इसी तरह कृति में प्रयुक्त अलंकारों के अनुवाद में सावधानी बरतनी होती है। अर्थालंकार तो सहजता से अनूदित हो जाता है, पर शब्दालंकार, जिसका सांस्कृतिक संदर्भ-भिन्न होता है; अधिक कल्पनाशील समझ की माँग करता है। अनुवादक को सृजनात्मक बनाने के लिए जिस अंतिम तत्त्व पर ध्यान देना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, वह है— **लय का अनुवाद**। देखने से यह तत्व कोई खास महत्त्व नहीं रखता। सदैव इसकी उपेक्षा भी होती है, पर गौर करें तो समझ में आयेगा कि यह तत्त्व किसी भी अनुवाद की प्रामाणिकता की कसौटी है। प्रश्न यह उठता है कि आखिर यह है क्या? उत्तर है- मूल पाठ की समग्र लय, उसकी संगति, उसकी समन्विति को ही मूल कृति की लय की संज्ञा दी जाती है। उदाहरण के तौर पर किसी भी पुस्तक को सामने रख कर देखा जा सकता है; जैसे— 'कामायनी' या 'गोदान' या 'वेस्टलैण्ड'। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' अपनी समग्र निर्मिति में जिन छंदों, बिम्बों, विचारों में विन्यस्त है और वह जो कहना चाहती है; उसकी समग्रता को पकड़ना और उसे अनूदित करना 'कामायनी' की लय का अनुवाद करना है। इसी तरह प्रेमचंद के 'गोदान' या टी.एस. इलियट के 'वेस्टलैण्ड' के बारे में कहा जा सकता है। यह स्वाभाविक है कि किसी भी कृति में व्यक्त 'करुण रस' को 'वीर रस' में रूपांतरित नहीं किया जा सकता। कृति के समग्र विन्यास को समझना और उसे अनूदित करना ही लय का अनुवाद है। शब्द-सम्बन्ध से लेकर कृति की पूरी संरचना के भीतर गूंजती ध्वनि एक लय में निबद्ध होती है जिसको पकड़े बिना सृजनात्मक अनुवाद सम्भव नहीं है।

अंतत: अनुवाद की सिद्धि इसी में है कि वह मूल जैसा प्रतीत हो। इसका मतलब यह नहीं है कि वह दोयम दर्जे का कोई काम हुआ। सृजनात्मक अनुवाद मूल की पुनर्रचना है जिसके बारे में कहा जाता है— To create the original. मूल की पुनर्सृष्टि ही अनुवाद का आदर्श है; क्योंकि वह रचना की व्याप्ति को बढ़ाता है, दूसरे देश, काल, संस्कृति और प्रश्नों के बीच सामयिक हो उठने वाला सृजनात्मक अनुवाद कमतर कैसे हो सकता है, होगा तो मूल कृति के समानांतर ही होगा। एन्द्रे लेफेवेयर इसे ही पुनर्लेखन (Rewriting) तथा सुजित मुखर्जी इसे अनुवाद के संदर्भ में 'नव लेखन' (New writing) कहते हैं।

प्र.4. साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्याओं का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर

साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्याएँ

साहित्य के अनुवाद की सबसे बड़ी कठिनाई विभिन्न विधाओं में निहित अन्तर की है। मूल रूप से सारी विधाओं की प्रकृति भिन्न होती है, इसलिए अनुवादक के लिए अलग-अलग विधाओं की कृतियों को अलग-अलग ढंग से बरतना पड़ता है। उदाहरण के लिए, एक उपन्यास का अनुवाद उसी तरह नहीं हो सकता जिस तरह एक कहानी संकलन का। ठीक इसी तरह एक निबन्ध संकलन और नाटक के अनुवाद में गुणात्मक अंतर है तो आलोचना और वैचारिक लेखन के अनुवाद में भी मूलभूत अंतर है। साहित्यिक अनुवाद के अपने प्रतिमानों के साथ इन विधाओं के अंतर को समझते हुए यदि अनुवादक सचेत हो और मनोयोग से अनुवाद कार्य में प्रवृत्त हो तो कोई मुश्किल नहीं कि वह इसमें सफल न हो सके। साहित्य के अनुवाद के मूल तत्त्वों को हम पीछे देख-समझ चुके हैं, अब एक-एक कर विभिन्न विधाओं के अनुवाद की बारीकियों को संक्षेप में जान लें—

1. **कविता का अनुवाद**—कविता के अनुवाद की सबसे बड़ी चुनौती अनुवाद में उसकी पुनर्रचना है। अगर वह पुनर्रचना नहीं हो पाती तो अपना प्रभाव छोड़ने में कदापि सफल नहीं हो सकती। कविता के अनुवाद की सृजनात्मकता ही इसमें है कि वह नया सृजन बनकर उभरे। इसके लिए आवश्यक है कि उसमें जीवन हो, उस भाषा का जीवन; जिसमें वह अनूदित हो रही है । कविता के अनुवाद के लिए अनुवादक को कविता की गहरी समझ के साथ-साथ मूल कृति की भाषिक संरचना और उसकी विषय-वस्तु की संवेदनात्मकता का पूरा ज्ञान होना चाहिए। कविता में प्रयुक्त बिम्ब, प्रतीक, अलंकार, छंद, रस और उसके समूचे संरचनागत विन्यास के साथ उसकी मूल संवेदना से गहरा तादात्म्य होना आवश्यक है। इस कार्य में कविता के सौन्दर्य को पकड़ना भी उतना ही आवश्यक है जितना उसकी आत्मा को जानना। इसका आशय यह है कि कविता को समग्र रूप से अपने अन्तर में आत्मसात् करके अनुवादक को अपनी नई सृजना की तरह अभिव्यक्त करना चाहिए। फिट्स जेराल्ड ने ठीक ही कहा है कि- 'मुझे विश्वास हो गया है कि अनुवादक को मूल रचना को अपनी रूचि के अनुसार ढालना चाहिये।' यह स्पष्ट है कि कविता का भावानुवाद ही हो सकता है, शाब्दिक अनुवाद नहीं। इस अनुवाद में भी कविता की समूची भाषिक संरचना के लिए जगह हो सकती है जिसमें कविता का नाद-सौन्दर्य भी व्यक्त हो। 'प्रतीक' पत्रिका के एक अंक में मलार्मे की कुछ कविताओं का अनुवाद कुँवर नारायण ने किया था। एक कविता 'Apparition' की कुछ पंक्तियों को देखिये—

"The moon was Saddening,
Seraphim in tears
Dreaming, bow in hand, in the calm
Of vaporous
Flowers, were drawing from dyingviolins
White sobs gliding down blue corollas it was the blessed day of your first kiss
My dreaming loving to torment me
Was drinking deep the perfume of sadness
That even without regreat and deception is left
By the gathering of a dream in the heart
Which has gathered it?

रूप छत

'तुम्हारे प्रथम चुंबन का वरद दिन था।
चाँद उदास हो रहा
सुमनों की लहकती बास के बीच
सपनों में डूबीं सजल परियाँ,
जिनकी सिसकियाँ सितार की
बंद मोड़-सी
फूलों के सम्पुट में बिछल
पड़ती थीं।

TOUCH 'n' PASS

मेरे स्वप्न-
मेरी यातना के स्रोत-
उस भीनी उदासी में बेसुध थे
जिसे सपनों की छबीली भीड़
अकारण ही उजाड़कर
हृदय में छोड़ जाती है।'

यह अनुवाद सृजनात्मक अनुवाद का एक बेहतर उदाहरण है जिसे कुँवर नारायण ने भावों के आधार पर हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल किया है।

2. **नाटक का अनुवाद**—नाटक का अनुवाद कई स्तरों पर कविता के अनुवाद से भिन्न होता है। यह वह विधा है जिसके अनुवाद में केवल स्रोत और लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि इसमें पात्र कई भाषाएँ बोल सकते हैं और उनके देशकाल की स्थितियाँ भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। अनुवादक को नाटक के मूल पाठ में प्रवेश कर पहले तो अपनी परिस्थितियों के अनुकूल उसे समझना होता है, उसके बाद पूरे कथानक, संवाद, निर्देशन आदि के साथ चरित्रों को जीते हुए अनुवाद कार्य से गुजरना होता है। नाटक आवश्यक नहीं कि समकालीन हो, वह किसी भी युग का हो सकता है। उसके साथ उसकी अपनी परिस्थिति से तादात्म्य बिठाकर ही अनुवाद किया जा सकता है। आदर्श नाट्यानुवाद की एक शर्त यह भी है कि वह किसी नाट्य निर्देशक की देख-रेख में किया जाए। रघुवीर सहाय ने शेक्सपियर के नाटक 'मैकबेथ' का अनुवाद (बरनम वन) प्रसिद्ध रंग निर्देशक ब.व.कारंत की देख-रेख में किया था। यही कारण है कि यह अनुवाद आज नाट्यानुवाद के लिए आदर्श बन गया है। इसका एक उदाहरण देखें—

'Donal bain- what is amiss?
Macbeth-you are, and do not know it.
The spring, the head, the fountain your blood.
As Stopped and the very source of it is stopped.
'डोनल बेन-क्या गड़बड़ है?
मैकबेथ-तुम गड़बड़ में, और बेखबर :
दौड़ रहा जो खून तुम्हारी नस-नाड़ी में
उसका पूत, प्रधान स्रोत अवरुद्ध
हो गया;
मूलोद्गम अवरुद्ध हो गया।'

'मैकबेथ' के दूसरे अंक के तीसरे दृश्य का यह प्रसंग नाटक के अनुवाद की स्थितियों से परिचित कराने के लिए पर्याप्त है।

3. **कहानी का अनुवाद**—कहानी का अनुवाद भी अनुवादक से कई सावधानियों की माँग करता है। साहित्य के अनुवाद की तात्विक आवश्यकताओं के साथ-साथ कहानी के अनुवाद में मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद और रूपान्तर की अधिक जरूरत पड़ती है इसके साथ-साथ संवादों को तोड़ना और सांस्कृतिक शब्दों को अपनी भाषा के अनुकूल बनाना अधिक लाभकर होता है। कहानी में संवाद कई बार हमारी बोलचाल के निकट होते हैं और उसमें व्यक्त जीवन-स्थितियाँ भी। अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह पूरी कहानी को मूल पाठ के समानांतर पुनर्रचना कर प्रस्तुति करे। हिन्दी में चिनुआ अचेबे, क्यूप्रिन, चेख़व, मोपांसा, बोर्खेस, पुश्किन आदि की कहानियों के बेहतर अनुवाद हुए हैं जो इसके आदर्श उदाहरण है।

4. **उपन्यास का अनुवाद**—उपन्यास का अनुवाद कहानी के अनुवाद से इस मायने में भिन्न होता है कि वह अधिक वर्णनात्मक होता है। इसके अनुवाद में वर्णनात्मकता के सहज प्रवाह और तार्किकता पर ध्यान देना आवश्यक होता है। उपन्यास में कथा, चरित्र, संदर्भ तथा उसके भीतर रचे-बसे द्वैत को पकड़ना अनुवादक के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इसके साथ-साथ यह भी ध्यान में रखने वाली बात है कि उपन्यास की कोटियाँ अलग-अलग होती हैं। ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, यथार्थवादी, पारिवारिक-सामाजिक तथा राजनैतिक उपन्यास अलग-अलग ढंग से बर्ताव की माँग करते हैं। अपनी स्थितियों के अनुकूल रखते हुए उसकी समग्रता को उसमें निहित संवेदना के साथ अनुवाद में लाना बेहद कठिन काम है। जो अनुवादक इन बारीकियों को समझता है, वह उपन्यास का सफल अनुवाद कर सकता है। गोर्की के 'मदर' का हिन्दी अनुवाद इसका बेहतर उदाहरण है।

TOUCH 'n PASS

5. **निबंध का अनुवाद**—निबन्ध का अनुवाद अपेक्षाकृत अधिक संश्लिष्ट होता है। इसमें विचार और वर्णन के साथ-साथ काव्यात्मक लयात्मकता भी होती है जिसे पकड़ना और अपनी भाषा के अनुकूल बरतना बहुत आवश्यक है। निबन्ध की भाषा चुस्त, सरस और प्रवाहमान होती है। उसमें प्रयुक्त शब्दों में गहरी सांस्कृतिकता और मुहावरों में लालित्य का पुट भी होता है, इसलिए अनुवादक को इन चुनौतियों से जूझकर ही सफलता मिल पाती है।
6. **आलोचना का अनुवाद**—आलोचना विचार साहित्य की विधा है। इसका अनुवाद सहज है तो कठिन भी। इसके अनुवाद के लिए अनुवादक को सबसे पहले आलोचना में व्यक्त विषय को उसकी समग्रता में समझना होता है। इसके बाद उसे आलोचनात्मक प्रतिमानों और शब्दावलियों को आत्मसात् करना होता है। आलोचना के अनुवाद की सबसे बड़ी सुविधा यह है कि वह विचार का अनुशासन है, इसलिए उसके अनुवाद में यह नहीं देखा जाता कि मूल के सादृश्य अनुवाद हुआ है कि नहीं। उसमें देखने की बात यह है कि आलोचना में व्यक्त विचार और विश्लेषण अनुवाद में मूल पाठ की तरह संप्रेषित हो पाते हैं या नहीं।

प्र.5. नीचे दिये गये अंग्रेजी पाठ का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

अंग्रेजी पाठ

Let us see the method of estimating the duration of each activity in the package: Collect data on each activity duration from a number of Project Managers (a fairly large number is suggested to get a more realistic picture) who have undertaken a similar project under more or less identical conditions.

First of all, let us look at the activity: project plan approval. The data collected from say 32 Project Managers, presented below, indicates the number of weeks taken by each to obtain the project plan approval in the process of establishing milk chilling plants under similar conditions.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)	(13)	(14)	(15)	(16)
14	21	6	6	5	11	18	6	17	8	19	6	12	2	6	14
(17)	(18)	(19)	(20)	(21)	(22)	(23)	(24)	(25)	(26)	(27)	(28)	(29)	(30)	(31)	(32)
6	2	3	6	5	15	6	7	20	6	22	6	10	16	6	6

Note : Figure in parenthesis gives the serial number. The figure below each parenthesis gives the number of weeks taken by a Project Manager.

In the above sample, two Project Managers have taken two weeks each; none have taken less than that durtion to get their project plan approved. One of them has taken 22 weeks; no one has taken more than that duration. Majority of the project managers in the sample (*i.e.* twelve) have taken six weeks. The maximum (longest duration) in the sample (22 weeks) is known as the pessimistic time, minimum in the sample (two weeks) is called the optimistic times and the majority in the sample (six weeks) is known as the most likely time. Using the three numbers from the sample, we follow the formula given below to arrive at the time estimate.

उत्तर

हिन्दी अनुवाद

आइए, हम पैकेज में प्रत्येक कार्यकलाप की कालावधि का अनुमान लगाने के लिए तरीके को देखें। कुछ परियोजना प्रबंधकों से प्रत्येक कार्यकलाप की समयावधि के आँकड़ें एकत्रित करें। (अधिक वास्तविक स्थिति प्राप्त करने के लिए अधिक से अधिक आँकड़े एकत्र करने का सुझाव दिया जाता है) जिसने कमोवेशी समान परिस्थितियों के अधीन ऐसी ही परियोजना शुरू की हो।

सबसे पहले, आइए, हम कार्यकलाप परियोजना योजना स्वीकृति देखें। माना कि 32 परियोजना प्रबंधकों से एकत्र किए गए आँकड़े नीचे दिए गए हैं। यह इसी प्रकार की दशाओं के अधीन दुग्ध शीतलन संयंत्र को स्थापित करने की प्रक्रिया में परियोजना योजना की स्वीकृति प्राप्त करने में प्रत्येक कार्य में लगाए गए सप्ताहों की संख्या दर्शाते हैं।

TOUCH 'n' PASS

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)	(13)	(14)	(15)	(16)
14	21	6	6	5	11	18	6	17	8	19	6	12	2	6	14
(17)	(18)	(19)	(20)	(21)	(22)	(23)	(24)	(25)	(26)	(27)	(28)	(29)	(30)	(31)	(32)
6	2	3	6	5	15	6	7	20	6	22	6	10	16	6	6

टिप्पणी—कोष्ठकों में दिए गए अंक क्रमानुसार हैं। प्रत्येक कोष्ठक के नीचे अंक परियोजना प्रबंधक द्वारा लिए गए सप्ताहों की संख्या है।

उपर्युक्त नमूने में दो परियोजना प्रबंधकों ने दो-दो सप्ताह लिए हैं। किसी ने भी अपनी परियोजना योजना की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए इससे कम अवधि नहीं ली है। उनमें से एक ने 22 सप्ताह लिए हैं किसी ने भी इस अवधि से कम समय नहीं लिया है। नमूने में अर्थात् बारह अधिकांश परियोजना प्रबंधकों ने 6 सप्ताह लिए हैं। नमूने (22 सप्ताह) में अधिकतम (दीर्घतम अवधि) निराशात्मक समय के रूप में जाना जाता है, नमूना (2 सप्ताह) में न्यूनतम आशापूर्ण समय माना जाता है, और नमूना (6 सप्ताह) में अधिकांश सम्भावित समय के रूप में जाने जाते हैं। नमूने से 3 अंकों का प्रयोग करते हुए समय अनुमान तक पहुँचने के लिए नीचे दिए गए फार्मूले का अनुसरण करते हैं।

टिप्पणी

मूल पाठ और अनुवाद को मिलाइए।

उपर्युक्त अनुवाद में रेखांकित अंशों पर ध्यान दीजिए। ये वे बिन्दु हैं जहाँ सुधार संशोधन अपेक्षित है। आइए, अनुवाद का पुनरीक्षित रूप देखें।

पुनरीक्षित पाठ

आइए हम पैकेज के हरेक कार्यकलाप की कालावधि का अनुमान लगाने का तरीका देखें। इसके लिए हम ऐसे कुछ परियोजना प्रबंधकों से, जिन्होंने कामोवेश समान परिस्थितियों में ऐसी ही परियोजना शुरू की हो, परियोजना के प्रत्येक कार्यकलाप में लगे समय के आँकड़े इकट्ठे करते हैं। जितनी ज्यादा परियोजनाओं से सम्बन्धित आँकड़े हो सकेंगे उतनी ही सही तस्वीर उभरकर सामने आएगी।

सबसे पहले हम जिस कार्यकलाप पर विचार करेंगे, वह है—परियोजना की योजना की स्वीकृति। उदाहरण के लिए, नीचे हमने 32 परियोजना प्रबंधकों से इकट्ठे किए गए आँकड़े दिए है। इनमें दिखाया गया है कि दुग्ध शीतलन संयंत्र लगाने की परियोजना की योजना की स्वीकृति पाने में प्रत्येक को समान परिस्थितियों में कितना समय लगा।

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)	(13)	(14)	(15)	(16)
14	21	6	6	5	11	18	6	17	8	19	6	12	2	6	14
(17)	(18)	(19)	(20)	(21)	(22)	(23)	(24)	(25)	(26)	(27)	(28)	(29)	(30)	(31)	(32)
6	2	3	6	5	15	6	7	20	6	22	6	10	16	6	6

टिप्पणी—कोष्ठक में दी गई क्रमानुसार संख्या परियोजना प्रबंधकों की सूचक है। इसके नीचे दिखाई गई संख्या स्वीकृति पाने में लगे समय की सूचक है।

उपर्युक्त उदाहरण में 2 परियोजना प्रबंधकों को दो-दो सप्ताह का समय लगा। यह परियोजना-योजना स्वीकृति में लगने वाला न्यूनतम समय है। एक परियोजना प्रबंधक ने स्वीकृति पाने में 22 सप्ताह लगाए, जबकि अधिकांश ने 6 सप्ताह में स्वीकृति प्राप्त कर ली। ऊपर के उदाहरण में दिखाई गई दीर्घतम अवधि (22 सप्ताह) को निराशाजनक समय और न्यूनतम अवधि (2 सप्ताह) को आशाजनक समय कहा जाएगा। अधिकांश परियोजना प्रबंधकों द्वारा लिए गए समय (6 सप्ताह) को सम्भावित समय कहा जाएगा। उपर्युक्त उदाहरण में दी गई तीन प्रकार की संख्याओं से निम्नलिखित फार्मूले के अनुसार/के आधार पर समय अनुमान निकाल सकते हैं।

प्र.6. अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय प्रस्तुत व्याकरणीय समस्याओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय प्रस्तुत व्याकरणीय समस्याएँ

अनेक कारणों से अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं का निकट सम्पर्क रहा है। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद के जितने प्रसंग आते हैं। उतने अन्य विदेशी भाषाओं से अनुवाद के नहीं आते। यहाँ तक कि कुछ लोग 'अनुवाद' शब्द को अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद तक समझ बैठते हैं।

अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद की चर्चा करते हुए हमें सबसे पहले ध्यान रखना पड़ता है कि अंग्रेजी यूरोप की एक भाषा है जिसकी शब्दावली में अनेक शब्द लैटिन और ग्रीक भाषा से व्युत्पन्न हैं। अंग्रेजी ने अपना व्याकरण गठित कर लिया है। भारत में अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के कारण अंग्रेज़ी भाषा के व्याकरण की प्रणाली को भारतीय भाषाओं ने भी कुछ-कुछ स्वीकार किया है। मगर अंग्रेजी वाक्यों का अनुवाद करते समय अंग्रेजी की अपनी व्याकरणिक विशिष्टताओं को नजर अंदाज करना नहीं चाहिए। यहाँ अत्यंत महत्त्वपूर्ण व्याकरणिक बिन्दुओं को समझने की कोशिश की गई है। व्याकरण जिस क्रम से चर्चित है, उसी क्रम से यहाँ विचार प्रस्तुत है।

1. **संज्ञाएँ**—संज्ञा के लक्षण और भेदों का अनुवाद पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु जब लिंग, वचन, कारक आदि का प्रसंग आता है और उनके साथ में वाक्य प्रयोग करना पड़ता है तब अंग्रेजी की खासियत नजर आती है।
   (क) **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—व्यक्तिवाचक संज्ञा के प्रति सम्मान सूचित करने के लिए उसका प्रयोग बहुवचन में करने की प्रवृत्ति अंग्रेजी में बिल्कुल नहीं होती। यह प्रवृत्ति हिन्दी की प्रकृति का अंग है। उदाहरणार्थ—
   Dasaratha was a great king. (दशरथ एक बड़े राजा थे।)
   My father will bring a watch for me. (मेरे पिताजी मेरे लिए एक घड़ी लाएँगे।)
   (ख) **समूहवाचक संज्ञा**—सामान्यत: यह एकवचन में प्रयुक्त होती है। मगर जहाँ समूहवाचक संज्ञा के दल के सदस्यों से हमारा मतलब होता है वहाँ अंग्रेजी में बहुवचन का प्रयोग होता है। यहाँ अनुवाद हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार करना है। उदाहरणार्थ—
   The Committee were divided in their opinion. (समिति के सदस्य भिन्न-भिन्न मत के थे।)
   The Government will announce certain tax concessions.
   सरकार कुछ करों में रियायत की घोषणा करेगी।
2. **लिंग-व्यवस्था**—अंग्रेजी में तीन लिंग होते हैं— पुल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग। सामान्यत: निर्जीव वस्तुएँ नपुंसकलिंग मानी जाती है। रूढ़ि के कारण निर्जीव वस्तुएँ भी कहीं-कहीं पुल्लिंग या स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होती हैं। परन्तु हिन्दी में पुल्लिंग व स्त्रीलिंग दो ही लिंग है। निर्जीव वस्तुओं के बोधक शब्द शब्दरूप के अनुसार पुल्लिंग या स्त्रीलिंग की कोटि में आते हैं। उदाहरणार्थ—Cloth—कपड़ा (पु०), Comb—कंघी (स्त्री), Earth—जमीन (स्त्री०), House–घर (पु०), Association—संघ (पु०) संस्था (स्त्री०), Price—कीमत (स्त्री०) भाव (पु०)।
3. **वचन**—वचनों की संख्या के विषय में अंग्रेजी एवं हिन्दी समान हैं। परन्तु नित्य बहुवचन के विषय में अंग्रेजी की अपनी रूढ़ि व परम्परा हैं; जैसे—Drapery (कमरे की सजावट के कपड़े); Imagery (बिंबगण), Machinery (यंत्रगण), Poetry (काव्यकला), Scenery (दृश्यजाल), Stationery (लेखन सामग्री)।
   ये अर्थ में बहुवचन होते हुए प्रयोग में एकवचन होते हैं।
   अंग्रेजी के कुछ शब्द बहुवचन में ही प्रयोग किए जाते हैं— यद्यपि एकवचन का अर्थ होता है; जैसे— Scissors—कैंची, Spectacles—चश्मा, Trousers—पतलून, Measles—खसरा, Annals—इतिहास, Thanks–धन्यवाद, News—खबर, Premises—अहाता, Wages—मज़दूरी।
   कुछ विषयों के नाम रूप में बहुवचन हैं, पर अर्थ में एकवचन हैं—Mathematics—गणित, Physics—भौतिकी, Politics—राजनीति, Economics–अर्थशास्त्र, Civics—नागरिक विज्ञान।
4. **कारक**—कारक और विभक्ति के विषय में अंग्रेजी और हिन्दी अलग-अलग पथ पर चलती हैं। प्राचीन अंग्रेजी संस्कृत के समान कई विभक्तियों का प्रयोग करती थी। आधुनिक अंग्रेजी में तो तीन मुख्य कारकों का ही प्रयोग होता है—Nominative, Objective, Possessive (कर्त्ता, कर्म और सम्बन्ध कारक)। हिन्दी व्याकरण में कर्त्ता, कर्म, करण, अपादान, सम्बन्ध एवं अधिकरण कारक की चर्चा है। इन कारकों के अर्थ में विभिन्न विभक्तियों का प्रयोग होता है। अंग्रेजी में कर्त्ता को छोड़कर शेष दोनों कारकों में Preposition (सम्बन्धबोधक अव्यय) का ही प्रयोग होता है, शेष कारकार्थों एवं विभक्त्यर्थों में भी Preposition का ही प्रयोग होता है। to, for, from, in आदि। इन सम्बन्धबोधक अव्ययों के प्रयोग से मूल संज्ञा, सर्वनाम आदि का रूप विकृत नहीं होता; जैसे—
   of the boy, in the festival (लड़के का, मेले में)
   of the boys—लड़कों का, in the houses—घरों में
   Possessive Case में अंग्रेजी में 's', 'of ' दोनों का प्रयोग होता है। लेकिन हिन्दी में ऐसा अंतर नहीं होता।
   Cow's milk—गाय का दूध
   Keat's poetry—कीट्स की कविता
   Brother of Mary—मेरी का भाई

5. **विशेषण**—अंग्रेजी में विशेषणों का लिंग वचन के अनुसार परिवर्तित नहीं होता। हिन्दी में यह ज़रूरी है।
Harilal is a good athelete. (हरिलाल एक अच्छा खिलाड़ी है।)
Noorjahan was very beautiful. (नूरजहाँ बड़ी खूबसूरत थी।)
Radha is a good girl. (राधा एक अच्छी लड़की है।)
गुणवाचक विशेषणों की संरचना में अंग्रेजी भाषा की कुछ सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं। उदाहरणार्थ—Siamese cats—यह एक मुहावरा है। इसलिए सयामी बिल्लियाँ कहने के बजाय उसका भाव बताना ही बेहतर है। Herculease struggle—हर्क्यूलस का प्रयत्न। साधारण लोगों के लिए यह प्रयोग दुरूह रहेगा, अत: 'अत्यंत कठोर साधना' शब्द बेहतर रहेगा। परिमाणवाचक विशेषणों में अंग्रेजी शब्द का अनुवाद हिन्दी के प्रसंग के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप से करने की जरूरत पड़ सकती है। उदाहरणार्थ—
He drank a little water. (उसने थोड़ा-सा पानी पिया।)
Wait a little more. (जरा-सा और इंतजार करो।)
I could not get any sugar. (मुझे चीनी बिल्कुल नहीं मिली।)
This has no meaning. (इसका कोई मतलब (अर्थ) नहीं है।)
Formation of Comparative and Superlative Degree : अंग्रेजी में शब्दों के अनुसार 'er' जोड़कर Comparative एवं 'est' जोड़कर Superlative बनाया जाता है। इस प्रविधि में शब्द का थोड़ा-सा रूप-परिवर्तन भी सम्भव है। हिन्दी ने संस्कृत से 'तर' व 'तम' प्रत्यय इसी अर्थ में लिए हैं। परन्तु हिन्दी भाषा की प्रवृत्ति वियोग की ओर रही है। इसलिए Comparative में 'से बड़ा', 'से छोटा' आदि प्रयोग होता है, Superlative में 'सबसे बड़ा', 'सबसे छोटा' आदि। अंग्रेजी में Most जैसे विशेषण कभी 'बहुत' अर्थ में ही प्रयुक्त हैं। प्रसंग एवं भाव पहचानकर अनुवाद करना बहुत आवश्यक है। उदाहरणार्थ—
Little, A little, The little
He has little chance of promotion. (उसकी तरक्की की कोई गुंजाइश नहीं है।)
There is a little hope of his promotion. (उसकी तरक्की की थोड़ी-सी सम्भावना है।)
I shall give you the little money I have. (मेरे पास जो थोड़ी-सी रकम है, वह मैं तुम्हें दूँगा।)
Few, A few, The few
Few people achieve perfection. (कोई पूर्णता प्राप्त नहीं करता।)
I have a few friends in Bombay. (बंबई में मेरे कुछ दोस्त हैं।)
I gave him the few books I had. (मेरे पास जो थोड़ी-सी पुस्तकें थीं उन्हें उसको दिया।)
Articles A, An, The : अंग्रेज़ी में A और An का प्रयोग बाद में आने वाले शब्दों के अनुसार किया जाता है। अगर स्वराक्षरों से संज्ञा शब्द शुरू होते हैं तो An आता है (An ant); व्यंजनाक्षरों से शुरू होते हैं तो A का प्रयोग (A boy) होता है। हिन्दी में प्रयोग हर प्रकार के शब्द के पहले 'एक' का किया जाता है। 'The' नामक article का समांतर कोई शब्द हिन्दी में नहीं है। यह बड़ी सुविधाजनक है। जहाँ 'किसी विशेष' अर्थ में The का प्रयोग हो वहाँ 'इस' या 'प्रस्तुत' शब्द का प्रयोग प्रसंगानुसार हो सकता है। उदाहरणार्थ—
Please pay donation to the college. (इस कॉलेज को दान दीजिए।)
(हमारे)

6. **सर्वनाम (Pronouns)**—सर्वनामों का भाव अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में समान ही होता है। लेकिन सामाजिक रिवाज के कारण और मुहावरे के अनुसार फर्क पड़ता है।
First Person I/we : अंग्रेजी के I शब्द का अनुवाद हिंदी में 'मैं' है। अंग्रेजी में अपने लिए We शब्द का प्रयोग तभी होता है जब कई लोगों से सम्बन्ध हो। सरकार, पत्रिका, कम्पनी आदि अनेक लोगों की प्रतिनिधि संस्था की तरफ से जब कुछ कहा या लिखा जाता है तब भी बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी में राजा, समाज के उच्च पद वाले और कभी-कभी सामान्य स्थिति के लोग भी अभ्यासवश एक ही व्यक्ति की सूचना 'हम' से करते हैं। इसलिए प्रसंगानुसार अनुवाद ज़रूरी है।
Hari said, "I like music." (हरि ने कहा, "मैं संगीत पसंद करता हूँ।")
The king said, "I like music." (राजा बोले, "हम संगीत पसंद करते हैं।")
Second Person-You (Thou, thee) : वर्तमान अंग्रेजी में thou और thee लुप्त हो चुके हैं। you का ही प्रयोग प्रचलित है। you एकवचन और बहुवचन के अर्थ से प्रयुक्त है। you बहुवचन में बहुवचन क्रिया माँगता है—you are a nice man. हिन्दी में तू, तुम और आप-तीन सर्वनाम हैं। इसका प्रयोग सामाजिक स्तर, घनिष्ठता, सम्मान आदि

के अनुसार होता है। अत: अंग्रेजी वाक्यों में निहित भाव एवं उसकी पृष्ठभूमि समझने के बाद तदनुसार अनुवाद करना चाहिए। उदाहरणार्थ–

Father to child— You are naughty. (तू नटखट है।)

Friend to Friend—You are late today. (तुमने आज देर कर दी।)

Student to teacher—My father will meet you today. (मेरे पिताजी आपसे आज मिलेंगे।)

Third Person—He, she, it : अंग्रेजी में ये (Third person) अन्य पुरुष सर्वनाम क्रमश: पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग होते हैं। हिन्दी में इनके लिए अलग-अलग सर्वनाम शब्द तो नहीं हैं। 'वह' एक ही सर्वनाम है। परन्तु विशेषण और क्रिया का प्रयोग जब 'वह' के साथ होता है तब उनका प्रयोग लिंग-वचन के अनुसार बदलता है। हिन्दी में 'यह' भी सर्वनाम है। अंग्रेजी में 'This' विशेषण के रूप में ही आता है। कहीं अकेले दिखता है वहाँ संज्ञा शब्द लुप्त रहता है। यह अंग्रेजी की प्रवृत्ति की उलटी है। इसलिए अनुवादक को इसका अभ्यास करना पड़ता है।

अंग्रेजी में 'It' शब्द का मुहावरेदार प्रयोग बहुत होता है। इसका अनुवाद कभी 'वह' होता है, कभी 'यह'। कभी 'It' अनुवाद में छोड़ा जाता है। उदाहरणार्थ—

I have baught a radio; it is made in Japan. (मैंने एक रेडियो खरीदा है, वह जापान में बना है।)

The baby cried because it was hungry. (बच्चा रो उठा क्योंकि वह भूखा था।)

It is true that Gopal has passed the examination.

यह सच है कि गोपाल परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया है। गोपाल सचमुच परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया है।

It is time we started. (हमारे चलने का वक्त आ गया है।)

सर्वनामों का प्रयोग वाक्यों में करते समय अंग्रेजी के मुहावरे के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रयोग मिलते हैं। अनुवादक को सावधानी से उसका भाव समझना चाहिए। फिर हिन्दी में उस भाव को बताने के लायक शब्द राशि का मुहावरा ढूँढ़ लेना होता है। उसके बाद ही लिखना चाहिए। कुछ उदाहरण देखिए—

He is a leader whom many follow.

बहुत लोग उस नेता का अनुगमन करते हैं। (के पीछे चलते हैं)

This is the car of which he is very proud. (इसी गाड़ी पर वह नाज करता है।)

He wants a seat in the medical college which is impossible.

वह मेडिकल कॉलेज में प्रवेश चाहता है, जो असम्भव है।

Take down what I dictate. (मैं जो बताता हूँ उसे लिखा लो।) आदि।

7. **क्रिया (Verb)**—हिन्दी में क्रियाओं के तीन मुख्य काल माने जाते हैं—भूत, वर्तमान और भविष्य। उनमें से प्रत्येक के कई उपभेद भी मान गए हैं। इनके अलावा आज्ञार्थक का अलग विधान है। संस्कृत में इन सबकी प्रस्तुति दस लकारों से की जाती थी। संस्कृत से हिन्दी तक आते-आते काफी सरलीकरण हो गया। भेद-विभाजन की कसौटी भी बदलती गई। आधुनिक हिन्दी ने अंग्रेजी गद्य की शैली से बहुत कुछ ग्रहण किया है। उसमें अंग्रेजी व्याकरण को भी कुछ-कुछ स्वीकार किया है। फिर भी व्यावहारिक भाषा होने के नाते अंग्रेजी में अनेक बारीक उक्तियाँ और अपनी अभिव्यक्तियाँ बन गई हैं। उनका अनुवाद उचित ढंग से करने में सावधानी की आवश्यकता है।

उदाहरणार्थ—अंग्रेजी में Indicative, Imperative और subjunctive—तीन प्रकार के mood हैं। हिन्दी में Indicative और सामान्य क्रिया वाक्य में की एक विधा सम्भाव्य भविष्य के रूप में ही प्रस्तुत करते हैं। परन्तु संभाव्य भविष्य के रूपों से भिन्न प्रकार के रूप भी अंग्रेजी के Subjunctive mood के अंतर्गत आते हैं। इसके कुछ उदाहरण लें–

Wish long live the Indian Republic. (भारत गणतंत्र की जय हो!)

I wish I were with you now. (मैं तुम्हारे साथ रहता तो कितना अच्छा होता!)

Purpose–We eat that we may live. (हम इसीलिए खाते हैं कि जिंदा रहें।)

Doubtful Condition or Possibility–If you could do this, we should be grateful.

अगर आप यह कर सकें तो हम आभारी होंगे।

If you should arrive before christmas, how happy we would be.

अगर वह क्रिसमस के पहले आवे तो हम बहुत ही खुश होंगे।

TOUCH 'n PASS

I am hoping that he may come this evening.
मैं आशा करता हूँ कि वह आज शाम को आएगा।
I am hoping that he might be coming this evening.
मैं आशा करता हूँ कि वह आज शाम को शायद आएगा।
Condition to fact–If I were you, I should not let him go.
अगर तुम्हारी जगह मैं होता तो उसे जाने न देता।
Were it possible, I would do it. (अगर वह सम्भव हो तो मैं वह करूँगा।)
Noun clause–The Judge ordered that the accused be punished.
जज ने आदेश दिया कि अभियुक्त को दण्ड दिया जाए।

वर्तमान काल—हिन्दी में हम सामान्य, तात्कालिक और संदिग्ध-तीन भेद मानते हैं। अंग्रेजी के वर्तमान के भेद–
I work. (मैं काम करता हूँ।)
I am working. (मैं काम कर रहा हूँ।)
I have worked. (मैंने काम किया है।)
I have been working. (मैं काम करता रहा हूँ अथवा मैं काम करता आया हूँ।)

भूतकाल
I gave. (मैंने दिया।)
I was giving. (मैं देता था। मैं दे रहा था।)
I had given. (मैंने दिया था।)
I had been giving. (मैं देता था। मैं देता रहा ।)

भविष्यकाल
I shall give. (मैं दूँगा)
I shall be giving. (मैं देता हूँगा। मैं दूँगा ।)
I shall have taken bath by 10 A.M. (मैं दस बजे तक स्नान कर लूँगा।)
We shall have completed the course by December. (हम दिसम्बर तक पाठ्यक्रम पूरा कर लेंगे।)

इस विभिन्न कालों का प्रयोग अंग्रेजी में करते समय भी भूलें होती हैं। कारण यह कि भारतीय भाषाओं में ऐसे रूपों का अभाव है। अनुवाद में तो ऐसे प्रयोग हमें और भ्रम में डालते हैं। हमें मूल वाक्य पूरा पढ़कर प्रसंग भी समझकर हिन्दी में प्रचलित प्रयोगों से काम लेना चाहिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. अनुवाद को सृजनात्मक बनाने के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंतिम तत्त्व क्या है?
(क) लय (ख) अनुवाद (ग) लय का अनुवाद (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) लय का अनुवाद

प्र.2. रूपान्तर में मुख्य बल किस पर दिया जाता है?
(क) लय पर (ख) कृति की संवेदना पर
(ग) कृति के परिवर्तन पर (घ) कृति के अनुवाद पद
उत्तर (ख) कृति की संवेदना पर

प्र.3. साहित्य के अनुवाद का आधार तत्त्व क्या है?
(क) रूपान्तर (ख) परिवर्तन (ग) लय (घ) सादृश्य
उत्तर (घ) सादृश्य

प्र.4. एक भाषा की कृति दूसरी भाषा में पहुँचने का माध्यम है–
(क) अनुवाद (ख) परिवर्तन (ग) रूपान्तर (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) अनुवाद

TOUCH 'n' PASS

प्र.5. लक्ष्य भाषा में कौन-सा प्रचलित मुहावरा देना चाहिए?
(क) समान्तर मुहावरा (ख) अनेकार्थक मुहावरा (ग) अंग्रेजी मुहावरा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) समान्तर मुहावरा

प्र.6. बहुभाषिक समाज की सहज आवश्यकता होती है–
(क) सम्पर्क भाषा (ख) सहज भाषा (ग) राष्ट्रीय भाषा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) सम्पर्क भाषा

प्र.7. बहुभाषिक समाज में अनुवाद का क्षेत्र है–
(क) दैनिक जीवन व्यवहार (ख) व्यापार एवं वाणिज्य (ग) विज्ञापन (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.8. बहुभाषिक समाज में अनुवाद का क्षेत्र है–
(क) साहित्य (ख) ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र (ग) जनसंचार माध्यम (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.9. कौन-सी भाषा वास्तव में दो भाषाओं को बोलने वालों के बीच मध्यस्थ भाषा का कार्य करती है?
(क) सम्पर्क भाषा (ख) संचार भाषा (ग) राष्ट्रभाषा (घ) राज्यभाषा
उत्तर (क) सम्पर्क भाषा

प्र.10. अनुवाद का क्षेत्र है–
(क) विश्व साहित्य की परिकल्पना (ख) वार्तालाप
(ग) धर्म (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.11. भारतीय मत के कितने उपवर्ग हैं?
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच
उत्तर (क) दो

प्र.12. लोकोक्ति या कहावत को अंग्रेजी में कहा जाता है–
(क) Verb (ख) Proverb (ग) Adverb (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) Proverb

प्र.13. साहित्य के अनुवाद के स्वरूप को समझने के क्रम में पहला चरण होता है–
(क) भाषान्तरण (ख) प्रतिस्थापन (ग) मूल पाठ को पढ़ना (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) मूल पाठ को पढ़ना

प्र.14. साहित्यिक विद्याओं के अनुवाद की समस्या है–
(क) कविता का अनुवाद (ख) निबन्ध का अनुवाद (ग) कहानी का अनुवाद (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी ❑

- यद्यपि इस पुस्तक को यथासम्भव शुद्ध एवं त्रुटिरहित प्रस्तुत करने का भरसक प्रयास किया गया है, तथापि इसमें कोई कमी अथवा त्रुटि अनिच्छाकृत ढंग से रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा सन्ताप के लिए लेखक, प्रकाशक तथा मुद्रक का कोई दायित्व नहीं होगा। सभी विवादित मामलों का न्यायक्षेत्र मेरठ न्यायालय के अधीन होगा।
- इस पुस्तक में समाहित सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री (रेखा व छायाचित्रों सहित) के सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं। अतः कोई भी व्यक्ति इस पुस्तक का नाम, टाइटिल-डिजाइन तथा पाठ्य-सामग्री आदि को आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर प्रकाशित करने का प्रयास न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार होंगे।
- इस पुस्तक में रह गई तथ्यात्मक त्रुटियों तथा अन्य किसी भी कमी के लिए विद्वत् पाठकगण से भूल-सुधार/सुझाव एवं टिप्पणियाँ सादर आमन्त्रित हैं। प्राप्त सुझावों अथवा त्रुटियों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जाएगा। किसी भी प्रकार के भूल-सुधार/सुझाव आप info@vidyauniversitypress.com पर भी ई-मेल कर सकते हैं।

TOUCH 'n PASS